आंगन

मैथिली भाषाक वार्षिक पत्रिका

f वर्ष ४ f अंक ४ f वैशाख २०६९

प्रधान सम्पादक
रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

कार्यकारी सम्पादक
धर्मेन्द्र विह्वल

सम्पादन सहयोगी
विनीत ठाकुर

प्रकाशक



नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान
काठमाण्डू

आंगन

मैथिली भाषाक वार्षिक पत्रिका

वर्ष : ४, अंक : ४, वैशाख २०६९

प्रधान सम्पादक

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

कार्यकारी सम्पादक

धर्मेन्द्र विह्वल

सम्पादन सहयोगी

विनीत ठाकुर

आवरण चित्र

लोकशैलीमे सलहेस, चित्रः जीतबहादुर रायमाझी

लेआउट

राजुप्रसाद काफ्ले

कभर डिजाइन

संदिप कुमार

मुद्रक

प्रज्ञा छापाखाना, कमलादी, काठमाडौं

प्रकाशक

नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान

सम्पर्क

aanganmaithili@gmail.com/rbkapari@hotmail.com/9841164770

मोल रु. ५०/-

सम्पादकीय

सलहेसकें लोकशक्तिक प्रतीक बनाउ

हमरा गाममे एकगोटे गबैया छलाह। पैंतीस-चालिस पूर्बक बात हएत। खेत सभमे धनकटनीके समय कान्हपर ढ़ोलक लटकैने सलहेसक गीत गायल करथि। हम अपने खेतमे धान कटएबाक क्रममे जनसभक सँग रहल करी। खेत कटाईके काम आ लोरहा आ आंटीक लोभ। जहए किछु कैंचा भऽ जाए। शिवलाल आएल करथि आ सलहेसक गाथाक किछु प्रसंग बड़ मनोयोगसँ सुनाओल करथि। साँचबात कही त हमरा ओहि कथामे "चलै ए मलिनियाँ छौड़ी पैरा झमकबैए ने यौ" आ विभिन्न जातिक विशेषताबला फकरा जकाँ कहबी खूब नीक लागए। के छल सलहेस आ किएक गाओल जाइत छलैक ओकर गीत - हमर सरोकारक विषय नहि छल। हँ, गीत गएलाक बाद कोनो जनकेँ एकपाँज पसही बान्हि कऽ गिरी के दऽ देबाक लेल कहि देब मात्र हमर काज रहए..... । गबैयाजी आइयो छथि मुदा स्थानीय नेता आ लेखनदासक रुपमे। हम एम्हर प्रश्न कएने रहियनि की सलहेसक गीत सभ विसरि गेलिऐ ? ओ किछु-किछु स्मरणक बात बतौलनि। मुदा हमरा बुझल अछि एहि चारि दशकमे कमला, जलादिक पानि बहुत बहि गेल छैक। ओ आब ओ गायक नहि रहलाह। दश गाममे पुछ होइ छनि, सम्पन्न आ लुरिगर लोक छथि।

हमरा जनैत मैथिली लोकगाथाक विलुप्त होइत गतिक पाछाँ उएह सम्पन्नता, व्यस्तता आ बढ़ल औकातक आगाँ परम्परागत गायिकी दम तोड़ि दैत छैक आ हम सभ डिबिआ लऽ गामे-गामे ओ सुर भास खोजैत फिरै छी। एहन सन जे अपन गुण, चातुर्यकेँ पाछोक पीढ़ि कें सिखाइयो ने सकल छैक ने ओ हाइटेक बनैत पीढ़ि सिखहो चाहैत अछि। तखन ई सांस्कृतिक सम्पदाक संरक्षण ककरा बल पर हो !

सलहेस लोकगाथा एकर अपवाद नहि। विगत किछु वर्षसँ सलहेस पर काजसभ भेलैक अछि। मुदा प्रश्न उठैछ - लोक साहित्य पर हमर विद्वान, मनिषी लोकनि किए ध्यान नहि देलखिन्ह। एहि दुआरे जे एकर पात्र निम्न वर्गक होइत छलैक। ओ शूरवीर, उद्धारक आ जिवित देवताक रुपमे पूजित व्यक्तित्व सभ होइत छलैक। लिखनिहार, पढ़निहार आ जननिहारो त ओहने प्रबुद्ध वर्ग होइत छलाह। इएह कमि-कमजोरी आइ सलहेस गाथाक प्रमाणिकता पर प्रश्नचिन्ह लगा रहलैक अछि। जतेक मुंह ओतेक बात।

ई त धन कही विदेशी जार्ज ग्रिअर्सनके जे आइसँ एक सय एकतीस वर्ष पहिले सलहेसक गाथाक किछु मौलिक गीतक सँग ओकर कथा संकलित कऽ छपौलनि। नेपाल तराईक सिरहा-सप्तरी जनपदसँ जूड़ल ओ गाथा ओ नेपालेक कोनो डोम जातिसँ गबैत संकलित कएने रहथि। ओ पहिल मौलिक संकलन छल।

तकरा बादो मैथिलीमे बहुत रास अध्ययन, अनुसन्धानक काज सभ भेलैक। बहुतो गोटे पी.एच.डी, डि.लिट्‌क उपाधि ग्रहण कएलनि। फेलोशीप प्राप्त कएलनि। मुदा सलहेस अध्ययनक विषय नहि बनि पौलक। जखन सभ विषय धड़ा गेल तखन नवताक खोजीमे किछु गोटेकें सलहेस नजरिपर चढ़लनि आ तखन ओ विशिष्ट व्यक्तित्व सभक पन्नापर उतरबाक सौभाग्य पौलक। परिणाम भेलैक अपूर्ण, अव्यवस्थित आ विस्तृत भूभागमे प्रचलित लोकगाथाक पुनमूर्ल्याङ्कन अत्यन्त कठिन भऽ गेल छैक। पूर्णपाठक अभाव एकर जड़िमे मानल जएबाक चाही। सभसँ हालोक दावी के मानि लेल जाए तँ सलहेस गाथा विगत तीन सय वर्षसँ प्रचलित अछि। तकर डेढ़सय वर्षक बाद ग्रियर्सन उतारलन्हि आ तकर डेढ़ सय वर्षक बाद डा. महेन्द्र नारायण राम ! तीन सय वर्षमे दूगोट मूल गाथाक टिपौट। की एहि लोकनायक, जनश्रुति आ इतिहासक महान योद्धा, नेपालक पूर्वि मधेश-तराईक लोकशक्तिक प्रतीक व्यक्तित्व सलहेसक सँग अन्याय नहि ! की सलहेसकें मात्र दुसाध जातिक गहबरक देवता अथवा अवतारी पुरुष मानि मुंह मोड़िलेब उचित छल ?

ई एहन बहुत रास यक्ष प्रश्नक सूची अछि जकर उत्तर जं खोजल जाए त ओ मैथिली भाषा आ मिथिला राज आन्दोलनकें कमजोर करत, आर दुरी बढ़ाओत। जे एखन के समयमे सहज रुपें बढ़ि रहल अछि आ भाषा, क्षेत्रपर संकट ठाढ़ कएने जा रहल अछि। भाषाविवादक जडिमे जे मानसिकता छै तकरो समाप्त करबाक लेल सलहेसकें आगां लाबही पडत। बहुसंख्यक लोकक विच सलहेस समानरुपें मानल आ जानल जाइत अछि। आब राष्टिय विभूतिक रुपमे सलहेसक प्रतिष्ठापन आबश्यक भ गेल अछि। हमरा सभके एहिपर गंभीरतासं सोचबाक चाही।

तएँ हमसभ एहिपर फेरसँ विचार करी - सलहेसकें लोकशक्तिक नायक बनएबाक हेतु उपर उठी, लेखन, अनुसन्धान हो, समाज आ राष्ट्रकें सलहेसक महत्व आ विशिष्टतासँ अवगत कराबी।

एहने सन महत्ती योजना अन्तरगत तीनगोट काज हाथमे लेबाक निर्णय कएल - एक : सलहेसपर केन्द्रित बृहत् गोष्ठी कराबी, दू : प्रज्ञा प्रतिष्ठानक पत्रिका 'आंगन' के सलहेस केन्द्रित अंक निकाली आ तीन : समस्त आलेख सभकें (जे बाहरोसँ लाएल जाएत) सम्पादित कऽ पुस्तक बहार करी। सलहेसक जन्म समय, ओकर सामाजिक, राजनितिक

अवस्था, सलहेस गाथाक पात्र सभक बैबिधताकेँ ठेकान करब, सलहेसक जीवनवृत आ परिवेश एखनो धरि सुस्पष्ट नहि अछि। सलहेसक स्वरुप केहन हो, हाथी सवार कि घोड़ा सवार। हाथमे भाला, तीर धनुष, गदा कि तलवार ! पत्नि, प्रेमिकाक निजगूत ठेकान ! एहने सन प्रश्न सभक खोजी हमर योजनाक विषय रहल अछि। देशक राजनीतिक परिस्थितिक कारणेँ योजनाकेँ मूर्तरुप लेबामे विलम्ब भऽ सकैछ, मुदा किछु देरीयोंसँ सही **'आंगन'** ताहि योजना अन्तरगत महत्वपूर्ण डेगक रुपमे **'सलहेस विशेष'**क रुपे अपने सभक आगाँ प्रस्तुत अछि।

सहलेससँ सम्बन्धित आलेखकक हेतु महिनोंसँ प्रयासरत् रहितो उचित मापदण्डक रचना प्राप्तिमे भेल कठिनाई अंकमे जा रहल रचना सभक गतिसँ अनुमान लगाओल जा सकैछ। मुदा किछु रचना एहनो अछि जे एहि अंकक उपलब्धि अछि आ पुस्तकाकार प्रकाशनमे अपन स्थान सुरक्षित करा लेने अछि।

ई एकटा नम्र प्रयास अछि। एखनो सलहेस सम्बन्धी गाथाक पूर्ण विवरणक सँग ओकर विभिन्न पक्षपर रचना आमंत्रित अछि, जकरा सम्मानपूर्वक हम सभ पुस्तकाकारमे राखि सकब।

'आंगन'क ई अंक डेढ़ वर्षक बाद आएल अछि। नियत समयसं पांच मास पूर्वे विद्यापति अंकक रुपमे 'आंगन-३' बहार भेल रहए तएँ एकरा अपन दोसर निर्धारित तिथि प्राप्त करबामे एक वर्ष पांच मास प्रतिक्षा कर' पड़लैक। जे से ई आबि गेल अछि, केहन अछि की सभ आर सुधार होए अपेक्षाक सँग बिदा लैत छी।

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'
प्रधान सम्पादक

विषय-सूची

सलहेस विशेष

विविध

मैथिलीमे कारकीय व्यवस्था एवं व्याकरणिक प्रकार्यक बीच अन्तरसम्बन्ध

२ डा. योगेन्द्रप्रसाद यादव

पृष्ठभूमि

सैद्धान्तिक तथा प्रकारात्मक भाषाविज्ञान (theoretical and typological linguistics) क अवधारणाअनुसार विभिन्न भाषासबमे संज्ञाक कर्ता, सम्प्रदान, करण, आदि कारक आर संज्ञाक उदेश्य, प्रत्यक्ष कर्म, अप्रत्यक्ष कर्म, आदि व्याकरणिक प्रकार्य (grammatical functions) क बीच निश्चित रूपसँ अन्तरनिर्भरता रहैत अछि आर ताहिहेतु एहि दुनूक अध्ययन स्वभावत: संयुक्त रूपमे करब अपरिहार्य अछि। मुदा एहि दुनू व्याकरिणक पक्षक बीच पूर्ण एकरूपता नहि देखल जाइत अछि (बिकेल तथा यादव २०००)। अन्य दक्षिण एशियाई भाषासबजकाँ मैथिली भाषामे सेहो संज्ञा आर सर्वनामसँगे समृद्ध कारकीय व्यवस्था पाओल जाइत अछि। एहि भाषामे समापक (finite) वाक्य अथवा उपवाक्यक उद्देश्य (subject) सामान्यत: कर्ता कारकमे प्रयुक्त होइत अछि। मुदा विधेय (predicate) क विशेष अन्तरनिहीत शाब्दिक-आर्थिक (lexico-semantic) लक्षणक कारणेँ उद्देश्य कर्ताइतर कारक (non-nominative cases) मे सेहो प्रयुक्त भेल पाओल जाइत अछि।

ई निबन्ध एहि तथ्यक समर्थन करैत अछि जे कर्ताइतर उद्देश्यक विशेषताक सन्दर्भमे मैथिली दक्षिण एशियाई भाषासदृश देखल जाइत अछि।

एहि निबन्धमे मैथिली भाषामे कर्ता तथा कर्ताइतर उद्देश्यक रुपात्मक, वाक्यात्मक तथा आर्थिक पक्षसबहक विश्लेषण प्रस्तुत करबाक प्रयास कएल गेल अछि। एकरा तीन खण्डमे विभाजित कएल गेल अछि। खण्ड १ मे कर्ता (nominative) उद्देश्यक विश्लेषण कएल गेल अछि। खण्ड २ मे कर्ताइतर उद्देश्यक प्रकार, आ तेसरमे रूपात्मक अन्तर्गत अग्र सहसन्दर्भ (anaphoric coreference), सार्वनामिक असहसन्दर्भ (pronominal noncorefernce), संयोजक संरचनामे रिक्तता (gapping in coordinate structures), क्रिया-संगति (verb agreement) एवं कारक-पदच्युति (case demotion) क सोदाहरण चर्चा कएल गेल अछि।

१. व्याकरणिक प्रकार्य आर विभक्ति

मैथिलीक विभिन्न व्याकरणिक प्रकार्यक लेल प्रयुक्त संज्ञा आर सर्वनाममे तीन प्रकारक कारकीय विभक्ति प्रयुक्त होइत अछि। ई थिक : शून्य (-∅), निपात (clitics) आर (च) क + परसर्ग।

[1] एहि विषयमे मैथिली हिन्दी आर नेपाली लगायत अन्य क्षेत्रीय आर पारिवारिक रूपमे सम्बन्धित भाषासभसँ भिन्न अछि जाहिमे समापक वाक्य अथवा उपवाक्सक उदेश्य कर्ता विभक्तिमे मात्रे नहि अपितु पूर्णकालिक पक्षमे रहल सकर्मक क्रियासंगे वैकल्पिक रूपमे तिर्यक विभक्ति (ergative case marker) मे सेहो रहैत अछि, यथा: (क) राम *ने* किताब पढी (=राम किताल पढलक)। (ख) राम *ले* किताब पढ्यो।

• शून्य **(-∅)** विभक्ति

मैथिलीमे दूगोट कारकमे शून्य विभक्ति लगैत अछि: कर्ता आर मानवेतर कर्म (accusative), जेना :

(१) विद्यार्थी (=*विद्यार्थी* -∅) किताब (=*किताब*-∅) किनलक ।

उपरोक्त उदाहरणमे *विद्यार्थी* उद्देश्य आर *किताब* मानवेतर कर्म कारकमे प्रयुक्त संज्ञासँगे कोनो चिन्हक प्रयोग नहि भेल अछि; अर्थात् शून्य (-∅)विभक्तिक प्रयोग भेल मानल जाइत अछि। दोसर शब्दमे, ई कहल जा सकैत अछि जे उद्देश्य आर मानवेतर कर्म कारकसँगे शून्य (-∅)विभक्तिक प्रयोग होइत अछि[1] ।

• **निपात**

मैथिली संज्ञा/सर्वनामसँगे जे निपात कारकीय विभक्तिक रूपमे प्रयोग होइत अछि से अछि :- कैँ, -.(*अ*)क/(*अ*) र, -*सँ*, आर -*मे*/पर ।

- कैँ: एहि विभक्तिक प्रयोग सजीब कर्म कारकसँगे होइत अछि, जेना:

(२) राम अपन भाइकैँ (=*भाइ-कैँ*) मारलक ।

(३) गायकैँ (=*गाय-कैँ*) प्यास लागल अछि ।

- (*अ*)क/(*अ*)र: एहि विभक्तिक प्रयोग सम्बन्ध कारकसँगे होइत अछि: संज्ञाक साथ -(*अ*) *क* आर सर्वनाम रहलापर -(*अ*)र, जेना :

(४) सीताक (=*सीता-क*)/हमर (*हम-र*) घर ।

-*सँ*: संज्ञा या सर्वनाम श्रोत अथवा करण (instrumental) कारक रहलापर -*सँ* विभक्ति लगैत अछि, जेना:

(५) ई पत्र जनकपुरसँ (=जनकपुर-*सँ*) प्राप्त भेल ।

(६) हम ई चित्र पेन्सिलसँ (=पेन्सिल-*सँ*) कोडनेलौंह ।

-*मे*/*पर*: ई विभक्ति अधिकरण (locative) कारकमे रहल संज्ञा/सर्वनामसँगे प्रयोग होइत अछि, यथा :

(७) हम काल्हि जनकपुरमे (=जनकपुर-*मे*) छलौंह ।

(८) कौआ गाछपर (=गाछ-*पर*) बैसल अछि ।

-(*अ*) *क*+परसर्ग (postposition)**:** सम्बन्ध कारकक परसर्गयुक्त विभक्ति निम्न उदाहरणमे देखाओल गेल अछि:

(९) हम किताबकलेल/बास्ते (=*किताब-क-लेल/बास्ते*) आएल छी ।

२. कर्ताइतर उदेश्य

२.१ प्रकार

उपरोक्त सन्दर्भअनुसार नेपाली, हिन्दी आर अन्य अनेक दक्षिण एशियाई भाषासबजकाँ मैथिलीमे सेहो संज्ञाक व्याकरिणक प्रकार्य आर कारकक बीच पूर्ण एकरूपता नहि देखल जाइत अछि। उदाहरणक लेल, कोनो उपवाक्यक उदेश्यसँगे कर्ताइतर कारक विभक्तिक प्रयोग भऽ सकैत अछि। अर्थात् उदेश्य साधारणत: कर्ता कारकमे रहैत अछि किन्तु अन्य कारकीय विभक्तिसँगे सेहो आबि सकैत अछि, जेना :

(१०) अ. सम्प्रदान (dative)

हुनका भूख लगलन्हि ।

हुनका चिठी लिखबाक छलन्हि ।

हुनका दूटा बेटा छन्हि ।

आ. करण (instrumental)
हुनकासँ ई किताब पढ़ल नहि भेलन्हि

इ. सम्वन्ध (genitive)
हुनक पैसा हरा गेलन्हि ।

ई. अधिकरण (locative)
हुनकामे साफे दया नहि छन्हि ।

उ. कर्म वाच्यक उदेश्य (logical subject)
हुनकासँ ई चिठी लिखल गेलन्हि ।

ऊ. कर्म (accusative)
हुनका पिटल गेल ।

२.२ कारकक रूपप्रक्रिया तथा अर्थ

उदाहरण (१० अ-ऊ)सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे कर्ताइतर उदेश्यसँगे विभक्तिसब लागि सकैत अछि। सम्प्रदान, करण, अधिकरण, सम्बन्ध एवं कर्म कारकीय विभक्तिसब लागल युक्ति (arguments) कोनो उपवाक्यक कर्ताइतर उदेश्यक रूपमे प्रयोग भऽ सकैत अछि। ई विभीक्तसब आर एकर आर्थिक विशेषतासभ तालिका १ मे सूचीबद्ध कएल गेल अछि। ई तालिका विधेयकक तार्किक उदेश्यक विभिन्न विभक्तिसब आर तकर आर्थिक प्रभावसँ पारस्परिक सम्बन्ध देखबैत अछि।

तालिका १ : कर्ताइतर उदेश्य आर रूपात्मक कारकीय विभक्ति तथा अर्थ

क्र.सं.	कारक	विभक्ति	अर्थ
१.	कर्ता	-∅	
२.	कर्म	संज्ञा : -∅ (-जीव) -कैँ (+जीव) सर्वनाम : -*रा/का*	अनुभवकर्ता (१०ऊ)
३.	करण	---सँ/द्वारा	अभिकर्ता(१० अ आर उ)
४.	सम्प्रदान	संज्ञा: - *कैँ* सर्वनाम:-*रा/का*	अनुभावक, बाध्यता अथवा अधिकार (१० अ)
५.	अधिकरण	-मे/पर	स्थानपरक वा समयसूचक सम्बन्ध(१० ई)
६.	सम्बन्ध	संज्ञा : *(अ)क* सर्वनाम: *(अ)र* -*(अ) र*	अधिकार (१० इ)

श्रोत: यादव (२००४:२५६)

अन्तर्निहीत कारकक तार्किक उदेश्यक सम्बन्ध ओकर विधेयकक शाब्दिक विशेषताद्वारा निर्धारित भऽ सकैत अछि। एहितरहेँ, विधेयकक अर्थक माध्यमसँ उदेश्य आर ताहिसँगे प्रयुक्त विभक्तिक बीच सम्बन्ध स्थापित कएल जा सकैत अछि। एहिसम्बन्धमे निम्न उदाहारसबपर विचार करू :

(११) हुनका बोखार लगलन्हि ।

उदाहरण (११) मे संज्ञा (बोखार)+ क्रिया (लागब)सँ बनल मिश्रित विधेय जे उदेश्य (*हुनका*)कैँ सम्प्रदान कारक आकर्षित करैत अछि, ताहि उदेश्यकैँ अनुभावक (experiencer) क आर्थिक भूमिका प्रदान करैत अछि[2]। एहितरहेँ, विधेय अन्य सान्दर्भिक आर्थिक सम्बन्ध सेहो स्थापित करैत अछि, जेना

[2] विशेष जानकारीक लेल यादव (१९९६:८२-८४) देखू ।

उदाहरण (१० आ आर १० उ)मे प्रेरक (causee) आर उदाहरण (१०ई) मे स्थानपरक (spatial) वा समयसूचक (temporal) सम्बन्ध निरूपित करैत अछि। उदाहरण (१०ऊ) मे उदेश्यकेँ कर्म विभक्ति ओकर विधेयसँ प्राप्त होइत अछि। परञ्च सम्बन्ध विभक्तियुक्त उदेश्यक आर्थिक सम्बन्ध सम्प्रदान, करण, अधिकरण आर कर्म उदेश्यक समान नहि होइत अछि। ई विधेयकक शाब्दिक विशेषतासँ शासित नहि होइत अछि। एकर बदलामे एहन कारककेँ 'अप्रत्यक्ष गैरआर्थिक कारक' मानल जाइत अछि (मोहनन १९९४:१८१)।

३. कर्ताइतर उदेश्यक वाक्यात्मक लक्षण

एहि खण्डक लक्ष्य ई प्रमाणित करब थिक जे कर्ताइतर संज्ञा केना वाक्यात्मक रूपमे 'उदेश्य'क कार्य करैत अछि। ताहि हेतु एहि संज्ञासबहक वाक्यात्मक लक्षण समापक आर असमापक वाक्य/उपवाक्य दुनूमे निरीक्षण करबाक प्रयास कएल जाएत।

३.१ समापक वाक्य

मैथिली समापक वाक्यमे कर्ताइतर संज्ञाक उदेश्यताक समर्थनमे वाक्यात्मक लक्षणसब पाओल जाइत अछि: अग्र सहसन्दर्भ, सार्वनामिक असहसन्दर्भ, संयोजक संरचनामे रिक्तता, क्रिया-संगति एवं कारक-पदच्युति। एहि लक्षणसबहक विश्लेषण निम्नप्रकारेँ कएल गेल अछि।

३.१.१ अग्र सहसन्दर्भ

अन्य भाषासब सदृश मैथिली वाक्यमे आत्मवाचक सर्वनामक पूर्ववर्ती (antecedent) उदेश्य होइत अछि। ई उदेश्य कर्ता कारकमे मात्रे नहि बल्कि कर्ताइतर कारकमे सेहो भऽ सकैत अछि, यथा:

(१२) अ. हरी$_i$ (कर्ता) अपना$_i$सँ प्रेम करैत अछि।
आ. हरीकेँ$_i$ (कर्म) अपन$_i$घर नहि अछि।
इ. हरीमे$_i$(अधिकरण) अपन$_i$ देशक लेल बहुत भक्ति अछि।
ई. हरि$_i$सँ अपन$_i$काज नहि भऽ सकल।
उ. हरीक$_i$(सम्बन्ध) अपन$_i$घरमे किछु नहि अछि।
ऊ. ओकरा$_i$ (सम्प्रदान) अपने$_i$ कोठरीमे पिटल गेल।[3]

एहितरहेँ ई देखल जाइत अछि जे आत्मवाचक सर्वनामक पूर्तीवर्तीक रूपमे प्रयोग भेल उदेश्य विभिन्न कारकमे भऽ सकैत अछि, यथा कर्ता (१२ अ), सम्प्रदान (१२आ), अधिकरण (१२इ), करण (१२ई) सम्बन्ध (१२उ), आर कर्म (१२ऊ)।

३.१.२ सार्वनामिक असहसन्दर्भ

आत्मवाचक सर्वनामक विपरीत, व्यक्तिगत सर्वनाम कोनो वाक्यमे रहल उदेश्यसँगे सहसन्दर्भ नहि व्यक्त कऽ सकैत अछि, यथा:

(१३) अ. हरीकेँ$_i$ (कर्ता) ओकरासँ$_{*i/j}$ प्यार करैत अछि।
आ. हरीकेँ$_i$ (कर्म) ओकर$_{*i/j}$ घर नहि अछि।
इ. हरीसँ$_i$ मोहनकेँ ओकर$_{*i/j}$ काज नहि करा सकल।
ई. हरीमे$_i$ ()ओकर$_{*i/j}$ देशक लेल बहुत भक्ति अछि।
उ. हरीक$_i$ ()ओकर$_{*i/j}$ घरमे किछु नहि अछि।
ऊ. ओकरा$_i$ ()ओकर$_{*i/j}$ कोठरीमे पिटल गेलै।

३.१.३ संयोजक संरचनामे रिक्तता

---

[3] एहि तथा अन्य उदाहरणसबमे युक्तिसँगे प्रयुक्त समान सूचक ($_{i,i}$) सहसन्दर्भ आर असमान सूचक ($_{i,j}$) असहसन्दर्भ बुझबैत अछि।

संयुक्त वाक्यमे रिक्तक (gapper) आर रिक्त तत्व (gapped element) क रूपमे अनिवार्य रूपसँ समान कारकमे उदेश्यक प्रयोग होइत अछि, यथा:

(१४) अ. हरीकेँ ई घर नीक लागल किन्तु _ दोसर पसन्द नहि भेल ।

आ. *हरीकेँ ई घर नीक लागल आर _ एकरा छोड़ि देलक ।

संयुक्त वाक्यमे उदेश्यक कारकीय एकरूपताक आवश्यकताअनुसार वाक्य (१४अ) केँ ठीक मानल जाइत अछि किएक तँ दुनू उदेश्यक समान कारक अर्थात् कर्म कारक अछि । उएह आवश्यकता वाक्य (१४आ) केँ प्रतिबन्धित करैत अछि किएक तँ दुनू उदेश्य भिन्न कारकमे अछि; अर्थात् उदेश्य *हरी* पहिल उपवाक्यमे कर्म कारकमे आर दोसर उपवाक्यमे कर्ता कारकमे प्रयुक्त भेल अछि ।

ई आवश्यकता अन्य कर्ताइतर उदेश्यक सम्बन्धमे सेहो लागू होइत अछि । एहि सन्दर्भमे निम्न उदाहरणसबपर ध्यान दिअ:

(१५) करण उदेश्य

अ. हरीसँ ई काज नहि भेल किन्तु _प्रयास भेल ।

आ. *हरीसँ ई काज नहि भेल आर_चलि गेल ।

(१६) अधिकरण उदेश्य

अ. हरीमे आत्मविश्वास अछि किन्तु_योग्यता नहि अछि ।

आ. *हरीमे आत्मविश्वास अछि किन्तु_मेहनती नहि अछि ।

(१७) सम्बन्ध उदेश्य

अ. एहि पुस्तकक मूल्य अत्यन्त कम अछि मुदा_बिक्री तइओ बहुत नहि अछि ।

आ. *एहि पुस्तकक मूल्य अत्यन्त कम अछि मुदा_तइओ बहुत नहि बिकाइत अछि ।

(१८) कर्म उदेश्य

अ. हरीकेँ पहिले बान्हल गेल आ पाछू पिटल गेल ।

आ. *हरीकेँ पहिले बान्हल गेल मुदा _पाछु भागि गेल ।

ऊपरक उदाहरणसब (१४-१८)मे (अ) उपवाक्यसब कारकीय एकरूपताक आवश्यकताक आधारपर ठीक अछि मुदा (आ) उपवाक्यसब बेठीक अछि किएक तँ ओकर उदेश्यक कारक (अ) उपवाक्यसबहक उदेश्यक कारकसँ भिन्न अछि ।

३.१.४ क्रिया-संगति

विश्वक भाषासभमे कारक आर क्रिया संगति बीच सामान्यत: अन्तरसम्बन्ध देखल गेल अछि । मुदा मैथिली क्रिया-संगतिक सम्बन्धमे ई आकर्षक बात देखल गेल अछि जे एहि भाषामे कर्ता आर कर्ताइतर क्रिया-संगतिमे द्विचर व्यतिरेक (binary contrast) पाओल जाइत अछि । मैथिलीमे क्रिया संगतिक दू समुच्चय (sets) अछि: कर्ता कारकमे रहल उदेश्यकलेल कर्ता समुच्चय आर कर्ताइतर कारकमे रहल उदेश्यकलेल समुच्चय[4] ।

मैथिली क्रिया-संगतिक कर्ता आर कर्ताइतर समुच्चयक रूपात्मक व्यतिरेक निम्न उदाहरणसबद्वारा देखाओल गेल अछि जाहिमे (अ) वाक्यमे कर्ता उदेश्य आर (आ) वाक्यमे कर्ताइतर उदेश्यक प्रयोग भेल अछि:

[4] जेना यादव (१९९६), बिकेल आर यादव (२०००) एवं अन्य सामग्रीमे विश्लेषण कएल गेल अछि, भारतीय-आर्य भाषासबमे मैथिली क्रिया-संगति एकगोट अत्यन्त जटिल पद्धतिक उदाहरण थिक । कर्ता आर कर्ताइतर उदेश्य मात्रे नहि अपितु वाक्यमे प्रयुक्त अन्य मुख्य युक्ति वा गौण अयुक्ति क्रिया संगतिमे परिलक्षित भऽ सकैत अछि । एहितरहेँ, क्रिया-संगति उदेश्यतासँ मात्रे नहि बल्कि अन्य व्याकरणीय सम्बन्धसब (व्यवहारात्मक तत्वसभ (pragmatic factors) सँ सेहो प्रभावित भऽ सकैत अछि ।

(१९) अ. ओ चिठी पढलथि ।
आ. हुनका चिठी लिखबाक छलन्हि ।

(२०) अ. ओ किताब नहि पढ़लथि ।
आ. हुनकासँ किताब पढ़ल नहि भेलन्हि ।

(२१) अ. ओ कोनो गुण नहि रखैत छथि ।
आ. हुनकामे कोनो गुण नहि छन्हि ।

(२२) अ. ओ पैसा हरौलथि ।
आ. हुनक पैसा हरा गेलन्हि ।

(२३) अ. ओ रामकेँ पिटलथि ।
आ. हुनका पिटल गेलन्हि ।

३.२ असमापक उपवाक्य

३.२.१ कारक पदच्युति

मैथिलीक असमापक आर कृदन्तपरक उपवाक्य (participial clause) मे स्पष्ट कर्ता कारकयुक्त उदेश्यक प्रयोग बन्देज अछि। एकर बदलामे उदेश्यक कारक सम्बन्ध अथवा कर्म कारकमे अवनत भऽ जाइत अछि, यथा:

(२४) अ. [[*राम लिखल] चिठी]
आ. [[रामक लिखल] चिठी]

एहि उदेश्य कर्म कारकमे अछि तँ एहिमे कोनो कारक पदच्युति नहि होइत अछि; बल्कि कारकमे कोनो परिवर्तन नहि अबैत अछि, यथा:

(२५) [[रामकेँ नीक लागल] चीज (बिकेल आर यादव, २००० : ३५२)

अकालिक पूरक उपवाक्यमे उदेश्य कर्म कारकमे अवनत भऽ जाइत अछि, यथा:

(२६) अ. * [राम एहन काज करब] उचित नहि थिक ।
आ. [रामकेँ एहेन काज करब] उचित नहि थिक ।

ई शर्त मैथिली पूर्वकालिक उपवाक्य (converb clause) मे सेहो लागू होइत अछि, यथा:

(२७) अ. * [हरी घर आबि कऽ] हम प्रसन्न भेलौंह ।
आ. * [हरीकेँ घर आबि कऽ] हम प्रसन्न भेलौंह ।

कारक पदच्युतिक ई पद्धति प्रयोजनीय उपवाक्य (purposive clause) मे सेहो कार्यान्वित होइत अछि। एहि सम्बन्धभे निम्न उदाहरणसवपर विचार करू :

(२८) अ. * [हरी सुतबाकलेल] हम विछाउन छोड़ि देलौंह ।
आ. [हरीकेँ सुतबाकलेल] हम विछाउन छोड़ि देलौंह ।

निष्कर्ष

संक्षेपमे, मैथिलीमे पाँच प्रकारक कर्ताइतर उदेश्य होइत अछि: सम्प्रदान, करण, अधिकरण, सम्बन्ध आर मानवेतर कर्म । ई उदेश्यसबमे विभिन्न रूपात्मक कारकीय विभक्तिसब लगैत अछि जे (सम्बन्ध कारकक अतिरिक्त) प्रयुक्त विधेयक शाब्दिक अन्तरनिहीत आर्थिक लक्षणद्वारा निर्धारित होइत अछि। कर्ताइतर उदेश्यक मुख्य वाक्यात्मक लक्षणसब ई अछि:

(क) कर्ता उदेश्यसदृश, मैथिली वाक्य अथवा उपवाक्यक कर्ताइतर उदेश्य आत्मवाची सर्वनामसँगे सहसान्दर्भिक किन्तु व्यक्तिवाचक सर्वनामसँगे असहसान्दर्भिक होइत अछि।

(ख) संयुक्त वाक्यक दुनू उदेश्य: रिक्तक एवं रिक्त तत्वक बीच कारकीय एकरूपता होइत अछि।

(ग) असमापिक आर पूर्वकालिक संरचनामे प्रयुक्त स्पष्ट कर्ता उदेश्य सम्बन्ध अथवा कर्म कारकमे अवनत भऽ जाइत अछि ।

ई लक्षणसब मैथिली भाषामे मात्रे सीमित नहि अछि अपितु अनेक अन्य भाषासबमे सेहो पाओल जाइत अछि । एकर दक्षिण एशियाई भाषासहित कतिपय भाषासबमे उदेश्यताक अन्वेषण कारबाकलेल लक्षणक रूपमे प्रयोग कएल जाइत अछि (कच्रु १९७०, कच्रु आर अन्य १९७६, वर्मा (सं) १९७६, मोहनन १९९४, तथा बिकेल आर यादव २०००) । निष्कर्षमे, ई निबन्ध एहि तथ्यक समर्थन करैत अछि जे कर्ताइतर उदेश्यक विशेषताक सन्दर्भमे मैथिली दक्षिण एशियाई भाषासदृश देखल जाइत अछि ।

सन्दर्भसूची

- Bickel, B.; Bisang, W.; Yadava, Y. P. 1999. "Face vs. empathy: the social foundation of Maithili verb agreement. *Linguistics* 37.481–518.
- Bickel, B.; Yadava, Y. P. 2000. "A fresh look at grammatical relations in Indo-Aryan". *Lingua* 110.343–73.
- Kachru, Y.; Kachru, B. B.; Bhatia, T. K.1976. "The notion ‘subject’: a note on Hindi-Urdu, Kashmiri, and Punjabi". In M. K. Verma (ed.), 79–109.
- Kachru, Y.1970. "The syntax of *ko*-sentences in Hindi-Urdu". *Papers in Linguistics*, 2.2: 299–316.
- Keenan, E.1975. "Towards a universal definition of subject". In C. N. Li (ed.) *Subject and topic*. New York: Academic Press.
- Mohanan, T.1994. *Argument structure in Hindi.* Stanford, CA CSLI.
- Verma, M. K. ed. 1976. *The notion of subject in South Asian languages*. Madison, WI: South Asian Studies Publications, University of Wisconsin.
- Yadav, R.1996. *A reference grammar of Maithili*, Berlin and New yoyk : Mouton de Gruyter.
- Yadava, Y. P.1992. "Anaphoric relations in Maithili, Nepali, and English: a crosslinguistic study". *Nepalese Linguistics* 9.11–23.
- Yadava, Y. P.1996. "Verb agreement in Maithili." *Journal of Nepalese Studies* 1.109–21.
- Yadava, Y. P.1998. *Issues in Maithili syntax*. Munchen: Lincom Europa.

ꔷ ꔷ ꔷ

पेन्डुलम

२ अयोध्यानाथ चौधरी

मोबाइलक अलार्म चेहा उठल। एकरा आवाजकेँ 'लो' कऽ पडभूतैक। सवदिन ई बात सोचैत छी, मुदा अनकापर आधारित व्यक्तिक इएह हाल होइत छैक। भोरमे सोचैत छी, दिनमे कखनो बालककेँ कहि कऽ एहि छोटछिन समस्यासँ मुक्त भऽ जाएव। परन्तु हमर बालक सुतले जे छथि। प्रातः ६ बजैत हेतैक। आश्वस्त होएबाक वास्ते मोवाइलमे तकवाक नहि प्रयोजन। 'फिक्स' जे कए देल गेल छैक। दिन विति जाइत छैक। आवाज कम करएवला बात विसरा जाइत अछि। जाडक पहाडसन राति सेहो कटि जाइत अछि। फेर उएह चेहावउवला अलार्म। जाड एहिवेर किछु वेसिए बुझाइत छैक। हमरा होइए मोनक भ्रम अछि। पुस-माघमे अदौसँ एहिना जाडऽ होइत आविरहल छैक । लोक भूतके विसरबाक आदी जे भऽ गेल अछि। अन्यमनस्क भावे उठिजाइत छी। टहल' विदा होइत छी। बहुत उत्साहसँ नहि। जाडमे गरम सीरक छोडऽबला वात एकटा तपस्यासन छैक। ताहूमे बूढकेँ। गलत बात। जवानके नहि ? बच्चाके नहि ? तखन तऽ स्वास्थ्यक चिन्ता बनल रहैत अछि। डरे टहलैत छी। कहियोकाल आलस्यक विजय भऽ जाइत छैक। सीरक नहि उठऽ दैत अछि। ओकरा सिनेहमे आर वेशी लटपटा जाइत छी। अमृतम् शिशिरे वज्नि, अमृतम् प्रियदर्शनम, अमृतम् राजसम्मानम्, अमृतम् क्षीरभोजनम्। गरम-गरम, नरम, मोलायम सीरकपर प्रायः कोनो श्लोक नै।

ओ निछच्छ बताह सेहो नहि अछि जे लोककेँ उपद्रव करैत अछि । मुदा ओकर आकृतिसँ हमरा डर होव लगैत अछि । तए हम ओकरादिसि कनडेरिए तकैत छी । सहानुभूति आ भयमिश्रित भाव । ओ जेना मुस्कारहल हो । ओकर इएह मुस्की त भयक उत्पत्ति करैछ ।

आव झटकारि कऽ टहलैत छी। 'ब्रिश्क वाकिङ्ग' वेशी फैदा करैत छैक। रोडपर सव रङ्गक लोक आविचुकल छथि। युवा-युवती, प्रौढ- प्रौढा। बूढा-बूढीक संख्या न्यून। एखन सवारी-साधन कम परिचालित अछि। तथापि रोडक दुर्दशाक चल्ते एहनो अहल भोरे यदा-कदा वातावरण धूलमय बनिजाइत अछि आ लोक रुमालसँ नाक बन्द करवाक हेतु बाध्य। दिनक तऽ बाते नहि।

जड आ स्पन्दनहीन भेल विभिन्न शिक्षण-संस्था, होटल, कार्यालय-भवन एवं अन्य दोकानसब पार करैत हम ओइ जगहलग आविजाइत छी जतऽ हमर पएर स्वतः स्थिर भऽ जाइत अछि। हमर कथाक एक मात्र मुख्य पात्रकेँ हम देखिरहल छी। पशु कार्यालयक मुख्य द्वारलग सडकक कातमे ओ विद्यमान अछि। पता नहि ओ कखन चलि अबैत अछि। कतवो अन्हरोखे एहि वाटे गुजरवाकाल ओ एहिठाम रहिते अछि। ओकरा आगाँमे कोनो कपडा नहि पसारल रहैत छैक, जाहिठाम लोक दयावश एकटा वा दूटा रुपैयाक सिक्का फेकि दैत छैक। अर्थात ओ भीख माङ्गऽवला तऽ नहिएटा

अछि। ओ निछच्छ बताह सेहो नहि अछि जे लोककेँ उपद्रव करैत अछि। मुदा ओकर आकृतिसँ हमरा डर होवऽ लगैत अछि। तए हम ओकरादिसि कनडेरिए तकैत छी। सहानुभूति आ भयमिश्रित भाव। ओ जेना मुस्कारहल हो। ओकर इएह मुस्की तऽ भयक उत्पत्ति करैछ। एकनिञा मुस्कान। ओहिकालमे फुल्ला भेल ओकर दहिना आँखि कनेक नाम पसरि जाइत छैक आ वायाँ आँखि यथावत सिकुड़ले रहि जाइत छैक। वर्षोसँ धूल खाइत ओकर केश आ दाढ़ी लट्टा भेल ठाढ रहैछ। नाकक जौं केन्द्रविन्दु मानल जाए तऽ दहिना आँखि कोनो घडीक बडका सुई आ बामा आँखि छोटका सुई बुझाइत छैक। चुक्कीमाली भेल वैसल ओ एकटा बड़का देवाल घडी तऽ अछिए। एतेक बड़का घड़ी विश्वमे प्रायः कतौ नहि बनल हेतैक। कतेक शहरक टावरमे जड़ान कएलगेल विभिन्न आकारक बड़का-बड़का घड़ी तऽ हम स्वयं देखने छी। मुदा एहन नहि। ओ निरन्तर मूड़ीकेँ झटकैत रहैए, एकटा खिचाएल सीमाधरि। पेण्डुलम जकाँ। दुनू सुई सबदिन भोर, दुपहर वा साँझ दश वाजि कऽ दश मिनट बजवैत रहैत छैक। केहनो जाड वा गर्मीमे एकटा फैल खाकीक हाफ-पैन्ट आ बटम नहि लागल 'लूज' सर्ट पहिरने रहैत अछि। ओकर सम्पूर्ण शरीर जखन चलायमान रहैत छैक तऽ पैन्ट-सर्ट कोना ने चलायमान रहौक। एतेक वात मुआयना करवामे हमरा एक मिनटसँ वेशी नहि लगैत हएत। कारण हम तऽ टहलैत रहैत छी। खाली ओतबाकाल पएरक गति स्वतः मन्द भऽ जाइत अछि। ओ अदृश्य भेलाक वाद हमर पएर टहलऽवला स्वाभाविक गति पकड़ि लैछ। मुदा मोन ओहि रहस्यमय व्यक्तित्वक इर्दगिर्द वैसल रहिजाइत अछि।

कदमचौकपर मन्दिरमे स्थापित पंचमुखी भगवानदिसि स्वतः मुडी निहुरि जाइत अछि- 'हे भगवान ! एहन-एहन लोकक जन्म देवाक कोन आवश्यकता अहाँके बुझाएल ! एकर पाछाँ कोनो अभिष्ठ तऽ जरुर हए !' नील रङ्गक पोशाकमे सुसज्जित एकटा ट्राफिक पुलिसकेँ देख ओकर खाकी पैन्ट मोन परिगेल जे भारतमे. एखनो सव दर्जाक पुलिस लगवैत अछि। पहिने अपनो देशमे उएह खाकी लगाओल जाइत छलैक जे एकाएक भयक सृजना करैत छल। पहिने लोक पुलिससँ फटकी, दूरी बनाकऽ रहऽ चाहैत छल। नेतालोकनि नजरि पड़िते कोनो चोर गलीमे घुसि जाइत छलाह। अदभुत आतंक पसरल रहैत छलैक ओइ राजमे।

भानुचौक विना कोनो प्रतिमाक वड उदासीन लगैत अछि। सरकार अनुकूल परिस्थिति किएक नहि पैदा कऽ रहल अछि। २१ फरवरी कऽ अर्न्तराष्ट्रिय मातृभाषा दिवसक अवसरपर प्रज्ञा-प्रतिष्ठानमे आयोजित कार्यक्रममे कुलपति स्वनामधन्य बैरागी कांइला राजधानीमे विद्यापतिक प्रतिमा लगाओल जाएबला वात बाजि मधेशी श्रोताकेँ कृत-कृत्य कऽ देलनि। एहिना विगत कोनो वर्ष राजधानिएमे आयोजित अर्न्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनमे तत्कालीन प्रधानमन्त्री एवं प्रमुख अतिथि विद्यापतिक प्रतिमा स्थापनाक सम्वन्धमे ठोकुवा उद्घोष कएने रहथि। जे ...... से ...... एकरे राजनीति कहल जाइत छैक आ राजनीतिक भाषणबाजी एहिना चलैत रहैछ।

जनक चौक आबिगेल। एहिठाम चलिते-चलिते काज चलऽवला नहि। देवता त्रय जे छथि। रुकै पडत। पहिने पश्चिममुहें घूमि राजा जनककेँ प्रार्थना करैत पुछना गेल, कि अहूक राजमे, ओहू युगमे सेहो सजीव भेल निर्जीव-सन कोनो लोक ओहिना पेण्डुलम जकाँ डोलैत रहैत छलैक। पुनः दक्षिण घूमि दोमहलापर विराजमान शंकरजी के पुछलियनि, 'कहियाधरि ओ एहिना मूडी झटकैत रहनैक ?

अवधि नहि पुरलैक अछि की ?' तदनन्तर यथास्थान नीचा आँखि झुका हनुमानजीसँ प्रार्थना कएना गेल, 'सञ्जीवनीसन कोनो औषधि वा जडी-वूटी खुआ ओकरा मतिके स्थिर कऽ दिऔक सरकार !'

रामचौकपर सुन्दर टावरक निर्माण भऽ रहल अछि। हमसभ गर्व करव जे हमरोसभक शहरमे टावर अछि आब ! आ पेण्डुलमवला बडका घडी तऽ लगवे करतैक एहिमे। मुदा से स्मरण होइत मोन फेर उचटि कऽ पशु कार्यालयक वेढव वनल गेटपर चलिगेल जतऽ ओ कालजयी निःशव्द भेल डोलिरहल हएत। सुखाएल कोनो पातसन। पता नहि ओकरा जीवनमे कोनो इच्छा आ आकांक्षा छैक कि नहि।

आगाँ बढैत छी। क्षेत्रिय प्रहरी कार्यालय सामने अवस्थित नेपाल राष्ट्र वैंक। ओहि परिसरमे अवस्थित गेष्ट हाउस। एहि शहरक सर्वाधिक सुरक्षित जगह। एहिठाम राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपतिसँ लऽ तमाम विशिष्ट श्रेणीक व्यक्तित्व मात्र ठहरैत छथि। हिनकासभक आतिथ्यपर कएल जाइत भारी खर्चक एकटा छोट अंश डोलायमान, सुस्त मनस्थितिक व्यक्तिपर खर्च कएल जाइत त... । मुदा ओलोकनि ओकरा सबकेँ देखि कोना नजरि फेरि लैत छथि जेना हम अहाँ कोनो दूर्गन्धयुक्त कचरा वा गन्दा देखि कऽ।

विद्यापति चौक। पता नहि कहियातक मुरलीचौकसँ सम्बोधित होइत रहत। विद्यापतिक सँन्दर प्रतिमाक अछैतो लोकक ठोरपर आदतन मुरली चौक, सएह आबिजाइत अछि। ठीक ओहिना, जेना गणतन्त्र नेपालक नेता लोकनिद्वारा प्रजातांत्रिक व्यवहार करबाक वदलामे विशुद्ध पंचायती शैलीमे काज कएल जाइत अछि। संविधान लेखनक वदलामे संविधानक म्याद थप कोना हएत ताही गुथ्थीके सुलझवैत रहैत छथि। देश कतौ जाओ !

राजर्षि जनक क्याम्पसलग गेलाक ठीक पाँच मिनट पश्चात हम अपन डेरा पहूँचि जाइत छी। जीवनभरि डेरामे रहैत-रहैत हमरो आदतन अपन नवनिर्मित्त घरके डेरे कहा जाइत अछि। आइ पता नहि किएक, ओ चुक्की माली भऽ वैसल डोलायमान निर्जीव 'ग्रैन्ड फादर क्लौक' हमरा बहुत वेशी व्यथित कऽ देने अछि। आइ चायमे कोनो स्वाद नहि बुझा रहल अछि। हम फेर उठि कऽ ओम्हरे टहलऽ निकलि जाइत छी। आइ ओकरा वहुत पाछाँसँ अनुशरण करैत हम पता लगाबऽ चाहैत छी जे ओ खाइतो अछि कि नहि, ओ कोनो खोपरीमे घुसि जाइत अछि आ कम सडके ओकर जीवन छैक, ओ बौक अछि कि किछु वजितो अछि .... आदि-इत्यादि।

f f f

डायग्नोसिस

२ धर्मेन्द्र विह्वल

रातिक करिब दू बाजिरहल छल। अस्पतालक एक कोठली। निस्पट्ट कारी राति। सब चूपचाप। सब निद्रादेवीक शरणमे। दूर-दूरधरि झिंगुरक आवाज सुनाइ दऽ रहल छल। अस्पताल आ झिंगुर, कनेक असामान्य तऽ बुझारहल छलैक। मुदा ई सत्य छलैक।

आई हमरा बहुत निन्द लागल छल। आनदिनसँ बेसी। दिनभरिक खटन-पटन! परिश्रमसँ हरान! शारीरिक परिश्रम तऽ कि होइतए? कुनु बोझ तऽ नहिएँ उठौने छलियैक। उएह सामान्य काजसब! ओ डाक्टरकेँ बजा! फलनाकेँ ताक! बिमारीक सेवा कर! दवाई किनब, आनब आ बिमारीकेँ खोआएब! ब्लडप्रेसर देखब! नाडीक गति कते छैक, देखब, आदि-आदि काजसब! एना फडिछा कऽ देखल जाए तँ ई सब कोनो पैघ आ श्रमसाध्य काज नहि बुझाएत। कठीन काज कएलसन नहि लागत। मुदा काज तँ काजे होइ छैक ने। ओहो जिम्मेवारीपूर्ण काज!

हमरा आब हुनक रोगक बारेमे बुझल भ गेल छलए। हम बुढाको कहलियनि- ...काका,आहा निश्चिन्त रहू। आहाक रोगक विषयमे हम सबकिछु बुझिगेलौ। चलू आब गामेदिसि। आहाक उपचार आब ओतहि हएत। काकी अवश्य औतीह।

मानसिक दबाव सदा बनल रहऽबला काज! आन तऽ कि कहत, एतबए ने जे खाली बिमारलग बैसल रहैए! मुदा बिमारीसँग रहिकऽ ओकर मानसिकतासँग जीवाक अभ्यास कऽकऽ बिमारीसँग सटल रहब कतेक मानसिक पीडा दैत अछि, आन तऽ ओकर अनुमान मात्र लगा सकैत अछि! जे भोगने रहैए आ भोगैत अछि उएह अकर व्याख्या कऽ सकैत अछि। अनुभव उएह व्यक्त कऽ सकैत अछि। दिन तँ कहुना बितिजाइत छैक। चारुकात अन्य व्यक्तिक जमघट! दिनभरि डाक्टर, नर्स आ अस्पतालक भाँति-भाँतिक कर्मचारीसभ सेहो रहैत अछि। विभिन्न बेडपर सुतल बिमार आ ओकरासभसँग समय कटैत हमरासन घनेरो लोक! कौखन भला-पुछारी, हँसी-मजाक, कनफुस्की आ रङ्ग-बिरङ्गी गप-शप! मन बहलेबाक विभिन्न बहाना आ माध्यम। इहो कहल जा सकैए जे बिमारक ओगरवाहसभ अपनाकेँ व्यस्त रखबाक उपाय इएह आ एहने गतिविधिकेँ बनबैत अछि। एहुठाम इएहसब छलैक। बिमारक कोनो काज करबाकाल शायद ओगरवाहसभमे अपन बिमारकेँ कष्टसँ मुक्ति भेटौक, जल्दी नीक भऽजाउक आ अस्पतालक जिम्मेवारीसँ मुक्ति भेटिजाए से कामना रहैत छैक। एहिमे बिमारसँ बेसी ओकर अपन स्वार्थ रहैत छैक।

ओगरवाहसभ जतऽधरि सम्भव होइत छैक, बिमारक सेवा करबामे पाछाँ नहि रहैत अछि। कखनोकाल बिमारक कष्ट देखि, स्वयं ओ कष्ट लऽली सेहो सोचैत अछि ओगरवाहसभ। मुदा

बिमारक सँग रहि अपन मृत्युधरिक बात सोचब ओगरवाहसभक लेल अपवादे भऽ सकैत अछि। अपवाद तँ अपवादे होइत छैक । हमरा बुझने अस्पतालक अवस्था आपसी प्रेम आ स्नेहक मापन सेहो करैत अछि । सान्निध्य आ समपर्णक कोणकेँ सेहो देखैत अछि- मनक कोनो क्षेत्र ।

ई आ एहने आदि-इत्यादी बातसब मनमे खेलबैत आ दिनभरिक झन्झटिक कारण आई जल्दिए सुतल छलौं हम । सुतल कि रही, ओछाओनपर ओघंडाइते अनायास ओंघागेल रही । अस्पतालक एकटा कोठरीक छ टा बेडमध्य कोनक एकटा बेडपर छलाह हमर विमार व्यक्ति । विगत सात दिनसँ हुनकर ओगरवाही करबाक जिम्मेवारी हमरापर छल । नव ठाम, नव परिवेश । आब तँ हमहुँ एतहुका पुरानमध्य कहाए लागल छलौं । कोठलीक अन्य बेडपर रहल आन विमार आ ओकरासभक ओगरवाहसभकेँ सेहो हम आब चिन्हऽ लागल छलियैक । एकप्रकारे अपनत्वक भावनाक विकास भऽगेल छल हमरालोकनिक बीच । सातदिन पहिने एहि कोठलीक विषयमे हमरा बहुत बातक जानकरी नहि रहए । मुदा आई एहि कोठलीमे सातम राति ब्यतीत भऽ रहल छल हमर । एहिबीच भौतिक रूपमे कोठलीक स्वरूपमे कोनो परिवर्तन नहि भेलै । लोकक उपस्थिति सेहो ओहने रहए । उएह रूप ! उएह रङ्ग आ उएह आकृति ! एहि कोठरीमे आबऽ-जाएबला लोकक पदचाप आ मुखाकृतिमे हमरा एहि सातदिनमे कोने परिवर्तनक अनुभूति नहि भेल रहए । हँ, एकटा बात, एहि कोठलीमे आबऽबला लोकमे बहुत बातक समानता हम अनुभव केने रहीं । ओसभ भोजन लऽअबैत छल आ चलिजाइत छल । अपन-अपन विमारक बेडसँग सटिकऽ निचा जमीनपर तयार कएल ओछाओनपर बैसि कनेकाल गप करब सभक दिनचर्या बनिगेल छलैक ! कखनोकाल हँसिओ-ठिठोली होइत छलै मुदा नजरि बचाइए कऽ । ताकि ओकरासभक बात आ व्यवहारक जानकारी बिमारकेँ नहि होउक । ई अलग बात छल जे ओकरासभक सब हर्कत बिमार लोक बुझितहुँ नहि बुझलसन करैत छल । अपनाकेँ नियन्त्रित राखब बिमारक बाध्यता जे छल ।

अचानक हमर विमार अपन बेडपर उठि बैसिरहलाह । ओ हमरा बजौलनि -'बौआ, पेसाब करब ।' शायद ओ हमरा दू-तीनबेर बजौने रहथि । हम उठिकऽ बेडतर राखल पेसाबदानी हुनक सहुलियतअनुसार राखि देलियनि । किछुकालक बाद ओ पुनः कहलनि-'बौआ,भऽगेल ।' हम पेसाबदानीकेँ बाथरुममे लऽजा पेसाब फेँकि अपन स्थानपर घुरि एलौं । पेसाबदानीकेँ बेडतर राखि अपन बेडपर पसरि रहलौं ।

निद्रा तँ टूटिएगेल छल । घडीदिसि नजरि पडल, रातिक दू बजिरहल छल । आब निन्द पडबाक कोनो सम्भावने नहि । ओछाओनपर पडि करोट इम्हर ओम्हर करबाक अतिरिक्त आन कोनो विकल्प नहि छल । हमर मन-मस्तिष्कमे किछु बात खेलाए लागल । जिन्दगी इएह छैक । आई अपेक्षाकृत ओगरवाहसभक एबा-जेबाक क्रम कम भेलसन लागल रहए हमरा । लोक ठीके पैघ कलाकार अछि । हम अनेकोबेर ई अनुभव केने रही जे लोक, खास कऽ ओगरवाहसभ एहि कोठलीमे आबऽसँ पहिने बड प्रसन्न देखाइ दैत छल । ओसभ हँसी-मजाक कऽरहल बातक साक्षी हम स्वयं छी । नहि बुझल, ओकरासभक मोनमे कि खेलाइत रहैत छलैक । मुदा कोठलीमे अबितहिँ आ बेडलग ठाढ होइतकाल एना लगैत छलैक जेना ओकरासभसन दुःखी एहि संसारमे आन केओ नहि छैक । ओकरासभसन शुभचिन्तक एहि धरापर ओ विमारसभक आर केओ नहि छैक । मुदा आश्चर्य, बेडलगसँ घुरि कोठलीक केबाडलग अबैत-अबैत ओगरवाहसभक भाव-भङ्गिमामे पूर्णतः परिवर्तन आबिगेल रहैत छलैक ।

-'बौआ अहुँकेँ निन्द नहि भेल ?' हमर बिमार हमरा पुछलनि ।

-'नहि, ठीके छै, आई खुब सुतलौं, अखने निन्द टूटिगेल, तएँ...।'

-'कि कहू, बिमार हम छी मुदा दुःख आहाँ भोगिरहल छी, आई कतेक दिन भेल आहाँकेँ एतऽ एला ?'

-'एना किए बजैत छी, लोके ने लोकक काज अबैत छैक, कि नहि ? अखन तँ हमरा साते दिन भेलए एतऽ एला ।'

-'सात दिन भऽ गेल नहि ? मनोहर तँ घुरिओ कऽ नहि एलाह ।'

-'मनोहरकेँ कोनो काज पडिगेल हेतैन, ओहिमे फँसिगेल हएत । काज पूरा भऽ गेलापर लौटिए आएत कि ।'

मनोहर अर्थात हमर विमारक एकमात्र पुत्र । मनोहर हमर मित्र । मनोहरक बाबु आई पन्ध्रदिनसँ अस्पतालमे भर्ना छथि आ इएह कोठरीमे रहिकऽ उपचार करारहल छथि । मनोहर किछुदिन पूर्व अपन पिताक रोगक विषयमे हमरा कहने रहए । हम किछु स्नेह आ किछु औपचारिकतावश मनोहरकेँ कहने रहियैक-'चिन्ता नहि कर, यदि काज पडए वा सहयोगक आवश्यकता अनुभव होउक तँ निधोक कहिएँ । हमहुँ तऽ हुनकर पुत्रेसन छी ने ।'

मनोहरक बाबु करिब दू-तीन महिनासँ विमार रहै छलखिन । घरेमे राखि उपचार भऽरहल छलनि । अस्पताल एला तऽ मात्र पन्द्रह दिन भेल रहनि । अस्पतालमे हुनक रोगक डायग्नोसिस नहि भऽ पाबिरहल छलनि । चेहरापर निराशाका रेखा गहीँर होइतसन लगैत छलनि, मुदा जीवाक उत्कण्ठा हुनकामे एखनो अनुभव कएल जा सकैत छल ।

ओ हमरा फेर सम्बोधन कएलनि-'बौआ मनोहर किए नहि एलाह ? हुनका किछु भेलनि तऽ नहि ?'

हम कहलियनि-'नहि ओहन कोनो बात नहि हेतैक । हँ, मुदा आब तऽ ओकर फोनो नहि लगैत छैक ।'

हुनकर स्वभाविक प्रश्न-'किए ? एना तऽ पहिने कहिओ नहि भेल छल ।'

हम हुनका आश्वस्त बनेबाक प्रयास करैत कहलियनि-'कखनोकाल एना भऽ जाइत छैक । टेलिफोन आ मोबाइलक नेटवर्क खराब रहैत छैक ।'

-' मुदा एसएमएस तऽ काज करै छै ने, एसएमएस किए ने करैत छियैन, करियौ ने ।'

मुदा हम हुनका कोना कहियनि जे एसएमएस तऽ जा रहल छैक लेकिन मनोहर जबाफ नहि दऽ रहल अछि आ फोन तऽ उठेबो नहि करैए ।

हमरा आश्चर्य लागिरहल छल । मनोहरक एहन व्यवहार हमरालेल नितान्त नव आ अनपेक्षित छल । ओ आ हम कलेजमे नीक मित्र छलौं । आइएसँ एमएधरि हमरालोकनि सहपाठी रहलौं । एकहि कोठलीमे रहिकऽ हमसभ कलेजक दिन कट्ने छलौं । हमरा दृष्टिकोणमे ओ अत्यन्त आदर आ सम्मानक पात्र अछि । ओ सहयोगी आ सहृदयी अछि । मुदा ई कि ? आइ सातदिन भऽ गेल ओकर कोनो अता-पता नहि छैक । ने फोन, ने एसएमएस आ ने कोनो सम्पर्क ? हमरा वुझाएल- आदमीक दू टा रूप होइत छैक । जे देखाइत छैक, शायद ओ सत्य नहिओ भऽ सकैत छैक आ जे सत्य होइत

छैक शायद ओ नहिओ देखाई दऽ सकैत छैक । बेडपर सुतल बुढा हमरा फेर बजौलनि-'बौआ, आहाँ मनोहरक विषयमे अन्यथा विचार नहि निर्माण करब ।' हमरा आश्चर्य लागल, हम मनोहरेक बारेमे सोचिरहल छी से ओ कोना बुझलनि ? 'बौआ, हम बाप छीं, हमरा विश्वास अछि मनोहरपर, ओ कदापि अकर्मण्य नहि छथि । मुदा एकटा बातक आश्चर्य अवश्य लागिरहल अछि जे ओ एखनधरि एला ने किएक ?'

हम किछु नहि बाजि चुपे रहलौं । बुढा फेर बजलाह-'मनोहरकैं हमर मोनक बात बुझल छनि, हम जीवऽ चाहैत छी । हुनका बुझल छनि जे हमर रोग कोनो दवाईसँ नीक नहि भऽ सकैए ।'

बूढाक बातसँ हम असीम आश्चर्यमे पडि गेलौं । आखिर बुढा कहि कि रहल छथि-मनोहरकैं सब बात बुझल छैकं............ , हम जीवऽ चाहैत छी.........., दवाईसँ रोग नीक नहि हएत...। हमरा हुनकर बातप्रति अभिरुची जागऽ लागल छल । मनमे एक प्रकारक जिज्ञासा आ कौतुहलताक जन्म भेल छल । हम बुढाक बात बुझबाक प्रयास करऽ लगलौं ।

मनोहरक बाबुक वयस करिब सत्तरि होबाक चाही । कलेजमे पढवाकाल मनोहरकसँग ओकर गाम हम अनेकबेर गेल छी । बुढासँ बातचीत होइत छल । हमर अध्ययनमे, ओ आनसँ खासकऽ अपन समवयीसँ किछु पृथक आ विशेष रहथि । क्रिकेटक लाइभ कमेन्ट्री बुढाकें खुब नीक लगैत छलनि । ओ सिनेमाक सहो सौखिन रहथि । एकवेरक बात अछि- हम मनोहरक सँग ओकर गाम गेल रही । कोनो एक सन्दर्भमे ओ हमरा पुछने रहथि-'बौआ, आहाँ सिनेमा देखैत छी ?' हम कहने रहियनि-'देखैत छी, मुदा कहिओकाल मात्र ।'

-'केहन सिनेमा नीक लगैए ?'

हम उत्तर देलियनि-'सामाजिक विषय-वस्तुक सिनेमा, जाहिमे कोनो सन्देश होइक आ गीत-सङ्गीत नीक होइक । जँ समय भेटल तँ एहन सिनेमा कहिओकाल देखि लैत छी ।'

हमर उत्तर शायद हुनका पसिन्न नहि पडलनि । हुनकर नाक घोकैच गेलसन हमरा बुझाएल छल । ओ कहलनि-'आहाँसँग मनोहरो देखै छथि कि ?' हम कहलियनि-'हँ, हमसभ सँगहि देखैत छलौं ।'

-'नीक करैत छी ।'

ओ फेर बजलाह-'हमहुं सिनेमा देखैत छी । मुदा हमर इच्छा आ चाहना किछु पृथक अछि, आहाँसभसन नहि ।'

ओ बजैत जा रहल छलाह-'हमरा तँ कने मारि-पिट, कने रोमान्स होबाक चाही आ हिरो-हिरोइन पवित्र, देखैत नयन जुराए ।' बुढाक बात सुनि हम कने संशयमे पडि गेलौ । ओ कहिरहल छला-'हमर पसन्द मनोहरकैं बुझल छनि ।'

ओ जोड दैत कहिरहल छलाह-'सिनेमा तऽ मनोरञ्जनक खातिर देखैए लोक, ओहन सिनेमा किए देखब जाहिसँ मानसिक तनाव बढबाक काज होइक ? रहल बात सामाजिक सन्देशक तऽ आहाँ-हमर समाज आ परिवारे ओकरालेल पर्याप्त नहि अछि ?' ओ बरबरेबाक शैलीमे बजैत जा रहल छलाह-'आजुक युवा वर्गक समस्ये इएह अछि कि ओसभ अपन समयसँग नहि चलि पाबिरहल अछि। हमरसभसन लोक ई नव पुस्तकैं कहिआधरि सँग दऽ सकैत छी ?'

बुढाक बेडसँगहि सटल हम अपन ओछाओनपर उठि कऽ बेसि रहलौं । बुढा बेडेपरसँ पुछलनि-'बौआ, किए उठलौं ?' हम कहलियनि-'नहि, कोनो खास बात नहि, ओहिना ।'

बुढा अनायासे एकटा प्रसङ्गक चर्चा केलनि-'बौआ, आहाँ तँ हमर गाम बहुतोबेर गेल छी ।' हम 'हँ'मे मुडी हिलेलौं । 'आहाँ मनोहरक माएकेँ देखने छियनि ?'-ओ हमरा पुछने छला । ई बात करवाकाल हुनकर दुनू आँखि कोठलीक छत ताकिरहल हम अनुभव केने रही । हुनकर ई प्रश्न हमरालेल अनपेक्षित छल । हमरालग एकर स्पष्ट जबाबो नहि छल । मनोहरक घरमे अनेक महिलाकेँ हम देखने छलियैक । ओहिमध्य ओकर माए के रहथिन ? हम नहि बुझलियै कहिओ । मनोहरो कहिओ अपन माएसँ परिचय नहि करौलक । हम माएसँ भेट करा दे कहि बहुतोबेर कहबो केलियै मुदा प्रत्येकबेर ओ विभिन्न बहाना बना हमर बातकेँ किनारा लगा दैत छलए ।

बुढाक ई प्रश्न सुनलाक बाद हम एहि सन्दर्भकेँ मनोहरद्वारा कहल गेल बातसबसँ तारतम्य मिलेबाक प्रयत्न करऽ लगलौं । हम प्रत्यक्षतः बुढाकेँ कहलियनि-'हँ, गामक बात कने-कने स्मरण अछि हमरा । अपनेक घरमे अवरजात रहए हमर । ओतऽ बहुतो महिलाक बात हमरा मोन पडैए । किछु धुमिल चित्र अछि सभक, मुदा काकी (मनोहरक माए)क विषयमे किछु नहि कहि सकैत छी । हमरा जतऽधरि स्मरण अछि हुनकासँ कहिओ भेट नहि भेल ।'

बुढाक जबाब छलनि-'आहाँ हुनका देखनहि नहि छियनि तँ मोन कि पडतीह ?'

-'से कोना ?'

-'मनोहर पैघ होइत गेल आ हुनक माए हमरासँ दूर होइत गेलीह । बहुत दिन भऽगेल ओ हमरालग नहि छथि । अखन ओ एकटा आश्रममे रहै छथि । मनोहर ई बात जनैत छथि ।'

-'मुदा, मनोहर तँ एहिसम्बन्धमे हमरासँ कहिओ किछु बात नहि केलक ।'

-'ओ केना कहितए जे ओकर माए महन्थक सेवा करै छथि । सा...महन्थ ।' हुनकर मुहसँ अनायासे गारि बहराए लगलनि । क्रोधित अनुहार आक्रोश अभिव्यक्ति कऽरहल छल । किछुकालक बाद शान्त होइत ओ बजलाह-'एहिमे मनोहरक माएक कानो दोष नहि छनि ।' एहन लागिरहल छल कि बुढाक मन स्नेहसँ अह्लाद्धित भऽरहल होइन ।

'ई समाजमे ककर विश्वास कएल जा सकैए ? महन्थ तँ धर्माधिकारीक प्रतीक होइ अछि । मुदा ओकर कारण यदि ककरो घर उजडि जाइत अछि तँ तकर दोष ककरा देल जाए ? हमरा या आहाँकेँ ? आहाँसभ सिनेमामे सामाजिक सन्देशक बात करैत छी । हमरासभ ठाम किए एखनधरि केओ एहन सामाजिक विषयपर सिनेमा नहि बनौलकए ?'

ओहिखन हम प्रत्यक्षतः किछु बाजि सकबाक अवस्थामे नहि छलौं । मनमे अनेक प्रकारक बातसब खेलारहल छलए । बुढाक मनक लावा बाहर निकलिचुकल छलनि । ओ नमहर-नमहर स्वाँस लऽ रहल छलाह ।

हमरा बुझबामे कोनो कठिनाई नहि भेल जे ओ तनावमे छथि । ओछाओनसँ उठैत हम कहलियनि-'आहाँ विमार छी, एना तनाव नहि लिअऽ, रोग आर बढत ।'

ओ किछु नहि बजलाह । ओ एकटक हमरादिसि ताकऽ लगलाह । लागल, हुनकर आँखिमे एकप्रकारक रिक्तता छनि । एकटा प्रतीक्षा छनि ककरो आ हुनकर आँखि किछु ताकिरहल अछि ।

हमरा गुनधुनी पकडि लेने छल। बापके अपन बेटाक प्रति अगाध प्रेम,बेटाके बापक रोग बुझितो अस्पतालमे नहि अएनाइ, रहि रहि क आंखि ककरो प्रतिक्षामे केबार दिश उठब..आखिर की छैक रहस्य।

हमरा रहल नहि भेल। हम मोबाइल ल क बुढासं कनेक दूर जा फेरसं मनोहरकें फोन करैत छी..। एहिबेर ओ उठबैत अछि। हम पहिने लोहछले बातकहिनी कहि दैत छिऐक ....की इएह होइत छैक एकटा बेटाक कर्त्तव्य। बाप एत्त बेटा बेटा बरैत छौ आ तों कतौ मौज करैत घुमैत छें।

ओ हमर प्रश्नक उत्तर देबाक बदला प्रति प्रश्न करैत अछि....अच्छा कह, डा. विमारी पत्ता लगौलकौ ?

नहि, ओकरा एखन तक किछु बुझबामे नहि आबि रहल छैक।....हम स्पष्ट क दैत छिऐ।

ओकरा बुझहुमे नहि अओतैक। हम हुनक विमारी कुझैत छिऐन तएं इलाजक ब्योंतमे लागल छी। हुनक इलाज अस्पतालमे नहि घरेमे हएतनि। हम जल्दीए आबि रहल छी। आ फोन काटि दैत अछि।

हमरा लागल जे आब हमहुँ बात बुझऽ लगलियै। आब हम बहुत बातक अनुमान कऽ सकैत छलौं। डाक्टर कोनो डायग्नोसिस केने होउक वा नहि...? मुदा हम हुनकर डायग्नोसिस करबामे अपनाकेँ सक्षम बुझऽ लागल छलौं। हमरा आब हुनक रोगक बारेमे बुझल भऽगेल छलए। हम बुढाकेँ कहलियनि-'काका,आहाँ निश्चिन्त रहू। आहाँक रोगक विषयमे हम सबकिछु बुझिगेलौं। चलू आब गामेदिसि। आहाँक उपचार आब ओत्तहि हएत। काकी अवश्य औतीह।'

f f f

दूगोट कविता

२ रा.ना. सुधाकर

दर्पण

नहिं फूटल..
आ चनकिगेल ओ दर्पण
अखनो सिहरा दैत अछि हमरा
अपन घोकचल छाँह
लहु-लोहान... वर्तमान जीवनक सड़ल गीत
व्यवस्थाक वानर-वाँट
भाय...बहिन...ओ बाप ओ स्त्री...आ
विभाजित अंश एकठाम नहिं भऽ सकत एकत्र आब...
कोनो सीमामे बान्हब अछि असम्भव ।
छटपटा रहल अछि
अपन शोणीत...अपन स्वर...ध्वनि आ रङ्ग
भरि देबऽ चाहैत छी
समग्र पृथ्वी आ नक्षत्रमे
घरसँ भागल वुद्ध...
क्राँसपर लटकल इशा...
आ बनवासी रामकेँ...
व्यग्र प्रतीक्षा छैक धरतीकेँ विस्फोट होएबाक जे
कवच... थकिआयल मोन...हत्यारा धूरा
प्रत्येक वस्तु-जात...सब किछुके
बदलि दैक स्थान आ क्रम ।

बन्दी प्रत्यक्षीकरण

आदमी स्वयंसँ भागैत अछि,
समयसँ नहि भागि पबैत अछि ओ
ओकरा इतिहास बना दैत छैक समय...
सोन-पिँजरा
माटिक हाथे कऽ दैत अछि नीलाम
आ अन्तरक शीलालेख
जन्मसँ मरणधरिक लेखा-जोखा
करैत अछि उजागर ।
साँचे समयसँ नहिं भागि पाएब मीत
ओहि अगिमे सुक्खल आ काँच दुनू जरैत अछि
एक रङ्ग ! एक समान !!
जिनगी, बुढापा...अनुभव आ सपना...वर्तमान आ समग्र ।
छोड़ू ई फरिछौट आ देखू
कतेक आगू भागिआएल छी स्वयंसँ ।
विस्फोट...धमाका...गली...सडक...चौबटिया आ डायरी
भऽ गेल अछि नाँगट आ नपुंसक
आदमी स्वयंसँ भागिजाइत अछि मुदा, नहिं बकसै छै समय
शीलालेखक एक-एक अक्षर बनैत अछि हथकड़ी आ,
करैत अछि एक दिन
बन्दी प्रत्यक्षीकरण !

f f f

नराशंशी

२ गजेन्द्र ठाकुर

१

कोड़बाह ठाढ़ टिक्करक नीचाँमे
हल-महल कऽ कूटि-माटि
सिलोहक बनल मुरूत ई मनुक्ख
छोलगढ़ियाक गुलाबी पाक
एहिबेर नहि जानि किएक रहल कचकुआह
आ बीतल कएक दिन, छठिहारी छठम दिन
कविक कविताक छन्दक रससँ उगडुम करैत
आ डराएल विश्वदेव जे पद्यक रस जे झझाएत तँ
पसरि जाएत सगर विश्वमे गायत्री नाराशंसीक सँग
से ओ
कविक कविताकेँ छन्दक रसमे राखि दैत छथि
वलि दऽ दैत छथि
कविक कविताक छन्दक रसक वलि
आ गबैत छथि नाराशंसी ।
आ आकांक्षाक अग्नि
पृथ्वीसँ द्युलोकदिस जाइत
माता पृथ्वीक हृदयक आगि
द्यौ पिताश्री पृथ्वीक पुत्र वा भाए
आलोकदीस ई नीलवर्णक आकाश
अरणिमन्थनसँ प्रकाशित ई पृथ्वी ।

२

कर्कश बजरी सूगाक स्वर
ओतऽ धारक पलारलग
आ टूटा धारक हहाइत मोनियारक
भसिआएल खेबाह कहुना निकलिगेल मुदा
आगाँ बढ़िते जक, बढ़ब आ कि धँसब
झाँखीक झझिया करत सुरक्षित हमर गाम
दाह-बाह आएल, किएक ई
एकार्णवा, दह, जलामय, कनबहकेँ झाँपि

खेधा-पौटी नाहक माडीपर बैसि
खसबैत बसेर जाल आ हम दोसर माडीपर बैसि खेबैत छी
ओहि जालकेँ, दिशा निर्दिष्ट भऽ
कन्हेर करैत
जालक चारूकात ठकठकिया करैत
अनैत माछकेँ जालदिसि
टुस्सा, सारिलबला काठक तँ गाछी विलुप्त
वबुरबन्ना बनल ओहि पारक खेत, कमलाक रेत
बदहा पहिरने लोक, आ ई गाछ-वृक्ष
ठाढ़ मुदा हरियरी, जेना दु:खी पीड़ित
टुस्साक निकलब, जेना आगमन कोनो अभागक
चारूकात पसरल कमलाक रेत, आ ताहिबीच टुस्सा निकलब
मुदा संकेत प्राय: कोनो आसक ।
आ तखने ध्वनि
मधुर स्वरबला करार सूगाक
कण्ठलग लाल दागीबला अमृत भेला सूगाक
स्वर अबैत बनि नाराशंशी ।

३

गायत्री बनिगेल चिड़ै आ बिदा भेल गन्धर्व-लोक
अनबालेल सोमरस
ओहि रसमे उगडुम करैत हमर कविता
नहि बुझल अछि व्याकरण छन्द
त्रयोदशीकेँ व्याघ्र केलक हत्या पाणिनिक
त्रयोदशीकेँ देलक शिक्षा हमरा ?
जखन व्याकरणाचार्य बन्न केने छथि,
बन्न अछि त्रयोदशी तिथिकेँ व्याकरणक पठन-पाठन
व्याकरणाचार्य नहि पढ़ैत छथि, नहि पढ़बैत छथि ओहि दिन व्याकरण
आ त्रयोदशी तिथिकेँ अबैत छल गायत्री चिड़ै बनल
त्रयोदशीकेँ के देलक शिक्षा हमरा
चिड़ै बनल गायत्री देलक हमरा शिक्षा गबैत नाराशंसी ।

f f f

कविता

२ विनीत ठाकुर

ऐना कँ की मोल आन्हरकँ शहरमे ।
भेल उन्टा मुँह सुन्टा अपने नजैरमे ॥
ज्ञानक सूरमा लगाकऽ जे बजवैए गाल ।
व्यवहारमे देखल ओकरो उहे ताल ॥

मोन भितरकँ दर्पण सेहो चूर-चूर ।
एतऽ सँ मानवता भागल अछि कोशो दूर ॥
घुमे दिनमे लुटेरा ओढ़ि सज्जनकँ खोल ॥
कतहुँ देखल मृत्यु कतहुँ बाजे ढ़ोल ।

जे समाज सुधारक ओ करैए किशुनकेर ।
ओकरे पाछु मुसना कहवैए सवाशेर ॥
जाधरि नहि हाएत मोनसँ मद्यपानक नाश ।
करत लोक कोनाकऽ विनीत भावक आश ॥

काठमाडू, नेपाल

f f f

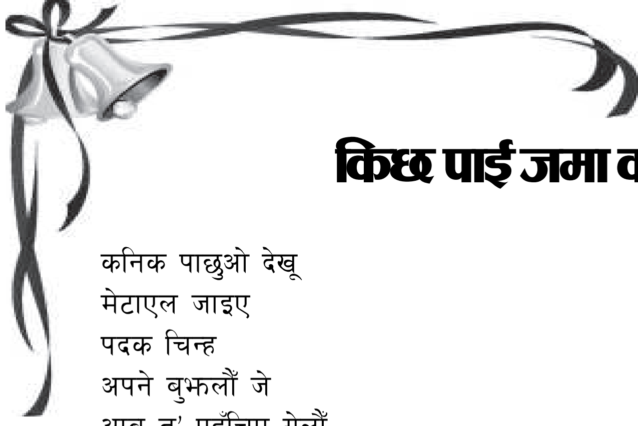
गजल

२ कुमार अभिनन्दन

साथी कठिन अछि निरबाहब ई जिनगी
जेना तेना जोडि तोडि उगाहब ई जिनगी
विशवासे जं टुटि गेल त आहत करेज ल
कत्त कत्त रने बने अबगाहब ई जिनगी ।

हाथक रेखा पर ने करी हम विसवास कहियो
कर्मक विसातपर अजमायब ई जिनगी
कठिन क्षणक यात्राक सहयात्री छलहुँ प्रिय
सोचि सोचि सएह भरमाएब ई जिनगी ।
मनि लेब नहि छी प्रेमक हकदार भ्रमर
मारि लेब मोन कतेक बौआएब ई जिनगी ॥

f f f



किछु पाई जमा क' लेलौ

२ रामप्रसाद साह

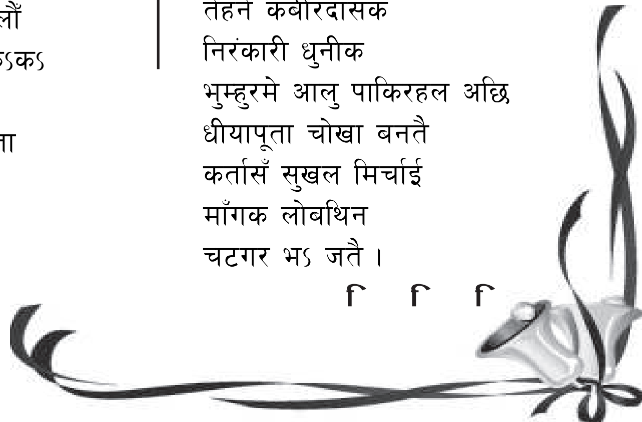
कनिक पाछुओ देखू
मेटाएल जाइए
पदक चिन्ह
अपने बुझलौं जे
आब त' पहुँचिए गेलौं
ठामपर
अहाँ कि बुझलौं ?
हम पढ़ि लेलौ
महापण्डित भऽ गेलौं
पलटि कऽ देखू
अङ्गेजियत जरूरे पहुँचादेत
चन्द्रमादिसि
माने छुटि गेलै असलियत
छुटि गेलै पुर्खाक जमीन
संस्कार-संस्कृति,

ओ पहुँचलै चन्द्रमादिसि माने
आपन जमीन नहि विसरल
माने हमरा लोकनि दू अक्षर
पढ़ि कऽ दू:ख देलौं सन्तनकैं
बुझै छी पहुँचि गेलौं
हम त कहब अहाँसँ
जतऽ अहाँक पहुँचऽके चाही
हँ ! किछु पाई जमा कऽ लेलौं
भाषा-संस्कृतिक लिलामी कऽकऽ

पाथर बनल छै अहाँक देवता
ने बाजन
ने सुनब
समानान्तरक बात कहैछी
विश्वामित्रजकाँ
नहि
किछु छोटे लकीर खिचलक
कनि बराबरे खिचैत
बड़का खिंचबाक मोन नहि नै मानलक
सोचबाक चाहीँ
सेहो नैहि भेल

मिथिलाक भुल्हाक खोरनाठी
अखन निझुआएल नहि अछि
अखनो धुँवाएले अछि
तेहने कबीरदासक
निरंकारी धुनीक
भुम्हुरमे आलु पाकिरहल अछि
धीयापूता चोखा बनतै
कर्तासँ सुखल मिर्चाई
माँगक लोबथिन
चटगर भऽ जतै ।

f f f



नेपाली, मधेशी ओ मैथिली

✍ डा. विद्यानाथ झा 'विदित'

कौटित्यक अर्थशास्त्र, समुद्रगुप्तक प्रयाग-प्रशस्ति एवं चीनीयात्री ह्वेनसाङ्गक यात्रा वृत्तान्तमे जाहि नेपाल राज्यक प्रयोग कएलगेल अछि से नेपाल, स्वयम्भूद्वारा स्वत: रक्षित विलक्षण देश थिक। 'ने' क अर्थ होइछ स्वयम्भू आ 'पाल'क अर्थ होइछ रक्षक।

भारत आ नेपालक बीच मिथिलाक स्थिति तँ एकटा एहन नैसर्गिक राजदूत सदृश अछि जकर सहायतासँ अदौसँ दुनू देशक भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक गहन आदान-प्रदान होइतरहल अछि। मिथिलाक मैथिली आ नेपालीक मधेशीक तँ सपनो बुझू सब दिनसँ सझिए रहल अछि। पर्वतक उपरी प्रदेशमे रहबाक कारणे नेपालकेँ अधित्यका आ तकरा समीपमे रहबाक कारणेँ मिथिलाकेँ उपत्यका कहल जाइत रहल। उपत्यका द्रेरासन्ना, भूमिरूर्ध्वमधित्यका।

जहाँधरि मैथिली आ मधेशीक सम्बन्ध अछि दुनूक विकासक इतिहास एकहि थिक। कहिओ एहनो समय छल जहिया मैथिली स्वयं देशभाषा कहबैत छल। १८०९-१०मे बुकाननद्वारा भागलपुर-पूर्णियाक जे प्रसिद्ध प्रतिवेदन समर्पित कएलगेल छल ओहिमे ओ मैथिलीक बदला 'देशभाषा ऑफ मैथिल्स'क उल्लेख कएने छलाह। तँ मधेश अथवा मधेशीपर उपरौंझ नहि कऽ मैथिली आ मधेशीक अन्योनश्रित एकता आ सामञ्जस्येपर विचार करबाक चाही। पूर्वमे हिमालयसँ दक्षिण आ विन्ध्याचलसँ उत्तरक समस्त क्षेत्र मध्यदेश कहबैत छल।

> त्रेता युगनीन सीरध्वज जनक आ हुनक राजधानी जनकपुरक इतिहास ता जगतप्रसिद्ध अछिए। पछिला एगारह सय वर्षक इतिहास सेहो मिथिला आ नेपालक प्रगाढ़ सम्बन्धक साक्षी रहल अछि।

हिमबद्विन्ध्ययोर्मध्यं त्प्राग्विनशनादपि
प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेश: प्रकीर्ति: ॥

मिथिलाकेँ नेपालसँ सामाजिक, सांस्कृतिक राजनैतिक आ साहित्यिक एहिसब क्षेत्रमे आत्मिक सम्बन्ध रहल अछि। सामाजिक क्षेत्रमे यदि उभय पक्षक लोक परस्पर सम्बन्धी बनबाक आ सौजन्यक निर्वाह करबाक अभ्यासी रहलाह तँ सांस्कृतिक क्षेत्रमे मिथिलाकसँग नेपाल सर्वदा एकटा सन्दर्भ-भूमिक भूमिकाक निर्वाह कएलक। नेपालक ओ जिलासब जकरा हेतु ***"मिथिला-कोच-भोजपुर-मधेश"*** नामक प्रदेश प्रस्तावित अछि, ओहिमे झापा, मोरंग, सुनसरी, सप्तरी, सिरहा, धनुषा, महोत्तरी गौर एवं बारा सम्मिलित अछि, ई सोचबाक विषय थिक जे यदि मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहाससँ मोरंगक विराटनगर, सप्तरीक राजविराज सिरहाक सलहेस बाड़ी तथा धनुषाक जनकपुरधामकेँ हटा देल जाए तँ मिथिलाक इतिहासक स्वरूप केहन हएत ? तहिना महाकवि विद्यापति जाहि ***पशुपति भामिनी*** गोसाउनिक ध्यान करैत हुनकासँ सहज-सुमतिक वरदान मङ्गलनि अथवा मिथिलाक प्रत्येक कन्यालोकनि जाहि "साते भवतु सुप्रीता"क वन्दना करैत पशुपतिक नित्य स्मरण करैत छथि, से पशुपति तँ एतहि पशुपतिनाथक रूपमे विराजित छथि। एतबए नहि जहिना नेपालमे विक्रमसम्वत आ लक्ष्मण सम्वतक प्रधानता रहल तहिना मिथिलामे अद्यावधि प्रचलित अछि।

त्रेता युगनीन सीरध्वज जनक आ हुनक राजधानी जनकपुरक इतिहास तँ जगतप्रसिद्ध अछिए। पछिला एगारह सय वर्षक इतिहास सेहो मिथिला आ नेपालक प्रगाढ़ सम्बन्धक साक्षी रहल अछि। १०९७ मे कर्णाटवंशक राजा नान्यदेव अपन राजधानी सिमरांवगढ़केँ बनौलनि। १३२४ मे हरिसिंहदेव,

जिनका समयमे मिथिलाक पञ्जीप्रबन्ध तैयार भेल, मिथिलासँ पाटनक निकट आबि अपन निवास बनौलनि। १३८० सँ १३९४क बीच जयस्थिति मल्लक राज्यकालमे भूमि, भवन एवं जातिक सम्बन्धमे धर्मशास्त्रीय व्यवस्था देबाक हेतु मिथिलासँ अनेक विद्वान बजाओल गेल रहथि जाहिमे कीर्तिनाथ उपाध्याय, रघुनाथ झा, श्रनिाथ भट्ट, महिनाथ भट्ट तथा रमानाथ झा सम्मिलित रहथि। १५२७ मे मिथिलापर दिल्ली सुल्तानक आक्रमणसँ प्रभावित भऽ मिथिलाक अनेक विद्वान नेपालक शरण लेलनि। ओहि समयमे सभकेँ प्राय: समान सुविधा नहि भेटबाक कारणेँ एकटा कहबी प्रसिद्ध भेल जे **"जाएब नेपाल मुदा कपार तँ सँगहि रहत"**। ई कहंबी आइधरि जन-कण्ठमे प्रचलित अछि। १६१८-१६३३ धरि जगज्योर्तिमल्लक शासनकालमे हुनका राजदरबारमे वंशमणि झा सन मैथिल विद्वान रहथि। हुनकहि समयमे सङ्गीत, नृत्य, गीतनाट्य आ नाटक चरम उत्कर्ष प्राप्त कएलक। भातगांव, पाटन आ काठमाण्डू ई तीनू नेवारी ओ मिथिला नाटकक प्रधान केन्द्र बनल छल।

जहाँधरि भारत आ नेपालक साहित्यिक सम्बन्धक प्रश्न अछि, एक शब्दमे तकरा प्रगाढ़े कहल जा सकैत अछि। दुनू देशक साहित्यिक सम्बन्धकेँ दू प्रकारक सन्दर्भमे देखब उचित हएत। पहिल मैथिली आ नेपालीक बीचक सम्बन्ध आ दोसर दुनू देशक मैथिलीक बीचक सम्बन्ध। जहाँधरि मैथिली आ नेपालीक सम्बन्धक प्रश्न अछि से बड्ड पुरान अछि।

मिथिलामे एकटा कहबी अछि -

दुनू कात भानू।
अपन जग्ग ठानू॥

यद्यपि ई सूर्यक उत्तरायण-दक्षिणायनसँ सम्बन्धित एकटा ज्योतिषीय वचन थिक परन्तु एकर एकटा गूढ़ार्थ सेहो अछि।

मैथिलीक उत्तर आ दक्षिण दुनूदिस भानू छथि अर्थात् उत्तरमे भानुभक्त आ भानुदत्त छथि आ दक्षिणदिस भानु सिंह ठाकुर छथि अत: हमरा लोकनिकेँ मैथिलीक उत्थानक हेतु अपन प्रयत्नरूपी यज्ञ करबाक चाही। हमरालोकनि जनैत छी जे नेपालक एक कवि भानुभक्त अध्यात्म रामायणक नेपाली अनुवाद कएने छलाह। तँ दोसर भानुभक्त हितोपदेश मित्रलाभक नेपाली अनुवाद कएने छलाह। तहिना बङ्गालक कवीन्द्र-रवीन्द्र भानुसिंह ठाकुरक नामसँ विद्यापतिक गीतक अनुशरण करैत भानुसिंह ठाकुरेर पदावलीक रचना कएलनि। एहिप्रकारेँ नेपालमे यदि सीताक आशा पसरलनि तँ बङ्गालमे हुनक भाषा।

जहिना नेपाली १९३२ सँ पूर्व गोरखाली कहबैत छल तहिना मैथिली पहिने तिरहुतिया कहैबत छल।

जहिना मैथिलीक कथा साहित्यक विकास संस्कृत आ प्राकृत आ अपभ्रंशक आख्यानसँ प्रेरित भेल तहिना नेपालीयोमे। जहिना आधुनिक नेपाली कथा साहित्यसँ पहिने नेपालीमे स्वस्थानी व्रतकथा, वीर सिक्का, लाल हीरा, अचम्मका बच्चाको कथा, हातिमताइको कथा, गुलबाकावली, सुनको स्त्रीरानीको कथा, जैमिनी बालुन, पंचक-प्रपंच, तीजको कथा तथा मच्छिन्द्रनाथको कथा आदि बहुत लोकप्रिय सिद्ध भेल तहिना मैथिलीमे सेहो अनेक व्रत-पर्व कथा एवं आख्यानक अनुवादे पहिने लोकप्रिय भेल छल।

ई एकटा विचित्र संयोग छल जे जाहि अवधिमे मैथिलीमे हरिमोहन झाक उपन्यास 'कन्यादान' लिखलगेल ओहि समयमे नेपालीमे लाहुरेक देवीक बलि आ रुद्रराज पाण्डेक उपन्यास 'रूपमती' प्रकाशित भेल। एहिसब रचनासँ मैथिली आ नेपालीमे नवीन रचनात्मक तरङ्ग उत्पन्न भेल।

जहिना नेपालीक पत्र-पत्रिकाक इतिहासमे गोरखा भारत जीवन (वनारस) उपन्यास तरंगिनी, सुधा सागर, गोरखा-पत्र (काठमाण्डू) खबर कागत (दार्जिलिङ्ग) एवं चन्द्रिकाक महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि तहिना नेपालक मैथिलीक विकासमे विभिन्न क्षेत्रसँ प्रकाशित बालमित्र, जागरण, फूलपात, गामघर, सलहेसवाणी, साप्ताहिक मिथिला, मिथिला डाट काम तथा भूमिजाक महत्वपूर्ण सहयोग रहल अछि।

जहाँधरि मैथिली आ नेपालक सम्बन्ध अछि, इतिहास, लिपि एवं भाषा एहि तीनू क्षेत्रमे नेपालक योगदान स्तुत्य अछि। यदि १९०७ मे हरप्रसाद शास्त्रीकेँ नेपाल राज लाइब्रेरीसँ बौद्धगान ओ दोहा,

(जकर प्रकाशन १९१७मे बङ्गाली साहित्य परिषदद्वारा भेल) नहि भेटल रहितनि अथवा १९५७ मे काठमाण्डूक वीर पुस्तकालयमे डा. जयकांत मिश्रकेँ ज्योतिरीश्वरक भगवच्चरित नहि भेटल रहितनि तँ ने तँ बौद्धगान ओ दोहा मैथिलीक प्रारम्भिक आ ने मैथिली नाटकक इतिहास ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम (१३म शताब्दी) सँ प्रारम्भ भऽ सकितए । ततबए नहि, संकटक समयमे रानी लखिमा आ महाकवि विद्यापति नेपालेमे शरण लेने रहथि । इतिहास साक्षी अछि जे विद्यापतिक पदावलीक सबसँ पहिल पाण्डुलिपि सेहो नेपालसँ प्राप्त भेल छल ।

जाहि मिथिलाक्षरकेँ मिथिलाक संस्कृति, साहित्य आ भाषा प्राचीनता तथा सभ्यताक सुरक्षा कवच अथवा अप्रति दूर्ग मानल जाइत अछि, ओहिमे लिखीत ग्रन्थक भण्डारण एवं संरक्षण औखन जेना नेपालमे उपलब्ध अछि तेना अन्यत्र कतहु नहि अछि । आइयो नेपालक मैथिली लेखकमे एक्के पोथीमे नागरी आ मिथिलाक्षर दुनूक प्रयोगक परिपाटी चलिरहल अछि जे मिथिलहुमे नहि अछि । मिथिलाक्षर मिथिला आ नेपाल दुनू क्षेत्रक कालदर्पण थिक परन्तु लोक एकरा बिसरिरहल अछि । भारतक एकटा संस्कृत विश्वविद्यालय एहि वर्खसँ 'डिप्लोमा इन मिथिलाक्षर' पाठ्यक्रम प्रारम्भ कएलक अछि, मिथिलाक्षरक प्रचार-प्रसार भेने भारतक मिथिलाक्षेत्र ओ नेपाल दुनूक साहित्यिक क्षेत्रमे एकटा विलक्षण चमत्कार देखाइ पड़त ।

जहाँधरि नेपालक मैथिली साहित्यक प्रश्न अछि, कवि-लेखक, पत्र-पत्रिका साहित्यिक सङ्गठन एवं इलेक्ट्रोनिक मीडियाक चतुर्भुजी प्रयत्नसँ मैथिली दिनानुदिन अपन असार-पसार बढ़ौने जा रहल अछि । नेपालक मैथिली रचनाकारलोकनिक सूची बड़ पैघ अछि ओहिमे स्व. सुन्दर झा शास्त्री, रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', डा. पशुपतिनाथ झा, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, रेवतीमरण लाल, डा. रामावतार यादव, जनानन्द मिश्र, डा. योगेन्द्र यादव, उमेश कुमार 'ललन',अयोध्यानाथ झा, राजेश्वर नेपाली, संतोषकुमार मिश्र, रूपा झा, करूणा झा, धर्मेन्द्र विह्वल एवं विनीत ठाकुर आदि प्रमुख छथि । मैथिलीसँ सम्बन्धित साहित्यिक सांस्कृतिक सङ्गठनक रूपमे विराटनगरक मैथिली सेवा समिति, राजविराजक नेपाल मैथिल समाज, जनकपुरधामक मिथिला नाट्यकला परिषद्, जनकपुरक रामानन्द युवा क्लब तथा काठमाण्डूक विद्यापति कला केन्द्र प्रमुख अछि । तहिना इलेक्ट्रोनिक मीडियाक क्षेत्रमे जनकपुर एफ.एम. कान्तिपुर एफ.एम. रेडियो मिथिला, रेडियो जनकपुर, सलहेस चैनेल एवं सौभाग्य मिथिलाक नेपाल चैप्टर दिनानुदिन अपन लोकप्रियता बढ़ा रहल अछि ।

ई संतोषक बात थिक जे मिथिलाक आ नेपाल दुनू ठाम मैथिलीक विकास-विस्तार हेतु रचनाकारलोकनि प्रयासरत छथि । परन्तु अनुसन्धान ओ अनुवादक वर्तमान युगमे हमरालोकनिकेँ औखन बहुत काज करबाक अछि । नेपालीक समस्त उत्कृष्ट कृतिकेँ मैथिलीमे अनुवाद करब तथा मैथिलीक समस्त उत्कष्ट कृतिकेँ नेपालीमे अनुवाद करब ई हमरालोकनिक अनिवार्य कर्तव्य थीक ।

सङ्गहि नेपालक विभिन्न पुस्तकालयमे अथवा अन्यत्रो उपलब्ध मिथिलाक्षरमे लिखीत अजस्त्र पाण्डुलिपिक सम्बन्धमे सेहो धैर्यपूर्वक अनुसन्धान करब आवश्यक अछि । भारतक साहित्य अकादेमी ओ नेपालक प्रज्ञा-प्रतिष्ठान दुनू मीलि कऽ एकर व्यापक योजना बना सकैत अछि । हमरा विश्वास अछि जे भारत आ नेपालकबीच साहित्यिक विनिमयक ई प्रयत्न विद्यापतिक शब्दमे ***मधुहु-मधुविशेष*** सिद्ध हएत ।

नेपाल सरकारद्वारा जे एक कोटि टाकाक विद्यापति पुरस्कार वीथिक स्थापनाक निर्णय लेल गेल अछि, तदर्थ समस्त मैथिली भाषी दिसिसँ नेपाल सरकारक प्रति हम आभार व्यक्त करैत छी । परन्तु एकरासँगहि एहि अवसरपर विनम्रतापूर्वक हम किछु निवेदनो करऽ चाहैत छी जे नेपाल सरकार जानकी नवमीकेँ राष्ट्रीय पर्व घोषित करए, राजर्षि जनकक नामपर एकटा विश्वविद्यालयक स्थापना करए, जानकी मन्दिरकेँ विश्व-विरासतक रूपमे घोषित करए तथा मिथिला आ नेपालक महिलालोकनिक परम्परागत हस्त शिल्पकेँ प्रोत्साहित करबाक हेतु एकटा उपयुक्त हस्तशिल्प समन्वय संस्थानक स्थापना करए ।

f f f

आधुनिक नेपालीय मैथिली साहित्यक काल-विभाजन आ अवधारणा

२ अतुलेश्वर झा

विषय प्रवेश :

साहित्यक काल-विभाजनक सैद्धान्तिक विषयमे कहलगेल अछि जे साहित्य मूलत: भाषाक अध्ययनद्वारा जीवनक अभिव्यक्ति थिक। कोनो साहित्यक मध्य ओहि स्थल विशेषकसँग जन-समाजक चित्त-वृत्ति प्रतिविम्बित होइत अछि। परिवर्तनशील एहि विश्वमे हमरालोकनिक समाज सेहो सर्वथा परिवर्तनशील अछि। अत: समाजसँ सम्बन्धित रहबाक कारणेँ साहित्यकेँ सेहो ओकरा उत्पन्न तथा प्रभावित कर्‍वाली परिस्थितिसँ सम्बद्ध कइए क्‍ देख्‍ पड़ैत अछि। ओ परिस्थिति सामाजिक हो, राजनैतिक हो वा सांस्कृतिक, संसारक राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक जीवन प्रतिक्षण परिवर्तित होइत रहैत अछि, आ सामूहिक चेतनाक एहि परिवर्तनक सँग-सँग साहित्यकारक दृष्टिकोणमे सेहो परिवर्तन आवश्यक भ्‍ जाइछ। इएह कारण थिक जे कोनो समान विषयसापेक्ष साहित्य विभिन्न कालमध्य विभिन्न रूप ग्रहण करैत सर्वसमक्ष होइत रहल अछि। प्रत्येक कालक अपन भिन्न भावना एवं भिन्न अभिव्यञ्जना शैली होइछ। साहितियक धारमे काल एवं परिस्थिति प्रभावसँ अनेक मोड़ अबैतरहल अछि। भावना एवं शैली दुनू दृष्टिएँ कोनो साहित्यिक इतिहासक प्रत्येक परिवर्तन क्रियाक विवरण थिक। कोनो साहित्यक इतिहास तथ्यत: अपन व्यापक रूपमे एहि परिवर्तनशील क्रियाक विवरण थिक। अत: कोनो साहित्यक सम्यक अध्ययनहेतु ओकर इतिहासक काल-विभाजन प्रयोजनीय भ्‍ जाइछ।

> **कोनो कालविशेषक नामकरण कोनो प्रतिभाशाली साहित्यकारक नामपर कएल जाइछ। मैथिली साहित्यमे विद्यापतिक नामपर काल विशेषक नामकरण कएल गेल अछि।**

काल-विभाजन प्रसङ्ग किछु आधारभूत सिद्धान्त सामान्यत: कार्य करैछ -

(१) जाहिकालमे जाहि विशेष ढङ्गक रचनाक विशेषता रहैछ, प्रचूरता रहैछ, ओहिकालक नामकरण ओहि रचनाक आधारपर कएल जाइछ।

(२) जाहिकालमे जाहि प्रवृतिक प्राबल्य रहैछ ओहि आधारपर नामकरण करबाक सेहो परिपाटी देखल जा सकैछ।

(३) कोनो कालविशेषक नामकरण कोनो प्रतिभाशाली साहित्यकारक नामपर कएल जाइछ। मैथिली साहित्यमे विद्यापतिक नामपर काल विशेषक नामकरण कएल गेल अछि।

(४) कखनहुँ-कखनहुँ शासकहुक नामपर कालकेर विभाजन देखबामे अबैछ। यथा-मैथिली साहित्यमे मध्यकालीन नाटकमध्य नेपालमे भेल विकासक्रमक नामकरण मल्लराजालोकनिक नामपर कएल गेल अछि।

एहितरहेँ आधुनिक नेपालीय मैथिली साहित्यक काल-विभाजन एकटा विषय बनि उपस्थित होइछ, जकरा स्पष्ट करब अत्यन्त आवश्यक अछि। एहि प्रसङ्ग विभिन्न चिन्तकलोकनि अपन-अपन मत आ दृष्टिकोण रखबाक प्रयास कएलनि अछि। जाहि दृष्टिकोणक माध्यमे काव्य-परम्पराक

विकास, कथा साहित्यक विकास आ आधुनिक नेपालक मैथिल स्वरूपक दशा-दिशा आदि विन्दूसबपर विचार करब हमर कर्तव्य अछि। अतएब एहि उद्धृत प्रसङ्गकेँ सोझाँ राखि आ तार्किक विवेचन कएलाउपरान्त एकटा मुख्य विन्दूपर पहुँचल जा सकैत अछि।

अवधारणा आ दृष्टिकोण :-

नेपालीय मैथिली साहित्यक इतिहासकार प्रो. प्रफुल्लकुमार सिंह 'मौन' अपन पोथी -'आधुनिक नेपालक मैथिली साहित्य'मे लिखने छथि - हमरा दृष्टिएँ नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्यक आरम्भ नवजागरणसँ मानल जएबाक चाही, जकरा मूलमे प्रो. नवोनाथ झा केन्द्रित छथि। निष्कर्षत: नेपालक मैथिलीमे आधुनिकताक आरम्भ बीसवीं सदीक छठम दशक (1951-60 ई.) भेल, जकर एकटा कोनपर पं. जीवनाथ झा (1955 ई), दोसर कोनपर प्रो. नवोनाथ झा (1957 ई.) आर तेसर कोनपर प्रो. धीरेन्द्र (1960 ई) ठाढ़ छथि।'

प्राज्ञ आ साहित्यकार रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' नेपालक मैथिली साहित्यक आधुनिक काल 1960 ई.क बाद प्रारम्भ भेल मानैत छथि। ई तथ्य आब सम्पूर्ण मैथिली क्षेत्र स्वीकार कऽ चुकल अछि। ओ एकरा बीसम शताब्दीक पूर्वाद्ध मानलनि जे भ्रमपूर्ण अछि। ई ठीक जे 1950 ई. सँ पं. जीवनाथ झाजी सेहो जनकपुरक परिसरमे साहित्य लेखनदिसि लोकक ध्यानाकृष्ट करबऽ लागल छलखिन, तएँ ओ एतऽ 'साहित्य गुरूजी'क नामसँ विख्यात छलाह। मुदा समसामयिक भाषासबहक समकक्ष आधुनिक मैथिली साहित्यक रचना डा. धीरेन्द्रक प्रवेशसँ प्रारम्भ भेल।

प्राज्ञ आ रङ्गकर्मी रमेश रंजन अपन आलेख 'नेपालीय मैथिली दशा-दिशा तथा दुर्दशा' मध्य लिखने छथि जे 2008 सालमे धनुषा जिलाक देवडिहा गामक निवासी पं. बासुदेव ठाकुरक किछु नाटक आ कथा उपलब्ध होइत छैक। तकरबाद पं. जीवनाथ झाक जनकपुर आगमन ओहि परिसरमे साहित्य लेखनक एक प्रकारक वातावरण निर्माण करैत अछि। मुदा सुसङ्गठितरूपेँ मैथिलीक सृजन डाॅ. धीरेन्द्रक जनकपुर आगमनक बादे आरम्भ होइत अछि।

पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अपन 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' मध्य लिखने छथि - जखन मिथिलामे मैथिलीक हेतु पुनर्जागरणक समय अपन उत्कर्षपर पहुँचल तँ एकर प्रभाव नेपालपर सेहो पड़ल। ओ आगाँ कहैत छथि जे ' ई बात निर्विवाद मानल जा सकैछ जे नेपाल क्षेत्रमे जे पुनर्जागरण भेल अछि तकर मुख्य केन्द्र बनएबाक श्रेय स्व. जीवनाथ झाकेँ अछि। इएह महानुभाव जखन जनकपुरमे रहऽ लगलाह तँ ओहिठामक मैथिलीभाषीकेँ अग्रसर होएबाक हेतु उत्प्रेरित कएलनि। अत: जनकपुर जँ आधुनिक उत्थानक मुख्य केन्द्र तँ जीवनाथ बाबू प्रेरणाक मुख्य स्रोत रहलाह। एकरहि पछाति प्रो. धीरेन्द्र जखन जनकपुर पहुँचलाह तँ नवयुवक मण्डलीकेँ प्रेरित कएलनि।'

आधुनिक नेपालक मैथिली साहित्यक स्रष्टा ओ द्रष्टा डाॅ. धीरेन्द्र अपन नेपाली भाषामे लिखीत आलेख समकालीन नेपालीय मैथिली साहित्यमध्य लिखने छथि -"जुन चेष्टा स्व. जीवनाथ झाको नेतृत्वमा सुरु भएको थियो मेरो संकेत त्यसतर्फ छ। पं. जीवनाथ झाको आयासले गर्दा साहित्यिकहरुको एउटा समिति गठन भएको थियो र कविहरु कविता कोर्ने गर्दथे। यी कविहरुमा पं. सुन्दर झा 'शास्त्री', पं. श्रीकृष्ण मिश्र र पं. जीवनाथ झा प्रमुख थिए। पं. जीवनाथ झाको एउटा 'कल्पना' नामको कविता सङ्ग्रह पनि प्रकाशित भएको थियो। यी कविहरु बाहेक पं. मथुरानन्द चौधरी 'माथुर' र पं. सुरेश झा पनि निकै कविता कोर्दथे। यी कविहरुका रचनाहरु हुने गर्दथियो। जनकपुरबाट 'नवजागरण' पत्रिकाको प्रकाशन पनि भयो, तर यो चलेन। उपर्युक्त कविहरु बाहेक पं. रमाकान्त झा पनि कहिलेकाहिँ कविता कोर्दथे। समालोचकहरुले यस समूहलाई 'जीवनाथ स्कूल' नाम दिएका

छन्। तर १९६१ ई. देखि नेपालीय मैथिलीमा एउटा पुर्नजागरणको युग सुरु भयो। यस पंक्तिका लेखकको नेतृत्वमा नवीन शिल्प-विधानका रचनाहरु सुरु भयो।"

मैथिली साहित्यक आलोचक डॉ. रमानन्द झा 'रमण' अपन आलेख 'नेपालमे मैथिली साहित्यक दशा आ दिशा' मध्य लिखने छथि -"जेना प्रत्येक टाल चिनगीक स्पर्श मात्रहिसँ लहकि उठैछ, ओहिना साहित्यक गुरूजीक नामे ख्यात पं. जीवनाथ झा तथा युग चेतनासँ अभिभूत प्रेरणास्पद रचनाकार ओ मैथिलीक प्राध्यापक डा. धीरेन्द्रक सम्पर्क आ सान्निध्यसँ राजनीतिक जागरण, शान्ति आ सुरक्षा पाबि मातृभाषानुरागी मैथिलीक अन्तरतममे क्रमश: घनिभूत होइत सर्जनात्मक चेतनाक स्फूरणक गति तीव्र भऽ गेल। जनकपुरधाम परिसरमे सुकवि मथुरानन्द चौधरी 'माथुरक' प्रवेश तथा धूमकेतुक आगमनसँ साहित्यिक नवगछूली महमहा उठल। ओम्हर मोरंग अंचलमे प्रो. प्रफुल्लककुमार सिंह 'मौन' लुप्त होइत मैथिलीक अमूल्य निधिकेँ ताकि बटोरि प्रेरणाक अजस्त्र स्रोत प्रवाहित कएल। सुप्त कली प्रस्फुटित भऽ महमहा उठल।

प्राध्यापक परमेश्वर कापड़ि अपन कार्यपत्र 'नेपालीय मैथिली पद्य साहित्य उपलब्धि एवं सम्भावना'मध्य लिखने छथि - १९६० ई.सँ पूर्वक आधुनिक नेपालीय मैथिली साहित्यक इतिहास जकरा पं. जीवनाथ झा काल कहल जा सकैछ - मूलरूपसँ काव्य रचनाधरि सीमित रहल। एकरपश्चातक कालखण्डकेँ डा. धीरेन्द्र काल कहल जा सकैछ। कारण एहिकालमे विविध विधागत ओ सुनियोजित विकास होइछ।'

उपसंहार :-

उपर्युक्त प्रत्येक मत-मतान्तरमे आंशिक सत्य विद्यमान अछि। सब चिन्तकलोकनि अपन-अपन स्वरूप आ दृष्टिसँ कालक वर्गीकरण कएलनि अछि। मुदा वैज्ञानिकस्वरूपकेँ ध्यानमे नहि राखि सकबाक कारण स्पष्ट नहि अछि। ओ मात्र एकटा रास्ता देखबैत छैक। वस्तुत: ऐतिहासिक काल-विभाजनक लेल वैज्ञानिक ढङ्गक अध्ययन आ वर्गीकरण आवश्यक अछि। तदुपरान्त समयशेष अनुसन्धान होएत वा भऽ रहल अछि। भऽ सकैछ भविष्यमे पूर्ण वैज्ञानिक धारणासँ प्रबल मत प्रगट हुअए। ओना 'मुण्डे-मुण्डे मति भिन्ना।'

उपरोक्त जतेक मत अछि ओहिमे आंशिक एकरूपता अछि। एहितरहेँ नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रारम्भिक काल १९५० ई. सँ १९६० ई धरिकेँ भूमिका काल ? (आद्य काल) हम मानल अछि। एहि कालक प्रभाव २००७ सालक आन्दोलन, पं. जीवनाथ झाक साहित्यिक प्रभाव आ भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलनक प्रभावधरि समाविष्ट कएल जा सकैछ। ओहितरहेँ १९६० ई.सँ १९९० ई. धरिक कालकेँ दू भागमे बाँटि हम एकर निर्धारण करब। पहिल १९६१ ई. मे जनकपुर मे डॉ. धीरेन्द्रक प्रवेश, हुनक साहित्यक प्रभाव, एहि प्रभावस्वरूप एक नवीन युवावर्गक साहित्यमध्य प्रवेश होइत अछि। एहि समयमे विराटनगरमे डॉ. प्रफुल्लकुमार सिंह 'मौन'क साहित्यिक कार्यक सँगहि नेपालमे साहित्यक उल्लेखनीय कार्य प्रारम्भ होइत अछि। तएँ विभिन्न साहित्यक प्रभाव ओ रचनाधर्मिताक सृजनात्मक दृष्टिसँ पुर्नजागरण कालकेर पहिल भागकेँ कहि सकैत छी तँ दोसर भागकेँ डॉ. धीरेन्द्र युग कहब अत्युक्ति नहि, कारण जाहि विशेष साहित्यिक कालमे जाहि विशेष रचनाकारक रचनाक विशेष प्रभाव पड़ैत अछि, ओहि रचनाकारक नामपर कालक नामकरण करबाक परिपाटी सेहो दृष्टिगोचर होइछ। हमरा दृष्टिएँ १९६१ ई.क पश्चात नेपालक साहित्यकारलोकनि (मूलत: जनकपुरमे)पर परोक्ष आ प्रत्यक्ष रूपमे डा. धीरेन्द्रक रचनाक प्रभाव पड़ल अछि। एहिकारणेँ १९६० ई. सँ लऽ कऽ १९९० ई. धरिक पुर्नजागरण काल धीरेन्द्र युगमे समाविष्ट भऽ जाइछ। २०४६

सालक (१९९० ई.) जनआन्दोलनक पश्चात नेपालमे प्रजातन्त्रीय व्यवस्थाक स्थापना भेल। जनमानसमे सहजें अपन अधिकार आ कर्तव्यक प्रति जागरुकता आ जनचेतना जगौलक, आ तकर प्रभाव नेपालीय साहित्यकारमध्य सेहो निश्चितरूपैं पड़ल। एहिक्रममे युवा पीढ़ी अपन नवीन अवधारणाकसँग प्रविष्ट होइत रहलाह, आ अपन पूर्वपीढ़ीक क्षमता आ सर्जनाकें आदर करैत, हुनक रचनाक मूल्याङ्कन करैत, वैश्विक रचना संसारक स्वरूपक सँग-सँग नव मूल्यक शिल्प आ विधाकें स्थापित करबामे पूर्णतः सफल भेलाह। कहल तँ जा सकैछ जे ई युवा पीढ़ी, जिनकर काल अवधि १९९० ई.सँ अद्यपर्यन्त मानल जएबाक चाही। 'नवयुग', केर प्रणेताक रूपमे समाजमध्य प्रतिष्ठित भेलाह। आधुनिक नेपालक मैथिली साहित्यक काल-विभाजन पूर्व-मतकें देखैत अधुनातन परिप्रेक्ष्यकें विचारैत निम्नतरहें वर्गीकरण कएल जा सकैछ, जे हमरा जनैत सर्वथा उचित ओ तर्कसङ्गत बुझना जाइछ।

१. भूमिका काल (आद्य काल) (१९५० ई. सँ १९६० ई. धरि)

२. पुर्नजागरण काल वा धीरेन्द्र युग (१९६० ई. सँ १९९० ई. धरि)

३. नव युग (१९९० ई. सँ अद्यपर्यन्त)

अन्ततः कहि सकैत छी जे समयबद्ध विचारणीय अन्तर अबैत रहत, मुदा ऐतिहासिक-वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ आधुनिक नेपालक मैथिली साहित्यक काल-विभाजनक ई मत सर्वमान्य हएत।

सहायक ग्रन्थक सूची :-

१. नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य, ले.मौन, प्रफुल्लकुमार सिंह, प्रकाशक, जेनरल बुक एजेन्सी, पटना, प्र.वर्ष, १९९८ ई.।

२. नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास, ले. भ्रमर, कापड़ि रामभरोस

३. विद्यापति टाइम्स, साप्ताहिक, स. रंजन रमेश, प्रकाशक, रमानन्द युवा क्लब, जनकपुरधाम, नेपाल २००५ ई.।

४. मैथिली पत्रकारिताक इतिहास, ले. अमर, चन्द्रनाथ मिश्र, प्रकाशक, मैथिली अकादमी, पटना, प्रे.वर्ष, १९८४ ई.।

५. कार्यपत्र, समकालीन नेपाली मैथिली साहित्य, ले. धीरेन्द्र, झा धीरेश्वर।

६. नेपालक मैथिली पत्रकारिता, सं. भ्रमर, रामभरोस कापड़ि, जनकपुर नेपाल, २०४४वि.।

७. कार्यपत्र, नेपालीय मैथिली पद्य साहित्य उपलब्धि एवं सम्भावना, ले. कापड़ि, परमेश्वर।

f f f

सलहेस विशेष



साझा संस्कृतिक प्रतीक
गाथा-नायक सलहेस

२ डा. प्रफुल्लकुमार सिंह मौन

उत्तर बिहारक मिथिला ओ सीमान्त क्षेत्रक मधेसक सांस्कृतिक जीवनमे सलहेस अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिक जातीय लोक-देवता एवं मैथिली लोक-गाथाक नायक छथि। सलहेसकेँ नेपाल-भारत सीमान्त क्षेत्रक संस्कृति प्रहरी मानल जाइत अछि। हुनक शौर्य-पराक्रम गीत-गाथा, प्रेमिल व्यक्तित्व, राष्ट्रप्रेमक साक्षात ओ जीवन्त प्रतिमान, गाथा-नायक, ग्राम्य गहवरक आलोक मण्डित लोकदेवता, लोकमूर्ति ओ चित्रादिमे अनुरंजित एकटा सुदीर्घ लोक-परम्परा बनल अछि। एहितरहेँ नेपाल ओ भारतक सांस्कृतिक सूत्रधार राजा सलहेसकेँ केन्द्रमे राखि अनेक लोकानुरंजक एवं प्रदर्शनकारी कला-विद्यासभ जीवन्त बनल अछि। ओकर सर्वेक्षणात्मक पुनरावलोकन आवश्यक अछि।

सलहेस लोकगाथाक निम्नलिखित पाठ उपलब्ध अछि - जार्ज ग्रियर्सनद्वारा प्रकाशित (१८८१ ई.), डा. पूर्णानन्द दासद्वारा संकलित (१९६२ ई.), डा. मोतीलाल यादवद्वारा संग्रहित (१९८१ ई.), डा. मणिपद्म, डा. विश्वेश्वर मिश्र (१९९८ ई.), डा. नरेश पाण्डेयद्वारा सम्पादित ओ प्रकाशित (सलहेसभगत, १९९० ई., बिहार राष्ट्रभाषा परिषदद्वारा संकलित एवं संरक्षित (सूची प्रकाशित १९५९ ई.)।

आई सलहेसक गाथा जनपदीय संस्कृतिक गीतात्मक अभिलेख बनिगेल अछि। लोक मानसमे जखन इतिहासिक हंस संचरित होइत अछि, तखन प्रकृतिक रम्य ओ सतरङ्गी परिवेशमे अतीतक संगीत ध्वनि वर्तमानक गिरि-गहवर, थान-बथान ओ घर आँगनमे तरंगित होमऽ लगैत अछि। एहि रागात्मक परिवेश ओ वीरपूजाक परम्परामे लोक-गाथाक जन्म होइत अछि। तखन वनोपवनक सुरम्य धरतीसँ उपर उठि पर्वतीय नदी घाटीक इन्द्रधनुषी परिवशेमे प्रणय ओ परिणय, सिद्धि ओ साधना एवं शौर्य ओ पराक्रमसँ जुड़ि एकटा इतिवृतात्मक कथा लोकक कण्ठहार बनि जाइत अछि। सलहेसक लोक-गाथा लोकचरित ओ पुस्कल शालदन अछि जे शाल ओ चंदन वनक वृक्षसँ सुशासित एवं पुष्पित बनलता सदृश रागमयी बनिगेल अछि। अतः सलहेस ओ देववृक्ष, चैत्यवृक्ष ओ ज्ञानवृक्ष छथि, जनिक सन्दर्भसबहक छाहारिमे लोक अनुप्राणित अछि।

सलहेस लोकगाथाक निम्नलिखित पाठ उपलब्ध अछि - जार्ज ग्रियर्सनद्वारा प्रकाशित (१८८१ ई.), डा. पूर्णानन्द दासद्वारा संकलित (१९६२ ई.), डा. मोतीलाल यादवद्वारा संग्रहित (१९८१ ई.), डा. मणिपद्म, डा. विश्वेश्वर मिश्र (१९९८ ई.), डा. नरेश पाण्डेयद्वारा सम्पादित ओ प्रकाशित (सलहेसभगत, १९९० ई., बिहार राष्ट्रभाषा परिषदद्वारा संकलित एवं संरक्षित (सूची प्रकाशित १९५९ ई.)। मुदा सलहेसक मूलभूमि-गढ़ महिसौथा, कमलवन, फूलवाड़ी आदिसँ अभिषिक्त लोककण्ठमे परम्परीत अछि मुदा संकलित नहि। अतः सीमान्तक दक्षिणाञ्चलमे सलहेस गाथाक जे स्वरूप उपलब्ध अछि, ओ निसंदेह उत्तरांचलसँ अंतरित अछि -'उत्तर राजसँ अयलई राजा सलहेस देवा' जातीय अंतरणक क्रमे लोकधर्म, कर्म ओ विद्यासँ सम्वद्ध देवी-देवता, पावनि-तिहार, नाच-गान आदिसबटासँगे अंतरित होइत अछि।

गुप्त शासनक पतनोपरान्त सामन्तवादक उदय एवं हर्षवर्धनक शासनोपरान्त ओकर विकाश ओ विस्तारक लेल वर्चस्वक लड़ाइ ठनिगेल। पालकालमे एकर पराकाष्ठा देखना जाइछ। लोक-गाथाक उदभव एहिना संघर्षक परिवेश ओ सत्ताक संक्रमणकालीन परिस्थितिमे होइत अछि। गाथा-नायक सलहेसक जमिनी उदभव एहि तरहक संघर्षपूर्ण वातावरणमे भेल छल। अर्थात छठम-सातम शताब्दीक ओ सम्भावित लोक-नायक छलाह डा. मणिपद्मक इएह अवधारणा छलनि।

सलहेसक प्राणवन्त व्यक्तित्व ओ पराक्रमकेँ लोक गेयात्मक गाथाक आकार देलनि एवं हुनक थान ओ गहवरमे पहिल वैशाख अर्थात् नव संवत्सरक अवसरपर नाचि-गाबिकऽ प्रस्तुतिक एकटा दीर्घ परम्परा बनिगेल। मौखिक परम्पराक कारणे ओहिमे काल-भेद, स्थान-भेद ओ गायक भेदक कारणे ओहिमे परिवर्तन होइत गेल। फलत: चारि किला (सर्ग)मे निवद्ध गाथा आइ वृहद्आकारमे उपलब्ध अछि। डा. ग्रियर्सनद्वारा संकलित सम्पादित ओ प्रकाशित गाथा आइ वृहद आकार ओ प्रकारमे विन्यस्त देखना जाइछ। महिसौथा किला, (उद्‌भव क्षेत्र), बाघगढ़ किला (पराक्रमक भूमि), योगिनी किला (सिद्धि-साधनाक क्षेत्र) एवं पकड़िया किला (नायकक जन्मभूमि) आलोच्य गाथा स्थापत्यक चारिटा मूलस्तम्भ अछि। गाथाकेँ सर्वप्राचीन कहल गेल अछि। जाहिमे वीर ओ श्रृङ्गाररसक उत्तेजना ओ लालित्य देखना जाइछ। करूणा तँ गाथामे अंत: सलिलाक रूपमे प्रवाहित अछि।

चारित्रिक उत्थानक दृष्टिसँ ओ प्रथमत: पकड़ियाक राजा भीमसेनक अश्वरोही सैन्य प्रमुख छलाह। हिनक अश्वारोही लोकमूर्ति ओ लोकचित्र भेटैत अछि। गाथाक विभिन्न पाठमे पकड़ियाक स्थानपर केवलागढ़ वा कञ्चनगढ़ सेहो कहल गेल अछि। मुदा अपन शौर्य ओ पराक्रमक बलैं अश्वारोही सैन्य प्रमुख (सात सय प्रहरीक प्रमुख)क छविसँ उपर उठि देवत्व मण्डित भऽ गजारोही लोकदेवताक रूपमे जनव्यापी रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह। आर्यलोकनिक देवता (देवराज) इन्द्र गजारोही (ऐरावत हाथी) छथि तँ हुनक समानान्तर अनार्य लोकनिक राजा सलहेस गजारोही (मङ्गलाहाथी)क रूपमे रूपाङ्कित भेलाह। फलत: लोकाचारसँ दिव्याचारमे परिणत चारित्रिक विकासक्रमक एकटा उदाहरण बनि गेलाह। देवराज इन्द्रक आइ कोनो भौतिक साक्ष्य (वैदिक स्तुतिकेँ छोड़ि) नहि अछि, मुदा सलहेसक भौतिक अस्तित्वक साक्ष्य गढ़ महिसौथा, कमलवन, फूलवाड़ी, पतारि पोखरि आदिमे वन प्रांतर ओ पर्वतीय किछेरमे उपलब्ध अछि। ओहि प्रत्येक स्मृतिस्थलपर सलहेसक देवकुल, अर्थात गजारोही राजा सलहेस, अश्वारोही मोतीराम ओ बुधेश्वर, अङ्गरक्षक केवला किरात, प्रेमयोगिनी दौना ओ कुसुमा, चूहड़ आदिमे लोकविन्यस्त। सलहेसक गाथामे वर्णित कमला, वलान, खुट्टी, गागन आदिक निरन्तर प्रवाहित जलधार, योगिनी गुफा, राजोद्यान (फूलवाड़ी) आदिक कण-कणमे गाथाक स्वर अनुगुन्जित अछि। नवसम्वत्सर (पहिल वैशाख)क अवसरिपर सीमान्तक आर-पारक उपस्थित जन-सैलावक आस्थाकेँ नकारल नहि जा सकैत अछि। ओ मूलत: दुसाध (दु:साध्य) लोकनिक जातीय लोक-देवता छलाह मुदा आइ-काल्हि ओ सर्वजातीय लोकदेवता बनि गेल छथि। देवराज इन्द्र दरभङ्गा वा मधुवनीक इन्द्रभवनमे पूजित छथि तँ लोकराज सलहेस गाम-गामक गहवरसबमे पूजित छथि।

सलहेस मैथिली लोकगाथा विभिन्न कलामाध्यमे आइधरि जीवन्त छथि। एहि जीवन्तताक आधार अछि, हुनक लोककल्याणकारी स्वरूप, लोकक अपन आस्था, एवं परम्पराक निर्वाह। हुनकाप्रति जाधरि ई लोकआस्था बनल रहत, ताधरि ओ जीवन्त बनल रहताह एवं लोकाश्रित कला माध्यम निर्वाधरूपैं बनल रहत। अत: सलहेस कलामण्डित छथि, जकर साक्षात निम्नरूपैं कएल जा सकैत अछि -

१. गाथा-गायन,
२. लोक-नाच,

३. लोक परिकल्पित मूर्ति,
४. लोक-चित्र शैलीमे विन्यस्त एवं
५. साहित्यमे विद्यागत अभिव्यञ्जित।

१. **गाथा गायन** - सलहेसक गाथा-गायन लोक परम्परित वाद्य ओरनीपर गाओल जाइत अछि। ओरनी एकताराजकाँ तन्तु बाध्य थिक। डोमलोकनि सेहो अपन जातीय लोकदेवता श्यामसिंहक गाथा ओरनीपर गबैत छथि। डोम ओ दुसाध महा दलितक जातीय परिवेशमे अवैत छथि। विभिन्न माङ्गलिक-आनुष्ठानिक अवसरपर लोकानुरञ्जनक लेल सलहेसक गाथा गाओल जाइत अछि। जातीय अस्मिताक सन्दर्भमे गाथागायन सञ्जीवनीक काज करैत अछि। गाथा-गायनसँ पूर्व दिकपालक वन्दना, सुमिरन ओ भगैत गानसँ एकटा श्रवणीय पृष्ठभूमि बनैत अछि। सलहेस देव ओरिनी वसुलिया बजवैते छै। सलहेस दुलरा गेलइ मोरंगराज। दुलरा सलहेस रहलै हो लोभाइ।... तत्पश्चात क्रमानुसार गाथा-गायन अपूर्व तन्मयताकसँग ओरिनीक कोमल स्वरलहरीक सँग गाओल जाइछ। गाथाक अंतर्भावक अनुसार लोकवाद्य ओरिनीक चयन कयल गेल अछि। गाथागायकक कल्पना शक्ति एवं क्षेत्रीय भौगोलिक परिवशेक अनुकूल परिचितिक कारणे स्थान विशेषक नाम परिवेशक एकटा गुञ्जाइश बैसैत अछि। उत्तरसँ दक्षिणदिसि अंतरणक कारणे एहितरहक भेद देखना जाइछ। अत: आवश्यक अछि जे सलहेस गाथाक मूलभूमि (गढ़महिसौथा)सँ ध्वन्यङ्कित गाथा निसंदेह अनेक दृष्टिसँ प्रामाणिक मानल जाएत -भाषायी स्वरूप, गायन पद्धति एवं जातीय परिवेश। नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान एहि काजक अगुअई कऽ सकैत अछि। गाथा-गायक कोनो जाति-उपजातिक भऽ सकैत छथि। ओ दुसाध डोम नहि, कोल-किरात, थारू-दोनवार आदिक सेहो आराध्य छलाह। ग्रियर्सनक आलोच्य गाथा एकटा डोम गायकसँ प्राप्त भेल छलनि। गाथा-गायककेँ ओ स्वप्न निर्देश (सपनौती), गुरूक निर्देश (सिखौली)सँ प्राप्त होइत छनि। डा. मणिपद्मकेँ सलहेस गाथाक एकटा प्रसङ्ग, अनंग कुसमा एकटा नेपाली संन्यासिनसँ प्राप्त भेल छलनि। तहिना सलहेसक बहिन वनसप्तीक कथा प्रसङ्ग मात्र सप्तरीमे उपलब्ध अछि।

२. **गाथानाच -** लोक अवधारित एवं परम्परित लोकमंचपर हम गाथाधारित लोकनाचक तीनटा रूप देखने छलहुँ-१., नरहन-सिंगिया (समस्तीपुर)क लोकनाच बड़ स्वभाविक छल। मुक्ताकाश, सहज ओ सरल वेशभूषा, पद्यात्मक ओ गद्यात्मक संवाद एवं स्वाभाविक अभिनयसँ अनुरञ्जित छल, मुदा गढ़महिसौथाक प्रस्तुति पारसी थियेटरसँ प्रभावित नगारा, क्लारनेट, बाँसुरी ओ हारमोनियमक स्वर सङ्गम, ओजपूर्ण संवाद भारी भरखम वेशभूषादिमे मौलिकता दवि गेल छल। गाथाधारित एहि नाचक लोकप्रस्तुतिक विरल मुद्रित स्वरूप सेहो पढने छलहुँ। आकाशवाणी (पटना) ओ धारावाहिक स्वरूप (चलचित्र, मधुवनी) ओ नागरमंचपर (मधुवनी श्याम भास्कर) ओ पटना(कुणाल)द्वारा सेहो साहसिकरूपेँ सफलताकसँग प्रस्तुत कएल गेल अछि। महेन्द्र मलंगिया अपन ग्रंथ (मैथिली लोकनाट्यक विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण, दिल्ली, २००९) एवं डा. ओमप्रकाश भारती अपन अनुशीलन प्रस्तुत कएने छथि, जे बेस उपयोगी अछि। एवं प्रकारेँ आइ दृश्यश्रव्य विधा, लोकसंस्कृतिक बदलैत स्वरूप एवं इलेक्ट्रानिक मीडियाक माध्यमे आइ बेस जीवन्त बनि लोक ओ नागरजन दुनूकेँ अनुरञ्जित करबामे समर्थ बनिगेल अछि। सलहेसक व्यक्तित्व कालजयी छल।

३. **लोक परिकल्पित मूर्ति -** लोक-धर्मसँ अनुप्राणित, लोक-गाथाक विस्तृत सांस्कृतिक फलक एवं लोकक सौन्दर्य चेतनाक प्रतीकक रूपमे सीमान्तक आर-पारक ग्राम्य गहवरसबमे राजा सलहेसक परम्परित लोकमूर्ति सम्पूजित अछि। सलहेसक भाव-भगैत कालमे मूर्तिकार हुनक स्वरूपक प्राप्त आकारकेँ माटिक माध्यमे रूपायित करैत छथि - गजारोही सलहेस। माथपर पगड़ी, बदनमे राजकीय

शेरवानी, अधोवस्त्रमे धोती, हाथमे भाला, कान्हपर धनुष, तरकसमे तीर एवं पैरमे पनही । उर्ध्वमुखी मोंछ एवं पानरंजित ठोरपर खेलाइत लोककल्याणकारी मुस्की । कतहु मुखाकृति मङ्गोल प्रभाव (पहाड़)सँ गोलमोल तँ कतहुँ आर्य प्रभावसँ नमहर मुखाकृति । सीमान्तक आर-पारक लोकधरि कल्पित मूर्ति दुनू मङ्गोल एवं आर्यन प्रभावमे जनपदीय अवधारणाक अनुसार विन्यस्त अछि । भाव तँ ओ कंक्रीटोमे बनैत अछि । अल्लपट्टीक सलहेस देवकुलक मूर्ति एकर उदाहरण अछि । ओ जापानक कला सङ्ग्रहालयमे सेहो प्रतिष्ठित भऽ गेल छथि ।

४. **लोकचित्र शैलीमे विन्यस्त -** मिथिला लोकचित्रकलाक तथाकथित हरिजन शैली, गोदना शैली ओ गोवरशैलीमे रामजानकी, राधा-कृष्ण (लीला), विष्णु आदिक समानान्तर मिथिलाञ्चलक लोकचित्र शैलीमे सलहेस एवं हुनक देवकुल अपन पहिचान बना लेने छथि । डा. नीलरेखा (दिल्ली) मिथिला लोकचित्रकलामे सलहेस विषयक पेंटिङ्गसक उद्भव ओ विकासकेँ साक्षातक आधारपर एकटा सर्वेक्षणात्मक अध्ययन कएने छथि । एहि अध्ययनमे ओ देश-देशान्तरक कला समीक्षकलोकनिक दृष्टि विशेषकेँ रेखाङ्कित कएने छथि । ओ कमलपुर गहवरक भीतपर बनल अश्वारोही सलहेसक चित्र (१९५८ ई.)केँ प्राचीनतम साक्ष्य मानने छथि । जितवारपुर (मधुवनी)के चित्रकर्मीलोकनिमे चानो देवी, शिवन पासवान, यमुना देवी, रौदी पासवान, दुलारीदेवी आदिक नामोल्लेख कएने छथि । एवं प्रकारेँ लोकदेवता सलहेस चित्रकर्मीयेकेँ मात्र नहि, अपितु शोधकर्मीलोकनिके सेहो आकर्षित कएलनि, जाहिमे डा. मौन, डा. निराला, डा. नीलरेखा, लक्ष्मीनाथ झा, जेंटान, दिलीप बनर्जी आदि उल्लेखनीय कलासमीक्षक छथि । जनकपुर (नेपाल) क्षेत्रमे ओ लोकचित्रमे प्रतीकित छथि - हाथी ओ हुनक पेटमे हाथी शिशु । हरिजन शैलीक एहि श्रृंखलामे कुसुमा, दौना, बुधेसर, मोतीराम ओ वनसप्ती सेहो चित्राङ्कित छथि । अर्थात् एहि अभिनव लोकशैलीमे प्रसङ्गचित्रक विस्तार भेल देखना जाइछ ।

५. **साहित्यक विधासबमे अभिव्यञ्जित -** सलहेसकेँ महान व्यक्तित्व ओ दिव्य-चरितकेँ आदर्श मानि कऽ आधुनिक मैथिली साहित्यक उपन्यास विधामे लिखबाक आरम्भ डा. ब्रजकिशोर बर्मा 'मणिपद्म' कएलनि । डा. मणिपद्म गाथाधारित उपन्यासक एकटा सृजन परम्पराक प्रवर्तन कएलनि - लोरीक विजय, राजा सलहेस, नैका बनिजारा, दुलरा दयाल, रइया रणपाल, लवहरि-कुशहरि आदि । ओ एकटा विशिष्ट लेखन विधाक मात्र सूत्रपात नहि कएलनि अपितु ओकरा पुष्ट सेहो कयलनि । पश्चात उत्साहित भऽ गाथाधारित मैथिली महाकाव्य मतिनाथ मिश्र, रेडियो नाटक 'सलहेस'क सृजन प्रफुल्ल कुमार मौन, अनंग कुसमाक रचना डा. मणिपद्म कऽ गाथाधारित साहित्य लेखनकेँ आगाँ बढ़ौलनि । एहिसँ प्रभावित ओ उत्प्रेरित भऽ अङ्ग क्षेत्रसँ हिन्दी उपन्यास 'सलहेस भगत'क रचना डा. अमरेन्द्र कएलनि । फलत: मिथिलाञ्चल ओ अंगिकांचलमे गाथाधारित मैथिली ओ हिन्दीमे साहित्य सृजनक एक परम्परा बनि गेल । रचनाकार लोकगाथामे आधुनिक सन्दर्भकेँ खोजि ओकरा आजुक लेल एकटा सन्देशक काज कऽ सकैत अछि ।

एवं प्रकारेँ मैथिलीक गाथानायक सलहेसक व्यक्तित्व एवं लोकदेवत्वक कारणे गाथा-गायन, गाथा-नाच, लोकमूर्ति, लोकचित्र एवं साहित्य सृजनकेँ एकटा अभिनय दृष्टि एवं नव दिशा देबामे समर्थ अछि । एहिसँ नेपाल ओ भारतक साझा संस्कृतिकेँ प्रवल बनाओल जा सकैत अछि ।

प्रोफेसर कालोनी,
महनार (वैशाली) ८४४५०६

f f f

लोक-नायक सलहेस

२ नथुनी सिंह दनुवार

एक समयमे दनुवारवंशीय राजा कुलेश्वर सिंह होइत छलाह। हुनक राजधानी पकडियागढ छल। वर्तमानमे ओ गढ़ भगनावशेषमे परिवर्तित भऽ चुकल अछि। जेकर प्रमाणक रूपमे एखन एकटा माटिक ढेर मात्र ओतऽ बाँचल अछि। ई गढ़ एखन सिरहा जिलाक भदैया गाविसमे पड़ैत अछि। ओकरेलगमे अमही गाम अछि। एखन एहि गाममे दनुवारसभक बसोबास अछि। राजा कुलेश्वर सिंहक कालखण्ड १६ हम शताब्दिदिसि पाओल गेल अछि।

राजा गिरीनारायण पुरादित्य सिंहक राज्य अवसान पश्चात राजा कुलेश्वर सिंह पकड़ियागढ़ राज्यक स्थापना कएने छलथि। राजा पुरादित्य सिंहक दरबारमे महाकवि विद्यापति, लखिमा रानी एवं दरबारिया कवि एकहिसँग समय बितौलन्हि। राजा शिव सिंह ओइनबार वंशीय छलथि। बनौली प्रवासकालमे महाकवि विद्यापति अनेको किताबक रचना कएने छलथि। किताबमे १४हम शताब्दि उल्लेख कएल गेल अछि।

सलहेस अपन कार्य कुशलतासा देशकेशान्त बनौलन्हि। हुनक कार्यशैली दू प्रकारक छल। सामाजिक नीति आ राष्ट्रिय नीति। ओहि समयमे पुरूष प्रधान गाम परिवारसब छल। सलहेसक समयमे जनतासभ अमन-चयनसा रह लगलथि।

लोक-नायक सलहेसक शरीर सुडौल छलन्हि। सलहेस अपना समयक कुशल पहलवान छलाह। राजा पुरादित्य आ राजा शिव सिंहबीच घनिष्ठ मित्रता छलन्हि। महाकवि विद्यापति शिव सिंहक दरबारिया कवि तथा प्रधानमन्त्री एवं परम मित्र छलथि।

सलहेसक पारिवारिक सदस्यसभ

पिता : सुरमा, उपनाम : सुमन

माता : मन्दोदरी

सुरमाक तिनटा बेटा

(१) सलहेस (२) मोतीराम (३) बुधेश्वर

सलहेसक पत्नी : सती माजरी, उपनाम : सीता माजरी, सीता माजरी राजा विराटक बेटी छली।

अखनो बलाटपुर नामक गाम अछि। ओ गाम भारतक बासोपट्टीक नजदिक अवस्थित अछि। बलाटपुरमे राजबासक डिह अछि जे आब माटिमे विलिन भऽ गेल अछि। प्रत्येक वर्ष एकबेर एहिठाम मेला लागल करैत अछि। ओहिठाम छोपहा चौरी अछि जेकर उल्लेख सलहेस गाथामे कएल गेल अछि।

राजा सैनी आ बनसपतियाबीच प्रेमक अदलाबदली भेल। राजा सैनी कोचविया सत खोलीयाक राजा छलाह। एखन ई स्थान कटारी बजारक नजदिक पड़ैत अछि जे उदयपुर जिलामे रहल अछि। ओहिठाम कमला, ताउ, वैजनीक सङ्गम स्थल अछि। एखनधरि प्रत्येक वर्ष ओहिठाम त्रिवेणी मेला लागल करैत अछि।

सलहेसक जन्मस्थल

अखन राजपुर राजोखैर नहरा आदि गामसबमे राजबास डिहसब अछि। छोट-छोट राजासभ एहि गामसबमे होइत छल। उएह राज्यमे लोकनायक सलहेसक जन्म भेल अछि। ओहि समयमे

सिरहा, बेलहा, मैसोधा नामक गामसब नहि छल । कालान्तरमे जा कऽ गामसबहक नाम परिवर्तन भऽ गेलाबाद इ नाम पड़िगेल । मैसोथा लोकनायक सलहेसक जन्मस्थान अछि ।

लोक-नाचक नचनियासभ जे गीतमे गायल करैत छथि, अभिनयद्वारा जे प्रस्तुत कएल करैत छथि ई सत्य नहि अछि । सलहेसक सहि जन्मस्थान राजपुर रजोखैरमे अखनतक रहल अछि । अखनो ओहि गाममे राजाबास डीह अछि । पुरान इनार, गिदागरी पोखरि कहल जाइछ सब भग्नावशेया अवस्थामे अछि ।

सलहेसक समकालीन पहलमानसभ

(१) सलहेस (२) चूहडमल (३) नारायण दत्त (४) बज्रा (५) सोवरना

सलहेस पकड़िया गढ़क राजा कुलेश्वर सिंहक चौकिदार छलथि । चौकिदारक अर्थ होइत अछि सर्वोच्च कमाण्डर । राजा कुलेश्वर सिंहक बेटी चन्द्रावती छलीह । परम सुन्दरी ओ छलीह । ओ तन्त्र-मन्त्र विद्यामे सेहो निपूण छलीह । प्रसिद्ध जादुगरनी चन्द्रावतीक इच्छा छलन्हि सलहेससँग विवाह करबाक ।

चन्द्रावती अपन मायसमक्ष सेहो अपन ई इच्छा प्रकट कएने छलीह । एम्हर राजा विराटक बेटी सती माञ्जरी छलीह । ओहो जादुगरनी रहथि । बज्रा राजा विराटक दरबारिया पहलवान रहथि । सती माञ्जरी आ सलहेसकबीच वैवाहिक प्रसङ्ग सम्बन्धमे आकर्षण-विकर्षणके गति तीव्र छल । राजा विराट एकटा बड़का कुश्तीक आयोजन कएलथि । बज्राके कुश्तीमे हराबऽबलासँग अपन बेटीक विवाह करेबाक राजा विराटक प्रतिज्ञा छलन्हि । एहि कुश्तीमे अनेको पहलमानसध सहभागि भेलथि । सलहेस आ बज्राबीच सेहो कुश्ती भेल । जाहिमे सलहेस बाजी मारऽमे सफल भेलथि । एहिप्रकार सलहेस आ सती माञ्जरीबीच विवाह भेल ।

चूहड़मल आ सलहेसक प्रथम युद्ध

चूहड़मल पकड़िया गढ़पर आक्रमण करबाक योजना बनौलन्हि । चूहड़मल अपन हसेरीसहित पकड़िया गढ़पर आक्रमण कएलन्हि । अपन जत्थाकसँग सलहेस सेहो प्रति-आक्रमण कएलथि । दुनू जत्थाबीच घमासान युद्ध भेल अन्ततः युद्धमे चूहड़मलकैं पराजय हाथ लागल ।

ओहि समयमे नियम छल दुनू हसेरीक प्रमुखबीच मल्लयुद्ध होइत छल । जेकर मुखिया जितैत छल ओ विजयी होइत छल । चूहड़मल अपन लडाइक प्रस्ताव आ शर्त आगाँ बढौलक । ओ सलहेससँ कहलथि “हम यदि पराजित हएब तखन मात्र तोहर दुसाध जातिमे पूजा अर्चना हेतौ ।” एम्हर सलहेस सेहो कहलथि “हम यदि पराजित हएब तखन पकडिया राज्य तोरा दऽ देबौ ।” सलहेस आ चुहड़मलके एक दोसरक प्रस्ताव आ चुनौति स्वीकार भेल । दुनू गोटेबीच घमासान युद्ध भेल । अन्ततः सलहेस चुहड़मलके कुश्तीमे पराजित कऽ देलथि ।

अखनो दुसाध जातिक टोला मोहल्लामे सलहेसक गहवर अछि । जाहिमे प्रत्येक वर्ष एकबेर दुसाध जातिसब पूजा कएल करैत अछि । ई युद्धक प्रतिफल छैक ।

दोसर युद्ध

प्रत्यक्ष रूपसँ चूहड़मल सलहेससँ पराजित भेलाक बाद ओ गोप्य योजना बनाबऽ लागल । चुहड़मल चन्द्रावतीक अपहरण करबाक आ राज्यक सम्पदा लुटबाक योजना बनाबऽ लागल । चूहड़मल चोरी विद्यामे निपूर्ण छल । प्रत्यक्ष लडाइमे चूहड़मल पराजित भेलाक बाद चोरीक सहारा

लेबाक निर्णय कएलक। चूहड़मल मुकामाघाटसँ पकडिया गढधरि सुरूङ्ग खनि कऽ चोरीक आधार तैयार कएलक। एहिना ओ अपन जत्था सेहो तैयार कएलक। सलहेस पकड़ियागढ़क पहरेदार छलाह। हुनके समयमे चन्द्रवतीक अपहरण करबाक योजना बनाओल गेल। चूहड़मल अपन एहि योजनामे सफल सेहो भेल। ओ चन्द्रावतीक अपहरण करबाक सँगहि खजाना लुटऽमे सेहो सफल रहल। कहल जाइत अछि चन्द्रावतीके पलङ्गसहित सुरङ्गक रास्ताके माध्यमसँ अपहरण कएल गेल छल।

सलहेसके सेहो एहि बातक पता चलल। सलहेस कुशलतापूर्वक चूहड़मलके पकड़ लन्हि। तहिना चन्द्रावतीकेँ अपहरणमुक्त सेहो करौलन्हि। फलस्वरूप चूहड़मल आ सलहेसबीच घमासान युद्ध भेल। ओ लडाइबला स्थान एखन चोहड़बा चौकमे पड़ैत अछि। निजगढ़क नजदिकमे ई चौक परैत अछि। चूहड़मल दुसाध जातिक नायक छल। ओ सलहेसके चोरीक आरोपमे फसाबऽमे सफल रहल। राजा कुलेश्वर सलहेसके बन्दीगृहमे रखबाक आदेश देलन्हि। सलहेसके शारीरिक आ मानसिक यातना देल गेल। हुनकालेल ई समय बहुत कष्टकर बितल।

दिना मालिन राजासमक्ष अनुनय-विनय कएलाकबाद सलहेसके राजा माफ कऽ देलन्हि।

फूलबाड़ी मेला

राजा कुलेश्वर सिंह अपना समयमे फूलबाड़ीक संरक्षण आ सम्वर्द्धन करौलन्हि। एहि फूलबाड़ीक रेखदेख सलहेस करैत छलथि। एहि फूलबाड़ीकेँ कुश्तीक अड्डा सेहो बनाओल गेल। जेकर नाम सिलहट अखाडा राखल गेल।

पूजाक महत्वमे व्यवस्थापन

जुडशितल वा वैशाखी पावनि मिथिलामे बहुत बेसी प्रचलित अछि। दनुवार जातिक प्रमुख पावनि जुडशीतल अछि। ई पावनि प्रत्येक वर्षक वैशाख एक गतेदिसि मनाओल जाइत अछि। ओहिदिन दनुवार जातिसभ अपना घरमे रहल हतियार साफ कऽ शिकार खेलल करैत छथि। एहिना माटि-पानिसँ सेहो खेलैत छथि। प्रत्येक घरमे विभिन्न प्रकारक परिकारसब बनाओल जाइत अछि। नेपाल सरकार एहि पावनिकेँ राष्ट्रिय पावनिके रूपमे मान्यता देने अछि।

पूजा विधि

सर्वप्रथम पूजारी प्रत्येक देवी-देवताक आह्वान करैत अछि। फूल, अक्षत, चन्दन, धूप, दीप, दूध, पान, सुपारी, प्रसाद आदि। पूजा सामग्री मिला कऽ पूजा-अर्चना कएल जाइत अछि। जाहिक बाद वलि सेहो चढाओल जाइत अछि।

प्रथम पूजा कुलेश्वरके होइत अछि, ताहिपरसँ सलहेसक पूजा होइत अछि। तत्पश्चात सभ देवीदेवताक पूजा कएल जाइत अछि।

फूलबाड़ीक बनौट

फूलबाड़ीक परिसर लगभग २५ विघामे पसरल अछि। फूलबाड़ी गोलाकार अछि। एहि फूलबाड़ीमे रहल फूलसबकेँ एखनधरि पहिचान नहि कएल जा सकल अछि।

गाछक पहिचानक लेल बडका-बडका आयुर्वेदक ज्ञातासभ फूलबाड़ी देखऽ एलथि। हुनकासभसँगे हमहुँ रही। अन्ततः हुनकसभक बाजब रहल "हमसभ एकहुटा गाछ चिन्हऽमे असमर्थ छी मुदा ई सब गाछ फूलक हएत अनुमान कएल जा सकैत अछि। ई गाछसभ ६ सयसँ लऽ कऽ ७ सय वर्ष पुरान भऽ सकैत अछि।"

२०४८ सालमे वीरमणी ढकाल तत्कालीन राष्ट्रिय सभाक सदस्य छलथि हम निचला सदन अर्थात् प्रतिनिधि सभाक निर्वाचित सदस्य छलौं। हमरा दुनू गोटेबीच फूलबाड़ी सम्बन्धमे वेर-वेर चर्चा होइत छल। हुनकासमक्ष हम विशेषज्ञसभ लऽ कऽ फूलबाड़ी घुमबाक प्रस्ताव रखलौं। बन

विशेषज्ञसभ सँग अवलोकन कएलाक बादो ओसभ ई गाछके पहिचान करबामे असमर्थ रहलाह। अपन ई कमजोरी नुकाबऽलए हमरा चुपचाप रहबाक आग्रह कएलथि।

फूलबाड़ीक वृक्ष अन्य वृक्षसबहक तुलनामे किछु वेसिये हरियर अछि। अन्य फूलबाड़ीक तुलनामे ई फूलबाड़ी पृथक अछि। फूलबाड़ीक भितर विभिन्न स्थानमे पानिक मूल फूटल अछि। ओहि मूलसँ दिनराति पानि निरन्तर निकलैत रहैत अछि। इएह कारण फूलबाड़ीभीतर सेहो नदि बनिगेल अछि। फूलबाड़ीक पानिके व्यवस्थित कएल गेल तऽ १०टा गाविस सिचाइसँ लाभान्वित हएत।

अखन फूलबाड़ी चिरइ चुनमुन, भूतप्रेत, भूमिगत जनावरसबहक वासस्थान बनल अछि। पहिने-पहिनेके समयमे बाघ, हाती, घोडासहितक जंगली जानवरसबहक आवाज सुनबामे अबैत छल। फूलबाड़ीक बीचमे हाथीपर सवार सलहेसक पूर्ति स्थापित अछि तऽ बगलमे मोतीराम आ बुधेश्वरके मूर्ति घोडापर सवार अछि। फूलबाड़ीक बाहरमे पुजारी गहवर बनौने अछि। राजा कुलेश्वर सिंह दनुवारक पूजा स्थान सेहो ओहिठाम अछि। ओहि गहवरक परिसरमे सिलहट अखाडा अछि। जाहिठाम सलहेस कुश्ती खेलल करैत छलाह।

सलहेसक गाथामे मानिकदह, पकडियागढ, सिरहा उल्लेख अछि। सलहेस मानिकदहमे जलक्रिडा, जल समाधी करैत छलाह। एहि सबठाम एकहि दिन मेला लगैत अछि। सलहेस मानिक दहमे स्थान करबाक, फूलबाड़ीमे फूल तोडबाक, सिरहा, जा कऽ पूजा, कुश्ती खेलबाक काज एकहि दिनमे करैत छलाह।

फूलबाड़ीमे लागऽबला प्रत्येक वर्षक मेलामे हजारौं गोटेके भीड़ रहैत अछि। फूलबाड़ीक उत्तरदिसि एकटा बड़का गाछ अछि। एहि गाछमे प्रत्येक वर्षक वैशाख १ गते मात्र फूल फुलाइत अछि। आश्चर्यक बात ई अछि जे ओहि गाछमे हारक आकारमे गाछक डाढ़िक जड़िमे फूल फुलाइत अछि। फेरो वैशाख २ गतेसँ फूलक हार झरऽ लगैत अछि। किछु विद्वान, पत्रकारसभ एहि गाछक नामारण हारम कएने छथि तऽ फूलक नाम सुनाखरी रखने छथि।

मानिक दह बहुत पुरान दह अछि। एहि दहक राजा कुलेश्वर सिंह दनुवार जिर्णोद्धार करौने रहथि। जिर्णोद्धार कार्य सलहेसक रखवारीमे सम्पन्न भेल छल। एहि दहक पानि अतेक स्वच्छ अछि जकर पानि लोकसभ, पशुपन्छीसब पिल करैत अछि। सावेरियोसँ आबऽबला पन्छी सेहो एहिठाम आएल करैत अछि।

सलहेस नियमित जलक्रिया करबालए ठीक समयमे ओतऽ आएल करैत छलाह। पहिने-पहिने तऽ एहि दहके कमलक फूल तथा पुरनीक पात शोभा बढौने छल।

दौना मालिन राजाक बेटी छली

रूपवती दौना मालिन सुन्दरताक खजाना छलीह। दौना मालिन सलहेसक प्रेममे पागल छलीह। दौना मालिन आ सलहेस बीचक प्रथम भेट मानिके दहमे भेल छल। कमल फूलकेँ साक्षी राखि कऽ दौना मालिन सलहेससँगक प्रेम प्रसँग आगाँ बढौलथि। मुदा प्रेममे मालिनकेँ सफलता प्राप्त नहि भेल।

दौना मालिन अपन पितासमक्ष पोखरि खुनाबाएक प्रस्ताव रखलथि। जाहि पोखरिक नाम परेवा राखल गेल। पोखरिक शीलान्यासमे मालिनके इच्छाअनुरूप सलहेसकेँ आमन्त्रित कएल गेल। शीलान्यासक तिर्थ निश्चित भेल। सलहेसके आमन्त्रित कएल गेल। ओहि सँग-सँगे मालिन सेहो अपन योजना पूरा तैयार कएने छलीह। शीलान्यासमे स्नान करऽ परैत अछि। ओहिअनुरूप सलहेस स्नान करऽ लगलथि। हुनकासँगे मालिन सेहो स्नान करऽ लगली। ओहिकबाद मालिन सलहेससँ

कहऽ लगलथि-अहाँ हमरा सिन्दूर दान कएने छी। आब तऽ हमर वैवाहिक सम्बन्ध स्वीकार करब। सलहेस अहि बातकेँ मन्जुरी नहि देलथि। परेवा पोखरि सलहेस-गाथाक प्रमुख स्थान अछि। एखन ई झापा जिलामे पड़ैत अछि। जे एखन गौरादहक नामसँ प्रख्यात अछि।

राज्यक सुव्यवस्थित आ सुशासन कायम कएनाइ

राजा कुलेश्वर सिंह अपन प्रमुख कर्मचारी, राजनीति, सल्लाहकारसभके वैसार बजौलन्हि। बैसारक उद्देश्य छल राज्यमे सुशासन कायम कएनाइ। बैसारसँ दूटा नीति बनाओल गेल। राष्ट्रिय नीति आ सामाजिक नीति।

सलहेस चारिटा गिरोह हसेरी बनौलन्हि। पाचम अपना सँगमे राखऽ लेल बनौलन्हि। बाँकी पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशामे तैनात करौलथि। सामाजिक जनचेतनाक नायक छलाह सलहेस।

(१) चौहरमल्ल : मोकामाघाट निवासी

(२) सवर्णा : पूर्व महुली नदी

(३) बज्रा : बलाटपुर बासोपट्टी

(४) उत्तरनारायण : कमला नदी बल्टिया

सलहेस राज्य सञ्चालनक कार्यशैली सोचाइ

सलहेस अपन कार्य कुशलतासँ देशके शान्त बनौलन्हि। हुनक कार्यशैली दू प्रकारक छल। सामाजिक नीति आ राष्ट्रिय नीति। ओहि समयमे पुरूष प्रधान गाम परिवारसब छल। सलहेसक समयमे जनतासभ अमन-चयनसँ रहऽ लगलथि। राज्यमे सिचाइक बहुत बढिया व्यवस्था बनाओल गेल।

f f f



सलहेस परिवार : सलहेस फुलबारी

सलहेस गीति-नाट्य, गाथाक श्रोत, ऐतिहासिक परिक्षण आ काल-निर्णय

✍ तारानन्द मिश्र

लगभग सम्पूर्ण मिथिलामे सलहेस गाथा, सलहेस गीति-नाट्य आ ओहि आधारपर सम्पूर्ण पात्रसभक कल्पना करैत प्रत्येककेँ माटिक मूर्ति आ चित्र निर्माणक सूचना आ सलहेस गीति-नाट्य मंचनक समाचार प्राप्त होइत रहैत अछि। प्राचीन ऐतिहासिक कालसँ मिथिलामे आर्यजातिक द्विजगण-ब्राह्मण, क्षत्रीय तथा यदुवंशी आदि भी अत्यन्त रूढीवादी-सामन्ती व्यवस्थाक नायकसब ग्रामीण समाजमे अपन दबाब आ डर कायम केने छलैक। राज्यक प्रत्येक भूगोलिक अङ्ग्राम, नगर आ राजधानीमे आर्थिक कार्यविभाजनक प्रयासस्वरूप हिन्दू समाजमे वर्णाश्रम व्यवस्थाक (वर्णाश्रम स्थितिक) चतुर्वर्ण आ अठारह जाति (ई.सं. ४८५क थानकोट काठमाण्डूक लिच्छवी अभि. -'जयपल्लिका ग्रामे निवासोपगांतान् ब्राह्मण-साष्टादशप्रकृतीन) आ पाछाँ छत्तीस जातिक व्यवस्था कायम भेल। एहि चतुर्वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य तथा शूद्र)मे प्राचीत अनार्यजातिक सभ समूहकेँ शूद्र जातिमे राखि क) ओकर श्रमशोषण आ सामाजिक अवहेलना-अपमान भेल छलैक। एहि सामाजिक कूव्यवस्थाक विरुद्ध मिथिलाक शूद्र जातिक (प्रस्तर कालक कोच, भील, किरात, नाग, डोम, चमार, मुसहर, डोय, दुसाध, खतवे, पासवान, वनजारा, मघैयाडोम, राजवंशी आदि अनेक कथित निचलावर्गक) विद्रोहक परिसूचक थिक सलहेस लोककथा। मिथिलाक विभिन्न जातिक विवरण सिमरौनगढक कर्णाटकी राजा हरिसिंह देवक मंत्री ज्योतिरिश्वरक लिखल 'वर्ण रत्नाकर' (१३हम चौदहम शताब्दिक पूर्वाध)मे भेटैत अछि।

दूटा पत्नी रहितहु महेश्वरक चारिटा बेटी आ राजकुमारी चन्द्रावतीसा प्रेम करब मात्र कवि-नाटककारक साहित्यिक कल्पना थीक। सलहेस मात्र एकटा मिथिलाक लोक-गाथा थीक एकरा ऐतिहासिक प्रमाणित करबावास्ते कोनो साक्ष्य नहि छैक।

एहि कथानकक नायक सलहेस दुसाध जातिक छल, जे सम्पूर्ण पिछड़ल जातिक प्रतिनिधित्व करैत छैक। सलहेस कथा आ चरित्रमे मिथिलामे व्याप्त राजपूत-क्षत्रीजेकाँ वीरता, राजद्रोह, युद्ध तत्परता, लैला-मजनू आ कृष्ण-गोपीगणसनक प्रेम, रासलीला, विरह, अन्तर्जातीय विवाह, बहुविवाह, नट-नटिनरूपे ग्रामीण गीति-नाट्य, नाटक, चुहराक-चरित्रमे चोर आ दुष्टक चित्रण, मोतिराम, बुधेसर आ अङ्गरक्षक केवला किरातमे मिथिलाक पहलवानक चरित्रक प्रतिनिधित्व भेल छैक। एहिसँगे एहि कथानकद्वारा मिथिलाक अपार आ विविध प्राकृतिक सम्पदासब- पहाड, वनजङ्गल, फलफूलक फुलबारी आ गाछी, वनसम्पदा, हात्ती, घोडा, बाघ आदि जानवरसँगे असीमित जलसम्पदासब- कोशी, कमला, घेमुरा, गण्डक, गङ्गासहित कमलदह, मानिक दह, पतारि पोखैर, बेलका, पोखैर, सुनसरीक मूर्तियालगहक पोखैर सबहक चर्चा भेटैत छैक। अहिगाथामे विभिन्न मन्दिरसब, शैव आ वैष्णव धर्म माँझक पक्षग्राह भ्रमित संघर्ष, तन्त्रविद्या, विवाह-द्विरागमन, मेलासब, मातृका सम्प्रदायक केन्द्रीय शक्ति पार्वती, दुर्गा आ शिवाक पूजा आदिक वर्णन छैक। सलहेस कथा

नेपाल-भारतमे विभाजित मिथिलाक एकीकरणक प्रयास करैत अछि। पूर्वदिशासँ थाइलैण्ड-बर्मा-आसाम होइत नेपालमे प्रवेश भेल। मंगोल-किरातजाति, पश्चिमसँ तरी-तराई क्षेत्रमे प्रवेश भेल डोय, कोच, राजवंशी (द्रविड भाषी समूहके) अनार्यसभक सहभागिता छैक। एहि सन्दर्भमे गण्डक प्रदेशक क्षेत्रमे आर्य आ अनार्यसभक बीचमे बहुत वर्षक युद्ध आ शतपथ ब्राह्मण (१-४-१), बौद्धग्रंथ मज्झिम निकायमे वर्णित राजा विदेध-माथव आ अग्निवैश्वानरक नेतृत्वमे अनार्यजनक ऊपर आर्यक विजय अभियानक पश्चात कोसी, गण्डकी, गङ्गा-हिमालय पर्वतक पाद्भागमे प्रथम आर्य देश विदेह-मिथिलाक लगभग १०००-१२०० ई. पूर्वमे निर्माणक सन्दर्भ स्मरणीय अछि।[१] मिथिला-मगध क्षेत्रके मनु आ बौधायनकालमे जम्बुद्वीपक मध्यदेश (मदेश), मज्झिम प्रदेश (बौद्ध त्रिपिटक, जातक आदिमे) आ आर्यावर्त प्रदेशक बाहर कहल गेल छैक। आर्य प्रदेशक सीमा तखनतक कुरूक्षेत्रसँ प्रयाग-वाराणसीधरि मात्र छलैक।[२] पाछाँ कुरू आ पाञ्चाल क्षेत्रक बहुत संख्यामे आर्यलोकनिके, खास कऽ ब्राह्मणसभके जनकवंशी राजासभ ओकरवाद गुप्त राजासभ जमीन दान दऽकऽ स्थायी रूपे बसौने छलखिन।[३] लेकिन बुद्ध कालमे मध्यप्रदेशक सीमा पूर्व बङ्गाल (कंनंगल) तक विस्तृत भेलैक। महावग्ग, (५,पृ.१२-१३) आ दिव्यावदान, (पृ.१२-१३) एहि सीमाके पुण्ड्रवर्धन तक मानैत छैक (Law, Geog of Ancient Budhism,1979,2)। बङ्गाल-बिहारक पाल राजाक कालमे मिथिलाक सीमा कोशी-गङ्गाक पार प्रदेश मोरंग पूर्णिमा-सहर्षा-मुंगेर-भागलपुर क्षेत्रमे विस्तार भेल छलैक। विग्रहपाल तृतीयके एकटा ताम्रपत्र वनगाउँ आ मण्डन मिश्रक गाम महिषी धेमुरा नदीक पूर्व किनारक महत्वपूर्ण भग्नावशेष जतऽ पहिने रजत, आहत मुद्रा (Silver Punch-Marked coins, 3rd-2nd B.c) प्राप्त भेल छलैक, ओहि ठामसँ भेटल एकटा ताम्रपत्र लेखमे 'तीरभुक्तिक होद्रेविषय (जिला)' आ ओहिठाम हुनक स्कन्धावार (राजदरबार)के उल्लेख छैक। महिषी, वनगाउसँ पालकालक दुर्गा, गणेश, तारा आदि अनेक पालमूर्तिसब प्राप्त भेल छैक। धरानक पिण्डेश्वर महादेव मन्दिरसँ पाल कलाशैलीक दुर्गा मूर्ति भेटल छलैक। एकरसँगे मिथिलाक दक्षिण-पश्चिम सीमा गण्डक पारक गोरखपुरतक विस्तार भेल छलैक। ई विस्तार चम्पारणसँ पूर्वमे बागमतीधरिक शासन ओइनवारवंशी राजा पृथ्वी सिंह, शक्ति सिंह (P.L. Gupta, Coins, 167-168, हुनक मुद्रामे नागराक्षरमे 'गोविन्द चरण प्रणव मदन', आ 'चम्पकाणस्य' लिखल छैक) आ वीर सिंहक शासनकाल (१५हम श.ई.)मे भेल छलैक। एहि वंशक वीर सिंहक शासनकालमे चतुर चतुर्भुजक गीतगोपाल ग्रंथक रचना भेल छलैक (वेजालर, १९८९, रा. अभि, हस्तलिखित ग्रंथ सूचि)। एहि कारणे पूर्वमे बागमतीक आ पश्चिममे गोरखपुर तथा नेपालक नवलपरासी आ रूपन्देही क्षेत्रसवहक भाषा (क्रमशः मैथिली आ अवधी)के विस्थापित कऽ भोजपुरी भाषाके प्रचलन भेलैक। चतुर्भुजक ग्रंथ गीत गोपाल ई.सं. १६०६-१६१९ के बीचमे सिमाङ्गधन (सिमरौनगढ़)मे लिखल गेल छलैक।[४]

---

[१] B.C. law, Kshatriya clams in Buddhish-India, 1993, Delhi, pp-141-149, Ramayan, Balakanda; Mahabharat-Sabhäparva; VrihadVishnupuräna; Bhavisyapuräna; Majjhima Nikaya Vol-II, Pt-I, pp- 133-134; Ancient Nepal Nos-86-88, G. Corvinus, Aiont the Hobnian Cultural group of Mongolian Trihe; B.C., Law, Geography of Early Buddhism, 1979, P-7, p-12, p-30-31; मिथिला क्षेत्रमे अनेक नवप्रस्तरकालक अवशेष प्राप्त भेल अछि।

[२] लाहा, पूर्व बौद्धकालक भूगोल, १९७९, पृ.१-२, पृ. ३०-३१, मनु लिखैत छैथ - 'हिमवद्विन्ध्ययोर-मध्यम यत् प्राक विनशनाद् अपि प्रत्यग एवं प्रयागाश्च मध्येदशः--।' लेकिन काव्य मिमांशा (पृ. ९३) वैदिक सूत्रक आर्यावर्त देश आ मनुके मध्यदेशके गङ्गा-यमुना नदीक अन्तेर्वेदी कहैत छैक (विनशन प्रयागयोः गङ्गा-यमुनयोश्च अन्तरम् अन्तर्वेदी :। तत्र वारायणस्या परतः पूर्व देशः।)'

[३] दामोदरपुर (पूर्व बङ्गालक दिनाजपुरक्षेत्र)सँ कुमार गुप्त कालक ई.सं. ४४३ आ ४४७ के दूटा ताम्रपत्र लेख आ कुमार गुप्त तृतीयके ई.सं.५३३ के ताम्रपत्र लेखमे ब्राह्मणके जमीन दानक उल्लेख अछि। ताहिमे कुमार गुप्त तृतीय कालक ई.सं. ५३३ के दानपत्रअनुसार अयोध्यावासी एकटा सज्जन स्वेतवराह स्वामी (वराह मंदिर)के मंदिरक्षेत्रके मरम्मत, पूजाक सामग्री सभके वास्ते चार-पाँच गामक जमीन खरीदके दान केने छलखिन (R.K. Mukherjee, The Gupta Empire, Delhi, 1973, 124-125)। हमर विचारमे ओ सभ गाम प्राचीन सप्तरी आ इनरवाक छलैक।

[४] बेजलरक राष्ट्रिय अभिलेखालयके ग्रंथसूचि, १९८९, पृ. ५१७-५१८।

सलहेस गाथामे मुख्य स्थल आ प्राचीन भग्नावशेष, पोखरि आ फूलबारी सब छैक। एहिमेसँ मुख्य स्थल थिक - सलहेसक जन्म महिसौथा छलैक। पकडियागढ - राजा कुलेश्वरक दरबारक्षेत्र जतऽ सलहेस चौकीदार छल। एहि राजाक बेटी फूलबारी स्थलमे सलहेसके प्रेम प्रस्ताव केने छलैक। ऊपर उल्लेखित पकडियागढ (पकरी)के उल्लेख राजेन्द्र विक्रम शाहक लालमोहरमे (हरिकान्त लाल, सप्तरीका गढी, २०६७,९१) तथा कञ्चनपुरक आ पुरानागढीक नाम पृथ्वीनारायण कालक वि.सं. १८३० (ई.सं. १७७३)के पत्र तथा पोखरेलक वंशावलीमे छैक (हरिकान्त, २०६७,९६)। कञ्चनपुरगढ (रूपनगर)क राजाक रूपमे सलहेस अपन मूल दरबार महिसौथासँ घोड़ापर सवार भऽ एहि कञ्चनपुरगढीतक आबि कऽ सभास्थल (राजदरबारक आस्थानशाला)मे जनताक दुख-दर्द सुनैत ओकर निवारणक उपाय करैत छल। एहिठामक बरेवा पोखैर आ बेल्का पहाडमे ओ विश्राम करैत छल। तरेगनागढ (मानराजागढ़) - ई स्थल सप्तरीक तौत्तर प्रगन्ना छलैक जतहुक गढ़पति महेश्वर भण्डारी छल (हरिकान्त, २०६७,२२)। महेश्वर भण्डारीक चारिटा बेटी -हीरा, रेश्मा, दिना आ कुसमा सलहेससँ प्रेम करैत छलैक। मानिकदह - एहि दहमे सलहेस स्नान करैत छल आ एहुठाम एकटा राजसभा छलैक। सिरहाक फुलबारीमे ओ भगवानक पूजाक वास्ते फूल तोड़ैत छल। एहि फूलबाड़ीमे पकड़िया गढ़क राजा कुलेश्वरके बेटी चन्द्रावती ओकरा प्रेम प्रस्ताव केने छलैक। सिलहट अखाडा - एहि ठाम सलहेस कुस्ती खेलैत छल।[५]

उपर उल्लेखित स्थल सब प्राचीनकालक सप्तरी जिलासँ सम्बन्धित छैक। एकर अलावा जे जिला आ ठामसब एहि कथामे उल्लेख भेल अछि ओ थिक मोरंग, सुनसरीक मूर्तिया आसपासक गढी आ पोखैर, जनकपुर परिक्रमा स्थल, धनुषा जिलाक ननमहरी, चम्पारण जिलाक सतखोलिया, सहर्षा जिला, मोकामा - सम्भवत: गङ्गा किनारक प्रसिद्धघाट जतऽसँ चन्द्रावतिक गहना-जेवर आ कपडासब प्राप्त भेलैक। मधुवनीक जितवारपुर, मुङ्गेर जिला, कमला, ताउ तथा वैजनी नदीक त्रिवेणी सङ्गम स्थल। चम्पारणक बाघगढ, मुङ्गेरक पकडिया (राजेश्वर झाक अनुसार) आ राजा शैनीक सतखोलिया (चम्पारण जिलाक) आदि। एहि गाथामे बासोपट्टिक विराटपुर आ छोपहा चौरीसहितक चर्चा अछि।

सलहेस गाथाक पात्र परिचय

एहि गाथाक विभिन्न पात्र छैक जिनक संक्षिप्त परिचय निम्नअनुसार अछि -

(१) सलहेस - गाथाक नायक, कर्मसँ चौकीदार आ पाछाँ अनेक गढ-स्थलक राजा। जन्मघर महिसौथा आ जातिक दुसाध।

(२) हीरा, रेश्मा, दौना आ कुसमा - एहि कथाक मुख्य नायिकासभ, महिसौथाक गढ़पति महेश्वर भण्डारीक चारू बेटी, जिनका मालिनी कहल गेल छैक।

(३) महेश्वर भण्डारीक बेटी दिना मालिनीके मोरंग राज्यक रानी सेहो मानल जाइत अछि।

(४) राजकुमारी चन्द्रावती -पकडियागढ़क राजा कुलेश्वरक बेटी, जे उपनायिका छथि आ सलहेससँगे एकतर्फी प्रेम करैत असफल प्रेमिकाक चरित्रक चित्रण केने छथि।

(५) चुहडमल (किरात) -जकर भूमिका चोरक आ बलात्कारी रूपक छैक आ राजकुमार चन्द्रावतीक गहना, कपडा ल जा कऽ ओ मोकामामे रखने रहए।

---

[५] श्री मतिनाथ मिश्र, राजा सलहेस, पटना मैथिली एकेडमी, १९७८, पृ.च तथा ज -
'खन्खन् रहैछी बेल्का पहाडमे
खन् रहैछी- सरर बागमे, मानिक दहमे स्नान करैत छी
भागैछी तऽ एहि मलिनियाके खातिर गढ पकरियामे
मैया सुमिरै छी।'
दोसर गाथामे हुनक वर्णन निम्न अनुसार छैक -'मानिक दह लग राजसभामे, श्री जयवर्धन रहथि विराज।'

(६) केबला किरात - सलहेसक अङ्गरक्षक।
(७) सतवर्ती आ फूलवन्ती - सलहेसक विवाहिता पत्नी आ बनाटपुरक राजाक बेटी। हिनकर चित्रण एकठाम नटीनक रूपमे भेल अछि।
(८) मोतीराम आ बुधेसर - दुनू सलहेसक भाए।
(९) बेलु आ माने - राजा सलहेसक फिलवानसभ।
(१०) सलहेसक नाना - जनकपुरसँ ३२ कि.मी. उत्तर-पूर्वमे शिवालिक पहाडलग ननमहरी गामक वासी। एहिठाम शिवमन्दिर छलैक आ वैष्णवसभके मन्दिर प्रवेशमे रोक छलैक जकरा सलहेस तोड़ि देलथिन।
(११) करिकन्हा - चम्पारण जिलाक सतखोलियावासी सलहेसक भागिन।
(१२) मङ्गला हजाम - द्विरागमन लेल बनाटपुरक राजाक राज्यमे बन्दी बनाओल गेल।
(१३) तरू मल्ल - एकटा दुष्ट किरात।
(१४) कारकिंत - सलहेसक भागिन।
(१५) राजकुमार अलर्क
(१६) वनसपति - सलहेसक बहिन जिनका सतखोलियाक राजा शैनीसँ कमला, ताउ तथा वैजनी नदीक सङ्गममे आयोजित मेलामे प्रेम भऽ जाइत छैक।

सलहेस लोककथाक उद्गमस्थल

एहि लोककथाक उद्गमस्थलक बारे विद्वानसभक विभिन्न मत छैन -
(१) प्रो. प्रफुल्लकुमार मौनक अनुसार ई गाथाक जन्मभूमि महिसौथा, सलहेस फूलबाड़ी, पकडियागढ़, कञ्चनगढ़, मानिक दह (सम्भवतः मानिक सेनद्वारा खुनाओल गेल पोखैर), सँगे मोरंगधरि छलैक (आंगन, २०६७, २ पृ. २७)।
(२) महेन्द्र मलंगिया (अन्तिका, २००२) एहि गाथाक उत्पत्ति स्थल कमला नदी क्षेत्रके मानैत छथि।
(३) डा. मोतीलाल यादव (सिंहावलोकन, २०४५) क अनुसार एकर उद्गमस्थल सम्पूर्ण नेपाल तराईके मिथिला क्षेत्र छलैक।
(४) डा. पूर्णानन्द दास आ रामप्रताप पासवान एहि गाथाक मोरंगमे जन्मल मानैत छथि। पासवानक अनुसार सलहेसक राज्य मोरंगक महिसौथा छलैक।
(५) पण्डित राजेश्वर झा पकडियागढ़क मुङ्गेर जिलामे हेबाक तथ्य प्रकाशित करैत छथि। हुनक विचारमे एहि गाथाक उत्पति स्थल मुङ्गेर छलैक जतऽसँ एकर विस्तार मिथिलाक आन जिलासबमे भेलैक।
(६) हरिकान्तलाल दासक विचारमे सलहेस कथाक पूरा परिवेश सिरहा जिलासमेत प्राचीन सप्तरी जिलामे मात्र सीमित छलैक।
(७) निमिष झाक अनुसार 'उत्तरमे पहाडी क्षेत्रसँ दक्षिणमे गङ्गाधरि आ पूर्वमे मानिक दह आदि सब एहि जिलामे छैक। किएक तऽ एहि गाथाक प्रमुख स्थल - महिसौथा, पकड़िया, कञ्चनगढ, तरेगनगढ़ आ भूटानसँ पश्चिममे बाघगढधरिक क्षेत्र राजा सलहेसक महिमासँ प्रभावित छल।'

सलहेस गाथाक उद्गम समय

ई गाथा कोन समयमे जन्म लेलक तकरोबारे विद्वानसभमे मतभेद छैक।
(१) ग्रियर्सन सलहेस गाथाकेँ 'पूर्व मध्यकालक' कहने छथिन (The Survey of Indian Languages in Bihar, p.30)।

(२) डा. रेखा दासक अनुसार सलहेस गाथा आठम-नवम श.ईक थिकै (१९९४, १०९),

(३) हरिकान्त जी एहि गाथाकेँ नवम्-दसम् श.ईक मानैत छथि । रेखा दास, राजेश्वर झा तथा हरिकान्त जी तरेगनागढ़क गढ़पति महेश्वर भण्डारीक बेटीसभ जे एहि गाथाक उपनायिकासभ छथिन, तिनका तन्त्रविद्याक प्रतीक आ सलहेसक मुख्य प्रेरणा आ सलाहकार मानि कऽ एहि गाथाके आठमसँ नवम शताब्दीक मानैत छथिन । एहि कथामे उल्लेखित तौत्तर प्रगन्नाक महेश्वर भण्डारीक कतौ प्रामाणिक कागज-पत्र अथवा ताम्रपत्रमे उल्लेख नहि भेटैत अछि । लेकिन पृथ्वीनारायणकालक एकटा वि.सं. १८३० के पत्रमे हुनका तरफसँ अधिकारी भऽ पत्र लिखऽबला अभिमान सिंह बस्नेत आ पारथ भण्डारीक उल्लेख आबैत अछि जाहिमे खार्पाके हरिनन्दन उपाध्यायकेँ मदेशकेँ षालिसा प्रगन्ना अन्तर्गतक कञ्चनगढ आदि जमीनके जमिन्दारी देल गेल छैक । बहुत सम्भव अछि कथाक महेश्वर भण्डारी एहि पारथ भण्डारीक कोनो नातादार होथि आ हुनको जमीन्दारी भेटल हेतैक । लेकिन अगर ई बात मानी तऽ महेश्वर भण्डारीक काल वि.सं. १८३० (ई.सं. १७७३)के पचाससँ एकसय वर्ष बादे ओहि क्षेत्रक जमिन्दार भेल हेताह । तदनुसार सम्पूर्ण गाथाक रचना ई. सवंत् १८२३ अथवा १८७३ सँ पूर्वक नहि भऽ सकैत अछि (हरिकान्त, २०६७, पृ. ९५-९६) । जतऽधरि तन्त्रक सवाल छैक आठम-नवमसँ सत्रहम शताब्दीमे नेपाल-भारतक सम्पूर्ण क्षेत्रमे शैव, वैष्णव तथा बौद्ध तन्त्रक (वज्रयान, महासुखवाद आदिक) प्रचार-प्रसार भेल छलैक, जकर प्रभाव समाज, तत्कालीन साहित्य, तन्त्र सम्बन्धित अनेक ग्रन्थक रचना, कला-वास्तु कलामे (मन्दिरमे) पड़ल छलैक । खास कऽ तत्कालीन विश्वविद्यालयसब क्रमश: नालन्दा, विक्रमशीला ओ दन्तपुरी, जगद्दल आ बङ्गालक विद्यालयसभमे, मिथिला, वाराणसी आ दक्षिण भारतमे अत्यधिक विद्वान, तन्त्र विषयपर ग्रन्थ लिखने छैथ । मिथिलामे शैव-तन्त्रक ओहि समयमे अनेक विद्वानसभ भेल छैथ । ताहि दुआरे तन्त्रक विकाश आ प्रसारक कालसँ ई कथाक समय कदापि नहि निर्धारण कएल जा सकैत अछि ।

(४) श्री राजेश्वर झा (लोकगाथा, १९७४, ३७ पटना) ई लोककथाके दसम श.ई.सँ प्राचीन मानैत छथि ।

(५) पंडित मतिनाथ झा (सलहेस गाथा, दरभङ्गा, १९८५, पृ. ३३) सेहो एहि कथाके आठम-नवम शताब्दीक मानैत छथि ।

(६) महेन्द्र मलंगिया (अंतिका, २००२ ई.) एहि गाथाकेँ तीनसओ वर्षसँ भीतरक मानैत छथि । हुनक विचारमे भारतक स्वतन्त्रता १९४७ ई. आ नेपालक राणाशासनक अन्त (वि.सं. २००७) १९५० के बाद जातियताक प्राचीन बन्धनकेँ तोड़बाक प्रयासस्वरूप एहि गाथाक जन्म भेल अछि ।

(७) डा. मोतिलाल यादव एहि गाथाक जन्म पन्द्रहम शताब्दीमे भेल मानैत छथि । ओ लिखैत छथि जे मुङ्गेरक पकड़िया परगनामे भूमिहीन दुसाध जाति ओहिठामक लूटपाटसँ आतङ्कित छल । दिल्लीक बादशाह ओहि क्षेत्रमे शान्ति-सुव्यवस्था कायम करबा वास्ते राजपूत जातिक विश्वनाथ राज नामक व्यक्तिके पठौलक । तत्पश्चात शान्ति कायम करबामे सफलता प्राप्त भेलैक । परिणामस्वरूप विश्वनाथ राजके ओहि ठामक जमिन्दार बनाओल गेल आ जातीय एकता कायम करबाक प्रयासक फलस्वरूप एहि कथाक जन्म भेल ।

सलहेस लोक-गाथाक ऐतिहासिक प्रमाण

कोनो घटना, कथाक इतिहास सम्बोधन करबा वास्ते प्रमाण, साक्ष्य अभिलेख, प्राचीन साहित्य आदिमे ओकर चर्चाक आवश्यकता पड़ैत छैक । सलहेस गाथापर कलम चलवैबला विद्वानसभ दू भागमे विभाजित छथि । एकटा वर्ग (राजेश्वर झा, मतिनाथ झा, डा. रेखादास, हरिकान्त लाल तथा

निमिष झा)[६] एहि नाट्य-कथाके ऐतिहासिक घटना बतबैत छैथ । दोसरदिसि महेन्द्र मलंगिया एकरा 'जातीय बन्धन तोड़बाक वास्ते बनाओल गाथा' कहैत छथि । डा. मोतिलाल यादवक अनुसार ई लोक-नाट्यक जन्म जातीय स्वरूपकेँ एकसूत्रमे बान्हबाक प्रयास स्वरूप भेल छलैक ।

सलहेस गाथाक प्रमुख उल्लेखित प्राचीन ऐतिहासिक स्थलसभ क्रमश:- महिसौथागढ़, तरेगनागढ़, कञ्चनगढ़ी (रूपनगर), पकड़ियागढ़, मानिक दह (सलहेसक स्नान करबला पोखैर आ सम्भवत: मकवानी राजा मानिक सेनद्वारा निर्मिति), सलहेस (कोकचिया) फूलबारी, पतारि पोखैर आदिसभ सप्तरी जिलामे छैक । लेकिन ई सभ स्थल सलहेसकाल (उन्नैसम श.ई.) सँ प्राचीन थीक ।

<u>सप्तरी जिलाक प्राग इतिहास आ ऐतिहासिक कालक स्थल आ सलहेस गाथाक काल -</u>

मिथिला राज्यक उत्तरपूर्वी सीमास्थल सप्तरीक उल्लेख गुप्तकालक अभिलेखमे नहि आएल अछि, यद्यपि मिथिलाक नाम ओहि समयमे तीरभुक्ति (गङ्गा-सदानीरा, कोशीक तीर प्रदेश अथवा तरि प्रदेश) राखल गेल छलैक ।[७] शतपथ ब्राह्मणमे विदेह- मिथिलाक पूर्वी सीमा कोशी नदीक वर्णन छैक । कोशीक पश्चिम प्रदेशक ई जिलाक नाम- सप्तकोशीक प्रदेश, सप्तरी भेलैक जकर उल्लेख महाकवि विद्यापति लिखित लिखनावलीमे (१५हम श.ई.मे) आ नेपालक शाह राजा राजेन्द्र विक्रमक वि.सं. १८९५ (ई.सं. १८३८) क लालमोहर (सरकारी पत्र)मे जिला सप्तरी तथा पृथ्वीनारायण शाह कालक वि.सं. १८९० फागुन १५ सँ (सप्तरी जिलाक) 'मदेश जिल्लै षालिसा'क सँगे पश्चिममे 'तिर्जुगा नदी कोशी दोभान'के उल्लेख प्राप्त होइत छैक ।

एहि जिल्लामे नव प्रस्तरकालक (लगभग १०,०००-५००० ई. पूर्वक) दूटा स्थल सब क्रमश: गोविन्दपुर गा.वि.स.क उत्तर खपटे डाँडा तथा सप्तरी जिलाक आंद्रदिगी आदि शिवालिक श्रेणीमे प्राप्त भेल अछि । सिरहाक गोविन्दपुर, खपटे डाँडा आ खोकसार-एकागढसँ प्राचीन आर्यजातिक (Grey ware-NBP.) मृण्मय पात्र प्राप्त भेल छैक । कोइलाडी गढीसँ चाँदिक आहत मुद्रा (Bent-Bar and PMC coins) प्राप्त भेल छैक (हरिकान्त, ऐति. गढीहरु, २०६७, पृ.७६, पृ. ९८), पंचमार्क मुद्राक फोटो) Bent Bar coin के काल ४०० ई. पूर्व आ Punch-Marked coin के समय ३००-२०० ई. पूर्व थिकै । ई मिथिलाक प्राचीनतम मुद्रा थिक आ किछु वर्ष आगू अहितरहक पंचमार्क (आहत) मुद्रा सप्तरीक कोशी किनारसँ कोशीक बाढिमे धारमे बहैक चर्चा अपन मुगल शासनकाल ग्रंथमे राधाकृष्ण चौधरी केने छैथ ।[८] एकरबाद कषाणकालक (२००-१०० ई.सं.) अनेक स्थल सप्तरीमे होयबाक अनुमान छैक जकर खोजी-अन्वेषण भेनाइ जरूरी अछि । सप्तरीक खोकसारसँ तथा सिरहाक १ कोस पश्चिम इटहरी गामसँ गुप्तकालक रथाकार शैली तथा शिखराकार मन्दिरक अवशेष प्राप्त भेल छैक । गुप्त राजा बुध गुप्तक दामोदरपुर ताम्रपत्र (सं.२, गुप्त संवत् १६३-ई.सं. ४८२)मे हुनक शासनकालमे चन्द्रगामक एकटा स्थानीय व्यक्ति 'नाभक' किछु आर्य ब्राह्मणसभकेँ अपना गाममे जमीनदान देने छल (रा.कु.मुखर्जी, गुप्त

---

[६] हरिकान्त लाल दास, सप्तरी जिल्लाका ऐतिहासिक गढीहरु, २०६७ वि.सं., पृ. १८-१९, 'सलहेस कुनै काल्पनिक पात्र थिएनन् । यस क्षेत्रका राजा भएका थिए । सलहेस गाथा-ऐतिहासिक तथ्यमाथि आधारित छ ।' निमिष झा लिखैत छैथ - 'सलहेस गाथा कल्पित नहि अछि । गाथाअन्तरगत जे-जे स्थानक वर्णन अछि ओ आइयो विद्यमान अछि तएँ सलहेस लोककथा ऐतिहासिक अछि' (आँगन, २०६७, पृ. ३३) ।

[७] Cunningham and Gairik, Reports of Tours In North and South Bihar 1880-81, 1-2, ई नाम कनिंघमक अनुसार ई शब्द नदीसभक तटवर्ती प्रदेशकेँ बोध करैत छैक । गोपाल वंशावलीमे तिरहुतक सैनिकके तीर प्रदेशक कहने छैक । तीर + भुक्ति = नदीक किनारक प्रान्त । वैशालीसँ प्राप्त माटिक मोहरमे तिरभुक्ति-उपरिक-अधिकरण, 'महाराजश्री गोविन्द गुप्त तिरभुक्ति' उल्लेख छैक (Vaisali Excavations, ASR, 1903-1904) ।

[८] मिथिलाक अन्यक्षेत्र जतऽसँ चाँदीक आहत मुद्रा प्राप्त भेल अछि ओ थिक रानी जोगबनीलग भेडियारी जतऽसँ हमर उत्खननमे पाकल ईटक २००-१०० ई. पूर्वक अण्डाकार गर्भगृहसहितक मन्दिर भेटल छैक), पूर्णिमा, गोरहोघाट तथा दरभङ्गा जिलाक सुपौल ।

एम्पाएर, १९७३, पृ. ११२) । ई चन्डग्राम खोकसार गामक उत्तर आ विशाल भग्नावशेष चन्द्रभागा थिक ।[९] तहिना कुमार गुप्त तृतीयके सं. २२४ के ताम्रपत्रमे अयोध्याक एकटा दानपति कोशी नदीक दुन पार चाकर पाँचटा गाम बराहक्षेत्रक स्वेतवराह स्वामी मन्दिरक मरमत तथा भगवानक पूजा सामग्रीक खातिर देने छलैक (रा.कु. मुखर्जी, गुप्त साम्राज्य, १९७३, पृ. १२४-१२५) । सबसँ महत्वपूर्ण सूचना गुप्तकालक नरसिंह मूर्ति आ बराहक्षेत्रक मुख्य मन्दिरके बराह मूर्तिक निर्माणमे प्रयोग भेल पाथर थिकै - बराहक्षेत्र आ मकवानपुरक चुरेसँ उत्तर महाभारत श्रेणीमे भेटैबलाकारी पाथर (Black schist stone)। एहि पाथरक पहिलुक खोज आ उपयोग कऽबला गुप्तमूर्ति कलाक विशेषज्ञ छलाह जकरा पाँछा कर्णाटकालक (१०९०-१३२६) मूर्ति निर्माण, मन्दिरक चौकैठ आ सिमरौनगढक राजदरबारके ११टा तोरणद्वार खातिर उपयोग भेल छैक (तारानन्द मिश्र धर्मस्वामीको जीवनी, २००४ पृ. ६४)। कर्णाटकालक सम्पूर्ण मिथिलाक्षेत्र (दरभङ्गा, मधुबनी, सप्तरी, जनकपुर, मूतिर्या तथा चितवन-वाल्मीकिनगर)क मूर्तिकला आ मन्दिरमे एहि पाथरक प्रयोग भेल छलैक । गुप्तकालक कलाकार बनारसमे चुना, वालु आ पाथर आ मथुरामे ओहिठामसँ प्राप्त लालबालु आ पाथर (Red spotted sand stone) आदि स्थानीय पाथरक प्रयोग केने छलैक । गुप्तकालक (ई.सं. ४४३-५४४, कुमार गुप्त प्रथम, बुद्धगत, भानु गुप्त, कुमार गुप्त तृतीय) बाद सप्तरीमे पाल तथा सेनकालक शासन पूर्णिया, मोरंग, सप्तरी, सहर्षा, मुङ्गेर, सुपौल तथा भागलपुर आदि पूर्वी मिथिलाक्षेत्रमे गुप्त, पाल तथा सेनवंशक शासन) कायम भेल छलैक । पाल शासनकालक बाद सप्तरी (आ सहर्षा) क्षेत्रमे दूटा कर्णाटवंशी बङ्गालक विजय सेन आ नान्यदेव-गङ्गादेव (कर्णाट-मिथिलावंशी) शासकक बीच सीधा संघर्ष भेल छलैक जकर आभास विजय सेनक देवपारा अभिलेखसँ प्राप्त होइत अछि । एहि कारणे नान्यदेवक उत्तराधिकारीसभ क्रमशः गङ्गा देव, रामसिंह देव (हाँविपट्टनक अछय. -'हाविपट्टन संज्ञके सुविदिते हैछट्टदेवी शिवा, कर्मादित्य सुमन्त्रिणह विछिता सौभाग्यदेव्याज्ञया'), शक्ति सिंह (शक्र सिंहदेव), हरिसिंह देवक शासन कालमे मिथिलाक पूर्वी भागमे अनेक नगरक (दरभङ्गाक सकरी, सप्तरीक सखड़ागढ़ी, सखडा भगवती मन्दिर, बहेडा थानाक हरिसिंहपुर आदिक) निर्माणसँगै ओहि क्षेत्रमे कणार्टशासनक बेसी सक्रियताक उदाहरण प्राप्त होइत छैक । कर्णाटकालमे सप्तरीमे अनेको नगरक निर्माण भेल छैक जकर निक अध्ययन नहि भऽ सकलैए । गयासुदि्न तुगलकद्वारा १३२६ ई.मे राजधानीनगर सिमरौनढ़कें भग्न कऽ हरिसिंह देवके पराजयसँगे सप्तरीमे द्रोणवारवंशीय क्षत्रीसभकें राज्य स्थापना (१३-१५ श.ई.) भेलैक जाहि वंशक पुरन्दर सिंह बनौलीसँ, हुनक भाए अर्जुन सिंह, सम्भवतः रूपनगर-कञ्चनगढ़सँ आ भुवनसिंह कोइलाड़ीगढ़ीसँ शासन करैत छलथि । एहि पुरन्दर सिंहक आश्रयमे विद्यापति लिखनावलीक रचना आ श्रीमद्भागवतके प्रतिलिपि केने छलाह । द्रोणवारवंशक राजसत्ताकें च्युत कऽ मकवानी सेनवंशी लोहाङ्गसेन, हरिहर सेन, नाती शुभ सेन (वि.सं. १७३३), मानिक सेन (वि.सं. १७८४), महिपति सेन (१७९३ वि.सं. क रनपाल चौधरीक पत्र), जगत सेन, कामदत्त सेन, रघुनाथ सेन, मुकुन्द सेन आ अंतिम राजा कर्ण सेनक शासन कायम छलैक । एहिवंशके वि.सं. १८२९-१८३० मे पृथ्वीनारायण शाह विस्थापित कऽ देलखिन (अम्बरपुरसँ १८३० मे जारी भेल पत्र, हरिकान्त, २०६७, पृ. ९५-९६) । एहि कार्यमे पृथ्वीनारायणक सेनापति रामकृष्ण कुँवर, अभिमानसिंह बस्नेत आ पारथ भण्डारी छलथि जिनका खार्पाक हरिनन्द उपाध्याय पोखरेल जन-धनसँ मदद केने छलखिन ।[९] ई पत्र सप्तरीके अम्बरपुरसँ जारी भेल एहि कांस्यपत्रमे पुराना गढी आ कञ्चनपुर गढीक उल्लेख छैक ।

एहितरहे सलहेसक कथाक गढी कञ्चनपुर आ पृथ्वीनारायणकालीन एकटा सैनिक सरदार पारथ भण्डारीक शायद वंशज तरेगना गढ़क (तौत्तर प्रगन्नाक) गढपति महेश्वर भण्डारीक चारिटा बेटी हीरा, रेशमा, दिना आ कुसमा (जकरा अस्वाभाविक रूपसँ मालिनी कहल गेल छैक) सँ जोडल

[९] सप्तरीका चन्द्रभागाका अवशेषहरु, सूचना साप्ताहिक, २०५६, हरिकान्तलाल, सप्तरीका गढीहरु, २०६७, १५ ।

गेल छैक । एहि आधारमे सलहेस गाथाक उद्‌गम शाहकालक मध्यभाग वि.सं. १८३० (ई.सं. १७७९) क बाद लगभग अठारह श.ई.मे होबाक अत्यधिक सम्भावना छैक । ई कथा कोनो कालक इतिहाससँ नहि जुटल अछि । सलहेस गाथाक प्रेरणा श्रोत सेन-शाह कालक युद्ध, मकवानी राजाक राजाश्रयमे सप्तरीसँ मकवानपुरक जङ्गलमे निवास करैत लगभग ५०,००० वनजारा अश्वारोही थिक जकरासँगे अत्यधिक संख्यामे घोडा, छलैक । ई बनजारासभ जड़ी-बुटी, सोना, चाँदी, किमती पाथर आदि व्यापार करैत रहए लेकिन मुश्लिम शासनक अन्त काल आ अँगरेजक उदयकालमे वनजारासभ अङ्गरेज आ मुश्लिम शासकक खजानाकेँ लूटि लैत रहए । आपतकालमे ई नेपाल तराईके जङ्गल निवासी मकवानपुर राजाक शरण आ सुरक्षामे जाइत छल । जकर विषयमे विहारक एकटा मुश्लिम सैनिक सरदार करीम खाँ मकवानी राजाक चेतावनी पत्र सेहो लिखने छल । एहि सन्दर्भमे वि.सं. १७६३ (ई.सं. १७०६) मे मुश्लिम शासकद्वारा मकवानी राजा शुभ सेन आ विजयपुर (धरान)क राजा विधाता इन्द्र सेनके बन्दी बना कऽ लऽ जेबाक घटना स्मरणीय छैक । अन्तमे मिथिलाक जंगली प्रदेशक ई बनजारामेसँ २०,००० के करीम खाँ बन्दी बना पटना लऽ गेलैक, जाँहिमे से १०,००० के मुश्लिम सेना पटना पहुँचैसँ पहिनै रास्तामे मारि देलकै ।[१०] एखनो ई बनराजा सभ दही, सोनु, चुडा, चौर आदि व्यापार कऽ भक्तपुर आसपासक नगरगाममे रहैत छैक ।

मिथिलाक सलहेस कथामे राजा विराट, विराटपुर (वासोपट्टि प्रखंड) के प्रसङ्ग अबैत छैक । राजा विराटक प्रसँग विराटनगर, झापाक किचकवध आदि अनेको जगहसँ सेहो जोडल गेल छैक । राजा विराटक कथा महाभारतसँ सम्बन्धित छैक । राजा विराट महाभारत युद्धकालके एकटा मत्स्यदेशक राजा छलथि । जिनका दरबारमे पाँच-पाण्डव बारह वर्ष बितौने छलाह । प्राचीन मत्स्यदेश जयपुरक पास छैक । ऋगवेद तथा गोपथ ब्राह्मणमे मत्स्यदेशके इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली)सँ दक्षिण-पश्चिम दिशामे कहल गेल छैक । ओहि जगहपर अशोकक वैराट स्तम्भ लेख आ एकटा चैत्यधर छैक । ताहिलेल विराटपुर, विराटनगर, मिथिला आ नेपालक तराई क्षेत्रमे होबाक कोनो सम्भावना नहि अछि ।

उपरक विवरणसबसँ ई स्पष्ट भऽ गेल हएत जे सलहेस-गाथा कोनो ऐतिहासिक वंशसँ सम्बन्धित नहि थिक । एकर उत्पति प्राचीन सप्तरीमे भेलैक जतहुक प्राचीन किछु भग्नावशेषसँ एकर सम्बन्ध देखाबऽक प्रयास भेल छैक । सलहेस गाथाक किछु स्थलकेँ उल्लेख (कञ्चनगढ़ तरेगनागढ आ पुरानागढीक उल्लेख आ पारथ भण्डारीक नाम गोरखाक राजा पृथ्वीनारायण कालक एकटा वि.सं. १८३० (ई.सं. १७७३)के पत्रमे प्राप्त भेल अछि । ताहि आधारपर ई गाथाक ओकर बादे रचना भेल होयन जकरा सेन-शाह राजाक माँझ भेल युद्ध, सिन्धुलीगढीमे अङ्गरेज कप्तान किनलाकक नेतृत्वमे वि.सं. १८७१ (ई.सं. १८१४) मे भेल युद्ध आ हजारो घोडापर सवार भऽ ओहि क्षेत्रक बनजारा तथा ओकरसभक बीच घटल अनेक प्रेमकथा (जे ओहि क्षेत्रक जङ्गलमे खुला टेन्टमे रहैत छल)के प्रभाव एहि गाथापर पड़ल पाओल जा सकैत अछि । तरेगनागढ़क गढ़पति महेश्वर भण्डारी आ हुनक चारि बेटी,

---

[१०] R.K. Chaudhary, Muslim Rule in Bihar, 1970, pp. 175-179.

तारानन्द मिश्र, पुरुषोत्तम लोचन श्रेष्ठको अनन्तलिङ्गेश्वर ग्रंथबारे केही टिप्पणी, रोलम्बा अंक २७, जनबरी-दिसम्बर २००७ पृ. ६१-६२, किछु अंशक मैथिली अनुवाद - अनन्त लिङ्गेश्वर भक्तपुर क्षेत्रमे बसोबास करबला ई प्राचीन जाति जाहिमे किछुकेँ सोनबन्जारा, दही बनजार आदि नामसँ सम्बोधन होइत अछि । प्राचीन कालक जगह-जगह घुमैत व्यापार करऽबला ई बनजारा जाति थिक । अँगरेज लेखक क्रुक (Crook, Tribes and casts of North–west–frontier province, I, p. 179) एहि जातिकेँ पाकिस्तानके ओहि भागमे घुमि-घुमि कऽ व्यापार करऽबला (Nomadie Trilbes of public carriers) कहने छैक । सिकन्दर लोदी कालमे (१५हम श.ई.मे) भारतमे एहि जातिक विषयमे विवरण प्राप्त होइत अछि । (Corn wallis Hill, (British India V, ch.IV) आ Malcom (Memoirs of central India, II, 152) तथा राजस्थानक अभिलेखसँ एहि जातिबारे जानकारी प्राप्त भेल अछि । मुस्लिम ग्रन्थ मुजफ्फरनामाक अनुसार अवध, गोरखपुर, गाजिपुर, बेतिया तथा तिरहुतमे एहि जातिक प्रचूरता छलैक । विहारक भौरामे एहि जातिक ८० हजार घोडा, एकलाख गाय-बछरा छलैक ।

नाट्य-गाथाक दोसर प्रमुख पात्र सब जे ब्राह्मण अथवा क्षत्रीय जातिक हेताह, हुनकर बेटीसभ वास्तविक जीवनमे एकटा दुसाध जातिक दूपत्नीसँ विवाहित नायकसँ किएक प्रेम करतीह ? दूटा पत्नी रहितहुँ महेश्वरक चारिटा बेटी आ राजकुमारी चन्द्रावतीसँ प्रेम करब मात्र कवि-नाटककारक साहित्यिक कल्पना थीक। सलहेस मात्र एकटा मिथिलाक लोक-गाथा थीक एकरा ऐतिहासिक प्रमाणित करबावास्ते कोनो साक्ष्य नहि छैक।

संदर्भ श्रोत-ग्रंथ आ लेख

(१) डा. रेखादास, विहार की लोकनाट्य की शैली, दिल्ली, १९९४।

(२) पंडित राजेश्वर झा, लोक-कथा विवेचन, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, १९७४।

(३) पंडित मतिनाथ झा, सलहेसगाथा, मिथिला प्रकाशन, दरभङ्गा, १९५८।

(४) Grierson, The Survey of Indian Languages In Bihar.

(५) महेन्द्र नारायण राम आ फूलो पासवान, सलहेस लोकगाथा, साहित्य अकादमी, दिल्ली, २००७।

(६) महेन्द्र मलंगिया, अंतिका, जुलाई-सितम्बर अंक, २००२।

(७) डा. मोतीलाल यादव, सिंहावलोकन, नेपाली मैथिल विशेषांक, वि.सं. २०४५।

(८) डा. पूर्णानन्द दास, मैथिली लोक साहित्य।

(९) रामप्रताप पासवान, दुसाध जाति, एक अध्ययन।

(१०) चन्द्रेश्वर प्रसाद यादव, सलहेस वाणी, २०५६ वैशाख।

(११) चन्द्रप्रसाद त्रिपाठी, नेपाली पुरातत्वमा पछिल्ला केही उपलब्धीहरु २०६१, पृ. ४७-६३।

(१२) महेन्द्र सिंह दाँगी, दाँगी समाज एवं साहित्य, भोपाल, २००७।

(१३) हरिकांत लाल दास, सप्तरी जिल्लाका प्रमुख ऐतिहासिक गढीहरु, साझा प्रकाशन, २०६७ वि.सं.।

(१४) R.K. Mookherji, The Gupta Empire, Delhi, 1973.

(१५) तारानन्द मिश्र, गण्डकी पूर्वको इतिहास तथा पूरातात्विक स्थलहरु, प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, कमलादीमे प्रस्तुत २०६७क कार्यपत्र।

f f f

जार्ज अब्राहम ग्रिअर्सन संकलित गीत राजा सलहेसक : नारी सशक्तिकरण

२ डा. रमानन्द झा 'रमण'

भारतक पहिल स्वाधीनता आन्दोलन (1857 ई.)क असफलताक उपरान्त ब्रिटिश पार्लिआमेंट भारतवर्षक शासन–सूत्र ईस्ट इंडिया कम्पनीक हाथसँ अपना हाथमे लए अपन उपनिवेश सभपर शासनक स्थायित्वक लेल अनेक प्रकारक उपाय कएलक। ओहिमे एक छलैक उपनिवेशक लोकक हृदयकेँ जीति, शासन करैत रहबाक आकांक्षा। ई बिना लोकक निकट अएलासँ सम्भव नहि छलैक। एहि लेल सम्बद्ध उपनिवेशक लोकक भाषा–साहित्य एवं संस्कृतिक प्रति अभिरुचि देखाएब आवश्यक छल। उपनिवेशक लोकक आहार–व्यवहार, रीति–रेबाज आदिक परिचय प्राप्त करब आवश्यक छल। एहि हेतु चयनित अधिकारी सभकेँ सम्बद्ध उपनिवेशक भाषाक शिक्षाक व्यवस्था कएल गेलनि। संगहि, निर्देश देल जाइत छलनि जे ओ सब अपन पदस्थापनक क्षेत्रक भाषामे प्रवीणता प्राप्त करथि। ओहि क्षेत्रक साहित्यक संकलन करथि। ओकर अनुवाद प्रकाशित करथि जाहिसँ परवर्ती अधिकारी लोकनि सेहो ओहिठामक लोककेँ बूझि लाभान्वित होइत रहथि। एहि काजक लेल भारतहुमे अनेक संस्था स्थापित कएल गेल। ओहिसँ पत्रिका प्रकाशित होअए लागल। एहि काजमे अङरेज पदाधिकारी लोकनि स्थानीय विद्वान सभक सहयोग तँ लैत छलाह, मुदा ई नहि चाहैत छलाह जे उपनिवेशक लोक स्वयं अपन भाषा–साहित्य एवं संस्कृतिक अध्ययन–अनुसन्धान करथि। अपन गौरवपूर्ण सुदीर्घ सांस्कृतिक परम्परा आ' धरोहरिसँ परिचित होथि। आ' तँ एहि प्रकारक काजक लेल अङरेज पदाधिकारी स्थानीय सुधीजनकेँ प्रेरित नहि करैत छलाह।[1] ई नहि कहि सकैत छी जे डा. जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सन अपवाद छलाह।

> लोकतन्त्रमे लोकशक्तिक महत्त्व छैक। एहिसँ लोकगाथा नायकक महत्त्व स्वतः भए जएतैक। लोकगाथा मात्र मनोरंजनक साधन नहि रहि जाइछ, प्रेरणाक स्रोत भए जाइत अछि। लोकगाथाक अध्ययन एव विवेचन सेहो महत्त्वपूर्ण भए जाइत छैक।

एही क्रममे इंडिअन सिविल सर्विसक एक पदाधिकारीक रूपमे जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सन भारत अएलाह। हुनक पदस्थान बंगाल प्रेसिडेंसीमे भेलनि। एहि क्षेत्रक भाषा एवं साहित्यक अध्ययन, संकलन, अनुवाद एवं प्रकाशनमे विशेष रुचि लेमय लगलाह। संयोगवश, जखन हुनक पदस्थापन मधुबनीमे भेलनि तँ मैथिलीक सुदीर्घ साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परम्पराक प्रति हुनक अनुराग कतेको गुणा बढ़ि गेल। ओ मैथिलीक शब्दक संकलन कएल। मैथिलीक पहिल व्याकरण लिखल। मैथिलीक भाषिका सबहक पृथक–पृथक व्याकरण लिखल। एक स्वतन्त्र भाषाक रूपमे मैथिलीकेँ स्थापित कएल। शिष्ट साहित्यक संगहि, लोक साहित्यहुक संकलन पर विशेष ध्यान देलनि। मैथिली लोकसाहित्यमे दू टा अत्यन्त महत्वपूर्ण संकलन आ' सम्पादन ओ कएल। पहिल अछि *गीत राजा सलहेस* आ' दोसर अछि *गीत दीनाभद्रीक ओ गीत नेवारक*। *गीत राजा सलहेस*क प्रकाशन, अनुवाद सहित 1881 ई. मे आ' *गीत दीनाभद्री ओ गीत नेवार*क प्रकाशन

[1] The colonisers were generally civil servants or companies' employees who served limited terms and had to retire back in Europe. With the help of missionaries and their schools, they generally developed an intetmediary class of indigenous bureaucrats or low-level administrators through which they communicated with the local populations or they themselves learned the most important of the local languages, but they encouraged no more than this colonial elite to learn scholastic varieties of their languages. (Brutt-Griffler, 2002) Quoted in 'Colonisation, Globalisation, and the Future of Languages in the Twenty first Centuary ' by Salkoko S. Mufwene, *International Journal on Multicultural Societies* vol.4, No.2, 2002, UNESCO)

1885 ई. मे जर्मनीमे एक जर्मन पत्रिकामे भेल। संक्षेपमे कहि सकैत छी जे मैथिलीक लेल ग्रिअर्सन बहुत काज कएलनि। मैथिली भाषी निश्चित रूपसँ हुनक चिरऋणी रहत।

यद्यपि, *गीत राजा सलहेस* मिथिलाक एक अत्यन्त प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण मैथिलीक लोकगाथा थिक, किन्तु ग्रिअर्सनसँ पूर्वधरि ओ लोक कंठहिमे सुरक्षित छल आ' एक कंठसँ दोसर कंठमे संक्रमित होइत रहल। गाथा गायकक व्यक्तित्व एवं परिसरसँ प्रभावित होइत रहल। स्वरूप नमरैत रहलैक। ओना ई लोचकता लोकगाथाक विशेषता मानल जाइत अछि। मुदा, सदिखन नमरैत पाठक आधारपर साहित्यिक विवेचन सम्भव नहि होइत अछि। एहि हेतु समाजक वर्ग विशेषक मनोरंजनक साधन एवं प्रेरणाक स्रोत होइतहुँ ओ अध्ययन एवं विवेचनक विषय नहि भए सकल। परिणाम भेलैक जे जतेक गाथागायक वा जतेक विद्वान *गीत राजा सलहेस*क ततेक पाठ, ततेक रूप।

लोकतन्त्रमे लोकशक्तिक महत्त्व छैक। एहिसँ लोकगाथा नायकक महत्त्व स्वत: भए जएतैक। लोकगाथा मात्र मनोरंजनक साधन नहि रहि जाइछ, प्रेरणाक स्रोत भए जाइत अछि। लोकगाथाक अध्ययन एव विवेचन सेहो महत्त्वपूर्ण भए जाइत छैक। एहिसँ अन्तर्निहित प्रेरणाक स्रोत समक्ष अबैत अछि। युगक सन्दर्भमे ओकर व्याख्या होइत छैक। मुदा, ई काज रंग-विरंगक पाठक आधार पर सम्भव नहि अछि। अतएव, सर्वप्रथम आवश्यक अछि, जॉर्ज ग्रिअर्सन संकलित पाठकेँ आधार मानि गीत राजा सलहेसक एक प्रामाणिक पाठ संकलित-सम्पादित कएल जाए। एहीसँ ई ज्ञात भए सकत जे गत सए-सवा सए वर्षमे गीत राजा सलहेसक पाठमे की-की आ' कोना-कोना अन्तर भेल अछि। गाथागायक अपन कल्पनाशक्ति एवं भक्तिभावनासँ ओहिमे कतेक की जोड़ैत गेलाह अछि।

हम एहिठाम जॉर्ज ग्रिअर्सन संकलित पाठकेँ आधार मानि गीत राजा सलहेसक प्रसंग अपन किछु विचार राखि रहल छी। मुदा, एक टा बात स्पष्ट कए दी, एहि सबा सए वर्षमे सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्रमे पर्याप्त परिवर्त्तन भेल अछि। लोकक मानसिकता आ' जातिगत चेतनामे वृद्धि भेलैक अछि। ओहि आधार पर संगठित भेल अछि। एहिसँ लोकगाथा मात्र मनोरंजन एवं अध्ययन-विवेचनक सामग्री नहि रहल, ओ अपन समुदायक लेल पोलिटिकल स्पेस बनेबाक माध्यम सेहो भए गेल अछि। एहि परिवर्त्तनक प्रभाव गीत राजा सलहेसक विषय-वस्तुपर पड़ल अछि। संगहि, जॉर्ज ग्रिअर्सन संकलित पाठ बहुत कम लोकक समक्ष छैक। अतएव, सम्प्रति जे पाठ लोककंठमे संरक्षित अछि वा जे केओ टीपने छथि, एकर बेसी सम्भवना छैक जे सबा सए वर्ष पूर्व संकलित-प्रकाशित पाठक विषय-वस्तुक कतेको बिन्दु अनोन-बिसनोन सन लागनि।

गीत राजा सलहेसक पाठ प्रस्तुत करबाक पूर्व ग्रिअर्सनक एक छोटसन अङरेजीमे भूमिका अछि। ओ लिखने छथि, एक डोमक मुहसँ जेना सुनलहुँ तहिना शब्दसह लिखल अछि। एहिसँ स्पष्ट अछि मिथिलाक समाजमे गीत राजा सलहेसक स्वीकृति छलैक; ओ मिथिलामे सामाजिक समरसता-स्थापनक एक प्रभावक माध्यम छल। ओकर मौखिक संरक्षण आ' संक्रमणमे केवल दुसाधलोकनिक योगदान नहि छनि। सम्प्रति की स्थिति अछि, लोकसाहित्यक एकसँ एक मर्मज्ञ विद्वान लोकनि विराजमान छथि, प्रकाश दए सकैत छथि। एकर अतिरिक्त भूमिकामे आओरो दू टा बिन्दु अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। पहिल अछि, तिरहुतक गाम सभमे पीपरक गाछ तर माटिक चबूतरा पर गीतमे वर्णित विभिन्न पात्रक प्रतिमा स्थापित कए दुसाध लोकनि पूजा करैत छथि तथा, यद्यपि ई गद्यमे गीत अछि, मुदा गाओल नहि जाइछ, पाठ होइत अछि। लिखने छथि –Although a song, it is written in prose, and is chanted, rather than sung.

पूजा होइत अछि देवताक, अर्थात् राजा सलहेसकेँ लोकमानसमे देवत्व प्राप्त छलनि। अपना ओहिठाम छप्पन कोटि देवी-देवता छथि। गीतक आरम्भहिमे दौना मालिनि वन्दना करैत छथि – *भेल भिनसरवा ठाढ़ि दरवाजा गै मालिनि कर जोरि मिनती करैछथि देव मुनिक नाम, सुनु इन्द्रासन छपन कोटि देबता*। देवत्व प्राप्त छनि तँ पूजा होएब आवश्यक। पूजा मन्त्रेच्चरणक संग होइत अछि। मन्त्र गाओल नहि जाइत अछि। मन्त्र वैदिक शब्द थिक। मन्त्र रूपमे उच्चरित शब्द आ' ध्वनि सार्थके हो आवश्यक नहि छैक, मुदा पवित्रता चाही, से स्थलहिक नहि, तन-मनक सेहो। एही पवित्रता-भावक कारणेँ पूजा स्थलपर मन्त्रेच्चारणसँ सम्मोहनक स्थिति उत्पन्न भए जाइत अछि।

भारतक इतिहास साक्षी अछि, मोगल शासनक अन्तिम कालमे ईस्ट इंडिआ कम्पनीकेँ दीवानी अधिकार भेटलैक। ओ लगानक ओसूली करैत छल। बादमे जखन जमीन्दारी प्रथा लागू भेलैक तँ बिना कोनो दीवानी वा फौजदारी अधिकारक कतेको जमीनदार अपना कें 'राजा' घोषित कए देलनि। लोकगाथा नायक सलहेसक नामक पूर्व 'राजा' लागल अछि। कतेको गोटे अपन पुत्रक नाम 'राजकुमार' रखैत अछि। कतेको गोटे दुलारसँ अपन पुत्रकेँ 'राजा बेटा' कहैत अछि। आ' बेटीक नाम 'रानी' राखल जाइत अछि। केओ-केओ 'राजा बाबू' कहल जाइत

छथि। सलहेसक संग लागल 'राजा' शब्द संज्ञा थिक कि विशेषण? ओ कोन भौगोलिक खंडक राजा छलाह? गाथामे एहन किछु नहि अछि। गाथाक अनुसार ओ चौकीदार छलाह। राजा भीमसैनक फुलबाड़ीक रखबार छलाह। रानी हँसावती चोरीक हाल कहैत राजा भीमसैनकेँ जे शिकाइती पत्र लिखैत छथि, ओहिमे स्पष्ट अछि सलहेस चौकीदार छथि –*जनमक चौकीदार थिकाह सलहेस।* राजा सलहेस स्वयं अपनाकेँ नोकर कहल अछि – *तखन कल जोरि कै ठाढ़ि भेल सलहेस, जन्म सँ नोकरी कैल कहिओ फूलक साटी न लागल, आइ कोन बिखै भेल जे बन्धुआ बान्हि देल।* ओहिना जखन दौना मालिनिक प्रयाससँ चोरीक माल बरामद भए जाइछ तँ राजा भीमसैन कहैत छथिन – *दौना मालिनि लै राजा सलहेस भीमसैनक फुलवाड़ी करै जन्म भरि रखबारी।* एहू ठाम रखबारीक उल्लेख अछि। प्रश्न अछि, एक रखबार राजा कोना भए सकैत अछि? किन्तु राजा भीमसैन अपन फुलबाड़ीक चौकीदार सलहेसकेँ 'राजा' कहि सम्बोधन कएल अछि। ई कम महत्त्व आ' सम्मानक बात नहि भेल। 'राजा'क व्युत्पत्ति होइत अछि 'राजति इति राजा'। अर्थात् जे ऐश्वर्यसँ युक्त रहए। निश्चित रूपसँ सलहेसक व्यक्तित्व ऐश्वर्यसँ युक्त रहल होएतनि, अन्यथा कोनो राजा अपन रखबारकेँ 'राजा' कहि सम्बोधित करत, अकल्पनीय अछि।

तथापि, सम्पूर्ण गाथामे राजा सलहेसक व्यक्तित्वक एहन कोनो पक्ष उद्घाटित नहि अछि, जेना कि *गीत दीनाभद्री* गाथानायक दीना आ' भद्रीमे भेटैत अछि, जे सलहेसकेँ ऐश्वर्यवान प्रमाणित करैत हो। केवल एकठाम संकेत भेटैत अछि। जखन हुनकहि आदेशपर कमलामे नहाइत दौना मालिनिक मांगसँ झपटि आनल गहना बेदुलीकेँ आपस कए देबाक हेतु सुगाकेँ आदेश दैत छथिन – *'सुनह सुगा, जकर बेदुली लैलाह से जौँ पिछौँर करै तौँ धरम करम नहिँ बचते; से नहिँ, जाए बेदुली सखु बन पहुँचा दहक ।'*

एहि सन्दर्भमे गाथा नायक राजा सलहेसक व्यक्तित्वपर विचार कएल जाए। सलहेसक पहरेदारीमे राजमहलमे चोरि भेल अछि। हुनका आदेश देल जाइत छनि जे चोरीक माल उपराबथि। चोरीक माल उपरेबामे असमर्थ राजा सलहेसक बिरुद्ध रानी हँसावती राजा भीमसैनकेँ पत्र लिखैत छथि। पत्रक लेल ओ अचरा फारि कागज बनाओलि, नैनाक काजर पोछि मोसि बनाओलि, बाम कलगुरिआ कैँ चीरि कलम बनाओलि आ' राजा भीमसेनकेँ पत्र लिखल – *एतए गढ़ मेँ चोरी भेल, जनमक चौकीदार थिकाह सलहेस, हुनका कहबैन्हि जे चोर माल हाजिर करै, तौ लागि हुनका फुरसति नहि।* पत्र पढ़ि राजा भीमसैनकेँ तामस होइत छनि। ओ सलहेसकेँ उपस्थित करबाक आदेश बनौधिआकेँ दैत छथि। सलहेस डरेँ नुका रहैत छथि। हुनका पकड़िआमे ताकल जाइछ, झील होलमे ताकल जाइछ, तरेगना पहाड़ पर ताकल जाइछ, मुदा कतहु सलहेसक भाँज नहि लगैत छैक। बनौधिआ हारि–थाकि बैसि रहैत अछि। ओकर लटकल मुह देखि एक बुढ़िया बटोहिनि कारण पुछैत छैक आ' जानि कहैत अछि – *एकठाम हम देखलि सलहेस कैँ ; कलालक भट्ठी पर दारू पिबैत, गाँजा मलैत, करिआ पगड़ी माथ मेँ ललकी लाठी हाथ मेँ, धोरुआ माँटी देह मेँ । एतेक सुनल बिलकुल बनौधिआ दौड़ल सलहेस कैँ पकड़ै, चारू दीस सँ घेरि लेल कलालक भट्ठी; तखन जाए पकड़ि लेल ओ मुसुक बाँध बान्हि देल।।*

राजा सलहेस पर आरोप छनि जे हुनक पहरेदारीमे महलमे चोरि भेल। आदेश देल गेलनि जे चोरीक माल उपराबथि। किन्तु ओ असमर्थता व्यक्त कएल – *चोरक बनार नहिँ पाओल, आनु कागज जे चोरी माल गेल अछि तकर तमसुक लिखि देब, जन्म जन्म सन्धान कै देब, चोर माल हमर सक नहिँ थीकि।* अपन रखबारक एहन उत्तर ई सुनि राजा भीमसैनकेँ तामस होइत छनि। ओ आदेश दैत छथिन – *खिसिआएल राजा भीमसैन, देल हुकुम बनौधिआ कैँ लै जाह सलहेसकैँ ,उनटा बाँध बाँधि देब, नौ मन ढ़ैँ ग उपर कै देब, कचे बाँस के फठा सौँ पीठि ओदारि देब, जाति दुसाध कबूल नहिँ देब।*

राजा भीमसैनक आदेश सुनि राजा सलहेसक प्राण संकटमे पड़ि जाइत अछि। तखन सहोदर मोन पड़ैत छथिन। बूढ़ि माए मोन पड़ैत छथिन। बिआही पत्नी मोन पड़ैत छथिन। घरक गोसाउनि असाबरी मोन पड़ैत छथिन – *तखन कनै लागल सलहेस, जे आब प्रान नहिँ बाँचत, आखिर मरना, अंकुर मेटल नहिँ जाएत, भाइ सहोदर मोतीराम सौँ भैँ ट नहिँ भेल, बिआही स्त्री सौँ भेट नहिँ भेल, माए बुढ़िआ धरि सौँ भेट नहिँ भेल।* ओ अपन कुलदेवी असाबरीसँ गोहारि करैत छथि जे फुलबाड़ीमे पलंगपर सुतलि उढ़री तिरिआ सतबरती दौना मालिनिकेँ कचहरीमे भेंट करबाक संवाद दिऐक – *सुमिरै लागल असाबरी घरक गोसाउनि कैँ जे जाए कै उढ़री तिरिआ सतबरती दौना मालिनि होइत सूतलि फुलबाड़ी मैँ पलंग पर तकरा जाय कहब सँवाद आबि कै कचहरी मैँ भैँ ट कै जाए।*

ध्यान देबाक थिक जे राजा सलहेसकेँ अपन बिआही स्त्रीसँ भेंट नहि होएबाक दुख छनि, किन्तु जकरासँ सहायताक प्रयोजन छनि, जकर माथक बेदुली देखि ओ लोभा गेल छलाह ओहि दौना मालिनिकेँ उढ़री तिरिआ

कहल अछि। ई फरिछाबए नहि पड़त जे मिथिलामे *उढ़री तिरिआ* ककरा कहल जाइत छैक। स्पष्टतः दौना मालिनिक प्रति राजा सलहेसक ई प्रेमभाव नहि, अनादरभाव थिक। कहि सकैत छी, नारी जातिएक प्रति ई उपेक्षाभाव थिक। गीत राजा सलहेसमे नारी जातिक प्रति असम्मानक अनेकहु उदाहरण अछि। कचहरीमे उपस्थित भए दौना मालिनि चोरीक माल हाजिर करब गछि लैत अछि। मुदा, तकर विश्वास ने राजाक दीवान कैं होइत छनि आ' ने राजा भीमसैनहिकैं । दीवान सुनितहिं खिसिआ जाइत छथि आ' कहैत छथि, त्रिआक जाति कतयसँ चोरीक माल उपरा सकैत अछि – *ताहि पर तमसल दीमान, जे त्रिआक जाति कहाँ सौं लेवे चोर माल; जौं लागि हाजिर करवैं नहिं, तो लागि फुरसति नहिं देबौंक।* राजा भीमसैन सेहो ओकर क्षमतापर शंका करैत छथि आ' एहन शर्त रखैत छथि, सेहो मौखिक नहि लिखित, जकरा मर्यादित नहि कहि सकैत छी, अपितु ओहन शर्त नारीक प्रति असम्मानक द्योतक थिक। राजा भीमसैन कहैत छथिन – *बन्धन खोलाए देबौंक, एक एकरार हमरा पास लिखि दह जे आठम दीन चोर माल हाजिर करी, नहिं हाजिर करी, तौं नौम दिन तोहरा सौं विवाह करी; तकर अकरार लिखि दाखिल करह, ओ लिखाए लेल।* राजा सलहेस तँ बेभरोस भए गेल छलाह। मुदा, ओएह उढ़री तिरिआ हुनका बन्धनमुक्त कराए देलकनि। जिज्ञासा कएलापर कहैत अछि – *अपन इजतिक अकरार लिखि आठ दिनक, जे चोर माल आनि देब ओ हाजिर कै देब, तखन अहाँकैं खोलाओलि अछि।* एहिना चुहड़ मलकैं सेहो गोसाउनि स्वप्न दैत छथिन– *देवी असावरी देलि जगाए जे त्रिआ कारन मुदैं तोर जुमल सलहेस।* ऐश्वर्यवानक हेतु स्त्री–जातिक प्रति आदर–सम्मान राखब सेहो आवश्यक अछि। मुदा, गीत राजा सलहेसमे स्त्रीक प्रति सभठाम अनादार आ' उपेक्षाभाव भेटैत अछि। एही उपेक्षा एवं अविश्वासक अभिव्यक्ति 'त्रियाचरित्रम्' आ' कबीरदासक 'नारी की झांई पड़त, अन्धा होत भुजंग' मे भेल अछि। वस्तुतः नारी जातिकैं भोग्या मानैत अपन वर्चस्व स्थापित करबाक पुरुषक मानसिकता थिक। ई पुरुष मानसिकता जाति–समुदाय निरपेक्ष अछि।

चौरविद्यामे निपुण चुहड़ मल राजा सलहेसक चुस्त–दुरुस्त पहरेदारीक वर्णन सुनि हुनक परीक्षा लेमए चाहैत छथि। अपन गोसाउनिकैं गोहरबैत ओ मोने मोन निश्चिय करैत छथि –*जनम सँ पुजलहुँ मोकामा गढ़ मैं , कहिओ जन्म भरि चोरी नहिं कैली; सुनल पकड़िआ मैं ननुआ सलहेस जन्म लेल, बड़ योगमन्त, चौदह कोस पकड़िआ कोतबाली लिखाओल; हुनक डाक सँ ककरो टंगरि साबित नहिं होइअछि जे हुनका पहरा मैं चोरी करी।* चुहड़ मल सेन्ह मारि रानी हँसावतीक कोठलीमे पहुँचि हुनक गरासँ चन्द्रहार काटि लैत छथि। ओ रानी हँसावतीकैं राजा भीमसैनक खाली खटिआ पर पारि चन्द्रहार एवं सोनक पलंग लए अपन गढ़ मोकामा सुरक्षित आबि जाइत छथि। चोरीक कारणकैं स्पष्ट करैत भीमसैनक समक्ष ओ कबूल करैत छथि – *हम निश्चै चोरी कैल सलहेसक नाम जानि कै हुनका पहरा मैं ।*

राजा सलहेसक व्यक्तित्वमे अन्यो प्रकारक दुर्बलता अछि। एहि प्रसंग एक दू टा उदाहरण देखि सकैत छी। दौना मालिनिक रूप–लावण्यपर चपचपाएल चुहड़ मल रानी हँसावतीक गराक चन्द्रहार इनाममे दए दैत छथिन। दौना मालिनि चोरीक पलंग एवं चुहड़ मलक संग अपन सिरकीमे आबि चुहड़ मलकैं तेल–फुलेलक मालिश करैत छथि। एहिसँ आँखि लागि जाइत छनि। ई देखि दौना मालिनि राजा सलहेसकैं बजबैत छथि। एतबहिमे कुलदेवी आसावरी चुहड़ मलकैं जगा दैत छथिन – *मुदैं तोर जुमल सलहेस'*। ओ चेहाय उठैत छथि। उठितहि राजा सलहेससँ लड़बाक लेल तैआर भए जाइत छथि – *दोहरि काछ लगाए भै गेल ठाढ़, छुरी लेल हथवा, एक बेरि छरपल चुहड़ मल, उपर उड़ि गेल सै पचास हाथ, खसल हाथिक हलकाक बाहर, लड़ै लागल सलहेस से। चुहड़ मल जहिना पैसे बकरी मैं हुड़ार, तहिना छनपल फिरैं चुहड़ मल, जैं भर छरपै तेम्हर हाथी कटिते जाए, सात सै मकुना कै एकदम सै काटि देल, तीनि राति दिन परल लड़ाइ; तखन तीनू बापुत के खेहारने फिरैं परतीक खेतमैं।* एहिठाम तीन बापुतमे छथि सलहेस, हुनक छोट भाए मोतीराम आ' भागिन कारीकन्नु। तीनूकैं चुहड़ मल पछाड़ि दैत छथि। स्पष्ट अछि, राजा सलहेस चुहड़ मलसँ बल–पौरुषमे न्यून छथि।

आब गीत राजा सलहेसक नारी पात्रक व्यक्तित्व पर विचार कएल जाए। एहिमे मोरंगक दौना मालिनिक अतिरिक्त हुनक सखी चम्पा, सलखी नौड़ी, रानी हँसावती, सुदीन, बुढ़िआ बटोहिनि, सलहेसक बिआही स्त्री आ' बूढ़ि माइक उल्लेख अछि। बिआही स्त्री आ' बूढ़ि माइक चर्च टा अछि। बुढ़िआ बटोहिनि दयालु अछि। ओ असोथकित बनौधिआकैं सलहेसक हुलिआ कहैत अछि। सलखी नौड़ी बिना राजाक अबेर धरि सुतलि रानी हँसावती पर आश्चर्य करैत हुनका उठबैत अछि आ' सेन्ह काटल जएबाक सूचना दैत अछि। रानी हँसावती राजा भीमसेनकैं पत्र लिखि सलहेसक शिकाइत करैत छथि। चम्पा भोरे–भोर फुलबाड़ीमे कनैत दोना मालिनिकैं देखि जिज्ञासा करैत अछि – *जे कोन बेड़ा है फुलवाड़ी मैं कानब, की हुनक माए बाप गारी देलक, की परोसिआ उलहन देलक ताहि विरहैं ऐलीह फुलवाड़ी।* एहिसँ प्रतीत होइछ जे चम्पाकैं दौना मालिनिक विरहक कारण ज्ञात छैक। गाथा

नायिका दौना मालिनि भोरे उठि देव–मुनि आ' छप्पन कोटि देवताकेँ करजोरि मिनती करैत अछि। ओ इन्द्र आ' इन्द्रासनकेँ साक्षी राखि कहैत अछि –*जनम देलैन्हि छठि राति सोइरी घर मेँ ताहि दिन लिखि देल सलहेस सन बर।* सलहेसक प्रति पूर्णतः समर्पित दौना मालिनिकेँ पूर्ण विश्वास छैक जे सलहेस स्वामी होएताह। ओ कहैत अछि – *हुनका कारन अचरा बान्हलि, परपुरुष मुँह नहिँ देखलि, जनम पाए सिन्दुर नहिँ पेन्हलि। हुनि स्वामीक कारन काँच बाँसक कोहवर बान्हलि, रचि रचि लाली पलंग सेज झारि ओछाओलि, हुनका कारन। सिकिया चीरि बेनिआ बनाओलि स्वामी कारन। हुनका कारन फुलवाड़ी रोपलि, रंग रंग फूल आनि लगाओलि, बेली फूल, चमेली, ओ बुलकुंज, नेवार, तेखरिक फूल फुलवाड़ी लगाओलि हुनि सलहेसक कारन, साँची बीड़ा पान लगाओलि, भेदनी फूल गाँजा आनि लगाओलि, तैँओ सलहेस मोरंग नहिँ आएल।* सलहेसकेँ अपन स्वामी वरण कए चुकल दौना मालिनि निश्चय कए लैत अछि, जँ सलहेस नहि भेटताह तँ प्राण त्यागि देब।

दौना मालिनिकेँ स्वप्न होइत छैक जे स्वामी सलहेस राजाक कचहरीमे संकटमे छथि। ओ चेहाए उठैत छथि आ' तत्काल दरबाजा पर गाइक गोबरसँ सवा हाथ धरती नीपि लैत अछि। सब देव मुनिक नाम लए अराधना करैत अछि। सूर्यक अभिमुख भए चोरक नाम उचारबाक हेतु प्रार्थना करैत अछि – *सुरुज साँचे–साँचे सगुन उचारि दह जे कोन राज चोर बसैत अछि, केकर बेटा, केकर भगिना, की ओहि चोरक नाम थीक।* जखनहि चोरक नाम ठेकान ज्ञात भए जाइत छैक, कचहरीमे जूमि राजा भीमसैनक समक्ष उपस्थित भए सशर्त सलहेसकेँ छोड़ाए लैत अछि। सलहेसकेँ अपन बन्धन–मुक्तिपर आश्चर्य होइत छनि। ओ सलहेसकेँ पैरुख करबाक सलाह दैत छथि। चोर कोना पकड़ल जाएत, तकर भेद बतबैत अछि। मालिनिक परामर्शपर सलहेस नटक टोलसँ ढ़ोलक, मुगदर, खनती, झीलम, खटिआ, मचिआ, सिरकी, भैंसा आदि मंगनी आनि दौनाकेँ सुन्झा दैत छथि। दौना मालिनि सलहेसकेँ सब भेद बतबैत कहैत छनि – *मथाक टीक मुड़ाए दिअ, जुलफी रखाए लिअ, तसरक धोती काछ लगाए लिअ, उत्तम रंगक ताखी मुड़ बैठा लिअ, घोरुआ माटी गात लगाए लिअ, दुइ चारि दंड लगाए लिअ जे असले नटक भेस लागे* आ' अपने असल कसबीन बनबाक लेल *दछिनक चीर पहिर लेलि, पाटी समारि लेलि, नैना काजर पेन्हि लेलि, सीके सीके मिसी बैठाए लेलि, चोली पहिर लेलि, हाथमेँ बाँक पहिर लेलि, पैरमे काड़ा पहिर लेलि, माँगमेँ तारचन्द टिकुली पहिर लेलि, असले कसबीन भेलि।*

चोरीक सामानक संग गंगा पार करैत चुहड़ मल गंगाकेँ मना कए देने छलथिन जे ओ सलहेसकेँ पार नहि होअए देथि, सभ नाबो भसा देथि। गंगा दौना मालिनिकेँ अपन घर घुरि जएबाक लेल कहैत छथिन। किन्तु ओ नहि जाइत अछि आ' अपन गराक चन्द्रहार उतारि जलमे राखि दैत छथि। ओ चन्द्रहार नाओ भए गेलैक आ' ताहिपर चढ़ि नट–नटिनि मोकामा पहुँचि सिरकी तानि लेल। सलहेस रहलाह घरपर आ' मालिनि हरबा बेचैत–बेचैत चुहड़ मलक दरबाजा पर पहुँचि जाइत अछि। चुहड़क प्रश्नक उत्तरमे मालिनि स्वप्नमे देखल चन्द्रहारक प्रसंग कहैत अछि। ईहो कहैत अछि जे ओ *इनाममे हमरा दए दैह तोहरा मन पुराए देहब।* चोरीक पलंग आ' चन्द्रहार लए चुहड़ मलकेँ ठकि–फुसिआए दौना मालिनि अपन सिरकीमे लए अनैत अछि। *ता मैँ सलहेस सिरकी तेजि देल, लाबैँ गेल अपना भाइ मोती राम ओ भगिना कारीकन्तु; सात सौ हाथी मकुना लै आबि कै सिरकी घेरल। ता मैँ नटिनिआ पलंग ओछाए देलि, ताहि पर चुहड़ मल कै तेल फुलेल दै सुताए देलि।* चुहड़ मल एवं सलहेसमे युद्ध आरम्भ भए जाइत अछि। युद्धमे चुहड़ मलक पलरा भारी होइत देखि दौना मालिनि चुहड़ मलक बाँहि पकड़ि कहैत छनि – *हम जातिक कसबीन, हमरा लग कतेक मोसाफिर अबैत अछि, तकरा सभ सौँ लड़ने हमर रोज हरज होइत अछि, खीस तेजि दह, चलह सिरकी मेँ मन पुराए देब। चुहड़ माल सिरकी मेँ आबि कै पलंग पर रहल सूति। नीन्द अहिद्रा राखि देल, चाल कैलि राजा सलहेस कैँ ओ मोतीराम कैँ , आबि कै अप्पन मुर्दै बान्हू।।* स्पष्ट दौना मालिनिक कौशल एवं बुधिआरीसँ चुहड़ मल पकड़ाइत छथि आ' चोरीक माल उपर होइत छैक।

उपर्युक्त तुलनात्मक विवरणसँ स्पष्ट अछि जे दौना मालिनि विभिन्न कला–निपुण एवं बुद्धिमती अछि। ओ गायक गोबरसँ नीपि ठाँव दैत अछि। देवी–देवताक आराधना करैत अछि। ईश्वरक प्रति पूर्ण आस्था छैक। ओ चतुरतासँ चोरीक माल उपराए लैत अछि आ' राजा भीमसैनक शर्तकेँ पूरा कए असहाय भेल अपन प्रेमी राजा सलहेसकेँ बन्धन–मुक्त करबैत अछि। अन्यथा, राजा सलहेसक चौकीदारी तँ गेले छलनि, राजा भीमसैनक बनिसारमे आजन्म हकन्न कनैत रहि जएतथि। एहिठाम हमरा एक पौराणिक कथा मोन पड़ि गेल अछि। ओहि कथाक अनुसार सहस्राननक अपरिमेय शक्ति एवं पराक्रमसँ वाणविद्ध रामकेँ देखि जनकतनया जानकी अपन विकराल रूप धारण कए दनुज–दलक संहार कएने छलीह आ' तदुपरान्त, राम सहित हुनक समस्त अनुज आ' सेनामे प्राणक संचार भेल छल। मुदा, पुरुष मानसिकता आ' राजतन्त्रीय शासन–व्यवस्थामे जनकतनया जानकीकेँ

तकर पुरस्कार नहि, देश–निष्कासनक दण्ड भेटलनि आ' ओही मानसिकताक कारणेँ दौना मालिनिक माथक बेदुली पर आकर्षित राजा सलहेस *ओकरा उढ़री तिरिआ* कहल। राजाक दीवानकेँ दौना मालिनिक क्षमता पर विश्वास नहि भेलनि। राजा भीमसैन तँ ई लिखबाकेँ राखि लेल जे आठमा दिन चोरीक माल हाजिर नहि करौला पर दौना मालिनिकेँ हुनका संग विवाह करए पड़तैक। समाजक प्रभावशाली लोकक उपेक्षापूर्ण व्यवहार एवं मानसिकतामे सभ शर्तकेँ स्वीकार करैत जाहि चतुरता एवं कौशलसँ अपन लक्ष्यक सन्धानमे सफल भेल अछि, असामान्य साहस एवं आत्मविश्वासक परिचायक थिक। संगहि, सभ पुरुष पात्रक अपेक्षा दौना मालिनिक चरित्र एवं व्यक्तित्व बेसी प्रखर छैक। गाथाक समस्त घटना ओकरहि इंगित पर चलैत छैक। सर्वत्र ओकरहि प्रधानता अछि। तथापि, लोकगाथा गायक नाम राखि देलनि *गीत राजा सलहेसक*।

000

।। अथ गीत राजा सलहेसक।।

It (the song of Raja Salhes) is most popular throughout the district amongst the low caste people, and is printed word for word taken down from the mouth of a Dom. Salhes was the first Chaukidar, and is much worshiped by Dusadhs, a caste whose profession is to steal and to act as Chaukidars, preferably the former. Throughout Tirhut, Salhes asthans can be seen under the village pipal tree, composed of a raised mud platform surmounted by mounted figures made of clay, representing the various characters of the song. Here the Dusadhs woship him.

Although a song, it is written in prose, and is chanted, rather than sung. Note that, throughout, Transitive Verbs in the past tense frequently take infiections which properly belong only to Neuter Verbs.-

।। अथ गीत राजा सलहेसक।।

1. भेल भिनसरवा ठाढ़ि दरवाजा गै मालिनि कर जोरि मिनती करैछथि देव मुनिक नाम, सुनु इन्द्रासन छपन कोटि देबता जे इन्द्र जनम देलैन्हि छठि राति सोइरी घर मेँ ताहि दिन लिखि देल सलहेस सन बर। हुनक कारन अचरा बान्हलि, परपुरुष मुँह नहिँ देखलि, जनम पाए सिन्दुर नहिँ पेन्हलि। हुनि स्वामीक कारन काँच बाँसक कोहवर बान्हलि, रचि रचि लाली पलंग सेज झारि ओछाओलि, हुनका कारन। सिकिया चीरि बेनिआ बनाओलि स्वामी कारन। गौरी आओत ना।।

2. हाहा गे। भेल भिनसरवा, कोइलि बोलइत, दरवजवा ठाढ़ि कल जोरि मिनति करैछथि छपन कोटि देब केर नाम पर। सुनु इन्द्रासन इन्दर लोक छठि राति जाहि दिन जनम देलैन्हि सोइरी घरमेँ ताहि दिन लिखि देल सलहेस सन बर। बालपन अचरा बान्हलि, परपुरुष मुँह नहिँ देखलि, जनम पाए सिन्दुर नहिँ माँग पहिरलि। हुनका कारन काँचे बाँसक कोहबर बान्हलि, लाल पलंग सभ रंग सेज ओछाओलि, सिकिया चीरि बेनिआ बनाओलि।। गौरी अवत।।

3. नान्हिटा सँ पोसलहुँ, एतेक बस्तु आनि कै घर मेँ रखलहुँ, तैओ न स्वामी सलहेस ऐलाह। हुनका कारन फुलवाड़ी रोपलि, रंग रंग फूल आनि लगाओलि, बेली फूल, चमेली, ओ बुलकुंज, नेवार, तेखरिक फूल फुलवाड़ी लगाओलि हुनि सलहेसक कारन, साँची बीड़ा पान लगाओलि, भेदनी फूल गाँजा आनि लगाओलि, तैओ सलहेस मोरंग नहिँ आएल। बिना पुरुष सै कोना दिबस गमाएब, एहि सोग सन्ताप सँ तेजि दितहुँ मोरंग राज, देस पैसि कै स्वामी तकितहुँ। स्वामी सलहेस जौँ मिलतथि, स्वामी सलहेस लै राज भोगितहुँ, नहिँ मिलताह हिआ हारि घुरब, सोग सन्ताप सौँ पानि धसि खसब, फेरि पलटि मोरंग नहिँ आएब। जनम सौँ गहना गढ़ाए राखलि कहिओ नहिँ पहिरलि, आइ मन होइअछि जे गहना पहिरि ऐना मँ देखितहुँ, जे केहन लगै अछि, सूरति।।

4. गहना पहिरि बैठलि मालिनि सुरखी देखै ऐना में । बड़ सुन्दर लगै अछि एक रती सिन्दुर कारन माँग उदास लगैअछि। तखन दमसि उठलीह घर सौँ , बिलकुल गहना खोँइछा बाँधलि, घर सौँ चलि भेलि मालिनि। नगर गुजरात तेजि देब, जहाँ भेटताह स्वामी सलहेस देस पैसि ताकब; जौँ कतहुँ मिलताह स्वामी, तौँ लैकै कँ आएब मोरंग राज; नहिँ मिलताह हिआ हारि लौटब सोग संताप सौँ बुड़ि कै मरब।

5. भोर होइत भिनसरवा कनैति घर सौँ बहार भेलि, चारु दीस ताकथि, बाट ठाढ़ि पचताबथि जे नहिँ भेटै बाट बटोही, नहिँ भेटै संग समाज, ककरा दिआ समाद पठाएब। हिआ हारि कै चललीह मालिनि कनैत चललीह मालिनि स्वामीक उदेस। डेगे डेगे चललीह, जोजन भरि जाए जुमलीह अपना फुलवाड़ी; फूल देखि धरती

खसलि मुरछाए, तखन लोटि लोटि कनै लगलीह फुलवाड़ी मेँ। हुनक कानब सुनि संग समाज सखी बहिन भोर होइत आइलि हुनका फुलवाड़ी। तखन जाए पुछबहुन्हि सखी कँे जे कोन बेड़ा है फुलवाड़ी मेँ कानब, की हुनक माए बाप गारी देलक, की परोसिआ उलहन देलक ताहि विरहेँ ऐलीह फुलवाड़ी।।

6. तखन पुछैछथीन्हि चम्पा जे की जानि घर सँौ बहार भेलि। तब कहै छलथीन्हि दौना मालिनि एक सलहेसक कारन घर तेजलहुँ, घर तेजि स्वामी सलहेसक कारन चललहुँ। पाँचो सखी ली कमला घाट जे कमला घाटमेँ स्वामी सलहेस हाथी नमावै औताह, ओहि ठाम जौँ मिलताह स्वामी सलहेस तौँ लाएब जादू सँौ लोभाए। आनि अपना फुलवाड़ी मढ़वा बान्हि बिआहि देब; तोहरा छाड़ि कोनो सखी नहिँ द्रिष्ट रोपब, कुश ले उसरगि देब। तौँ पाँचो बहिनि चललीह कमला नहाए, जाए जुमलीह ठीक दुइ पहरमे कमला घाट मेँ, चारू दीस बाट ताकथि जे कोन दीस सँौ सलहेस औताह। तखन चीर उतारि तेहि ठाम राखलि तेल फुलेल कमला मेँ भसाए देलि।।

7. कमला मेँ भसाए कल जोरि मिनति करै अछि, जे जलदी सलहेस कँे मंगाए दिअ जे दरसन होए। पाँचो बहिनि एतवा कहि कै कमला मेँ डूब देलैन्हि। आसन डोलि गेल। छपन कोटि इन्द्र देबता जाए कै पैठल जहाँ बैठल कचहरी मेँ ताहिठाम, उदमत लगाए देल। सभटा हाल कहि देल सलहेस कँै, तोहरे कारन पाँच सखी बारह बरख अचरा बान्हलि; आवै कहब कमला घाट स्वामी सँौ दीदार है। एतवा समाद सलहेसकँै गेल अछि; सलहेस कहल अछि जे हम नहिँ जाएब, सुगा पठाए बेदुली मंगाए इआर कँै सहिदानी देखाए देब। तखन एतवा खबरि सलहेस कँै भेल अछि, लगले हुकुम क देल झिनमा खवास कँै डेउढ़ी सँौ सुगा आनि दे; झिनमा खवास गेल अछि, लगले सात खंड डेउढ़ी पिंजरा टांगल जाए, झिनमा खवास पिंजरा उतारल तौ पिंजरा उतारि लाएल, बीच कचहरी सलहेस कँै आगा राखल, सुगा बहार कै सुगवा उड़ाए देल। तर तेजल धरती उपर असमान बिचली परती सुगवा देऐ चकभाउर चलि गेल कमला घाट। पाँचो बहिनि कमला मेँ खेलाए धमाउर, उपर मेँ सुगा देऐ चकभाउर। चारू दिस नजरि खिड़ाबै, खन कन्डेरिएँ सुरखी परेखे, खन दृष्टि गेदुली पर देऐ ऐसनि झपट मारै सुगवा बेदुली लै भागल दौना मालिनिक माँगक लै भागल। सुगवा धैल पकड़िआक बाट, जाइत जुमल साखु बन, जुमल पकड़िआ राज कचहरी दुनु इआर कँै बीचमेँ ओन के ओन दै बेदुली नेड़ाए देल। बेदुली देखि बहुत मन छगुलक जकर बेदुली लाएल तकर तिरिआ केहन सुरखी।।

8. कहथि सलहेस, सुनह सुगा, जकर बेदुली लैलाह से जौँ पिछौँर करै तौँ धरम करम नहिँ बचते; से नहिँ, जाए बेदुली सखु बन पहुँचा दहक। जाए सुगवा सखु बन पहुँचल, असोक केर गाछ पर बैठल। पाँचो बहिनि तकैति हिआ हारुनी भेलि, जाइत चारि बहिनि घुरलीह हिआ हारि कँै; दौना मालिनि कुसोथरि देलि अछि, होइत भोर सुगा उड़ल आबि कँै सुगा बेदुली देल अछि दौना मालिनि कँै; लिअ मालिनि अपन बेदुली, जाए मोरंग राज फुलवाड़ी मेँ बैठब, हम सलहेस कँै पठाए देब।।

9. पलटि ऐलीह मालिनि अपना फुलवाड़ी। होइत भोर सलहेस पहुँचल, राति विराति जाए जुमल मोरंग राज फुलवाड़ी। होइत भोर सलहेस आएल फुलवाड़ी।।

10. भेल भिनसरवा बोलल कोइलि। उठलीह मालिनि फुलडाली लेनैँ फुलवाड़ी ठाढ़ि फूल तोड़ि गूँथलि गृमहार सलहेस ला। ताहि बेरि जुमल अनदेसिया चोर। चुहड़ माल मोकामा गढ़ सँ। दिन दुपहरिया घर घर फिरै, पकड़िआ टेबनैँ फिरै, पकड़िआ चुहड़ माल योग हवेली नहिँ मिलै, तकैत मिलल राजा भीमसैनक डेउढ़ी। डेउढ़ी टेबि चचल चुहड़ माल दुइ चारि कोस अन्तर जंगल मेँ डेरा खसाओल। सुमिरै लागल देबी असावरि घरक गोसाउनि। जनम सँ पुजलहुँ मोकामा गढ मेँ, कहिओ जन्म भरि चोरी नहिँ कैली; सुनल पकड़िआ मेँ ननुआ सलहेस जन्म लेल, बड़ योगमन्त, चौदह कोस पकड़िआ कोतबाली लिखाओल; हुनक डाक सँ ककरो टंगरि साबित नहिँ होइअछि जे हुनका पहरा मेँ चोरी करै।।

11. से जानि चुहड़ माल चढ़ि कै आएल, झोँटीक केस बाँधल। दोहरि चरना चढ़ाओल, लाख दर लाख छूड़ी गतर मेँ बान्धल, कमर मेँ ढ़ाल बान्धल। पेस्तर छूड़ी लेल हाथ कै, बैठल धरती मेँ। आसन लगाए कै, देल पेटकुनिआ धरती मेँ, सेन्ह काटै लागल, दुइ चारि कोसक बीच सँ धरती मेँ मिलि गेल; सेन्ह कटैत चल गेल पकड़िआ राज मेँ। होइत भोर राजाक धरहरमे सेन्ह काटै लागल, सेन्ह काटि पहुँचल चुहड़ माल जाहि घरमे रानी हँसावती सूतलि सोनाक पलंग पर मुनहर घरमेँ, ताहिठाम घर मेँ पहुँचल चुहड़ माल चोर। हुनका सिरमा मेँ सेन्ह फुटल जाए, चुहड़ माल पलंग औँठघि बैसल। जाति दुसाध परतीत नहिँ करैऐ, मुड़ी उठायकै घर मेँ ताकै माल, कोनो माल नहिँ मिलल, देखल हँसावती, सूतलि सोनाक पलंग पर, लाख दर लाख गहना गतर मेँ। तकरा तजबीज करै चुहड़ माल जे कोन चीज लेब। दुइ चीज लेब, सोनाक पलंग ओ रानीक गराक चन्द्रहार लेब। एतवा कहैत मेँ भिनसरवा भेल, ताहि सँ चन्द्रहार रानीक गरा सँ काटि लेल, ओ रानी कँे उठाय कै भीमसैनक खटिआ पर देल, ओ सोनाक पलंग मथा पर राखि लेल।।

12. होइत भिनसरवा भागि चलल ओहि सेन्ह दै, चारि कोसक तर दै उपर भेल जंगल में । लगले मोसाफिरक भेस पकड़ि लेल, माल जोर बर जोर लेने जाइअछि मोकामा गढ़ में ; जाइत गंगा घाट त्रिबेनिआ पहर दीन उठैत गंगा पहुँचल। तब कहैत अछि गंगा सँ ''सुनह गंगा, चोरि कै आएल छी, परबत राज सौँ राजा भीमसैनक गढ़ सौँ ओ सलहेसक पहरासँ लेने जाइ छी। कहिओ काल चढ़ै मुद्दै सलहेस तकरा पार मति करह, जाहि घड़ी पार करब हम सुनब आबि कै धर्म्मक बाँध बाँधि देब''। एतबा कहि गंगा पार भै गेल ओहि पार मगह में , मगह में चलल मोकमा गढ़ में , सात खंड डेउढ़ीक बीच में गाइल। ताधरि रानीक घर में नीन्द नहिँ टूटल, केओ नहिँ जागल, डेउढ़ी में सभक पहिले सलखी नौड़ी जागलि।।

13. बाढ़नी लेने अंगना बहाड़ि ओसरवा में ठाढ़ि भेलि, तजबीज करै बिना पुरुष कें त्रिआ एतेक बेरि धरि सूतलि; तखन नड़ाय देलि बाढ़नि, धाए पहुँचलि अन्दरात, केवाड़ खोलि जगाए देलि हँसावती रानी कें । उठू उठू रानी एहन बज्र नीन्द भेल, कोन चोर आबि घर सेन्ह देल; एतेक कहैति में रानी उठलि हँसावती, रानी सेन्ह देखि गर्द कैल। ततबा बेरि में दौड़ल बिलकुल नोकरिआ, दौड़ि कै घेरल चारू दीस डेउढ़ी, ताकै चोरक बनार कतहु नहिँ मीले। तखन कनै लागलि हँसावती रानी, राजाक नाम पर कनै लागलि। तखन कानि कानि अचरा फारि कागज बनाओलि, नैनाक काजर पोछि कै मोसि बनाओलि, तखन बाम कलगुरिआ कें चीरि कलम बनाओलि, लिखै लागलि। चोरीक हाल कहि देब राजा भीमसैन कें । एतए गढ़ में चोरी भेल, जनमक चौकीदार थिकाह सलहेस, हुनका कहबैन्हि जे चोर माल हाजिर करै, तौ लागि हुनका फुरसति नहिँ, एतैक चीठी लिखि सुदीन कै कहलि खवास मंगाय लेलि, तकरा दिआ चीठी राजा भीमसैन कें पठाय देलि।

14. होइत दुपहरिआ चीठी पहुँचल राजाक पास। राजा भीमसैन चीठी देखि तमसल, लगले हुकुम देल बिलकुल बनौधिआ कें जे पकड़ि लाबह सलहेस कें । तखन दौड़ल बिलकुल बनौधिआ, सलहेस नुकाए गेल, कतहु नहिँ मिलल सलहेसक भाँज। तखन पकड़िआ ताकल, झील होल ताकल, तरँगना पहाड़ ताकल, कतहु न मिलै सलहेसक भाँज। हिआ हारि बैठल परतीक खेत में , झखै लागल, ताहि बेरि में एकटा बुढ़िआ बटोहिनि आबि गेलि, से पुछै लागलि जे एतेक बनौधिआ कथी लै झखैत छह। तखन कहैत अछि एक सलहेसक नाम सँ झखैत छी, तखन बनौधिआ कहल जे सलहेसक भाँज बताए दे। तखन बुढ़िआ कहै लागलि जे एकठाम हम देखलि सलहेस कें ; कलालक भट्ठी पर दारू पिबैत, गाँजा मलैत, करिआ पगड़ी माथ में ललकी लाठी हाथ में , घोरुआ माँटी देह में । एतेक सुनल बिलकुल बनौधिआ दौड़ल सलहेस कें पकड़ै, चारू दीस सँ घेरि लेल कलालक भट्ठी; तखन जाए पकड़ि लेल ओ मुसुक बाँध बान्हि देल।। तब पुछै लागल सलहेस बनौधिआ कें जे कोन जिआन भेल अछि जे हमरा बाँधि देल अछि, से हाल कह। तखन कहै अछि बनोधिआ जे चलह कचहरी, राजा भीमसैन कहताह हाल, हम नहिँ जानी। अगा पीछा बनोधिआ बीचमें सलहेस कें लेने जाय जुमल कचहरी, दाखिल कै देलक कचहरी में , कल जोरि सलाम कैल बिलकुल बनौधिआ लिअ समुझाय अपन बन्धुआ।।

15. तखन कल जोरि कै ठाढ़ि भेल सलहेस, जन्म सँ नोकरी कैल कहिओ फूलक साटी न लागल, आइ कोन बिखै भेल जे बन्धुआ बान्हि देल। तखन राजा भीमसैन हुकुम देल जे तोंहरा अछैत घर में चोरी भेल, चोर माल पकड़ि कै हाजिर कै दह, तखन तोहरा फुरसति देबहु, बीच में नहिँ देबहु। तखन कहैत अछि सलहेस जे चौदह कोस पकड़िआ चौकीदारी लिखाओल, चोरक बनार नहिँ पाओल, आनु कागज जे चोरी माल गेल अछि तकर तमसुक लिखि देब, जन्म जन्म सन्धान कै देब, चोर माल हमर सक नहिँ थीकि। तखन जान सौँ खिसिआएल राजा भीमसैन, देल हुकुम बनौधिआ कें लै जाह सलहेस कें , उनटा बाँध बाँधि देब, नौ मन ढें ग उपर कै देब, कचे बाँस के फठा सौँ पीठि ओदारि देब, जाति दुसाध कबूल नहिँ देब। तखन परल संकट में सलहेस, तखन कनै लागल सलहेस, जे आब प्रान नहिँ बाँचत, आखिर मरना, अंकुर मेटल नहिँ जाएत, भाइ सहोदर मोतीराम सौँ भेंट नहिँ भेल, बिआही स्त्री सौँ भेट नहिँ भेल, माए बुढ़िआ धरि सौँ भेट नहिँ भेल। सुमिरै लागल असाबरी घरक गोसाउनि कैँ जे जाए कै उढ़री तिरिआ सतबरती दौना मालिनि होइत सूतलि फुलबाड़ी में पलंग पर तकरा जाय कहब सँवाद आबि कै कचहरी में भेंट कै जाए।

16. एतबा सुनि दौना मालिनि उठलि चिहाए, ठाढ़ि भेलि दरबाजा पर गाइक गोबर लै सवा हाथ धरती नीपि लेलि, सब देव मुनिक नाम अरोधि कै सुरुज माथौं सगुन उचारै लागलि। सुरुज साँचे-साँचे सगुन उचारि दह जे कोन राज चोर बसैत अछि, केकर बेटा, केकर भगिना, की ओहि चोरक नाम थीक; एतेक हाल कहि दह। तखन एतेक सुनि कै उठलीह मालिनि, जुमलीह फुलवाड़ी माँझ, सोलहो सिंगार पेन्हि लेलि, जादूक फुलडाली बन्धाए लेलि फूल तोरै लागलि, रंग विरंग फूल तोरि लेलि, काँचे नौंग अराची तोरि लेलि। चललीह स्वामी उदेस, जाए जुमलीह कचहरी माँझ में , कल जोरि मिनती कहैति अछि; राजा भीमसैन के कहै लागलि, जे बड़ सुकुमार

हमर स्वामी सलहेस, मारि सहल नहिँ जाइछैन्हि, कनिएक बन्धन खोलि दिअ, जहाँ सौँ होएत तहाँ सौँ चोर माल हाजिर कै देब। ताहि पर तमसल दीमान, जे त्रिआक जाति कहाँ सौँ लेवे चोर माल; जौ लागि हाजिर करवै नहिँ, तो लागि फुरसति नहिँ देबौक। तखन राजा भीमसैन कहैत छथीन्ह जे बन्धन खोलाए देबौक, एक एकरार हमरा पास लिखि दह जे आठम दिन चोर माल हाजिर करी, नहिँ हाजिर करी, तौं नौम दिन तोहरा सौँ विवाह करी; तकर अकरार लिखि दाखिल करह, ओ लिखाए लेल। तखन दौना मालिनि कहै लागलि जे साते दिन मेँ चोर माल पकड़ि हाजिर कै देब, से दुनु तरफ अकरार भै गेल।

17. तखन उठलीह मालिनि सलहेसक बन्ध खोलै लागलि अपने हाथ सौँ, अगा पछा बिदा भेल। तखन सलहेस पुछै छथीन्हि मालिनि सँ जे की कहिकै हमरा बन्ध खेलौलिँहि। तखन मालिनि कहै लागलि जे अपन इजतिक अकरार लिखि आठ दिनक जे चोर माल आनि देब ओ हाजिर कै देब, तखन अहाँ केँ खोलाओलि अछि। तखन सलहेस कहैत छथीन्हि जे कोन चोर थिक, तब मालिनि कहै लागलि जे चुहड़ माल मोकामा गढ़ मेँ बसैत अछि, जगतक भागिन थीक, वैह चोराए कै लै गेल अछि। करू पैरुख सलहेस जे चोर माल पकड़ि कै लै आबह; ओना नहिँ पकड़ल जाएत, भेद बताए दैत छी जे जाउ नटक टोल, जाए कै सभटा वस्तु मंगनी माँगि कै ढ़ोलक, मुगदर, खनती, झीलम, खटिआ, मचिआ, सिरकी, भैंसा लै आबह। सलहेस तखन मंगनी माँगि के लैआएल, सलहेस मालिनि कै पास सपुर्द कै देल। तखन कहैत छथीन्हि दौना मालिनि ई सभ भेद आओर बता दैतछी, मथाक टीक मुड़ाए दिअ, जुलफी रखाए लिअ, तसरक धोती काछ लगाए लिअ, उत्तम रंगक ताखी मुड़ बैठा लिअ, घोरुआ माटी गात लगाए लिअ, दुइ चारि दंड लगाए लिअ जे असले नटक भेस लागे।

18. तखन दौना मालिनि दछिनक चीर पहिर लेलि, पाटी समारि लेलि, नैना काजर पेन्हि लेलि, सीके सीके मिसी बैठाए लेलि, चोली पहिर लेलि, हाथमेँ बाँक पहिर लेलि, पैरमे काड़ा पहिर लेलि, माँग मेँ तारचन्द टिकुली पहिर लेलि, असले कसबीन भेलि। दुनु आदमी अल्हा गावै लागल, अल्हा सुनि कै मोरंगक लोक चौतरफी घेरि लेल, देखै लागल, तमासा चिन्हले लोग अनचिन्ह भै गेल, तखन ओहि ठामसौँ डेरा उठाए देल, तखन चलल चोर पकड़ै, पहुँचल गंगा घाट पर। ता मेँ सुनलन्हि गंगा सलहेसक अबाइ, घाटे घाटे नाओ देल डुबाइ, अपने ब्राहमनीक रूप धै कंगनिआ चढ़लि। भै गेल गंगाक लग मेँ जे कतहु नाओ दिअ बताए जे पार उतरि कै जाएब ओहि पार। तखन गंगाजी कहै लगलथीन्हि जे नाओ गेल भसिआ; तौं फीरि कै घर अप्पन जाह; घर हम नहिँ फीरि कै जाएब, सुखले नदी पार भै जाएब। गरक चन्द्रहार उतारि कै जल मेँ राखि देलि, ताहि पर चढ़ि लेल नट नटिन; भासल जाए चन्द्रहार, ताहि पर चढ़ल नट नटिन, पार उतरि गेल मगह मेँ। मगह सँ मुंगेर जुमल, राति विराति बलबे पहुँचल, मोकामा गामेमेँ। गाछी ताकि कै डेरा खसाए
देल, तखन सभ वस्तु टाँगि देल, सिरकी तानि देल।

19. तखन अपने बैठल सलहेस; अपने नटिन चललीह भरि मड़ हरबा लै गाम पर हरबा बेचै, ले गे गिरथाइन हरबा ले, तखन हरबा बेचैति–बेचैति पहुँचलि चुहड़क दरबाजा पर। सात नीन्द सूतल सात खण्ड डेउढ़ी मेँ अपने मालिनि ठाढ़ि भेलि दरबाजा पर, जादू सँ देलि जगाए। बक दै उठल चेहाए, सातो खण्ड केबाड़ खोलि कै दरबाजा पर आएल, पुछे नटिन केँ जे कथीला ऐलीह दरबाजा पर। जाति के हम नटिन थिकहुँ, दुइ चारि पैसा खातिर हम ऐलहुँ दरबाजा पर। तखन चुहड़ माल कहैत छथीन्हि जे हमरा घर मेँ नहिँ माए, नहिँ बहीन, नहिँ इस्त्री, तखन हमरा सौँ की लैबे ओजह इनाम। तखन बोले लागलि नटिन राति हम सूतल छलहुँ अप्पन सिरकी मेँ , सपना मेँ देखलि जे तोहरा घर मेँ एक चन्द्रहार छहु, से इनाम दह हमरा तब तोहरा मन पुराएब। तखन खुबसुरति देखि चन्द्रहार आनि देल जे हम चोरी कै लैलहुँ केओलागढ़ सौँ , राजा भीमसैनक घरसौँ , सलहेसक पहरा सौँ से तोरा इनाम दैत छी। चलू, अपना सिरकी मेँ ओहि पलंग पर मन पुराए देब। आगा माथा पर पलंग, पाछू नटिनिआ गेल अपना सिरकी मेँ ।

20. ता मेँ सलहेस सिरकी तेजि देल, लाबै गेल अपना भाइ मोती राम ओ भगिना कारीकन्नु; सात सौ हाथी मकुना लै आबि कै सिरकी घेरल। ता मेँ नटिनिआ पलंग ओछाए देलि, ताहि पर चुहड़ माल कै तेल फुलेल दै सुताए देलि। ता मेँ फरीछ भेल, जुमल सलहेस सभ लसकर लै, घेरि लेल सिरकी बीच मेँ चुहड़ माल सूतल। देवी असावरी देलि जगाए जे त्रिआ कारन मुदै तोर जुमल सलहेस। एतबा कहैत उठल चिहाए, दोहरि काछ लगाए भै गेल ठाढ़, छुरी लेल हथवा, एक बेरि छरपल चुहड़ माल, उपर उड़ि गेल सै पचास हाथ, खसल हाथिक हलकाक बाहर, लड़ै लागल सलहेस से। चुहड़ माल जहिना पैसे बकरी मेँ हुड़ार, तहिना छनपल फिरै चुहड़ माल, जेँभर छरपै तेम्हर हाथी कटिते जाए, सात सै मकुना कै एकदम सै काटि देल, तीनि राति दिन परल लड़ाइ; तखन तीनू बापुत के खेहारने फिरै परतीक खेतमेँ । उठलि नटिन, पकड़लि चुहड़ मालक बाँहिँ, हम जातिक कसबीन,

हमरा लग कतेक मोसाफिर अबैत अछि, तकरा सभ सौँ लड़ने हमर रोज हरज होइत अछि, खीस तेजि दह, चलह सिरकी मेँ मन पुराए देब। चुहड़ माल सिरकी मेँ आबि कै पलंग पर रहल सूति। नीन्द अहिद्रा राखि देल, चाल कैलि राजा सलहेस कँ ओ मोती राम कँ , आबि कै अप्पन मुदै बान्हू।।

21. एतबा सुनि के पलंग लगाए साते दिन मेँ चोर माल बान्हि कै चलल नट नटिनिआ, जुमल गंगा घाटपर चोर माल लै कै, गंगा मेँ सातो सै हाथी जिआ लेलक जादू सौँ , नटिनिआ गंगा भैगेल पार, रातुक चलवें दिन मेँ पहुँचल राजाक कचहरी जाए, चोर माल देल समुझाए। चोर देखि कै राजा भीमसैन के धैरज नहिँ रहल। तखन चुहड़ माल कै देलक खोलि, सभटा जवाब कहि देल जे हम निश्चै चोरी कैल सलहेसक नाम जानि कै हुनका पहरा मेँ । ई सुनि राजा भीसेन खुशी भेल, पाँचो टूक कपड़ा पाँचो हथिआर, अपना चढ़ैक घोड़ी देल; बकसीस दै बिदा कैल। तखन दौना मालिनि लै राजा सलहेस भीमसैनक फुलवाड़ी करै जन्म भरि रखबारी। इति।।

(Maithili Chrestomathy and Vacabulary by G. A.Grierson, 1881)

Email- rnjharaman@gmail.com

ff f



सलहेस फुलबारीक विहंगम दृश्यः जत्त हारम गाछमे लुधकल विचित्र फूल देखल जा सकैछ।

सलहेस क्षेत्रक पर्यटकीय सम्भावना

१ डा. रामदयाल राकेश

सलहेस एकटा बड़ पैघ पुरातात्विक फुलवारी अछि। एहितरहक परातात्विक फुलवाड़ीकेँ नेपालक गौरव मानल जा सकैत छैक। पुरातात्विक दृष्टिकोणसँ किछु दुःखक बात छैक जे एकर पुरातात्विक दुष्टिकोणसँ अध्ययन आ अनुसन्धान एखनधरि नहि भेल छैक। एहिदिसि पुरातत्वविदसभक ध्यान वहुत कम गेल पाओल जाइत छैक। एहितरहक पुरातात्विक फुलबाड़ी जनकपुरमे मणिमण्डप आ प्राचीनकालके लुम्बिनीमे उपलब्ध अछि। सम्पूर्ण दक्षिण एशियामे एहितरहक पुरातात्विक फुलबाड़ी मात्र थाइलैण्ड आ नेपालमे विद्यमान अछि। थाइलैण्डक राजधानी बैंकोकमे अवस्थित लुम्बिनी गार्डेन (फुलबाड़ी) सेहो एकटा सुन्दर आ हरलभरल पुरातात्विक फुलबाड़ीक रूपमे देखना जाइत छैक। ई फुलबाड़ीसबहक प्राकृतिक आ पुरातात्विक महत्व अवर्णनीय छैक। सर्लाही जिलाक मूर्तिया आ बारा जिलाक सिमरौन गढ़मे सेहो एहितरक पुरातात्विक फुलबाड़ीक अवस्थितिसँ पुरातत्वविदसभ अवगत छथि, तखन अफसोसक बात छैक जे एकरादिसि हिनकासभक दृष्टि आकर्षित एखनधरि नहि भेल छैक। न स्वदेशी आ न विदेशी पुरातत्वविदसभक ध्यान एकरातरफ एखनधरि आकृष्ट भेनाइके आश्चर्यक विषय मानल जा सकैत छैक। फुलबाड़ी एकटा सर्वथा नव विषय भेलाकें कारणें ई भऽ सकैत छैक जे एहिदिसि हिनकासभक ध्यान नहि पहुँचल होए किन्तु ई बड़ पैध महत्वक विषय अछि। नेपालक पुरातत्वविद साफल्य अमात्य अपन पोथी Archaelogical & cultural qentages of kathmandu valley मे एक अध्याय Landscape Archaeology in nepal A challenge मे सत्य-तथ्यक निरूपण कएने छथि -"The archaelogy of gardens and parks is a young topic,still in it's pioneering phareeven to Europe. The landscape archaeology is also known as total archaeology. The landscape archaeology is applies in the recovery of the story of an area of countryside using all possible techniques surface scalters, field and other boundaries, standing buildings as well as excavation. In this, the individual site has singniticance only as a component of the area in which it lies."-p.-q.

सलहेस फूलबाड़ी राजा फूलबाड़ीक नामसा प्रसिद्ध अछि। एकर अवस्थिति लहान नगरपोलिकासा पश्चिम आ राजमार्गसा दक्षिणमे पड़ैत छैक। साढ़े नौ विगहामे पसरल ई फूलबाड़ी राजा सलहेसक फूलबाड़ी छलसे जनधारणा एखनो जीवितै छैक।

सलहेस फुलवाड़ी राजा फुलबाड़ीक नामसँ प्रसिद्ध अछि। एकर अवस्थिति लहान नगरपोलिकासँ पश्चिम आ राजमार्गसँ दक्षिणमे पड़ैत छैक। साढ़े नौ विगहामे पसरल ई फुलबाड़ी राजा सलहेसक फुलबाड़ी छलसे जनधारणा एखनो जीवितै छैक। एकर प्राकृतिक सौन्दर्य अलौकिक एवं अवर्णनीय मानल जाइत छैक। फुलवाड़ीक मध्यभागमे दूटा गहवर देखना जाइत छैक। पहिल गहवर सलहेस महाराजक मानल जाइत छैक आ दोसर गहवर मालिनीकें। ई गहवरमे महाराज सलहेस आ मालिनसभक भव्यमूर्ति स्थापित कएल गेल छैक जे न केवल पुरातात्विक महत्वके उजागर करैत छैक वरण ऐतिहासिक आ धार्मिक सेहो मानल जाइत छैक। सिरहा जिलामे स्थित प्राचीन स्थलकेँ रूपमे

प्रसिद्ध ई सांस्कृतिक सम्पदाक रूपमे एखनोधरि सुरक्षित मानल जा सकैत छैक। एखन तऽ ई धार्मिक स्थलक रूपमे सेहो सम्मानित आ पूजित अछि। किएक तऽ ई मंदिरमे स्थापित प्रतिमासबहक नियमित पूजापाठ कएल जाइत छैक आ एकरालेल निर्धारित पूजारीक सेहो व्यवस्था कएल गेल छैक।

वर्तमान समयमे ऐतिहासिकतासँ वेशी एकर धार्मिक महत्व स्पष्ट रूपमे प्रतिलक्षित एवं प्रतिपादित होइत गेल छैक। स्थानीय वान्दिासभक मान्यता छैक जे लोक-नायक सलहेस प्रत्येक दिन मानिक दहमे स्नानक कऽ लहाननजदिक अवस्थित फुलबाड़ीमे फूल तोड़ि कऽ महिसौथा आबि कऽ राजमाता आओर कमलाजीक पूजा प्रतिष्ठा करैत छलाह।

राजा फुलबाड़ीमे अवस्थित गहवरक नजदिके 'हारम' नामक गाछक एकटा डाढ़िमे प्रत्येक वर्ष चैत्र मसान्तक दिनमे एक दिनक लेल एकटा फूल फूलाइत छैक। इ फूल मालाजकाँ फूलाइत छैक लेकिन आश्चर्यक विषय थिक जे काल्हि भऽकऽ ई फूल स्वत: मुर्झा जाइत छैक। एकर रहस्य आइधरि किनको नहि मालुम भऽ सकल बात किनकोसँ नुकाएल नहि छैक। फूलविहीन गाछ-वृक्षमे अचानक एक दिनक लेल फूलाएल फूल दोसर दिन मुरझानाई एकटा बड़ आश्चर्यक बात बुझना जाइत छैक। एकरादिसि कोनो वनस्पतिविज्ञ अथवा पूरातत्वविज्ञके ध्यान आकृष्ट नहि भेनाइ आश्चर्यक बात छैक। ई घटना अपने आपमे रोमाञ्चक आ आश्चर्यजनक मानल जा सकैत छैक किन्तु लोक विश्वस्त छैक जे कोना मालिन फूल बनि कऽ सलहेस गहवर अवस्थित हारमक गाछक डाढ़िमे लटकल देखना जाइत छैक। दोना मालिन अपन प्रेमी सलहेसक बाहुपाशमे या आलिङ्गन पासमे आवद्ध भऽ अपन चिरंतन, चीरशाश्वत आ चीरनवीन प्रेमकेँ प्रकट प्रतीकात्मक ढङ्गसँ करैत छथि। ई रोमाञ्चक आ रोमैन्टिक घटना विगत सात सओ वर्षसँ नियमित आ निश्चित ढङ्गसँ घटित आबिरहल तथ्य लोकमानसमे एखनधरि जीवन्त छैक।

सलहेसक इएह पक्षसँ नेपालक आन्तरिक आ बाह्य पर्यटनक अभिवृद्धिमे बड़ पैध योगदान भेटि सकैत अछि। सलहेस नेपाल आ मित्रराष्ट्र भारतमे अपन पर्यटकीय महत्व प्रमाणित कऽ सकैत छैक। एहन विलक्षण आ रोमाञ्चक घटना नेपालमे कि भारतमे सेहो सम्भव नहि छैक। गामे गामे सुप्रचारित सुव्यवस्थित आ सुनियोजित ढङ्गसँ एकरा विश्वमे परिचय करबाक सेहो प्रयत्न कएल जा सकैत छैक। मुदा एकर प्रचार-प्रसारसँ कमसँकम नेपाल आओर भारतमे पर्यटकसभ अवश्यमेव आकृष्ट भऽ जा सकैत अछि। एकरालेल सलहेससम्बन्धी ऐतिहासिक, धार्मिक आ पुरातात्विक तथा पर्यटकीय सामग्रीसबकेँ निर्माण केनाई बड़ जरूरी छैक जकर सर्वथा अभाव एखन छैक। राजमार्ग आ लहानमे सलहेससम्बन्धी बोर्ड (सूचना पाटी) रखबाकऽ आवश्यक छैक। नेपाल पर्यटन बोर्ड, पर्यटन मन्त्रालय, नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान आदिक भूमिका महत्वपूर्ण भऽ सकैत छैक। एखनधरि कोनो विदेशी लेखक आ पर्यटकक वास्ते कोनो आवश्यक सूचना देबाक कार्य नहि कएल गेल बड़ दु:खक बात छैक। फाटफूट सलहेसक विषयक लेख आदि प्रकाशित भेल छैक मुदा एकरा प्रचार-प्रसारवास्ते सुव्यवस्थित ढङ्गसँ कोनो प्रयास कोनो सरकारी निकायसँ नहि भेल छैक। २०५७ सालमे नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान आ स्थानीय संघ-संस्थाक संयुक्त प्रयाससँ सिरहा जिलाक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक तथा पुरातात्विक स्थलसबहक सर्वेक्षण कएल गेल प्रयासकेँ प्रशंसनीय मानल जा सकैत छैक, तखन तकराबादसँ ने तऽ कोनो प्रयास पुरातत्व विभागसँ भेल ने तऽ कोनो सरकारी निकायसँ कोनो प्रयास भेल छैक जे बड़ दु:खद स्थितिक सूचक अछि। सलहेसक महत्व सलहेसक गाथामे मात्र सीमित छैक। एकर आलेखन सेहो एखनधरि नहि भेल छैक। पुरातत्वविद संस्कृतिविद आ इतिहासविदक संयुक्त प्रयाससँ सलहेसक स्थान फुलबाड़ी आ गाथाके संरक्षण कएल जा सकैत छैक। सरकारी निकायकें साथ-साथ स्थानीय संघ-संस्थाक ध्यान सलहेसक संरक्षणदिसि जेबाक बड़ जरूरी छैक। सलहेसकदिसि विद्वान आ विदूषी लेखकसभक ध्यान आकृष्ट करबाक प्रयास सेहो नहि भेल छैक।

एकटा नेपाली लेखिका सलहेस फुलबाड़ीक भ्रमणक अपन अनुभव 'द राइजिङ्ग नेपाल' फरवरी ११, २०११ के अंकमे अभिव्यक्त कएने छलीह -

"Some four kilometers west of lahan, Siraha lies Mother Nature's marvel a garden that bears the legend of king Salhesh, chronicled to have ruled this region durring the latter 13th century. In this ancient densely forseted garden spread over an area of some six hetars, there grows a unique Haram tree that bears flowers only once a year that too on the Nepalese New year lay of Baisakh. The buds stant appearing on the last day of the previous year and as the hours passby, the buds blossom into flowers and by New yaer dawn takes full shape of a gerland as the lay avances the flowers wither and fall. They will not again bloom untill next year's lay (TRN 11, 2011).

सलहेस फुलबाड़ीकेँ पर्यटन क्षेत्रक रूपमे विकास कएल जा सकैत छैक। एकरावास्ते एकटा टूर पैकेज (Tour package) योजना तैयार करबाक बड़ जरूरी भऽ गेल छैक। एहि टूर पैकेजमे पकड़िया गढ़, महिसौथा, पतारि-पोखरी, मानिक दह आ सलहेस फुलबाड़ीकेँ सम्मिलित करबाक जरूरी छैक आ ई एक दिनमे कार्यक्रम भऽ सकैत छैक किएक तँ ई सब पुरातात्विक, ऐतिहासिक, धार्मिक आ सांस्कृतिक स्थलसब एकदम नजदीकमे अवस्थित छैक। एकरावास्ते लहानमे पर्यटकीय स्तरके अतिथि गृह होटल आ रिसोर्टक निर्माणक आवश्यकता देखना जाइत छैक। राजा सलहेस स्वयं ओहि समयमे एकहि दिनमे ई सब स्थानक भ्रमण कएल करैत छलाह से चर्चा सलहेस गाथामे लिखल गेल छैक - राजा सलहेस प्रत्येक दिन मानिकदहमे स्नान कऽ, लहान नजदीक अवस्थित सलहेस फुलबाड़ीमे फूल तोडि कऽ सिलहट अखाडामे कुश्ती खेलि कऽ अपन जन्मस्थल महिसौथामे कुलदेवीकेँ पूजा करैत छलाह आ तदुपरान्त अपन प्रजाक समस्या सुनबाक वास्ते कंचनगढ़ जाइत छलाह। सलहेस गाथाक बारेमे मैथिली भाषामे एहन अभिव्यक्ति भेटैत छैक -

"खनखन रहै छी बेल्का पहाडमे खन रहै छी सरस बागमे, मानिक दहमे स्नान करैत छी भागै छी - तऽ एहि मालिनियाके खातिर, गढ़ पकरियामे मैयाके सुमिरै छी "- (गीत राजा सलहेस (ग्रियर्सन परिशिष्टक, अनुच्छेक १९) सलहेस गाथामे इहो उल्लेखित पाएल जाइत छैक जे माणिकदह नजदीके एकटा सभामण्डप छलैक जतऽ राजा सलहेस सभामे जनसाधारणक दुख-दर्दक कहानी सुनैत छलाह आओर एकर समाधान सेहो तुरन्त करैत छलाह। जेना उल्लेख कएल गेल छैक, "मानिक दहल राजसभामे श्री जयवर्द्धन रहथि विराजल।"

सलहेस फुलबाड़ीमे पुरातात्विक उत्खननक कोनो आवश्यकता नहि छैक किएक त ऽई स्वयं एकटा प्राकृतिक फुलबाड़ी थिक जे ऐतिहासिक महत्व मात्रे नहि रखैत छैक एकर वानस्पतिक महत्व (Botanical importance) सेहो छैक। फुलबाड़ीमे विद्यमान गाछ-विरिछके पहिचान करबौनाई बड़ जरूरी छैक। एकर औषधीय महत्व (Medicinal importance) सेहो छैक। सलहेस फुलबाड़ीसँ किछु दूरीपर पश्चिम उत्तर कोनामे एकटा चउर छैक जेकरा सिलहट अखाड़ा कहल जाइत छैक। लोकविश्वास कि छैक जे राजा सलहेस अपन भाइ मोतीरामक साथ एत्त सातसओ पहलमानसँगे कुश्ती खेलाइत छलाह। एखन अखाड़ावाला जगहपर दूटा मंदिरक निर्माण कएल गेल छैक।

पश्चिमदिशस्थित मन्दिरमे सलहेसक मूर्ति हाथीपर स्थापित छैक। एहि मूर्तिके दाँहि भाग आ बाँम भागमे मालिन (दौना आ कुसमा)क छोट वहिनक आकर्षक मूर्ति अखनो विद्यमान छैक। अखाडाक पूर्वदिसि दोसर मन्दिर छैक जाहिमे घोडापर सवार राजा कुलेश्वर आओर हुनक भाए हरि सिंह देवक मूर्ति स्थापित छैक। सलहेस गाथामे एकरो उल्लेख भेल छैक जे राजा सलहेस घोड़ापर चढ़ि अपन प्रेमिकासभसँ भेट करबाक हेतु तरेगना गढ़ आवैत छलाह आ सलहेससँ मिलबाक लेल मालिनसभ जाइत छलीह -

"दौना मालिन दक्षिणके चीर पहिरलन्हि,
नैना काजर कएलन्हि, हाथमे बाँक पहिरलन्हि,
माथमे टिकुली साटि लेलन्हि,
चलली स्वामीक उदेश।"

पर्यटकसभकेँ आकर्षित करबाक लेल सलहेस गाथाकेँ Light and sound प्रकाश आ ध्वनीके द्वारा सलहेस फुलबाड़ीमे एक घण्टाक कार्यक्रम प्रतिदिन साँझमे सम्पन्नक कएल जाए आओर सलहेस नृत्यनाटिकाके सेहो साथ-साथमे प्रदर्शन कएल जाए तऽ विदेशी मुद्रा आर्जन कएल जा सकैत अछि। मुदा एकरालेल राजनैतिक पहल आवश्यक छैक। कमसँकम मधेशी नेतागण एकरावास्ते इमान्दारीपूर्वक एहि नाटक कार्यक्रम सम्पादन करैथ तऽ सलहेस फुलबाड़ी पर्यटकस्थली शीघ्रतातिशीघ्र भऽ जाएत कोनो शंका-उपशंकाक नहि।

भारतीय विद्वान आ संस्कृतिविज्ञ राधाकृष्ण चौधरी सलहेस नृत्यनाटिकाक बारेमे लिखने छथि -

"It is practically one man's show the priest who monages. Tje wjp;e affaor bu tre,b;omg sjpitemg, running moving on the edge of the sword encharting the songs of salhes and finally distributing favours on the devotees. Right from the beginning to end the dance is thrilling to the ears and eyes." Radha Krishna chaudhary : Mithila in the age of vidyapati. P.389.

नेपाल पर्यटन वर्ष करोडौं रूपैयाके बजेट खर्च करैत समाप्त भऽ गेल मुदा सलहेसक फुलबाड़ीक गणना कि करत मधेशक कोनो सांस्कृतिक सम्पदादिसि एकर ध्यान नहि गेल। मधेश एखनो उपेक्षित छैक आ मधेशक सांस्कृतिक सम्पदा तऽ आओर उपेक्षित छैक। नेपालक धन 'हरिअर वन' तऽ कहिया समाप्त भऽ गेल। सौभाग्यक बात इएह मानू जेँ सलहेस फुलबाड़ीदिसि राजनैतिक गिद्ध दृष्टि एखनधरि नहि पड़ल अछि नहि तऽ ई कहिया समाप्त भऽ गेल रहैत। सलहेस फुलबाड़ीक जेहन सांस्कृतिक सम्पदाक संरक्षण आ सम्वर्द्धन करबाक उत्तरदायित्व नया पुस्ताक कान्हपर आएल छैक। मधेशक नया नेतृत्व देवाक लेल नया पुस्ताके आँगा आबै पड़त तहने सांस्कृतिक सम्पदा जे मधेशक गौरव छैक तकर सुरक्षा भऽ सकैत छैक अन्यथा मधेशक कोनो सांस्कृतिक सम्पदा सुरक्षित रहबाक प्रश्ने नहि उठैत छैक। एहि सन्दर्भमे सलहेसक ग्रामीण पर्यटकीय अवधारणासँ विदेशी मुद्राक संचितिक सेहो विश्वास बलवती भऽ सकैत छैक। एखनधरि मिथिलाञ्चलक संसकृतिप्रेमीसभ सलहेसक नृत्यनाटिका देखबाकवास्ते रात-रातभरि प्रयासरत देखना जा सकैत छथि खासकऽ मजदूर आ किसान वर्गसभ। दिनभरि कडा परिश्रम कऽ थकित किसान मजदूर विशेषक दुसाधजातिक लोकसभ एकर जन्मजात प्रेमी मानल जा सकैत छैक। मिथिलाञ्चलक लोकजीवनमे एकर बड़ पैध महत्व देखल जाइत छैक। ई एकटा मनोरञ्जनक बेजोड साधनक रूपमे एखनो ग्रामीण जीवनमे जीवन्त मानल जाइत छैक। कृषिप्रधान मिथिलाञ्चलमे सलहेसक नृत्यनाटिकाके महत्व वर्गातीत छैक। सलहेस लोकदेवताक रूपमे सम्पूर्ण मिथिलाञ्चलमे पूजित एवं सम्मानित छथि एवं सभ वर्ग आओर सभ जातिक श्रद्धा, निष्ठा, भक्ति, आस्था आओर विश्वासक उपयुक्त पात्र।

सलहेससँ सम्बन्धित अन्य ऐतिहासिक, धार्मिक, पुरातात्विक आओर सांस्कृतिक स्थलसब यथा मानिक दह, राजा फुलबाड़ी, कमल दह, महिसौथागढ़सब ओतबए महत्वपूर्ण मानल गेल प्रमाणित भऽ गेल छैक। ई सब सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक स्थलसब सिरहा जिलामे मात्र अवस्थित अछि। एहिसबमे राजा फुलबाड़ी सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानल जा सकैत छैक। सलहेस महोत्सव मधेशक प्रत्येक गाँवमे मनाएल जाइत छैक। हरेक वर्ष गाम पर्यटन (Village tourism) क अवधारणाअन्तर्गत एकर विकासक लेल गुरूयोजना बनाबऽमे नेपाल सरकार संस्कृति मंत्रालय, पुरातत्व विभाग आओर नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कऽ सकैत छैक। गाम पर्यटनक सम्पूर्ण पूर्वाधारसबहक प्रवर्द्धन एवं संरक्षण अति आवश्यक बुझना जाइत छैक।

सलहेसक विषयमे श्रीमती शैल झा मैथिली लोकनाट्य शीर्षकमे कथन छनि -

"मिथिलामे एखनो सलहेसक गहबर गाम-गाममे देखबामे आओत। एहिठाम दुसाध जातिक लोकसभद्वारा नाच आ भाओ एखनोधरि होइत अछि। एहि आयोजनमे सभ जाति आ वर्गक लोक भाग लैत छथि। सलहेस बाबाकें पीड़ीपर तस्मैक प्रसाद भोग लगाओल जाइत छनि आ लोकसभ गोहारि करएबाक लेल डाली लगबैत छथि। ई नाच लोक बड़ मनोयोगसँ देखैत अछि।" **- सं. श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मैथिली लोकसाहित्य पृ. ४४।**

सलहेससँ सम्बन्धितसभ स्थान सिरहा जिलामे अवस्थित रहल बात ऊपर उल्लेख कएल गेल छैक तखन निम्नलिखित सलहेसक गीतमे धनुषा आ मधुबनी जिलामे अवस्थित स्थानसभक वर्णन सेहो पाएल जाइत छैक।

"गे बड़-बड़ भकती हम इसवरसँ केलिऐ
शिलानाथ-शिलवती पुजलिऐ
रैब-शैन हम पावनि टेकलिऐ
पुरैन पातपर धार ढारलिऐ
बिसौल जाए बिसमंत्री पुजलिऐ
फुलहर गेलिऐ गिरजा माइ पुजलिऐ
धनुषा गेलिए धनुष पुजलिऐ
चुडिए बजारमे चूड़ी फेरलिऐ
गेलिऐ जनकपुर जानकी पुजलिऐ
पनरह दिन परिकरमा घमलिऐ
आ तैयो ने बइमनमा हमरा दरसन देलकै
पियबा हो बइमान।"

डा. रेवतीरमण लालक शब्दमे -"सलहेस गाथा चारि भागमे विभक्त अछि। ई चारू महिसौथा किला, बाधगढ़ किला, योगिनी किला आ पकडिया किलाक नामसँ अभिहित कएल गेल अछि।" **- डा. रेवतीरमणलाल : मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा पृ. ११३**

सलहेस आ तन्त्र साधना -

तन्त्रकेँ तँ स्वयं शिवके मुँहसँ निःसृत मानल जाइत छैक। ई वैदिक छैक, वेदानुकृत छैक, वेद अविरुद्ध छैक आओर वेदाधिक सेहो। तन्त्रक उपासना पद्धति, विधिविधान प्रत्यक्ष रूपमे प्राप्त नहि छैक तखन तन्त्र वेदसँ सम्बन्धित छैक। तन्त्र स्वयं परब्रह्म परमात्मा साक्षात शिवस्वरूप ज्ञान मानल जाइत छैक ओकर कल्याणरूपें लोककल्याणक लेल लोकमे उएह शिवशक्ति गुरू-शिष्य भावमे व्यक्त भेलाक कारणें एकर प्राचीनता स्वयं सिद्ध भऽ जाइत छैक। तन्त्र एकटा साहित्य छैक, सेहो बात मनीषीसभद्वारा प्रमाणित कएल जा चुकल छैक। तन्त्रमे वर्णित मूल तत्व सभक स्रोत वेदकेँ मानल गेल छैक।

सलहेस गाथाकेँ साथ तन्त्र साधनाक सम्बन्ध प्राचीन कालसँ प्रचलित छैक। एहि गाथामे वर्णित मालिनसभक तन्त्र साधनासँ जुड़ल तथ्यकेँ पुष्टि कएल जा सकैत छैक। एहिसम्बन्धमे डा. प्रफुल्लकुमार सिंहक मत -"कुसुमा, दौना एवं हिरिया, जिरिया ओहि युगमे व्यवस्थित मालिन सम्प्रदायमे दीक्षित छलीह। मिथिलाञ्चलमे एहि मालिन सम्प्रदायक असार-पसार मिथिलाञ्चलसँ कामरूप कामाख्याधरि छल। रूप, गुण, गति, मति एवं यौवनमे सर्वोपरि तथा सम्मोहन वशीकरण आदिमे प्रवीण मालिनक चरित्राङ्कन एहि गाथामे विशेषरूपे भेल अछि।"

“मिथिलाक पूर्वाञ्चलीय लोक-गाथाक विवेचन कार्यपत्र १९९२ मे डा. रेवतीरमणलाल सेहो मालिनसभक सम्बन्ध तन्त्रसाधनासँ जुड़ल छैक तकर उल्लेख कएने छथि -“मालिनक स्थान मिथिलाक तान्त्रिक साधनामे बड़ विशिष्ट छल । दौना मालिन एहि वर्गक छलीह । राज सलहेसकँ एहि वर्गक पूर्ण सहयोग प्राप्त छल । दौना मालिन चार बहिनक सम्बन्ध योगिनी गुफासँ छल । - **डा. रेवतीरमणलाल : मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा पृ. १११ ।**

लोकनायक सलहेस

शैलेश शब्दक अपभ्रंश रूप अछि सलहेस जकर शाब्दिक अर्थ होइत छैक पर्वतक मालिक (राजा) । शैल+ईश । शै अर्थ पहाड़ या पर्वत आओर ईशक अर्थ मालिक । सलहेस दुसाध जातिक लोकप्रिय लोकदेवता छथि । दुसाध शब्दक अर्थ होइत छैक दुःसाध्य अर्थात् अत्यन्त कठीन । सलहेस एखन दुसाधक मात्र पूजनीय एवं सम्माननीय देवता नहि छथि अपितु ई सम्पूर्ण मिथिलाञ्चलक लोकनायकक रूपमे विख्यात छथि । मिथिलाञ्चलक मात्र नहि कहि सम्पूर्ण मधेशक लोकदेवताक रूपमे गाम-गाममे पूजल जाइत छथि । आजुक लोकतन्त्रमे सलहेसक प्रसिद्धि एवं ख्याति सर्वत्र व्याप्त भऽ गेल छैक । एखन ई कोनो जाति विशेषक लोकदेवता नहि भऽ कऽ सर्वत्र एकटा लोकनायकक रूपमे पूजित सर्वमान्त्र देवता भऽ गेल बात सभकेँ ज्ञात भऽ गेल छैक । दुसाध जाति महाभारतकालसँ परिचित जातिक रूपमे विख्यात जाति छैक । एकटा नेपाली समाजशास्त्रीक शब्दमे -"Some people believe that Dusadh is the corrupted from of Dusadhya a Sanskrit word, referring to being txtremly others also believe that Dusadh. The succeeding generations of Dusasan of the Mahabharata." **– Deepak Chaudhary : Tarai/Madhes of Nepal. p.136**

आइकाल्हि जाति-पाँतिक भेदभाव अन्त भऽ गेलाक कारणें सलहेस सर्वमान्य आ सर्वत्र पूजित एवं सम्मानित लोकनायकक रूपमे प्रतिष्ठित भऽ गेल बात सभ समाजशास्त्रीके स्वीकार करहि पड़त । तदर्थ सलहेसक महत्व एखन आओर बढ़ि गेल छैक ।

सन्दर्भग्रन्थ सूची :- अङ्ग्रेजी भाषामे लिखित

1. Deepak Chaudhry : Tarai/Madhesh of Nepal. Rathapustak Bhandar-2011.
2. Radha Krishna Chaudhary : Mithila in the age of Vidyapati
3. Shaphalya Amatya : Archaeological & cultural Heritages of Kathmandu Valley : Ratna p. Bhandar, 20011

नेपालीमे लिखित

मोतीलाल पराजुली : नेपालमा प्रचलित नृत्य र नृत्यनाटिकाहरु, साझा प्रकाशन : २०६३

मैथिलीमे लिखित

१. डा. रेवती रमणलाल : मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदा : रामानन्द युवा क्लब, जनकपुरधाम २००८

२. सं. चन्द्रनाथ मिश्र : ‘अमर’ : मैथिली लोक साहित्य : साहित्य अकादमी दिल्ली, २००६

पत्रिका :

१. संस्कृति : नेपाल सांस्कृतिक संघ, डिल्लीबजार, काठमाडौं २०६८

२. द पब्लिक : वैशाख २०६८, मई २०११

f f f

सलहेस लोकगाथामे मालिनक वैशिष्ट्य

❁ डा. मोहित ठाकुर

जगतक अधिष्ठात्री नारी आरम्भहिसँ सामान्य पुरूष हो वा अवतारी,सभक पोषण आ संरक्षण विभिन्न रूप आ वेषमे करैत रहली अछि। देवी-देवता आ अवतारी पुरूषक सहायिकाक एकटा रूप अछि -'मालिन', जे अपन शक्ति, शील, बुद्धि आ सौन्दर्यसँ अवतारी पुरूषक सहयोग संरक्षण आ सम्वर्द्धन करैत अछि।

लोक-गाथा सलहेसक ऐतिहासिकता आ भौगोलिकता प्रमाणित अछि। सलहेस मोरंग देशक अवतारी, पराक्रमी राजा छलाह जे वर्तमानमे मिथिलाक दलित जातिक (दुसाध/पासवान) लोक देवताक रूपमे पूजित, प्रशंसनीय आ अनुकरणीय छथि, तहिना योग-साधिका मालिन सलहेसक प्रेयसी रूपमे बन्दनीय अछि। ओना जतऽ-जतऽ लोक-गाथा अछि, मालिन नीर-क्षीरजकाँ सम्पृक्त अछि।

पौराणिक परम्पराक अन्तर्गत प्राय: प्रत्येक देवताकसंग शक्ति-स्वरूपा देवीक कल्पना कएल गेल अछि। लोकगाथा सलहेस सेहो पौराणिक परिवेशसा युक्त अछि। ओहिमे वर्णित नायक-नायिका अवतारक रूपमे अछि।

महाभारतमे 'मालिन' नगर रूपमे वर्णित अछि-

प्रीत्या ददौ स कर्णाय मालिनो नगरीमय
अङ्गेषु नरशार्दूलस राजाऽ उसीत् सपत्नसन्ति ।।(१)

महाभारतक नव-पर्वमे एकर अर्थ राक्षस कन्यासँ लगाओल गेल अछि, जे कुबेरक आज्ञासँ महर्षि विश्रवाक परिचर्यामे रहैत छलीह। विश्रवा एकर (मालिन) गर्भसँ विभीषणकेँ उत्पन्न कएलन्हि ।।(२) मत्स्य पुराणमे शिवजीद्वारा सृष्ट कतेको मानसपुत्री मातृकासभमे एक मातृका कहल गेल अछि ।।(३) मारकण्डेय पुराणमे शैच्य मनुक माताक नाममे मालिनक चर्चा भेल अछि ।।(४)

ब्रह्मपुराणमे स्कन्दक सात मातामे एकटा माताक रूपमे मालिनक चर्चा उपलब्ध होइछ। सर्व संक्षोपण नामक चक्रपर स्थित कुसुमा, मेखला आदि आठ शक्तिमे सँ एक शक्ति तथा सर्वज्ञाद्यन्तर नामक सर्व रक्षा चक्रमे स्थित कतेको मुद्रा देवीसभमे एक मुद्रा देवीक नामक रूपमे चर्चा अछि। [५] विष्णुपुराणमे माली आ मालिनक वर्णन भेटैछ, जे श्रीकृष्ण आ बलरामकेँ पुष्पमाल्य समर्पित कऽ हुनकासँ अपन वंश वृद्धिक वरदान पओने छल।[६] भारतीय संस्कृतिकोशमे मालिनक वर्णन सात मातृकामेसँ एक, राक्षस कन्या, द्रौपदी एकटा नाम, रौच्यक माता उर्वशी नामक अप्सरा, हिमालयक एकटा नदीक नाम जकरा तटपर मेनका शकुन्तलाकेँ जन्म देने छलीह, आदि अर्थ लगाओल गेल अछि ।।(७)

ललिता सहस्त्रनाममे वर्णकेँ पेथक पृथक तथा वर्णमालाकेँ मातृका कहल गेल अछि।[८] अकारसँ क्षकार पर्यन्त विन्दुयुक्त मातृका परशुराम कल्पसूत्रक अनुसार सर्वज्ञातकारी विद्या थिक।[९] स्वच्छंद तन्त्रक मुताविक मातृकासँ पैघ आन कोनो विद्या नहि अछि, मातृकाक संख्या पचास अछि। मातृकाक एहिरूपकेँ कामधेनु तन्त्र पचास युवती मानैत अछि : जे सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमे व्याप्त अछि। युवतीक

ई गण ब्रह्मरूप थिकीह । [१०] मालिनी विजयोत्तरतन्त्रमे नौ वर्गमे विभक्त शब्द राशिक पारस्परिक मेलसँ भिन्न-योनि स्वरूपकेँ मालिनी कहल गेल अछि ।[११] परात्रिंशकाक अनुसारे भगवती मालिनी मुख्य शाक्त रूप धारिणी थिकीह, बीज आ संघट्टसँ उत्पन्न ई शक्ति सम्पूर्ण कामनामे पूर्ण केनिहारि थिकीह, ई रूप आओर शक्तिक मालासँ युक्त छथि, अतएव हिनका मालिनी कहल जाइत छनि ।[१२] लोकसाहित्यक मर्मज्ञ राजेश्वर झाक कहब छन्हि - मातृका सात छथि जिनकर सम्बन्ध साक्षात उमासँ अछि एकर अतिरिक्त मालिन सम्प्रदायक सम्बन्ध तान्त्रिक साधनासँ छल आओर तन्त्रक उद्‌भव शिव आ पार्वतीसँ भेल ।[१३]

मालिनक सम्बन्ध शिव आ शक्तिसँ भेलाक कारणेँ मैथिली साहित्यमे एकर अक्षुण्ण परम्परा भेटैछ, वर्णरत्नाकरमे एकादश, अष्टभैरव, द्वादश बैताल, चौंसठि योगिनी आदिक वर्णन अछि ।[१४] उपनिषद जकरा नेति-नेति ओ वेद एकं सद्‌विप्रा बढ्धा बदन्तिसँ जकर निर्वचने कएल ओहि परमतत्वक साक्षात्कार शाक्तमतमे दश विभिन्न रूपमे कएल गेल अछि, जे काली, तारा, त्रिपुर सुन्दरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बङ्गलामुखी, मातङ्गी, महालक्ष्मी (कमला) ओ महासरस्वती नामसँ सम्बोधित कएल जाइत छथि । परमतत्वक ई दशरूप महाविद्याक नामसँ जानल जाइत छथि।[१५]

पौराणिक परम्पराक अन्तर्गत प्राय: प्रत्येक देवताकसँग शक्ति-स्वरूपा देवीक कल्पना कएल गेल अछि । लोकगाथा सलहेस सेहो पौराणिक परिवशेसँ युक्त अछि । ओहिमे वर्णित नायक-नायिका अवतारक रूपमे अछि ।

उपरोक्त तथ्यसँ तँ ई पूर्णत: स्पष्ट होइत अछि जे मालिन शक्ति स्वरूपा सर्वव्यापी, सर्वकल्याणकारिणी थिकीह । जे अवतारी पुरूषकेँ अपन सम्बल समर्पित कऽ मङ्गल भावनाक उदय करैछ । अवतरित पुरूष धरतीपरसँ अत्याचार आ अत्याचारीकेँ नाश कऽ संसारमे सुख-शांतिक संदेश दऽ वापस चल जाइत छथि । एहि सम्बन्धमे कहल गेल अछि जे मालिनक स्थान मिथिलाक तान्त्रिक साधनामे विशिष्ट छल । ईलोकनि रूप गुण, यौवन मति आओर गतिमे सर्वोपरि तँ छलीहे, सँगहि अपन चेतनाक उद्‌यानसँ साधनाद्वारा विश्वमोहिनी माला प्रस्तुत करैत छलीह ।[१६]

मध्यकालीन मिथिलामे जखन तन्त्र-मन्त्रक प्रधानता छल । तखन तान्त्रिक प्रक्रियाक संवाहनमे मालिन मुद्राक रूपमे प्रयुक्त होइत छलीह । अर्थात् जन-जीवनकसब आयाममे मालिनक भूमिका सदिखन रहल अछि ।

सलहेस लोकगाथामे सलहेसक 'जीवन वृत्त'केँ उज्जवल वनएबामे मालिन कुसुमाक सर्वप्रथम आ अन्यतम स्थान छनि । जहिना शक्तिक बिना शिव शव भऽ जाइछ, राधाक बिना कृष्ण श्रीविहीन भऽ जाइछ आ सीताक बिना राम एकाङ्गी आ नि:सहाय तहिना लोकदेव राजा सलहेस । जँ सलहेस बनला तँ एकर सम्पूर्ण श्रेय मालिनकेँ छनि ।

तरेगना गढ़क राजा महेश्वर (महिपति) भणडरीकेँ चारि गोट मात्र कन्येटा छलथिन्ह - हीरा, रेशमा, दौना आ कुसुमा । कुसुमा अत्यन्त रूपवती, कुशाग्रबुद्धि एवं कोमलाङ्गी रहथि । एहिकारणेँ लोक हिनका अनंग कुसुमा कहनि । चारू बहिन किशोर वयसमे नृत्य गीतादि कला एवं नीति धर्म ज्ञानमे निपुण भऽ गेलि छलीह । ओहि समयमे त्रिपुरमालिनी देवीक उपासनारत मालिनी सम्प्रदायक एक हुलिसन रहैए जाहिमे स्त्रीगणक बाहुल्य रहए । इहो चारू बहिन ओहि सम्प्रदायमे दीक्षित भऽ आजन्म कुमारि रहबाक संकल्प लेलीह ।सभसँ बढ़ि कुसुमा शीघ्रहि जडी-बुटीक औषधादिक ज्ञान तथा योग-टोन आदिहुमे पारङ्गत भऽ सिद्ध योगिनीक रूपमे प्रख्यात भऽ गेलीह ।[१७] राजेश्वर झा सेहो मालिनक सम्बन्ध योगिनीगुफासँ मानने छथि ।[१८]

सलहेस लोकगाथा चारि भागमे विभक्त अछि जे किला कहबैछ । एहिठाम किलाक तात्पर्य अध्यायसँ अछि । महिसौथा किला, बाघगढ़ किला, योगिनी किला आ पकड़िया किला ।

अवतारी पुरूषक सँगहि अन्यत्र सहायिकाक रूपमे नारी शक्ति अवतरण सेहो होइत अछि जे नारीसुलभ लौकिक गुण प्रदर्शनार्थ सामान्य नारीजकाँ सुन्दर पति प्राप्तिक कामना करैत अछि। इएह कामना चारू बहिन मालिन सेहो करैत अछि। महिसौथामे मालिनक नायक सलहेस देह धारण कऽ चुकल छलाह आ मोरंगमे मालिनसभ ईश्वरसँ प्रार्थना करैत मनक बातकेँ उजागर करैत अछि -

बड़-बड़ भगति मोरंगमे केलियै,
शनि-रवि हर वासे केलियै,
नीक जल तुलसी सेहो ढ़ारलियै,
माघ मासमे गङ्गो नेहिलियै,
हाथी चढ़िके गौर पुजलियै,
तइयो ने बेइमनमा दुसधा दरसन देलकै।

कृष्णाक राधा सेहो एहिना कृष्णक सदिखन बाट तकैत-तकैत ततेक ने कातर भऽ जाइत अछि जे स्वयं कृष्ण बनि जाइत अछि।

राजा बनबाक आ राजकाज चलएबाहेतु चारू उपाय साम, दाम, दण्ड आ भेद नीतिकेँ आवश्यकता पड़ैछ, एकरासँगहि धैर्यक सेहो आवश्यकता पड़ैछ। इएह गुणक सन्देश आ परीक्षाक लेल मालिन दुर्गाक सहयोगसँ सलहेसकेँ जङ्गल पठबैत अछि। सलहेस महिसौथाक राजा बनवाक लेल घर छोड़ि जङ्गल जाइत छथि-

"जय दुर्गा तोरे सुमिरन कऽ हम आइ निकलै छी।
अपन बात पूरा करएबालेल जङ्गल हम धरै छी॥"

जङ्गल गेलाक पश्चात् वराटपूरक राजाकेँ युद्धमे परास्त कऽ हुनक बेटीकेँ अपन परिणीता बनौलन्हि, जकर इएह कामना रहए जे हमर विवाह जँ हुअए तँ राजा सलहेससँ। मुदा राजा वराँट एहि पक्षमे नहि रहए। मालिन अपन योग साधनासँ सत्यवतीक इच्छाके जानि, सलहेसकेँ जङ्गल पठौने रहए।

वराटपुरसँ सलहेस चम्पावन प्रस्थान कएलन्हि। चम्पावन राज तरेगनाक अधीन रहए आ तरेगना राजपर मोटिया राजाक आतङ्क रहए, एकर आतङ्कके अन्त करबाक आ मालिन अपनामे सलहेसक अनुरक्तकेँ जाँच करएबा लेल। नामधारी दौना रूपमे समुख आबि प्रणय निवेदन करैत अछि। एकर प्रत्युत्तरमे सलहेस उत्तर दैत छथिन्ह -

तोहरोसँ सुन्दर धनि मालिनक बेटिया
तकरासँ जोड़ल सिनेह हे।"

वाघगढ़क चोरक सरदार चोरेश्वर अधिक बलिष्ठ आ प्रभावशाली छल। सलहेसक मल्लवंशीय भागिन चुहड़मल सेहो नामी चोर छल। दूनू मिलिकऽ राजा सलहेसक विरुद्ध षडयन्त्र करैत अछि। राज पकड़िया कंचनगढ़मे कुल्हेसरक बेटी चन्द्रा सलहेसक लेल अँचरा बन्हने छलीह। चुहड़मलक आतङ्क आ चन्द्राक इच्छाक पूर्ति आवश्यक छलै। मालिन दुर्गाक सहयोगसँ सलहेसकेँ उद्‌मति लगा पकड़िया बजालेल जाइत अछि। कुल्हेसरक फूलवाड़ीमे मालिनक सहयोगसँ सलहेस पकड़ा जाइत छथि।

चूहड़मल पकड़ियाक राजा कुल्हेसरक चौकीदारी करैत छल। ओकरा मनमे चन्द्राप्रति आकर्षण रहए मुदा चन्द्रा ओकरासँ घृणा करैत रहए आ झूठ अभियोगमे फँसा नौकरीसँ निकालि दैत अछि। तत्पश्चात जेलमे बन्द सलहेसकेँ चौकीदारी करबाक दायित्व भेटैत छै। समयक ताकमे चुहड़मल चन्द्राक नौलखा हार चोरा, सलहेसपर अभियोग लगा दैत अछि आ सलहेसकेँ पुन: जेलमे बन्द कऽ देल जाइत अछि।

संकटकालमे भारतीय रमणीक चातुर्य, बुद्धि आ नीति बड़ श्लाघनीय रहलैक अछि। जे अपन कौशलसँ पति आ राष्ट्रक रक्षा कएलक अछि। सलहेसकेँ बान्हल जएबाक समाचार सुनि मालिन पकड़िया राज प्रस्थान करैत अछि। नटिन वेषधारी मालिन दौनाक अवर्णनीय रूप सौन्दर्य प्रसङ्ग ज्ञात क् चूहड़ हिनकासँ भेट कर् आएल। कंचनगढ़सँ राजकुमारी चन्द्राक नौलखा हारसहित चोराक् आनल सब वस्तु जात द् देबाक शर्त दौनाद्वारा राखल गेल। कामातुर चुहड़मल दौनाक शर्त स्वीकार क् सब वस्तु-जात आनि वापस क् देलक। चोरक भेद खुजि जाइत अछि। चुहड़मल पकड़ल जाइत अछि। सलहेस जेलसँ मुक्त होइत छथि। बादमे महाचोर चुहड़मलक अन्त सलहेस मालिनक प्रेरणासँ करैत छथि। सलहेस कुल्हेसर बेटीसँ विवाह क् महिसौथा आबिजाइत छथि आ कुसुमा मालिन अपन योग साधनामे लागि जाइत अछि। डा. मणिपद्म कुसुमाके सलहेसक प्रणयिनी, मालिन सम्प्रदायक साधिका ओ तरेगना राजा महेश्वरक पुत्री कहने छथि। एकर प्रशंसामे ओ लिखने छथि - राधाक चीर विरहमे मिला दियैक कालिदासक प्रणयिनी विसालवृतिक सङ्गीतमय सांस्कृतिक हास विलास ओ रास, ओहिमे बेसी रङ्ग ढ़ारियौक फ्लोरेंस नाइटिङ्गलक पीड़ितक सेवा भावना, साधना दियैक जापानक गीशा गलंक आर फाइनल टच दियौक। अप्सरा उर्वशी मेक-अपक , ई सभ सजिक् जेहन व्यक्तित्व बनतैक ओ भ् जाइत कुसुमा मालिन ओ मालिनकसँगे योगिन, वादिका, नर्तकी, नायिका, चिकित्सका, रसायन विज्ञ चित्र लेखा सेहो छथि।[१९]

सलहेसक लोकगाथामे मालिनक स्थान आध्यात्म रूपमे अछि। उत्तराखण्डक यात्रा करब आ तत्पश्चात् दर्शन नहि होएब एहि आध्यात्मिक वृतिके उजागर करैत अछि। रेशमा मालिन गबैत अछि-

"नन्हिया धानक चूरा कुटेलिये।
भूली महींस दूध दही जमेलियै।
उत्तराखण्डक यात्रा केलियै।
तइयो ने बेइमनमा पिया दर्शन देलकै।"

सलहेस आगू-आगू ओ दौना-कुसुमा पाछू-पाछू। मुदा सलहेस एवं दौना ओ कुसुमा कत् जाइत रहथि से तीनूमे से केओ नहि बुझथि। मात्र चलल जाथि चलल जाथि।

राजा सलहेसक गहवरमे मालिन एक हाथमे फूलक माला आ दोसर हाथमे फूलडाली नेने आगूमे ठाढ़ रहैछ। मालिनीक ई प्रतीक आ मुद्रा कतेको अर्थकेँ द्योतित करैत अछि। पहिल जे फूल, माला नेने एकटा भक्तिन छथि। दोसर ई जे फूलडालीमे रखल पुष्पसँ सलहेसक शक्तिवर्द्धन करैत अछि, आ ई कहैत छथिन्ह जँ अहाँ आततायीसभकेँ नाश क् देव, तखन हम अपनहि हाथसँ अहाँकेँ पुष्पमाला गलामे पहिरा देव, तेसर अर्थ ई भासित अछि जे गहवरमे सलहेसक हाथमे तलवारे टा छन्हि, कल्याण कोष तँ फूलडालीक रूपमे मालिनेकेँ हाथमे छन्हि।

निष्कर्षत: कहल जा सकैत अछि जे सिद्धयोगिनी सम्पूर्ण प्राणीपर करूणा, दु:खीक सम्वेदना, शिव-शक्तिक उपासिका, राजा सलहेसक जीवनकेँ उज्जवल बनेबामे मालिनक स्थान विशिष्ट, अतुलनीय आ अनुकरणीय अछि।

सन्दर्भ-स्रोत

१. महाभारत- शान्ति पर्व-श्लोक संख्या, ५-६
२. तथैव - वन पर्व, २७५
३. मत्स्य पुराण - १७९

४. मैथिली अकादमी पत्रिका - वर्ष २५-२६, संयुक्तांक ०४, पृ. ६०
५. ब्रह्म पुराण - ४-३६, ७६-९६
६. विष्णु पुराण -५-१९, १७-२८
७. भारतीय संस्कृति कोश - लीलाधर शर्मा पर्वतीय, पृ. ७११
८. ललिता सहस्त्रनाम - श्लोक १६७
९. परशुराम कल्पसूत्र - दशमखण्ड श्लोक,२१
१०. स्वच्छन्द तन्त्र - पटल-११, श्लोक-१९९
११. तृतीय अधिकार
१२. पशत्रिशिंका - टिप्पणी, पृ. १२२
१३. लोक-गाथा विवेचन - श्री राजेश्वर झा, पृ. ३९
१४. मैथिली शैव साहित्य - डा. रामदेव झा, पृ. १७सँ उद्धृत
१५. अंकिया नाट विवेचन - डा. नवीनचन्द्र मिश्र, पृ. ७४
१६. लोक-गाथा विवेचन - श्री राजेश्वर झा, पृ. ३७
१७. जयराजा सलहेस (महाकाव्य) - मतिनाथ मिश्र पृ. घ(५)
१८. लोक-गाथा विवेचन - राजेश्वर झा, पृ. ३४
१९. मिथिलाञ्चल दलित समाजमे लोकगाथा (स्मारिका) - पृ. ६३ मारवाड़ी कालेज, भागलपुर, २००९ ।

f f f



सलहेस फुलबारीक विहंगम दृश्य

सलहेस पूजाक अनुष्ठानिक प्रक्रिया

✍ डा. बुचरु पासवान

प्रकृतप्रदत जीवक अविर्भाव एवं विकासक क्रम निरन्तर अग्रसरक मार्ग प्रशस्त करैछ। विकासक क्रम प्रकृत स्वतः निरन्तर अवाध गतिक प्रक्रिया अग्रसर होइत रहैछ। आ एहिक्रमकैं जँ सहयोग प्राप्त होइछ, तखन ओ तीव्रगामीक रूप पकड़ि क्रिया सम्पन्न हेबामे विलम्ब नहि होइछ। एहिक्रममे विभिन्न प्रकारक जीवक विकास भेल। ताहिमे मानवक विकासक क्रम अधिक तीव्रगामी रहल आ मानव अपन व्यक्तित्व आ कृतित्वक परिणामस्वरूप आदरणीय, पूज्यनीय, प्रार्थीनीय, स्मरणीयक क्रममे ओ लोकदेवताक रूपमे, ओ समाव ओकरा स्वीकार कऽ पूजा अचर्नासँ अभिभूत करैछ, आ उएह स्वरूप अन्तरालमे एक व्यवस्थाक अनुकूल देवत्व स्थापित होइछ। ओ मानव, महामानवक रूपमे अपन प्रतिष्ठा प्रतिष्ठित करैछ, आ लोक ओकरा श्रद्धासुमन अर्पित कऽ फलक कामना कऽ फल सेहो विश्वासस्वरूपमे फलीभूत होइछ। प्रकृतक अपन नियम होइछ - आ ओ नियम पालनमे अग्रसर रहैछ। नियमक प्रतिकूल कौखन नहि होइछ। आ जखन प्रकृतसँग छेड़-छाड़ होइछ, नियमक उल्लंघन मानवद्वारा होइत अछि। तखन विघटन हएब स्वाभाविके अछि। आ विघटनक बाद पुनः निर्माण हएब सेहो ध्रुवसत्य अछि। ई विघटन आ निर्माणक क्रिया-प्रकृतमे होइत आएल अछि आ रहत। मानव एक एहन सामाजिक प्राणी अछि जे अपन बुद्धि, विवेक, सहिष्णुता धैर्य, शालीनताक बले समाजमे पूज्यनीय भऽ जाइछ। एहनेक्रममे प्रकृत-प्रदत एक महामानव ऐतिहासिक पुरूष, युगनिर्माता, समाजमे व्याप्त शोषण, दोहन, उत्पीड़न आ प्रताड़नाक विरूद्ध आवाज बुलन्द करब, समाजकैं कष्ट-हरण करब, समतामूलक समाजक स्थापना करब समदर्शी, राष्ट्रहितधारी जीवजन्तु हिंसक पशुसँ रक्षा आ भरण दिआएब एक विशिष्ट मानवक अवतरण भेल छलनि जिनकर नाम छलैन्ह - 'राजा सलहेस'।

राजा सलहेसक पूजा मैथिल आ प्रवासी मैथिलक दुसाध जातिक लोक मुख्यरूपसा करैत छथि आ सहयोग मैथिल समाजकसभ जाति, सम्प्रदाय आ धर्मक लोकक रहैत छनि।

एहिठाम हम राजा सलहेसक सिर्फ पूजाक विधि-विधानक चर्चा करब। राजा सलहेसक पूजाक विधान दू प्रकारक होइछ : प्रथमः- शाक्तस्वरूपा आ दोसर मांसस्वरूप। आब प्रश्न उठैत अछि जे शाक्त स्वरूपा की थिक ? एकर उत्तर हएत जे -"शाक्तस्वरूपा हम ओकरा कहब जखन सलहेसक पूजामे जीवक हिंसा नहि होइछ।" दोसर मांसस्वरूपा हम देखैत छी जे जखन सलहेसक पूजनोत्सबक अवसरिपर किछु क्षेत्राधीन समाज प्रायः पशुबद्ध करैछ। ई बद्ध पूजानोत्सबक अवसरिपर बजाओल गेल इष्टमित्र, कुटुम्ब स्वागतार्थ छागरक बद्ध कएल जाइछ जे अप्रत्यक्ष रूपसँ एहि बातक सबूत प्रमाणित होइत अछि। परञ्च मुख्य रूपसँ सलहेस पूजामे सात्विक, जेना, शुद्ध दूध आ गमकौआ चाउर उत्तम किसमक मिश्रीनूमा चीनीक समीश्रण कऽ आगिक मध्यम तावपर सिद्ध कऽ तस्मै तैयार होइछ।

सहयोगी :-

राजा सलहेसक पूजा मैथिल आ प्रवासी मैथिलक दुसाध जातिक लोक मुख्यरूपसँ करैत छथि आ सहयोग मैथिल समाजकसभ जाति, सम्प्रदाय आ धर्मक लोकक रहैत छनि। जेना राजा सलहेसक पूजा मुख्य रूपसँ वर्षक आषाढ़ीक पूजानामसँ प्रति वर्ष असाढ़मासक मध्य शुक्ल पक्ष शुभ दिन शुभ लग्न आ मुहूर्तमे होइत अछि। आ एहि पूजामे भगत दलबाहकसँग, मृदङ्ग आ झालिक बाद्ययन्त्रक सहयोगसँ करीब १०-१५ भगैत पोनिहारकसँग लयवद्ध भगैत दरबजा-दरबजा जा ऽ गबैत छथि। समाजक उच्चवर्ग, सामान्यवर्ग, आ गरीब, किसान, मजदूर समेतसभक दरबाजा पहुँचि, पावन पूजाक सफलताक लेल समाजसँ आशिर्वादी प्राप्त करैत छथि। आशीर्वादी प्राप्त करैत छथि मुस्लिम, सिक्ख आ ईसाइ धर्मालम्बी समाजसँ। आ सलहेस पूजाक उपर्युक्त सभलोग सहयोगी सिद्ध होइत छथि। तएँ हिनकेलोकनिकेँ सलहेस पूजा सहयोगी नामसँ सम्बोधन कएल जाइत छनि।

सुरसार :-

प्रति वर्षक भाँति, आषाढ़ मासक निर्धारित तिथिक लेल जखन दुसाध समुदायक लोक, कोनो चौपाड़ि, सार्वजनिक हरिजन दलान, माल-जालक बथान, वर, पिपर, वृक्षतर बैसि, भिन्न-भिन्न प्रकारक गप्प-सप्पक क्रममे ई मास पूर्वे-अर्थात वैशाख, जेठक ओ टहाटही रौदक नीजातक हेतु बिनुबजाओल सम्मिलित, उपस्थित भ ऽ राजा सलहेसक पूजाक विषयमे जखन समुदायक कोनो सदस्यद्वारा अनायासे बात उठाओल जाइत अछि। आ एहि पूजाक समग्ररूपसँ चर्चा आरम्भ भ ऽ जाइत अछि। तखन सर्वसम्मतिसँ एक बैसारक तिथिक निर्धारण होइत अछि। ओहि तिथिक सन्ध्याकाल जखन दुसाध जातिक लोकसमेत, सलहेस पूजाक चर्चा, परिचर्चा आरम्भ करैत अछि तकरे पूजा हेबाक 'सुरसार' कहल जाइत अछि।

पूजाक बैसार :-

पूजाक 'सुरसार'केँ अवसरपर जखन एक निर्धारित तिथिकेँ दुसाध जातिक समुदायक बैसार क ऽ उपस्थित सदस्यद्वारा सर्वसम्मतिसँ निर्णयोपरान्त एक खास तिथि निर्धारित होइत अछि जे सलहेस पूजाक एक समितिक गठन करैछ आ ई प्रथम बैसार रहैत अछि तएँ एकरा 'पूजाक बैसार' नामसँ सम्बोधन होइत अछि।

सलहेस पूजाक बैसार समिति :-

जखन सर्वसम्मतिसँ पूजा समिति गठित होइत अछि - तखन, समितिक सदस्यद्वारा बैसारक एक प्रारूप तैयार होइत अछि जाहिमे निम्नलिखित विन्दुपर विचार करब से निश्चित कएल जाइत अछि। जेना (१) अध्यक्ष, (२) सचिव (३) कोषाध्यक्ष (४) तैयारी समिति। (५) सलहेस पूजा समितिक नामकरणपर विचार और गठन। सलहेसपूजा समितिक सदस्य जे १५ सदस्ये समिति रहैछ ई समिति एक बैसारसँ लेल गेल सर्वसम्मति निर्णय क ऽ वनैत अछि। जेकरा माध्यमसँ अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष, तैयारी समिति आ संस्थाक नाम देल जाइत अछि आ पूजा प्रारूप तैयार करैछ। सलहेस पूजाक अनुष्ठानिक प्रक्रिया प्रथम स्वरूप तैयार भ ऽ जाइत अछि। तदुपरान्त 'भगवत' नव परिधानसँ आवेष्ठित, पिअर वस्त्रसँ सज्जित, व्रत उपवासमे रहि, इष्टदेवक अवाहनहेतु समाजमे कुशल भगैत गेनिहारकेँ सडोर होइछ, आ भोजनोपरान्त रातिमे मृदङ्ग, झालि वाद्ययन्त्रक सहयतासँ भजनानन्दलोकनि भगैत गबैत जखन विभोर भ ऽ जाइत छथि तखन भगतकेँ अध्यात्मिकसब द्वारक पट्टा फुजि जाइत अछि, आ हुनक तनमन ओहि भगैतक लय आ सुरतालमे सम्मोहित भ ऽ एकाकार भ ऽ जाइत अछि। आ भगतकेँ सिर्फ राजा सलहेसक मूर्तरूपक एक छाँयास्वरूप आँखिक सोझा एक प्रतिविम्ब उपस्थित भ ऽ जाइछ। फलस्वरूप भगतकेँ सम्मोहित भेलाकारणेँ राजा सलहेसक साक्षात मूर्ति आँखिक सोझा दृष्टिगोचर होइत छनि। जाहिसँ भगत विभोर भ ऽ जाइत छथि। भगतकेँ नस-नसमे सम्मोहनक

प्रभावसँ प्रभावित भऽ स्वत: अङ्ग-प्रत्यङ्ग सञ्चारित भऽ उठैत छनि। जाहिसँ शारीरिक संतुलन, असंतुलनक कारणेँ खसैत पड़ैत छनि। जे दर्शककेँ भान होइत छनि जे सद्य: देवताक आगमन भगतक शरीरमे भऽ गेलनि अछि। एहिप्रकारेँ करीब एक सप्ताहतक एहि रूपमे देवताकेँ जगाओल जाइत अछि। जेकरा लोक 'जागरण' या देवताकेँ अवाहन कहल जाइत अछि।

ई क्रम एक सप्ताह तक चललाक वाद भगत गाम भ्रमणक योजना बनबैत छथि। तदनुसार शुभ मुहूर्त, शुभ लग्नमे भगत डाला साजैत छथि, जाहि डालामे शुद्ध अरवा चाउरक अक्षत अरहुलक भकनार फूल, छूट्टा पान, एकटा बेंतक पातर छड़ी करीब डेढ़ हाथक,सभकेँ एक सिंकीक देऊरी जेकरा डाला नामसँ सम्बोधन कएल जाइत अछि, मे दऽ एक लाल नववस्त्रसँ झाँपि दैत अछि। आ भगत पिअर रङ्गल धोती नव आधा डाँरमे लपेटि, डोरा-डोरिसँ लटपटा, धोती मगजीकेँ आँगुरसँ पकड़ि कसिकेँ मोड़ि दैत छथि। तदुपरान्त धोतीक खूँटकेँ कोँचिया ढेका बना पाछुसँ खोसि लैत छथि। शेष आधा भागकेँ गर्दनिसँ नीँचा आ डाँड़सँ उपर भागकेँ ओढ़ि शरीरकेँ झाँपि लैत छथि। आ साजल डालाकेँ एक नैमिष्ठ लोकक हाथमे दैत छथि। ओकरे 'डलबाह' कहल जाइत छैक।

एहिप्रकारेँ ग्राम भ्रमणमे सम्मलित होइत छथि भगत, भगैत गेनिहारक झुण्ड, डलवाह आदिसँग बाद्ययन्त्र-झालि, मृदङ्ग, मजिराक आदि सुमधुर स्वर उत्पन्न कऽ सुननिहारक हृदयकेँ आनन्द विभोर कऽ दैत अछि। भगवत देवताक आगमन प्रलाप कऽ स्वयं आनन्द विभोर भऽ उठैत छथि। ओ भगतिया दल समाजक समस्त लोकक दरबज्जापर गबैत, झुमैत, नृत्य आ भगैत गबैत पहुँचैत छथि। जिनका दरबज्जापर पहुँचैत छथि ओ गृहस्वामी, भीख कहू या सहयोग कहू अथवा दान कहू, अन्न कैचासँ सहयोग करैत छथि। दानीसभ हृदयमे एहि पूजाक प्रति आस्था, प्रतिस्पर्धा, उत्साह आ आत्म-गौरवक अनुभव करैत छथि। एहिप्रकारक व्यवस्थाकेँ 'मङ्गनी' कहल जाइत छैक। ई क्रम लगभग एक महिनातक चलैत अछि। मङ्गनीसँ प्राप्त जीनीसकेँ सर्वसम्मतिसँ विक्रय कऽ प्राप्त राशिसँ पूजा अनुष्ठानक आवश्यक सामग्री क्रय होइत अछि। यथा अनुष्ठानक आवश्यक सामग्री: नारियलक फल, सरङ, धूमन, अगरबत्ती, पान, जनेऊ, लङ्ग, इलाँयची, मखान, मधु, दालचीनी, बड़ी इलाँयची, छहोरा, किसमिस, खीरहेतु सुगन्धित चाउर, (बासमती), गुड़, केरा, तंवाकू, मोहली मोरंगिया दारु, दूध, गायक घी, दही, मिसरी, चीनी, सौँफ, गरम मसाला, मूङ्गफली, सेब, अनार, समतोला, सलाई, मोमबती, नव ढकना, दीया, रुई, नव वस्त्र, झाँप, चीनीपाक लड्डू, गाँजा, पीनी (खमिड़ा) आदि वस्तुक क्रय होइत अछि।

सलहेस पूजा अनुष्ठान प्रक्रियाक शुभारम्भ :-

अषाढ़ मासक शुक्ल पक्षमे शुभ लग्न आ शुभ मुहूर्तमे सलहेस पूजाक अनुष्ठानिक प्रक्रिया एहिप्रकारेँ शुभारम्भ होइत अछि। जाहि दिनक शुभ मूहूर्तक अवसरपर राजा सलहेसक पूजा अनुष्ठान शुभारम्भ होइछ ताहिदिन भगत उपवासमे रहि नव परिधानसँ आवेष्ठित भऽ अध्यात्मिक स्वरूपमे आबि, एकाग्रचित चौदहो-देवानक स्मरण कऽ पूजाक स्थलक निर्माण कऽ आ भजनानन्दक भगैतसँ अहलादित आ आनन्दित भऽ एवं देहक सञ्चारित अवस्थामे आबि सलहेसक पीरीक साज-सज्जा करबैत छथि। जेना निर्माओल पीरीकेँ चिकनी माटिसँ सात खेप निपल-पोतल जाइत अछि। जखन पीरी-सुखि जाइत अछि, तखन भगत अपना निर्देशनमे सामाजक नैमिष्ठवान लोक आ 'डलवाह'केँ सौजन्यसँ पीरीकेँ चारू कोनपर चारिटा छोट केराक गाछकेँ गाड़ल जाइत अछि। जाहिसँ पीरीक सौंदर्य बढ़िजाइत छैक। पीरीक ऊपर अरहुल फूल, कनैलक फूलक बाटुलताकसँग गुलाब, गेंदा, गुलदौ, सिङ्गरहार, करवीर, कुमुदनी, फूलकोका, बेली, चमेली, चम्पा आ तुलसीक पातसँ पीरीक आँगनकेँ सजा देल जाइत अछि। पीरीक चारूतरफ लाल मोटगर-मोटगर लाठीसँ सजाओल जाइछ।

ताहि बीच-बीचमे लड्डु, पान, खैनी, फूल आ तस्मैक नैवैद्यसँ सुसज्जित कऽ देल जाइत अछि। गायक गोबरक गोँइठाक लह-लह करैत आगिमे सरड, धूमन, गूगुल फोँकिदेल जाइत अछि। अगरबत्ती लेसदेल जाइत अछि। एकरासभकेँ जड़लासँ जे धूँआँ निकलैत अछि से पूजाक अनुष्ठानक प्रदेशकेँ दिग-दिगन्ततक गमगमा आ महमहा दैत अछि। जखन पूजा अनुष्ठानक पीरीकस्थल फूल, पान, मधु, मखान, लाठी, तलवारसँ सज्जित आ गुगुल, सरड़ आ धूमनक गमगमी, महमहीसँ अनुष्ठानिक प्रदेश सराबोर भऽ जाइत अछि तखन देवताक अवाहनक निमित्त, फालि, मृदङ्ग, मजरीक बाद्ययन्त्रद्वारा बाजा बजाकऽ आ भगैत गाबि देवताकेँ रीफाओल जाइछ या मनाओल जाइत अछि।

भगत पिअर नव परिधानसँ आवेष्ठित भऽ हाथमे बेँतक पातर छड़ी लऽ पीरीक चारूतरफ चकभौर करैत अछि। आ भगैतक अलख धूनिसँ, भगताक तन, मन संवेदन समस्त सम्मोहित भऽ उठैत अछि। जाहिसँ भगतक एकाग्रता आ विश्वासक समग्रताक फलस्वरूप चेतन शून्यताक कारण ओ दिवास्वपनक परिवेशमे आबि अपन सोफा मन, मानशपटलपर अंकित देवताक प्रतिविम्ब प्रतिविम्बित भऽ उठैत अछि। असीम श्रद्धावश ओ परिकल्पित मूर्तिक दर्शन पबैत अछि। जेकरा देवदर्शन कहल जाइछ। दर्शकक असाधारण विश्वास फलस्वरूप याचनासँ फलप्राप्तिक आशा फलिभूत होइत अछि।

सलहेस पूजाक अनुष्ठानिक प्रक्रियाक महत्व :-

पूजाक अनुष्ठानिक प्रक्रियाअन्तर्गत पाओल गेल वस्तुक एक ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, भौगोलिक एवं वैज्ञानिक स्वरूपक वर्णन एहिप्रकारेँ कएल जा सकैछ :-

अक्षत :- सलहेस पूजाक अनुष्ठानिक प्रक्रियाअन्तर्गत 'अक्षत'केँ बड़ पैघ महत्व देल गेल अछि। अक्षतक अर्थे होइत अछि - जेकर क्षति न हो। सएह भेल 'अक्षत'। 'अक्षत' धानक खोइञ्चा जखन छोड़ादेल जाइत अछि तखन चाउर बनैत अछि। पूजाक अनुष्ठानिक कार्यक लेल जखन कोनो अरवा धानकेँ नियम आ निष्ठापूर्वक विशुद्धरूपेण भूस्सा फराक कऽ चाउर तैयार कएल जाइछ आ पूजानिमित्त जखन ओकरा राखल जाइछ आ ओहो चाउर कोनो शुद्ध वासनमे निष्ठा आ पवित्रताक रूपमे, ओकरा 'अक्षत' कहल जाइछ। 'अक्षत' भेल अरवा चाउर, ई अरवा धानसँ बनैत अछि। ई अरवा धान आदि-मानवक विकासक क्रममे भेल। आदि-मानव शिकारक क्रममे एहि धानकेँ खोज केलक। धानक महत्वकेँ अनुभव केलक। एहिसँ एकर जीवनक रक्षा भेलैक। मानवक स्वभाव रहल अछि, जे कोनो वस्तुद्वारा जखन ओकरा लाभ प्राप्त होइत छैक, तखन ओ वस्तु ओकरा हृदयमे श्रद्धाक भावक स्थान ग्रहण कऽ लैत अछि। अन्तरालमे अविस्मरणीयकेँ रूप स्थापित होइत अछि। जे आगु चलिकेँ पूजनीय भऽ जाइत अछि। आदि-मानव शिकारक खोजमे दूर-दूरतक भ्रमण केलक। एहिक्रममे ओ ओहि स्थानपर अकस्मात पहुँचल जाहि क्षेत्रमे वर्षाक जल ग्रहणक क्षेत्र छल, ओहि ठाम पाकल धानक पौधा एकरा अपनातरफ आकर्षित केलकै। आदि-मानव धानक शिशक तरफ आकर्षित भेल। ओकर एक दानाकेँ तोड़ि ओकरा खोइञ्चा छोड़ौलक। धानसँ भूस्सा फराक भेलापर बीचक ठोसवस्तु ओकरा प्राप्त भेलैक। ओकरा देखलक, परेखलक। चिंतन मनन केलक। तदुपरान्त मुँहमे लऽ दाँतसँ चिबाए जीहसँ स्वाद पओलक। एवंप्रकारेँ धान मानवक जीवन रक्षाक रूपमे अपन स्थान पौलक। अन्तरालमे मानव ईश्वरसँ प्रार्थना केलक जे -"हे ! प्रभु हमरा लेल ई जीवनक मार्गमे एक पैघ लाभदायक वस्तु प्राप्त भेल अछि। एहिमेसँ किछु भाग अपनेक पूजनोत्सवपर उत्सर्ग करैत छी। ई वस्तु अक्षय हो तेकर कामना, प्रार्थना, निवेदन करैत छी।" इएह अक्षय, चाउर अक्षतक रूपमे मानव ईश्वरकेँ पूजनोत्सवक शुभ अवसरपर व्यवहार करैत अछि। आ एकर अक्षय हेतु कामना करैत अछि। तएँ सलहेस जे एक ऐतिहासिक युग पुरूष छलाह। अपन व्यक्तित्व आ कृतित्वक पराक्रमे देवत्वकेँ प्राप्त भेलाह। तएँ सलहेस पूजनोत्सवमे अक्षत (अरवा चाउर)केँ विशेष रूपसँ अलग महत्व छैक।

पान :- सलहेस पूजा अनुष्ठानक प्रक्रियामे पानक एक अलग महत्व अछि। पानक उद्भव आओर विकास, पृथ्वीक निर्माणोपरान्त भेल। आदि-मानवद्वारा भोजनक खोजक क्रममे एक स्थानसँ दोसर स्थानक भ्रमणक फलस्वरूप अनायासे एकर खोज भेल। हमर परिकल्पना अछि जे चाउर बनलाक वाद चाउरकेँ कोनो वस्तुमे रखबाक आवश्यकता अनुभव भेल हेतैक। अपन अगल-बगलमे कोनो वृक्षपर हरियर, त्रिकोणनूमा, लह-लह, डग-डग हेबाक वेगमे प्रकृत कोरमे डोलैत हएत। आदि-मानव नहसँ बहुत अल्पांश चाउर तैयार केने हएत। जेकरा रखबाक आवश्यकता अनुभव केने हएत। ताहिक्रममे वृक्षपर लतरल-चतरल पानक पातपर दृष्टिगोचर भेल हेतैक। ओ तोड़ने हएत। नहसँ तैयार चाउरकेँ रखने हएत। पानमे एक अनुपम सुगन्ध होइत छैक। ओ सुगन्ध हाथमे स्पर्श भेलासँ हाथ सेहो सुगन्धित, अधिककालतक रहल हेतैक। पानक सुगन्धक कारण मानव ओकरा मुँहमे लऽ दाँतसँ चिबेने हएत। चिबेलोपरान्त पानक रस, सुगन्धित रससँ मानवक मुँहमे चिक्कन स्वाद जीहद्वारा अनुभव प्राप्त भेल हएत। पानक रस मुँहकेँ गन्ध, दुर्गन्धकेँ समाप्त कऽ एक हल्कापनक अनुभव करबैछ। एहि कारणे एकरा दैनिक जीवनमे सब दिनक हेतु रखने हएत। पानक अविनाशक कामना देवतासँ करबाक प्रार्थना केने हएत जे मानवक स्वभाविक प्रक्रिया थिक। ई मानवकेँ प्रकृत-प्रदत स्वभाव विकासक क्रममे प्रकृतद्वारा प्राप्त भेल छैक जे आन जीवमे दुर्लभ छैक। तएँ मानवद्वारा देवतापर चढ़ेनाक शिलशिला प्रारम्भ भेल। जखन मानव पृथ्वीपर जन्म लऽ अपन व्यक्तित्व आ कृतित्वक बलेँ मानव समुदायक बीच जखन एक अपन कीर्तिमान स्थापित करैछ, तखन ओ मानवक मध्य पूजनीय, वन्दनीय भऽ जाइत छथि आ देवत्व प्राप्त कऽ देवताक पंक्तिमे ठाढ़ भऽ जाइत छथि। तेहने कृतिमान महामानव, ऐतिहासिक पुरूष, युग-निर्माता भेलाह राजा सलहेस जे अन्तरालमे देवत्वकेँ प्राप्त भेलाह आ भारत खण्डमे किछु जातिक समुदाय हिनक वार्षिक पूजा-अर्चना करैत छथि। नेपालक लोक प्रायःसभ समुदायक बीच राजा सलहेसक महात्मक पूजनोत्सवक अवसर प्राप्त करैत छथि। नेपालमे जूड़िशीतलक दिन नेपालक सभ समुदायक लोक राजा सलहेस फूलबाड़ीमे पूजा-अर्चना कऽ अध्यात्मिक शान्ति प्राप्त करैत छथि। पूजाक क्रममे राजा सलहेसक पूजा-अर्चना पूजनोत्सवक अवसरपर अनुष्ठानिक प्रक्रियामे पान एक खास महत्व रखैत अछि।

चीनीपाक लड्डू :- सलहेसक अनुष्ठानिक प्रक्रियामे चीनीपाक लड्डूकेँ विशेष महत्व होइत छैक। चीनीपाक लड्डू चीनीक ठोस पदार्थकेँ जलक सहयोगसँ द्रव्यमे बदलि ओहि घोलकेँ आगिक पाकपर पाक प्रक्रियाक माध्यमसँ जखन पुनः एक छोट गेलीक स्वरूप बना दैत अछि। तखन ओकरा चीनीपाक लड्डू कहल जाइत अछि। एकर उत्पति ईख या मैथिलीमे कुशियार, ऊखि नामसँ जानल जाइत अछि, वनस्पतिसँ होइत अछि। आदि-मानवकेँ शिकारक लेल कएल गेल भ्रमणक क्रममे अकस्मात सोझाँ आएल छल। ऊखिक रस पान कऽ शक्ति, शीतलता आ विटामीन प्राप्त भेलाक कारण शरीरकेँ पोषकतत्व प्राप्त होइछ आ मानवक मशीनरूपी शरीरमे ऊर्जा प्राप्त होइत अछि। जाहिसँ शरीर सञ्चारित होइछ। तएँ चीनीक लड्डूक पूजाक अनुष्ठानमेँ महत्वपूर्ण स्थान अछि। चीनीपाक लड्डूकेँ धार्मिक दृष्टिकोणसँ शुद्ध मानल जाइत अछि। चीनीक लड्डूकेँ समाजद्वारा भेदभावक अवधारणासँ फराक राखल गेल अछि। अतः सलहेसक अनुष्ठानिक प्रक्रियामे चीनी लड्डूकेँ एक विशिष्ट स्थान प्राप्त अछि।

जौ :- सलहेसक अनुष्ठानिक प्रक्रियामे 'जौ'के एक अलग महत्व छैक। अन्नमे जौ सुपाच्य आ पौष्टिक अहार मानल जाइत छैक। मानवकेँ सुरुमे 'जौ' प्राप्त भेल छलैक। एहिसँ जीवन रक्षा भेल छलैक। तएँ एहि दृष्टिये 'जौ'केँ देवताक पूजाक उत्सर्ग रूपमे प्रतिष्ठापित केलक। एहिद्वारे आन देवताक भाँति सलहेसक पूजामे सेहो 'जौ'केँ एक विशिष्ट महत्व छैक।

तील :- तीलके अक्षुण्णता बनल रहए तएँ पूजासँ जोड़िदेल गेल अछि। तीलमे तैल पदार्थक बाहुलता रहैत छैक। एकर तेल ठंढ़ा आ खेलासँ शरीरमे ऊर्जाक बर्द्धन होइत छैक। आदि-मानवकेँ विकासक क्रममे 'तील' प्राप्त भेल छलैक। 'तील'सँ बेहद लाभ प्राप्त भेल छलैक। तएँ एकर अक्षुण्णता बनल रहएसे सोचि, पूजासँ जोड़ि देल गेलैक। सलहेसक अनुष्ठानिक लेल 'तील' महत्व रखैत अछि।

घी :- सलहेसक अनुष्ठानिक प्रक्रियामे 'घी'केँ महत्वपूर्ण भूमिका अछि। ताहुमे गायक घीकेँ अतिविशिष्ट महत्व अछि। एक छँटाक गाय घी जड़ेलापर लगभग एक क्वींटल आक्सीजन जे हमर प्राणवायु थिक उत्पादन होइछ तएँ यज्ञादिमे होममे जौ, तील, अक्षत, घीकेँ प्रयोग होइछ। आ एहिसँ वातावरण शुद्ध होइछ।

सुपारी :- सलहेसक पूजामे सुपारीकेँ अधिक महत्व होइत छैक। सुपारीकेँ मुखशुद्धी कहल जाइत छैक। भोजनोपरान्त सुपारीक आवश्यकता अनुभव कएल जाइछ। सुपारी खेलासँ मन प्रशन्न होइत छैक। तएँ सलहेसक पूजामे सुपारीकेँ महत्व अधिक देल जाइत छैक।

फूल :- सलहेसक अनुष्ठानिक प्रक्रियामे फूलक महत्व अति विशिष्टरूपेँ देल जाइत अछि। फूलमे पराग होइत छैक जाहिसँ एक उमदा सुगन्ध निकलैत छैक। सुगन्धसँ तन, मन, प्रफूल्लित होइछ। स्वास्थ्यक लेल लाभप्रद होइछ। दिग-दिगन्त तक मह-मही आ गम-गमीसँ गमगमा जाइछ। तएँ देवताक आह्वान स्वभाविक होइछ।

दीप :- सलहेस पूजामे दीप लेसल जाइछ। दीप पूजाक लेल शुभ मानल जाइछ। ई अन्धकारकेँ नाश करैत अछि, आ प्रकाशकेँ प्रकाशित करैछ। विनु प्रकाश सृष्टिक विनाश बुझू।

नैवेद्य :- सलहेसक पूजामे नैवेद्यक स्थान सेहो सर्वोपरि अछि। नैवैद्यकेँ प्रसाद रूपमे सकल समुदायक बीच वितरण कएल जाइछ। जाहिसँ समाजमे समरसताक प्रतिपादन होइछ। शुद्ध दूध, बासमती चाउर आ चीनीक संयोगसँ नव वर्तनमे रानहल जाइछ। नियम निष्ठाकसँग केरा पातपर नैवेद्य देवतानिमित्त राखि देल जाइछ। पूजा विसरजन भेलापर इ नैवेद्य सकल समुदायक बीच बाँटल जाइत अछि। घरक बाल-बच्चासंग एहि नैवैद्यकेँ ग्रहण कऽ अपनाके धन्य मानि आस्थाक विकास होइछ जाहिसँ शान्ति भेटैछ।

अर्घ :- सलहेस पूजामे अर्घ सेहो देल जाइछ। ई अर्घ भगवान सूर्यकेँ देल जाइछ। कारण दुसाध जातिक लोक सूर्योपासक होइत छथि। राजा सलहेस स्वयं सूर्योपासक आ शैव्य छलाह। तएँ अर्घकेँ सलहेस पूजामे एक विशेष महत्व होइत छैक।

धूप :- सलहेस पूजामे धूपक विशेषता अधिक मानल जाइत अछि। धूपसँ धूँवा निकलैत अछि। ई धुवाँ सरड़, गुगुल आ धूमनकेँ जड़लासँ उत्पन्न होइत अछि। ई विशेष प्रकारक धुवाँसँ वातावरणमे विषाणुक क्षय होइत छैक आ ताहिसँ वायुमण्डल शुद्ध होइछ।

बामरि : सलहेस पूजामे 'बामरि' स्त्रीगण अधिक लैत अछि। बामरि की थिक ? 'बामरि'केँ लेल एक नव ढाकनमे रुईक फूहा बना आ कपूर, अथवा घी दऽ देल जाइत अछि। जखन आगिसँ ओकरा लेसल जाइत अछि, तँ एकाएक पैघ धधरा निकलैत अछि। एहि धधराकेँ भगत मुँहक हवासँ फूँकि श्रद्धालुकेँ देहपर स्पर्श करबैत अछि। श्रद्धालुकेँ विश्वास छैक जे 'बामरि' लेलासँ शारीरिक कष्टसँ त्राण भेटैत छैक। सएह भेल 'बामरि' आ एकर महत्व।

गङ्गाजल :- गङ्गाजलक महत्व प्राय:सभ जनैत छथि। सलहेस पूजामे गङ्गाजलकेँ अति विशिष्ट महत्व छैक। गङ्गाजलसँ शरीर जखन सिक्त कएल जाइछ, तखन भगतक शरीर शुद्ध, पाक भऽ जाइत छनि। फलस्वरूप देवताक आवाहन सहजरूपेँ होइछ।

स्नान :- पूजासँ पूर्व देह स्नान शुद्धताक लेल परम आवश्यक। स्नानसँ मन पवित्र प्रसन्नचित आ स्फूरणक विकास होइछ जाहिसँ बुद्धिक विकास होइछ। सही चीजक चिन्तन आ मनन कऽ भविष्यवाणी करबामे सफल होइत छथि। तएँ पूजाक लेल स्नान विधि परम आवश्यक मानल जाइछ।

नव-वस्त्र :- सलहेसक पूजाक अनुष्ठानिक प्रक्रियामे नव-वस्त्र पिअर रङ्गसँ रङ्गलकेँ अधिक महत्व होइत छैक।

आचमनि :- सलहेसक पूजाक अनुष्ठानिक लेल आचमनि सर्वोपरि स्थान रखैत अछि। आचमनिसँ शुद्धताक परिपाक होइछ।

अभिशेष :- पूजाक विधिकेँ निम्न प्रकारसँ देखल जाऽ सकैछ :

पूजाक विधि :- (१) आहवान (२) आसन (३) पाद्म (४) अर्घ (५) स्नान (६) अभिशेष (७) आचमनि (८) वस्तु (९) गन्घ (१०) अक्षत (११) फूल (१२) वेलपात (१३) धूप (१४) दीप (१५) नैवेद्य (१६) पान (१७) सुपारी (१८) फल (१९) दक्षिणा (२०) आरती। एहिप्रकारेँ पूजाक ई सामान्य विधि भेल। एहिमेसँ देवता विशेष लेल विशेष प्रकारक अनुष्ठानिक प्रक्रिया होइछ।

दारु :- सलहेसक पूजाक अनुष्ठानिक लेल 'दारु'केँ सर्वोच्च महत्व छैक। दारु देवताक निमित्त आनलेटा जाइछ।

शहद (मधु) :- सलहेसक पूजाक अनुष्ठानक लेल 'शहद' हएब परम आवश्यक होइछ। शहद शरीरक लेल एक उत्तम पौष्टिक वस्तु थिक। मधुमाछीद्वारा बटोरल परागक सम्मिलित रूप शहद होइत अछि। मानवकेँ जाहि वस्तुसँ लाभ होइत छैक ताहि वस्तुकेँ देवताक पूजा अर्चनासँ जोड़ि एक अक्षुण्णता प्रतिपादन करैछ।

मखान :- सलहेसक पूजाक लेल मखानक महत्व सेहो कम्म नहि छैक। मखान अति पौष्टिक अहार थिक। एकर तस्मै मानव हितक लेल उत्तम अछि। तएँ मखानकेँ पूजाक अनुष्ठानिक प्रक्रियामे जोड़ि देल गेल अछि।

पूजाक अनुष्ठानिक लेल संग्रह कएल वस्तुक किछु प्रकारक महत्व छैक यथा - (१) गन्ना रससँ धनक प्राप्ति होइछ।

(२) शहदसँ अखण्ड लक्ष्मी।
(३) दूधसँ सन्तति।
(४) कुशक अभिशेषसँ बीमारीक नाश।
(५) गङ्गाजलसँ मुक्ति।
(६) सरिसौ तेलसँ शुभ।

एहिप्रकारेँ प्रकृत-प्रदत्त वस्तुमे किछु ने किछु लाभ आ हानी सेहो प्राप्त होइछ। जाहि वस्तुसँ मानवकेँ लाभ होइछ तेकरा स्वीकार करैछ आ जाहि वस्तुसँ हानी होइत छैक तेकरा अस्वीकार कऽ दैत अछि। वस्तुक अक्षुण्णताक लेल मानव ओहि लाभप्रद वस्तुकेँ धर्मसँ जोड़ि एकर अक्षुण्णता बरकरार रखैछ।

अतः सलहेसक पूजाक अनुष्ठानिक प्रक्रियालेल उपर्युक्त वस्तुक हएब आवश्यक अछि। ई आवश्यक नहि जे अभावामे भेले ताके। मनमे श्रद्धा रहत, सलहेसक प्रति विश्वास-भाव रहत, एकोवेर सलहेसक मुहवारि करब तऽ निश्चिते फलित हएत। सलहेसक कृपा मात्रेसँ कोनो कार्य सिद्ध हएत तएँ थानमे सभक मांथ अखनो झूकि जाइत अछि। सलहेस पूजनोत्सवमे लोकक धरोहि लागब जौं श्रद्धा-विश्वासक प्रतीक थिक तँ जन चेतनाक परिचायक सेहो। सलहेससभक थिकाह तएँ सभ जाति धर्मक लोक-देवता भेलाह।

f f f

गाथा आ नाचक आलोकमे सलहेश चरित्र

१ रमेश रञ्जन

मिथिलाक लोक-नायक सलहेश देवरुपमे पूजित छथि । गाम-गाममे गहवरक स्थापना लोक-आस्थाक कारण सम्भव भेल अछि । व्यक्तिगत पीड़ा, दुःख आ विपैतसँ मुक्तिक लेल सलहेशके पूजा-प्रसाद समर्पित करैत आएल अछि आमलोक ।

सलहेश दुसाध कूलक होएबाक कारण जातीय देवताक रुपमे सेहो व्याख्यायित कएल जाइत रहलै । लोक-कला आ साहित्यके अछोप बुझबाक अभिजातीय सोच स्थापित भेलाक कारण एहन अवस्था सृजित होइत छै। मुदा सलहेशक व्यक्तिस्क्तत्वमे व्यापकता छै। मिथिलाक जन-जनमे लोकप्रिय आ उच्च निष्ठा सलहेशक प्रति लोकमे देखल जाइ छै। तएँ जाति, क्षेत्र, विचार आ वादसँ पृथक सलहेश सम्पूर्ण मिथिलाक परिचय स्थापना करैत अछि। मिथिलाक लोक-जीवन सलहेशबिनु अपूर्ण छै। एखनो लोकसत्ता सलहेशक धूरीके चक्कर काटिरहल छै।

हाथीपर सवार ओहि योद्धाक छवि मूर्तिकारक सृजन चेतनाक परिणतिक रूपमे हमरासभक आगू अबैत अछि, आ हमरा चेतनाके सेहो निर्देश करैत अछि । मुदा सलहेशक सर्वाधिक प्रभाव गाथा नाचमे देखल जाइत अछि ।

सलहेशक कालखण्डक सम्वन्धमे वहूतो विद्वानके पृथक-पृथक धारण देखल जाइछ। कियो एगारहम-बारहम शताव्दी मानैत अछि तऽ कियो छठम-सातम शताव्दी । यर्थाथत: किनको सोधमे वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत नहि अछि। एखनधरि पुरातात्विक सोध नहि भऽ सकल अछि। एहनमे प्रश्न उठै छै, सलहेशक गाथा कथानकक्कैं काल्पनिक मानल जाए ? विद्वान अध्येता डा. महेन्द्रनारायण राम एहि प्रश्नके तार्किक निष्कर्ष दैत छथि । सलहेश गाथासँ सम्वन्धित उल्लेखित स्थान हिमालयक मिथिला क्षेत्रिय तटवर्ती प्रदेशसँ गङ्गानदीधरि अछि। नेपालमे फूलवारि, पतारि, महिंसौथा आ गङ्गासँ दक्षिण मोकामाधरि सलहेश कथानकक मुख्य घटना स्थल अछि। एहि अधारपर घटना सत्य होबाक आधार प्रस्तुत करैत छथि डा. राम। वस्तुत: देखल जाए तऽ चूड़े शिवालिक क्षेत्रसँ गङ्गाक मैदानी भागधरि हुनक आलेखमे उल्लेख नहि भऽ सकल मानिक दह, कमल दह, शिलहट अखाड़ा, पकड़िया गढ़, कमला, मोरङ, आओर बहुतरासस्थल अछि जे कथा घटनाके पुष्टी करैत अछि।

ओना सलहेशसँ सम्वन्धित वैज्ञानिक सोध आवश्यक छै, मुदा इएह करणसँ लोक-आस्थामे विधमान कोनो नायकक नायकत्वपर प्रश्नचिन्ह नहि ठाढ़ कएल जा सकैए। सलहेशक व्यक्तित्वक व्यापकता आ विविधता आश्चर्यचकित बनबै छै। कानो एकटा दलित जातिक युवकक्कैं राजा भेनाइ, ओहि राजाक जनकल्याण्कारी सोच, तकर प्रयोग, युद्ध कौशल, समन्वय आ प्रेम, अतेक विराटता आ कुशलता सामान्य मनुखसँ बेसी अवतार पुरुषके रुपमे स्थापित करै छै सलहेशके। समाज आ समाजक वैशिष्टीकरणक क्रममे देवताक रुपमे प्राण-प्रतिष्ठा कोनो अनहोनी घटना नहि छै। देवता आ पूजा सदैवसँ जिविका आ रक्षाक सहयोगी आ असहयोगी दुनूक लेल होइत आएल छै। मुदा शताव्दीयोधरि एकटा राजाक लोकप्रियता अहीरुपें रहब थोड़े अविश्वसनीय बनबै छै। तएँ सलहेश आ सलहेशसँ जूड़ल घटनाक्रमके पृथक कोनसँ विवेचन करव आवश्यक भऽ जाइ छै।

सलहेशक दिव्य रुप कोनो गह्वरमे देखैत छी, ओ कोनो शिद्धहस्त मूर्तिकारद्वारा निर्मित अछि। हाथीपर सवार ओहि योद्धाक छवि मूर्तिकारक सृजन चेतनाक परिणतिक रुपमे हमरासभक आगू अबैत अछि, आ हमरा चेतनाके सेहो निर्देश करैत अछि। मुदा सलहेशक सर्वाधिक प्रभाव गाथा नाचमे देखल जाइत अछि। ई सत्य छै जे मिथिलाक घनगर अवादी आ समृद्धि लोकके सृजनशील, चिन्तनशील आ अध्ययनशील बनौलकै। मिथिलामे दू दशक पहिने धरि मनोरञ्जनक माध्यम प्रर्दशनकारी कला छलै। सिनेमा एलै, मुदा जनसंख्याक अधिकांश भाग प्रभावहीन रहल। मनोरञ्जनक अन्य कोनो माध्यम लोकनाच आ गाथा गायनसन माध्यमके विस्थापित नहि कऽ सकलै। विगत किछु वर्षसँ विद्युतीय सञ्चारमाध्यमक अत्याधिक प्रभाव आ कलाकारक जीविकाक असुरक्षासँ थोड़े प्रभाव घटैतसन देखल जा रहल छै। तथापि ओहि लोकप्रिय माध्यममे सृजन कएनिहार कलाकर्मीक लेल सलहेशक व्यक्तित्व आ कृतित्व प्रेरक रहलै समाजके ओएह कथा प्रिय हेतै जे ओकर आवश्यकता, जीविका आ जन-धनके रक्षकके रुपमे सर्मपित पात्रक कथा होइक। प्रेमक प्रतीक तथा दैवी शक्तिसँ युक्त पात्रकेँ मात्र अपन नायक मानैए लोक। सलहेश तेहने गुणसँ युक्त रहैक। मिथिलाक सओ गाथा सजर्क आ लोकनाट्यकर्मी जन-जनमे प्रिय नायककेँ अपन कल्पनाशील सर्जनद्वारा कलात्मक विस्तार दैत अछि।

ई उल्लेख करब आवश्यक अछि जे मिथिलामे सामाजिक, राजनीतिक अराजकताक कालखण्डमे सलहेशक उदय होइत अछि। छोट-छोट ग्रामपति बीचक अन्तरद्वन्द कृषि आ पशुधनसँ समृद्ध मिथिलाके दरिद्र बनौने जा रहल छलै। उत्तरमे हिमालय आ हिमालयक पानिक स्रोतक कारण मैदानी भाग मिथिलाक समृद्धिके वाह्य अक्रान्ता आ अन्तविवादसँ ग्रसित कऽ लेने छलै। एहनसन समयमे सलहेश अपन राज्य स्थापना करैत अछि। स्थायित्व आ सुरक्षाक अनूभुति आमजनके होइत छै। युद्ध त्रासदी आ दारिद्र्यसँ मुक्ति भेटैत छै। एहनमे सलहेश आमजनक नायकक रूपमे जनप्रियता प्राप्त करैत अछि। कलासर्जकलोकनि एहि विषयके सृजन अभिव्यक्तिक रुपमे प्रयोग करैत अछि। सलहेश दरवार भितरक राजा मात्र नहि रहि गेलाह आम मैथिलजनके राग-रङ्ग, संघर्ष-पीड़ा, असफलता-सफलता अर्थात सम्पूर्ण क्रियाके सलहेशसँ जोड़ि कऽ देखाओल आ सुनाओल जाइत रहलै। आमलोक सलहेशक साहस, धैर्य, प्रेम आ पीड़ासँ अपना जीवनक तुलना करैत रहल आ प्रेरणा ग्रहण करैत रहल।

तात्कालीन कलाश्रुती परम्परामे विकसित भऽ रहल छल। स्वभाविके जे गुरु शिष्य परम्परामे विकसित गाथा वा नाच प्रत्येक पिढ़ीक सृजनशीलता पचबैत रहल। ओ कलाक स्तरपर मात्र नहि समकालीन चेतनाके सेहो कुशलतापूर्वक लाओल जाइत रहल। सम्पूर्ण मिथिलाक सलहेश नाच अथवा गाथामे एकरुपता नहि अछि। मूलकथा, पात्र आ घटनाक्रममे समानता रहितो उपकथा आ पात्रक चरित्र निमार्णमे भिन्नता देखल जाइत अछि। स्पष्ट छै जे कलासर्जकसभ समयानुकूल सिर्जनशील प्रभावक प्रयोग कएने अछि। अर्थात समग्रतामे देखल जाए तऽ सलहेश आ सलहेशक गाथा, नाँचसँ जे कथारुप आकार ग्रहण करैत अछि ओ मिथिलाक लोककलाकर्मीक कल्पनाशीलताक परिणति अछि।

सलहेशकालीन पात्र आ लोक-प्रतिविम्व :

सलहेश लोकगाथा वा नाचमे आम मैथिलजनक प्रतिविम्व देखल जा सकैए। समयक आवश्यकता आ चुनौतीके ओहि नाचक पात्रक माध्यमसँ सहज बनाओल जाइत रहलै। मुदा समग्रतामे सलहेशक चारि प्रकारक चारित्रिक वैशिष्ट्य जर्वदस्तरुपैँ उभरि कऽ आगाँ अबैत छै। योद्धा, प्रेमी, राजनीतिक

कौशलता,आ न्याय सम्पादनमे दक्षता । मुदा एहि लोक प्रर्दशनकारी कलामे लोक मनोरञ्जनक पक्षके सर्वाधिक महत्व देल जाइत छलै । तएँ आम लोकक भावनात्मक आ मनोरञ्जनात्मक पक्ष कथा आ चरित्र निमार्ण प्रमुखता पवैत छल ।

रसक आधारपर श्रृगार सदैवसँ सर्जकलोकनिके आकर्षित करैत रहलै अछि । आमलोकक रुचि कोनो सिर्जनाके प्रभावित करिते छै । प्रेमी आ रसीक स्वभावक सलहेशक प्रतिरुप सर्वाधिक रुचिकर बनैत अछि । तकर कारण छलै, मिथिलाक बन्द समाजमे प्रेमाभिव्यक्तिपर अप्रत्यक्ष प्रतिवन्धसन अवस्था । तएँ आमलोकजकाँ प्रेम, प्रेमक आशक्ति, बिछोड़ आ बिछोड़क पीड़ा, द्वन्द, संघर्ष आ प्रेमप्राप्ति एकटा नायक पात्रक माध्यमसँ स्वयंके देखैत छल लोक । सलहेशक मालीन अथवा अन्य नायिका पात्रसँगेक अन्तरसम्वन्ध, तकर रसमय कलात्मक अभिव्यक्ति मञ्चपर प्रर्दशनक माध्यमसँ अवलोकन करैत छल । आमलोकक दैनिक जीवनक सामान्य आ सहज घटना होइतो ओहनेसन प्रिय घटना कला सौन्दर्यक माध्यमसँ अओर निखरि जाइत छलै । मनक अन्तरमे घुरमुरिया खेलाइत, अभिव्यक्तिक लेल औनाइत ओहने श्रृगारिक कला देखिकऽ स्वयं अपना निराशा आ कुण्ठापर विजय प्राप्त करैत छल आ जीवनके रसमय बनएबाक प्रयत्न करैत छल । लोकनाट्यश्रष्टालोकनि समाजक एहि मनोकांक्षाके चिन्हित करबामे सक्षम छल आ लोकक प्रिय पात्रके आमलोकक छविमे प्रस्तुत करैत छल ।

योद्धा सलहेशक वर्णन लोक-नाच आ लोकगाथामे खुब महत्व पओने अछि । श्रृगारक पश्चात वीर रस आमलोकक हेतु रुचिकर मानल गेलैए । तएँ हाथीपर सवार महान वीर सलहेश शत्रुक मानमर्दन करबाक सार्म्थय, हाथी युद्ध कौशलता, शत्रुक व्यूह रचना भङ्ग करबाक साहस, मञ्च अथवा गाथाक वाचीक अभिनयद्वारा लोक आनन्दित होइत छल । वाचिक अभिनयक युद्ध वर्णन अत्यन्त सरल आ रोचक शैलीमे प्रस्तुत कएल गेल छै । गाथा-गायकलोकनि अपन शिद्धहस्ततासँ युद्ध क्षेत्र आ युद्ध कौशलक एतेक अतिसयोक्तिपूर्ण वर्णन करैत छल जे आमलोक रोमाञ्चित भऽ जाइत छल । लोक रुचिक कारण नाचमे सेहो युद्ध अभिनय प्रमुखता पवैत छल । युद्धके प्रभावशाली बनएबाक हेतु अभिनेता शारिरीक क्रिया आ खासकऽ वाद्ययन्त्रद्वारा बजाओल जाएबला धून बेसी प्रभावशाली बनबै छलै । सलहेशक वीरता आ प्रभावक विस्तार एहने नाटकीय घटनासँ होइत छै । एहिमे सलहेशक प्रारम्भिक कालमे छोट-छोट ग्रामपतिसभसँ अन्तरसंघर्ष, सामन्तसभक मानमर्दन, मिथिलाक प्राकृतिक भूगोलके रणनीतिक रुपमे बुझनाइ आ सामरिक रुपसँ सुरक्षित रखनाई, अन्तरशत्रुक पहिचान आ वाह्य आक्रमणकारीके समुचित प्रतिउत्तर विशेष रुपसँ स्थापित होइत छै । मिथिलाक भितरमे अत्यन्त चतुर तथा शक्तिशाली चुहड़मलक खलनायक पात्रक रुपमे सलहेशक राज्य आ सुरक्षा दुनूक हेतु प्रमुख चुनौतीकर्ताक रुपमे देखल जाइछ । तएँ ओकर हस्तक्षेप सलहेशक प्रेम, क्रीड़ा आ राज्य सञ्चालन सबठाम देखाइत छै । खासकऽ चुहड़मलक भुटानक राजा सुङ्गसँगक सन्धी आ तीव्वत आ भुटानक संयुक्त आक्रमण, मिथिलाक हेतु सर्वाधिक चिन्ताक विषय छलै । मुदा पकड़ियागढ़क लड़ाइमे सुङ्गके पराजय आ मोकामामे अपन प्रेमिका आ सहयोगी मालीनक माध्यमसँ चुहड़मलपर विजयक बाद सलहेशक सुरक्षातन्त्र मजबूत होइत छै । एहि युद्ध घटनाक बहुतरास अंश नाचमे नहि देखल जाइछ मुदा गाथाक माध्यमसँ योद्धा सलहेशक आमलोकक सुरक्षा आ भूमि संरक्षकके रुपमे छवि निर्माण होइत छै ।

सलहेशक राजनीतिक कौशल तऽ एखनुक सत्ता सञ्चालकहेतु सेहो मार्गदर्शक छै । तात्कालीन अवस्थामे विकेन्द्रीकृत शासन प्रणालीक प्रयोग सलहेश कएने छलाह । मिथिला तीन विशाल नदीसँ घेराएल छलै । सामरीक रुपमे सर्वाधिक असुरक्षित गङ्गा, कोशी आ गण्डकके सुरक्षित केलाक बाद

वाह्य पारवहनसँगहि वन्द व्यापार वाहिरी दुनियासँ सुरु भऽ गेल छलै । उत्तर दिशासँ आक्रमणक आशंका छलैहे । अभावग्रस्त तिव्वती मिथिलाक अन्न भण्डार आ पशुधनपर नजरि जर्मौने छल । मुदा सलहेश युद्धक समान त्रासदी भोगिरहल किंरातसँ सन्धीक प्रस्ताव करैत अछि । समान शत्रूक विरुद्ध संयुक्त प्रत्याक्रमणक सिद्धान्त मिथिला आ किंरात दुनूक मीत्र मात्र नहि बनबै छै सुरक्षा सेहो प्रदान करैत छै । किंराती शैन्यपति केवला किंरातक सलहेशसँगहि लोक-देवताक रुपमे पूजा सलहेशक राजनीतिक दुरदर्शिताक उदाहरण छै ।

अपन परिवारक योग्य आ सहयोगी मित्रमे राज्यक जिम्मेवारी विभाजन सलहेशक सत्ताक महत्वपूर्ण पक्ष छै । अपन पितियौत बुधेसरके राज्य सञ्चालनमे वौद्धिक कार्य करबाक जिम्मेवारी निर्धारण कएने छल । कुशाग्र वुद्धिक बुधेसर सलहेशक सहयोगीमे एहि कार्यक हेतु सर्वाधिक उपयूक्त पात्र छल । बुधेसर सलहेशसँगहि वुद्धिमान आ विवेकशील लोकदेवताक रुपमे पूजित अछि ।

दोसर भाय मोतीराम पहलमानक देवताक रुपमे स्थापित अछि । तात्कालीन अवस्थामे पहलमानी सबसँ लोकप्रिय खेल छलै । ग्राम सुरक्षाक हेतु पहलमान पोसबाक परम्परा तऽ हालधरि छलै । ओहि पहलमान सुसङ्गठित करबाक आ स्वस्थ्य तथा शक्तिशाली सेना निर्माण मात्र राज्यके आक्रमणक भयसँ मुक्ति दऽ सकै छै से सलहेशक मान्यता छलै । मोतीराम स्वयं उत्कृष्ट पहलमान होएबाक कारण एहि क्षेत्रक उचित प्रतिनिधित्वक जिम्मेवारी पओने छल । पहलमानक एहि लोक-देवताके एखनो अखाड़ामे जाइते माटिसँ सलामी देल जाइत अछि ।

अन्हेरबाट सलहेशक प्रिय मीत्र छलै । सलहेशेसन महान योद्धा । तात्कालीन समाजक जीविका कृषि आ पशुधन छलै । मिथिलामे सबसँ घनगर अवादी यादव लोकनिक छलै, जकर मुख्य पेशा छलै कृषि आ पशुपालन । यादव समूदायक अन्हेरबाट संरक्षणक जिम्मेवारी पओने छल । संख्या आ सामर्थ्य दुनू दृष्टिए प्रभावशाली एहि जातिक सर्मथन सलहेशक हेतु आवश्यक छलै आ से अपन मित्र अन्हेरबाटके राज्यसत्तामे महत्वपूर्ण जिम्मेवारी दऽ पूरा कएने छल सलहेश । अन्हेरबाट पशुधन रक्षक लोकदेवताक रुपमे एखनो पूजित अछि । छाकी, जनारक माध्यमसँ घर-घरमे पूजा होइते छै । ककरो मालजाल हेरा जाइत छै वा किछु दुख कष्टसन अवस्था देखै छै तऽ लोक अन्हेरबाटक कवुला करैए ।

केवला किंरात सलहेशक छायाजकाँ सदैव सँगे देखाइ छै । गहवरमे आ कि पूजा स्थलपर । एकटा सैन्य भेसधारी मङ्गोलियन आकृतिसँगहि ठाढ़ । ओएह केवला किंरात छै, किंराती सभक सैन्यपति । सलहेशक किंरात सङ्गे सन्धिक बाद संयुक्त सेनाक निर्माण एखनुक नेपालक भूमिके रक्षक बनलै । ई सलहेशक चतुराइपूर्ण कुटनीतिक क्षमतासँ मात्र केवला किंरातक अनवरत सहयोग नहि भेटलै । सलहेशक विश्वसनीयता आ आदर एकर मूल कारण छलै । किंराती जातिक सँगेक सम्वन्धके सलहेश मात्र औपचारिक नहि रहऽ देलकै । राजनीतिक सन्धिसँ बनल सम्वन्धके संस्कृतिक स्वीकृति प्रदान केलकै तएँ सलहेशक पिड़ीसँगे अथवा इष्टदेवक रुपमे जाहि घरमे सलहेश पूजित छथि ओतऽ अनिवार्य रुपसँ केवला किरातक पूजा होइत छै ।

मालीन, जकर चर्चबिनु सलहेश नायकत्वक वर्णन असम्भव छै चारु वहिन मोरंगके मालीनमे अद्भूत योग्यता रहै । तन्त्र, योग, औषधि, युद्धकला, राजनीति, कुटनीति हरेकदृष्टिएँ सम्पूर्णता रहै मालीनमे । ओकरासभक सलहेशक प्रति प्रेम आशक्ति रहै कि समर्पण बुझब कठिन छै । मालीन हरेक मोर्चापर सलहेशक मार्गदर्शक मात्र नहि संकटमोचकके रुपमे देखाइ दैत छै । वुद्धि, विवेक आ वीरता भेलाक बाद एकटा दैवीय शक्तिक रुपमे अवतरित होइत छै मालिन । ई सलहेशप्रति सामान्य प्रेम मात्र नहि भऽ सकै छै । निष्ठा छै, एकटा महान देशभक्त योद्धाक प्रति । जनप्रिय नायकके प्रति । स्वभाविके जे जकरासँ सभ प्रेम करै छै ओकरा मालीन चारु वहिन सेहो प्रेम करै छै । वस्तुत: सलहेश विचारक समर्थन, सलहेश अभियानक अभियन्ताक रुपमे मालीनक भूमिका सलहेश कथा आ गाथामे

अद्‌भूत छै। लोकनाचमे सर्वाधिक मञ्चनीय सलहेश कथाक मालीन प्रसङ्ग होइत छै। एहिसँ अनुमान लगाओल जा सकैए जे आमलोक बीच मालीन कतेक लोकप्रिय पात्र छल। ओकर सलहेशक राजनीतिक संरचनामे कतेक महत्वपूर्ण उपयोग छलै।

सूचनायन्त्रक नियन्त्रण कएनिहार सुगा हिरामन। चूड़े शिवालिक संरक्षणक दायित्व पओने वहिन वनसप्ती आ भागिन करिकन्हा, सलहेशक राजनीतिक दुरदृष्टीक आ कार्य विभाजनक उदाहरणीय प्रमाण छै। प्रकृतिक उत्पादमे समूचित विभाजन आ प्रयोग, अत्याधिक दोहनपर नियन्त्रणक प्रयत्न एहि पात्रक माध्यमसँ सलहेश कएलन्हि। तकरबादो बहूतरास पात्र सलहेशक सहयोगी आ सलहेशक विरोधीक रुपमे जन-जनमे स्थापित अछि। मुदा सबसँ महत्वपूर्ण पक्ष छै सलहेशक न्याय प्रणाली। सलहेश न्याय सम्पादन स्वयं करैत छलाह। हुनक गहवर न्याय सम्पादनक स्थल अछि। जतऽ पीड़ित जनसमूदाय अर्ज लऽ कऽ अबैत छल आ अपना राजासँ न्याय पबैत छल। वस्तुत: सलहेशक लोकप्रिय आ बहुआयामिक व्यक्तित्व निमार्णमे हुनक सहयोगी पात्रसभक भूमिका महत्वपूर्ण छै। मुदा ओ सम्पूर्ण पात्र देव रुपमे पूजा प्रतिष्ठा कोना प्रप्त कऽ सकल स्वयंमे जिज्ञासु बनबै छै। एहिठाम लोक सर्जक, कलाकारक भूमिकाकेँ स्वीकार करऽ पड़ै छै। मिथिला अथवा अन्य क्षेत्रमे लोकनायकसभ अपना कालखण्डमे महत्वपूर्ण काज केलन्हि आ स्मरणीय रहलाह। हुनकासभकेँ जातीय लोकदेवताक रुपमे स्वीकार कएल गेलन्हि। हुनकोलोकनिक व्यक्तित्व गाथा अथवा नाचक माध्यमसँ आमजनक बीच प्रर्दशन होइत रहलै। मुदा सलहेशक लोकप्रियता सर्वाधिक उच्च रहलै, आ तकर कारण इएह छै जे सामूहिक योग्यताक परखबाक क्षमता आ सामूहिक गुणयुक्त व्यक्तिके राज्य सञ्चालनमे प्रयोग हुनक परवर्ती अथवा उतरवर्ती शासक नहि कऽ सकलाह। अपना सहयोगीपर विश्वास आ सहयोगीके आमजनमे अपनहिसन लोकप्रियताक हेतु सलहेश पर्याप्त अवसर प्रदान करैत छलाह। तइयो राजाक रुपमे कतबो लोकप्रिय काज कएनिहार आमजनसँ थोड़े दूर स्वभाविकरुपेँ भऽ जाइत अछि। एहनमे राजा आ जनताक बीच एकटा स्वभाविक दूरी भऽ जाइत छै। सलहेश अपवादजकाँ अछि। सम्भवत: लोकगाथा सर्जक, गायक अथवा लोकनाट्‌यकर्मी सलहेशक कथा आ जीवनचरितके सृजना आ प्रदर्शन माध्यम नहि बनबैत तऽ जनप्रियताक ई रुप देखबामे नहियो आबिसकै छलै। लोक-कलाकार सलहेशसहित हुनका सहयोगीक चरित्र निर्माण एते खूबीक सङ्ग कएने अछि जे ओ सभ पात्र आमलोकक 'आइडियल' पात्र बनिगेलै। लोकजीवनक पुजनीय पात्रक रुपमे मिथिलाक श्रद्धाक केन्द्रमे विराजित अछि। वस्तुत: ई लोक कलाकर्मीक चमत्कारिक कला सृजनाक परिणाम अछि। सलहेश गाथाक महाकाव्यिक स्वरुप सलहेशक सम्पूर्ण व्यक्तित्वकेँ उजागर करैत छै तऽ नाच लोकरुचि आ मनोरञ्जनात्मक बेसी छै। सलहेश कथाक ओ प्रसङ्ग बेसी महत्व पबैत अछि जे आमलोकहेतु रुचिकर होइक आ मञ्चक सीमाक अनुकुल दृश्यरुप देल जा सकै। वस्तुत: सलहेशक राजनीतिक वैशिष्ट्‌यक पक्ष आ न्याय सम्पादन पक्ष नाचक मञ्चपर खासे महत्व नहि पाबिसकलै। प्रस्तुतिक दृष्टिए ई विषय जटील आ उबाउ भऽ सकै छलै ओतै गाथा-गायक अपन वाचिक प्रभावसँ निरश प्रसङ्गके सेहो प्रभावशाली प्रस्तति देबऽमे सक्षम छल तएँ समग्रतामे कही तँ सलहेश गाथा आ नाच जे रुप आ दृश्य दैत अछि उएह सम्पूर्ण मैथिलक अन्तशमे आकार ग्रहण कएने अछि।

f f f

मैथिली लोक-नाट्यक आलोकमे सलहेस नाच

१ डा. रेवतीरमण लाल

मैथिली साहित्यमे नाटकक परम्परा अति प्राचीन अछि। नाट्यशास्त्रमे नाटक आ रङ्गमञ्चक विशद व्याख्या प्रस्तुत कएल गेल अछि। मैथिलीक प्रथम नाट्य रचना ज्योतिरीश्वरक धुर्तसमागम प्रहसन (१४म शताव्दी) मानल गेल अछि।

डा. प्रफुल्लकुमार सिंह मौनक मत छनि जे संस्कृत नाट्य परम्पराक अवसानपश्चात मिथिलाञ्चलमे एकटा विशेष प्रकारक नाट्य परम्पराक आरम्भ भेल जकरा कालान्तरमे किर्तनिया कहल गेल। एहि नाट्य-शैलीमे संस्कृत नाट्य परम्पराक अवसान एवं मैथिली नाट्य-परम्पराक आरम्भ सहजे देखल जा सकैछ।

लोक नाट्यक सबसँ महत्तत्वपूर्ण अङ्ग ओकर संगीत एवं नृत्य होइछैक। दोसर अङ्ग होइछ पात्र एवं चरित्र। एकर कथानक वैदिक पौराणिक एवं ऐतिहासिक परम्पराक सँगहि परम्परित गाथा गीत तथा समाजक विशिष्ट घटनाक्रम सँ प्राप्त होइछ। एहिमे स्त्री पात्रक भूमिका सेहो पुरुषेद्वारा कएल जाइत अछि। विपटा अथवा विदूषक हएब प्राय अनिवार्य होइछ जे विभिन्न हाव-भाव एवं फकड़ा आदि पढ़ि लोकके हँसबैछ।

> **सलहेश लोक-नाट्य अत्यन्त कर्णप्रिय एवं जनप्रिय मानल गेल अछि। गाम घरमे एखनो लोकद्वारा रुचिसा एकरा पसिन्न कएल जाइत अछि। आब त पढ़लो लिखल लोकक भुकाव एहिदिसि भ रहल अछि।**

ज्योतिरीश्वरक पुस्तक वर्णरत्नाकरक प्रथम कल्लोलमे लोरिक नाचक उल्लेख भेटैछ। जहाँधरि नाच शब्दक तात्पर्य अछि एखनो मिथिलाञ्चलमे एहितरहक लोक-नाट्यकेँ लोक नाच कहि सम्बोधन करबाक परम्परा रहल अछि।

डा. ओमप्रकाश भारतीक कहब छनि जे "नाट्य-परम्पराक लेल नाच शब्दक प्रचलन १४हम शताब्दीसँ मिथिलामे भऽ रहल अछि।" हुनक कहब इहो छनि जे ज्योतिरीश्वरक नाचसँ तात्पर्य नाट्य हएत ने कि नृत्य "। हमर अनुभव अछि जे मिथिलाक लोक जीवनमे नाच नाटकक अर्थमे प्रयोगमे अवैछ। एहि प्रसङ्गमे नटुवा नाच, विदापत नाच आदिके लेल जा सकैछ।

डा. ओमप्रकाश भारतीक विचार छनि जे नटुवा नाचक अधिकांश कथानक लोकगाथासँ लेल गेल अछि। जेना सलहेस कुसमा,रेशमा–चुहड़मल ,नैका बनिजारा,कुमर वृजभानु, सती विहुला, लोरिक मनियार, हंसराज वंशराज, दीना भद्री , हिरणी विरणी, सारङ्गा सदाविरिछ आदि। एहि नटुवा नाचक चलनि १४हम शताब्दीमे भेल से अनुमान कएल जाइछ।

सलहेश लोक-नाट्य अत्यन्त कर्णप्रिय एवं जनप्रिय मानल गेल अछि। गाम घरमे एखनो लोकद्वारा रुचिसँ एकरा पसिन्न कएल जाइत अछि। आब तऽ पढ़लो लिखल लोकक भुकाव एहिदिसि भऽ रहल अछि। चेतना समिति, भंगिमा, अरिपन, मिथिला साँस्कृति परिषद कोलकाता, आँगन आदि एकर आयोजन कएलक अछि।

सलहेसक जन्म नेपालमे महिसौथा (सिरहा जिल्ला)मे भेल छल। हिनक पिताक नाम सोमदेव एवं माइक नाम शुभ गौरी (मन्दोदरी) छल। विराटनगरक राजा श्री हलेश्वरक पुत्री सत्यवती (सामैरवती) सँ विवाह भेल छलनि। श्री भण्डारी तरेगना गढ़क राजा छलाह जनिका चारिगोट पुत्री छलनि। सब बहिन मालिन संप्रदायके स्वीकार कऽ लेने छलथिन। ओ सब आजीवन कुमारि रहबाक व्रत लेने छलथिन। सलहेसके चारु बहिनसँ प्रेम भऽ गेल छलनि। सलहेसके दू भाइ आ एक बहिन छलथिन। भाइसभक नाम मोतीराम आ वुधेश्वर आ बहिन वनसप्तो छलीह। चारु बहिन मालिनक नाम चन्दा ,रेशमा,कुशुमा आ दौना मालिन छल। एकर अतिरिक्त करिकन्हा ,कुलेशर शैनी ,चुहड़मल आदि एकर मुख्य पात्र छैक आ फुलवारि ,पतारि, महिसौथा,मोकामा, विराट, मोरंग एकर मुख्य स्थान। सलहेश गाथा कालमे अनेक छोट-छोट राज्य छल। महिसौथाक राजा सलहेस, सतखोलियाक राजा शैनी, पकड़ियाक राजा कुलेश्वर (भीम सेन), तरेगना मोरंगक राजा महेश्वर भण्डारी छलाह। कमलाखोंज क्षेत्रमे आइयो भीमसेनक पूजा होइत अछि।

सलहेस अपन परिचयमे कहै छथि–

सलहेश राज महिसोथा गादीघर हमर लगैअ
जाति दुसाध कुलके बालक हम लगैछी
हमरासँ छोट लगैअ मोतीराम दुलरा
हुनकोसँ छोट लगैअ बबुआ वुधेश्वर

जयवर्द्धन सलहेसक काल पाँचम छठम शताब्दी मानल जाइछ मुदा ई कालक प्रसङ्ग विद्वानलोकनिमे मतैक्य नहि अछि।

जहाँधरि सलहेस लोक-नाट्यक प्रसङ्ग अछि, डा. मौनक विचार छनि जे अधिकांश लोक-नाट्यक मुख्य उद्देश्य होइछ–लोकानुरञ्जन जकरा नृत्य संगीत एवं अभिनयक माध्यमसँ प्रस्तुत कएल जाइछ।"

एकर मञ्चनक समय दिनोमे होइछ आ रातियोमे। एकर तान,भास एवं राग आदि प्रचलित परम्पराअनुसार रहैछ। एहिमे लोकभाषा एवं सर्वसुलभ भाषाक प्रयोगे कएल जाइछ। ई मञ्चनक स्थान सार्वजनिक स्थल गाछी, दलान, पोखरिक भीर, आदि होइछ जतऽ २–४ गोट चौकी जोड़ि कऽ अथवा नीचामे सतरंजी विछा मञ्चन कएल जाइछ। दर्शक आमने सामने रहैछ। दर्शक प्राय: अनपढ,देहाती रहैछ।

संवाद गीतेमे रहैछ। जहिना राग,भास बदलैछ तहिना संगीत सेहो बदलैछ। मञ्चस्थ पात्र अपन हाव–भाव एवं नृत्यद्वारा गीतके प्रस्तुत करैछ। अर्थात लोक-नाट्यक मुलभिती संगीत होइछ।

एकगोट संवाद देखू–

जखन पकड़िया दरबारमे चोरि भऽ गेलै तऽ चुहड राजाके आस्वस्त करैत कहै छैक–

"आइ दिनसँ बेटा केओ नैजनमैत, हौ राजा
तौँरा डेउढीमे चोरिया करतौ "

हीनपतिक एकगोट दोसर गीत संवाद देखू–

"सात सय हँसेरी परबा पोखरिमे ढुकलै
हा भाला वरछी तऽ सजैय
गोली गाठा राजा सजलकै
हा धुपचुप धुपचुप भाला उठैय
खट खट खट खट तेगा उठैय "

एहि नाचमे वाद्यवादनमे हरिमुनियाँ, मजीरा ,ढोल , सारङ्गी आदि बजाओल जाइत अछि आ पशु एवं पंक्षी पात्रक हेतु मुखौटा प्रयोग कएल जाइछ। कतौ कतौ नगाड़ा सेहो बजाओल जाइछ।

संदर्भ सुत्र

१. सलहेस लोक-गाथा–स. डा. महेन्द्रनारायण राम, डा. फुलो पासवान-साहित्य अकादमी,दिल्ली।

२. वाल्मीकिक देशमे – डा. प्रफुल्लकुमार सिंह मौन –रचनाकार प्रकाशन,महनार।

३. लोक-नाट्यक पृष्ठभूमि एवं परिचय–डा.प्रफुल्लकुमार सिंह मौन।

४. मैथिली लोक गाथाक इतिहास–मणिपदम–कर्ण गोष्ठी,कोलकाता।

५. मैथिली लोक साहित्यक स्वरुप–डा.रेवतीरमण लाल–सीता मिडिया ,जनकपुर।

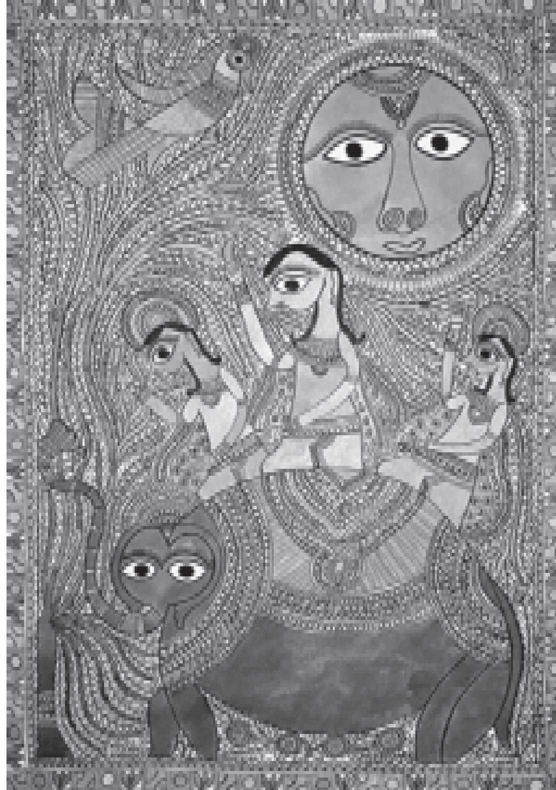
६. मैथिलीक लोक-नाट्य –डा. ओम प्रकाश भारती–धरोहर,साहिबावाद उ.प्र.।

७. मैथिली लोक वृत्त : विन्दु ओ विस्तार –डा. महेन्द्र नारायण राम,–डा. झम्मन राम मिथिला शोध संस्थान, खुटौना।

८. लोक दर्शन–डा.महेन्द्र नारायण राम–जखन तखन ,दरभङ्गा।

९. मैथिली लोक साहित्य :स्वरुप ओ सौन्दर्य–डा. रामदेव झा–मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभङ्गा।

f f f



मिथिला लोकचित्रमे सलहेस : *चित्र : रामकुमारी*

सहलेश लोक-गाथासा सम्बन्धित स्थान : एक परिचय

ᴥ डा. गङ्गाप्रसाद अकेला

पृष्ठभूमि :-

सलहेश लोकगाथाक नेपालीय भौगोलिक परिवेश प्राचीनताक दृष्टिसँ पाँचम - छठम शताब्दीसँ होएबाक कारण पर्वतीय आ समतलीय भू-भाग दुनू रहल अछि। जाहिमे पहाड, जंगल, साखुवन, नदी, चौर, पोखरा, सरोवर, माटिक, थुम्हा, विभिन्न दह, विशाल फुलबारी आ बगीचा, विभिन्न ठामक सलहेशक गहवर आदि समाविष्ट अछि। उल्लेख कएल गेल उपर्युक्त आधारसबहक आधारपर सलहेश लोकगाथाक क्षेत्र निर्धारण कएल जा सकैछ। सलहेश गोकगाथाक क्षेत्रक सम्बन्धमे विभिन्न विद्वानसभक मत भिन्न प्रकारक होइतहुँ क्षेत्रके सभगोटे विस्तृत होएब स्वीकार कएने छथि; जाहिमे डा. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपदम', मतिनाथ झा,डा. पूर्णानन्द दास, राजेश्वर झा, प्राध्यापक प्रप्फुल्लकुमार सिंह "मौन", डा. मोतीलाल यादव प्रभृति विद्वानक नाम उल्लेख कएल जा सकैछ। समग्रमे कही तऽ सलहेश लोकगाथासँ सम्बद्ध स्थलसभ प्राय: पूर्वमे मोरङ्ग जिलासँ पच्छिममे सर्लाही जिलाधरि तत्सम्वन्धी मन्दिर (सलहेश गह्वर) तथा कार्यकमक आयोजनक आधारपर ठेकानल जा सकैछ।

समग्रमे कही त सलहेश लोकगाथासा सम्बद्ध स्थलसभ प्राय: पूर्वमे मोरङ्ग जिलासा पच्छिममे सर्लाही जिलाधरि तत्सम्वन्धी मन्दिर (सलहेश गह्वर) तथा कार्यकमक आयोजनक आधारपर ठेकानल जा सकैछ।

<u>सलहेश लोकगाथासँ सम्बद्ध स्थल</u> :-

वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे एहि लोकगाथाके पौराणिक आ प्रामाणिक अवशेष एवं कार्यक्रमक आयोजनक दृष्टिसँ किछु विशिष्ट स्थानसभ एहि प्रकार होएबाक बात सप्रमाण उल्लेख कएल जा सकैछ :-

१) <u>महिसौथा</u> :-

सलहेश लोकगाथाक नायक सलहेशक जन्म प्राचार्य प्रप्फुल्लकुमार सिंह "मौन" क अनुसार पाँचम - छठम शताब्दीक अवधिमे मिथिलाञ्चलक पुण्यभूमि 'महिसौथा' गाममे श्री रामप्रीत पासवान (राष्ट्रिय सभाक पूर्व उपाध्यक्ष) अनुसार पिता भैरभ भूपाल सोमन आ माता मन्दोदरिक ज्येष्ठ सुपुत्र रुपमे भेल छलन्हि। हुनक दू भाई मोतीराम आ बुधेसरक जन्म सेहो ओहीठाम भेल छलन्हि। ई गाम सगरमाथा अञ्चलक सिरहा जिलाक सदरमुकाम सिरहा नगरपालिकाकँ वार्ड नं.७ मे उत्तरतरफ अछि। एहिठाम प्राचीन महत्वक एकटा गढ् अछि, जकरा 'सलहेशगढ्' कहल जाइछ आ एक गोट सलहेशक गह्वर (मन्दिर) सेहो अछि।

२) <u>सलहेश फुलबारी</u> :-

सलहेश लोकगाथाक दोसर महत्वपूर्ण स्थल 'सलहेश फुलबारी' पूर्व-पश्चिम राजमार्गक ढल्केवरसँ पूर्व सिरहा जिलाक दोसर महत्वपूर्ण नगरपालिका लहान बजारसँ ४-५ किलोमीटर पच्छिम आ राजमार्गसँ १ किलोमीटर दक्षिणक दूरीपर अन्दाजन तीस-पैंतीस एकड् वर्गाकार क्षेत्रफलमे अद्यापि विद्यमान अछि।

सघनताक दृष्टिसँ ई फुलवारी प्राय: नेपालक कोनो वनसँ वेशी सघन अछि। एहि फुलवारीमे सलहेशक मन्दिर, दीना मालिनीक मन्दिर, मोतीरामक 'सिलहट अखाडा' आदि प्रमुख प्राचीन सांस्कृतिक एवं पौराणिक महत्वक स्थलसव अछि। एहि फुलवारीमे सलहेश अपन प्रेयसी दौना मालिनीसँग विचरण करैत छलाह।

३) मानिक दह:-

सलहेश लोकगाथाक तेसर मुख्य स्थल 'मानिक दह' अछि, जे लहान बजारसँ करीव १३ किलोमीटर उत्तर-पश्चिम दिशामे पूर्व-पश्चिम राजमार्गसँ उत्तर दिशामे अछि। एहि 'मानिक दह' मे सलहेश प्रत्येक दिन स्नान कऽ, सलहेश फुलवारीसँ फूल तोडि महिसौथा जा कऽ राजमाता आ कमलाजीक पूजा करैत छलाह।

४) पकडिया गढ :-

पकडिया गढ, लहान बजारसँ करीव १० किलोमीटर उत्तर पहाड्क कातमे अछि। पकडियागढक राजा कुलेश्वरक दरबारमे प्रारम्भिक अवस्थामे सलहेश चौकीदारी करैत छलाह।

५) कमल दह :-

पाँचम महत्वपूर्ण स्थल 'कमल दह' पकडिया गढकसँगे अछि, जकर उल्लेख 'मेचीदेखि महाकाली पूर्वाञ्चल विकास क्षेत्र' नामक अनुसन्धान ग्रन्थमे सेहो उल्लेख कएल गेल अछि। गाथानायक कमल फूलक वहुत शौखीन छलाह आ एहि 'कमल दह' सँ कमलक फूल तोडि ओ महिसौथाक राजमाता आ कमलाजीकेँ मन्दिरमे फूल चढबैत छलाह।

६) त्रिवेणी :-

छठम महत्वपूर्ण स्थल 'त्रिवेणी' जनकपुरधामसँ उत्तर-पूर्व दिशामे सिन्धुली आ उदयपुर जिलाक सीमानापर पहाडक कातमे कमला नदी, वैजनी नदी आ ताउखोला ई तीनू नदीक संगमस्थलके 'त्रिवेणी' कहल जाइछ, जाहि ठाम हरेक वर्ष कार्त्तिक पूर्णिमाक अवसरपर प्राचीनकालेसँ वड़ पैघ मेला लगैत आएल अछि, तएँ ई स्थल ऐतिहासिक सन्दर्भअनुसार प्राचीनकालमे सतखोलियाक राजा शैनि आ सलहेशक वहिन वनसप्तिके एहि मेलामे मिलन भऽ वादमे दुनूक विवाह सम्पन्न भेल छलन्हि आ तकरवाद दुहूक सन्तान आ सलहेशक भागिना करिकन्हाक जन्म भेल छल।

७) सतखोलिया :-

सातम स्थलक रुपमे 'सतखोलिया', जे त्रिवेणीक आसपास सात खोलाक संगमस्थलपर अछि। एहिठामक राजा शैनि आ सलहेशक बहिन लोकनाट्यमे वर्णित प्रसङ्गअनुसार हुनक भागिन करिकन्हा हुनका वढ् सहयोग कएने छलन्हि, तकर उल्लेख अछि।

८) कोकचिया गिधावर कदमाहा :-

आठम स्थल 'कोकचिया गिधावर कदमाहा' सलहेशक माए मन्दोदरिक प्रिय सहेली विमला रहैत छलीह। ई स्थान त्रिवेणी जएवाक रास्तामे पहाडपर अछि। ओहि स्थानपर विमला देवीक मन्दिर छल, जाहिमे दर्शन करऽ लेल जाइतकाल लोक हकमए लगैत छल, तएँ एहि स्थलक नाम 'हकमाहा' पडल हएत। सलहेशक मायक प्रिय सहेली विमलाक बसोवास स्थल होएवाक कारण ईहो सांस्कृतिक स्थल मानल गेल अछि।

९) ननमहरी :-

नवम स्थलक रुपमे प्रख्यात स्थल 'ननमहरी' सम्प्रति धनुषा जिलाक सदरमुकाम जनकपुरधामसँ ३२ किलोमीटर उत्तर-पूर्व दिशामे पहाडपर अवस्थित अछि, शासक नारायण नामक क्रूर व्यक्ति ओहि मन्दिरमे सर्वसाधारणके प्रवेशपर प्रतिवन्ध लगा देने छल जेकरा सलहेश प्रतापी राजा भेलाक वाद सर्वसाधारणक लेल खुल्ला कए देलथिन्ह, तैं पराकमी आ लोककल्याणकारी राजाक रुपमे राजा सलहेशक चारित्रिक विशिष्टताक परिचायक एहि स्थलके मानल जाइछ।

१०) पतारिपोखरी :-

सलहेश लोकगाथासँ सम्वद्ध दसम स्थल 'पतारि पोखरी' पूर्व-पश्चिम राजमार्गके लहान बजारसँ करीव १ किलोमीटर पच्छिमसँ दक्खिन जाएवला सडकपर आठ किलोमीटर दूरीपर सिरहा जिलाक लक्ष्मीपुर गा.वि.स. मे ई महत्वपूर्ण स्थल अछि। पोखरीक दक्खिन मोहाडपर 'राजा हरिसिंह देव' जकर ऐतिहासिक उल्लेख सेहो अछि। सलहेश लोकगाथाक क्रममे एहि स्थलके सम्वद्ध कारण प्रत्येक वर्ष वैशाख १ गते 'सलहेश फुलबारी' मे सलहेश मेला लगैछ आ दोसर दिन बैशाख २ गते मिथिलाञ्चलक जनजीवनक प्रमुख आ वर्षक प्रारम्भिक उल्लेख्य पर्व जुड्शीतल' के दिन 'पतारि पोखरी' मे जे भव्य मेला लगैछ तकर पूजनक विधि-विधान सलहेश पूजनक विधि-विधानेजकाँ होएवाक कारण आ 'सलहेश फुलबारी' सँ नजदिक सेहो होएवाक कारणसँ विशिष्ट महत्व रखैछ।

११) मोरंग :-

सलहेश लोकगाथाक नायिका दीना मालिनी तथा नायक राजा सलहेशक अमर प्रेमिका वा संगिनीक जन्म मोरंगक हिन्दूपति महेश्वर भण्डारीक पुत्रीक रुपमे मोरंग जिलाक तरेगना गाममे होएवाक कारण सलहेश लोकगाथामे मोरंगक विशिष्ट स्थान मानल गेल अछि मुदा भौतिकरुपमे तकर कोनो खास प्रमाण नहि अछि। भारतीय विद्वान श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' तथा डा. रामदेव झाद्वारा सम्पादित तथा 'मैथिली अकादमी, पटनाद्वारा प्रकाशित 'मैथिली प्राचीन गीतावली' क पृष्ठ ३१-३४ पर सलहेश लोकगाथाक नायक तथा नायिकाक दू महत्वपूर्ण जन्मस्थल क्रमश : महिसौथा आ मोरंग होएवाक कारण विशिष्ट महत्व रखैछ।

सम्प्रति वार्षिक नियमित कार्यक्रमक दृष्टिसँ उल्लेख्य दू स्थल :-

सलहेश लोकगाथासँ ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमिक आधारपर उर्ध्वलिखित ११ गोट मूल स्थलक उल्लेख तऽ भेले अछि मुदा सम्प्रति सलहेश लोक-गाथा, सलहेश मन्दिरमे पूजन प्रक्रिया, सलहेश लोक-नाट्यक अभिमञ्चनद्वारा जनजीवनकेँ ओहि लोकगाथा आ लोक-नाट्यके प्रत्यक्ष अनुभूति करावएवला दू गोट स्थल - क्रमश: सिरहा जिलाक 'माडर' आ धनुषा जिलाक बेलापट्टी गामक 'तीनकौडीया चौक' महत्वपूर्ण आ विशेष उल्लेख्य अछि।

क) **माडर :-** भारतीय सीमावर्त्ती सहर जयनगरसँ कमला नदी पार कऽ पूर्व उत्तर दिशामे सिरहा जिलाक, सदरमुकाम 'सिरहा बजार' जाएबला रास्ताके बीचमे 'माडर' बाजार अछि, जाहिठाम सलहेशक गह्वर (मन्दिर) मे दुसाध जातिक नियुक्त पुजारीद्वारा नियमित पूजन होइछ आ प्रत्येक नव वर्षक दोसर दिन अर्थात् बैशाख २ गते मिथिलाञ्चलक जनजीवनद्वारा व्यापक स्तरपर मनावऽवला 'जुड्शीतल पर्व'क दिन अपराह्नसँ रातिघरि स्थानीय सलहेश मन्दिरक आगाँ भव्य पूजन, भगैत गायन, झारफूकक पारम्परिक विधि-विधान साँझधरि सम्पन्न कएल जाइछ आ रातिमे लोककलाकारक मण्डलीद्वरा 'सलहेश लोक-नाट्यक' मञ्चन भव्यतापूर्वक सम्पन्न करवाक काज एखनधरि होइत आएल अछि।

ख) **बेलापट्टीक 'तीनकौडीया चौक' :-** (भारतीय सीमावर्त्ती नगर महिनाथपुर आ दुहवीसँ २ किलोमीटर मूल सडकपर उत्तर दिशामे) नेपालक एकमात्र 'जनकपुर रेल्वेकँ जनकपुर-जयनगरक मध्यमे पडऽवला 'महिनाथपुर रेल्वे स्टेशन' सँ दू किलोमीटर उत्तर मूल सडकपर आ जनकपुरधामसँ सिरहा जाएबला ऐतिहासिक प्राचीन 'हुलाकी सडक'क संगमस्थलपर १० किलोमीटर पूर्वमे वेलापट्टीक 'तीनकौडीया चौक' बजार अछि, ओहि बजारक दक्षिण छोरपर करीब तीन सऔ ५० वर्ष पुरान पाकडि गाछसँ सटले उत्तर 'सलहेशक गह्वर' अछि, जाहिठाम विगत ७-८ दशकसँ मिथिलाञ्चलक जनजीवनक उल्लेख्य आ प्रत्येक वर्षक वैशाख दू गतेक दिन मनावऽवला 'जुड्शीतल पर्व' क दिन प्रात : १० बजेसँ ओहि सलहेश मन्दिरक आगाँ भव्य-पूजन, भगैत गायन, भगताद्वारा धामी-झांक्रीवला कार्यप्रदर्शन कार्य साँझधरि समाप्त होइछ आ तकरबाद

रातिमे 'सलहेश लोकऽनाट्यक मञ्चन होईत आएल अछि। प्रस्तुतकर्त्ताक प्रत्यक्ष अनुभूतिक आधारपर पहिने वा कही विगत दू दशक-पूर्वधरि २ आ ३ गतेक राति अनिवार्य रुपसँ 'सलहेश लोक-नाट्य'क मञ्चन सांझ ६:०० बजे प्रारम्भ भऽ भोर ६:०० बजेधरि (सूर्य उगवा धरि)-होईते रहैत छल। सलहेश मेलाक आयोजनक लेल पहिनहि स्थानीय स्तरमे समिति निर्माण कएल जाइत छल आ भव्यताक साथ सम्पन्न कएल जाइत छल मुदा सम्प्रति ओहिमे ह्रास अवितो प्राय: बैशाख २ गतेक राति लोक-नाट्यक मञ्चन जरुर होईछ आ तएँ 'माडर' आ 'वेलापट्टीक तीनकौडीया चौक' वर्त्तमान परिवेशमे विशिष्ट स्थान रखैछ।

मिथिलाञ्चलक सांस्कृतिक विशिष्टता आ लोकनाट्य सलहेश :

प्राय: त्रेतायुगेसँ मिथिलाञ्चलमे लोकसंकीर्त्तन, सीताराम विवाह, झांकी संकीर्त्तन, प्राचीन लोकनाटक यथा सत्य हरिश्चन्द्र, सावित्री-सत्यवान, राजा भरथरी, महासती विहुला आदि सँगहि लोकनाच, लोकनौटंकी, लोक-नाट्य आदि मञ्चन होइते आएल अछि, जाहिमे आनसवक अवस्था विलुप्तप्रय: भऽगेलाक वादो लोक संकीर्त्तन आ लोक-नाट्य सलहेश एखनघरि अति लघु रुपमे रहितो अपन अस्तित्व जोगवैत आएल अछि। साँच कही तऽ लोक संकीर्त्तन तऽ जीवनक अभिन्ने अङ्गजकाँ भऽ गेल अछि। एतबाघरि जरुर जे अभिमञ्चनक दृष्टिसँ सबसँ बेशी देरतक चलऽवला सलहेशे लोकनाट्य अछि, जे साँझसँ सुरु भऽ भोर (सूर्य उगवाघरि) घरि चलिते रहैछ। आन सांस्कृतिक अभिमञ्चनक प्रारम्भमे पहिने टोलीक कलाकारसवद्वारा सामूहिक प्रार्थना कएल जाइत छल तहिना लोक-नाट्य सलहेशमे सेहो सामूहिके वन्दना वा प्रार्थना कएल जाइत छल। ओना सलहेश लोक-नाट्यमे एखनोघरि कएल जाइछ। आन नाटकक प्रारम्भमे करऽवला प्रार्थनाक किछु पांति देखू :-

"जगदीश तू सबका रखवाला
है काम तुम्हारा निराला !
तुम दीन-दु:खी के विधाता हो ॥ जगदीश .... ॥"

आब 'सलहेश लोक-नाट्य'क प्रारम्भमे गाओल जाएवला सामूहिक बन्दना देखू:-

"सुमिरन सुमिरन सुमिरन आब हम करैछी ने औ
छपन्न कोटि देवके हम सुमिरन करैछी ने औ ॥
पुरुव सुमिरन करैछी उगले सुरुज के ने औ - २
जिनकर चढौना हो चढे दुधवाके ढार ने औ ॥
पछिम सुमिरन करैछी हम मीरा सुलतान के-२
जिनका चढौना हो मुर्गा वलिदान ने औ ॥
दच्छिन सुमिरन करैछी गंगा-हनुमान के-२
जिनका चढौना हो चढै गेरुआ वस्त्र ने औ ॥
उत्तर सुमिरन करैछी पाँचो पाण्डव भीम के-२
जिनका चढौना हो चढौ जोडे सुत जनेउ ने हौ ॥
आ नगर पैसि सुमिरन करैछी नगर डीहबार के-२
जिनका शरणमे हम सिर झुकवैछी ने औ ॥
अन्तिम सुमिरन हम करैछी सकले समाजेके ने औ-२
जिनका सहयोगसँ चलैअ सकल जग-व्यवहार औ ॥"

'सलहेश लोक-नाट्य' क प्रारम्भमे कएल गेल वन्दना एहि बातक आभास करवैछ जे कोनो कार्यक प्रारम्भ करबासँ पहिने आर्शीवाद लेब सामाजिक सद्भाव, सामञ्जस्य, सौहार्दता, सहिष्णुता, सहयोग, आपसी मेलमिलाप आ सफलताक प्रतीक होइछ तएँ तकर अनुपालन करव सभकलेल श्रेयस्कर भऽ सकैछ।

'सलहेश लोकनाट्य' मंचन पद्यवद्ध रुपमे वार्त्ताद्वारा सम्पन्न कएल जाइछ जकर विस्तृत वर्णन सम्भव नहि आ तएँ जाहि गीतसँ सलहेश लोक-नाट्यक समापन होइछ, ताहि गीतके नीचा उल्लेख करैत विराम लैत छी । शुभम् ।

"सातो बहिनी दुर्गाके बलपर
स्वामी आई हम पौलिऔ-२
ठीकसँ रहबै आब हम राज महिसौथामे
एतबे अरजिआ हमरो आ मिनतिआ ने हो ॥"

****

सन्दर्भ सामग्री :-

१. अकेला, डा. गङ्गाप्रसाद- 'मिथिलाञ्चलको लोकजीवन र संस्कार गीत' कार्यपत्र-ने.रा.प्र.प्र. द्वारा २०६२ साल जेठ ३ गते आयोजित गोष्ठीमे प्रस्तुत

२. घिमिरे, कुलराज- (प्रधान सम्पादक तथा प्रकाशक) - 'सिंहावलोकन' नेपालीय मैथिली पाक्षिक विशेषांक, २०४५, जनकपुरधाम (२०४६ साल, भाद्र)

३. Akela, Dr. Ganga Prasad - 'An Introduction to Mithila & Maithil Culture' article published in 'Nepalese Culture. Different Dimensions', Royal Nepal Academy, 2066.

४. पासवान, रामप्रीत - प्राचीन 'राजा सलहेश र हारमको फूल' DNF/DELF, २०६१ साल ।

५. 'सुमन' झा, सुरेन्द्र आ झा, डा. रामदेव (सम्पादकद्वय) - 'मैथिली प्राचीन गीतावली', मैथिली अकादमी, पटना ।

६. अकेला, डा. गङ्गाप्रसाद (प्रमुख अनुसन्धानकर्त्ता) नेपालको मिथिलाञ्चलको 'लोकगाथा तथा लोक-नाट्य सलहेश' - अनुसन्धान - पत्र, त्रि.वि. नेपाल र एशियाली अनुसन्धान केन्द्र, कीर्तिपुर, काठमाडौं (२०६६ साल वैशाख) ।

f f f



सलहेसक भाइ बुधेसर

लोकनायक जयवर्द्धन सलहेस

✍ धीरेन्द्र प्रेमर्षि

सलहेसक सन्दर्भमे जनधारणा पाओल जाइत अछि जे हुनक सक्रियतासँ प्रकृतिपर्यन्त अनुकूल भऽ जाइत छल। चलैत बिहाड़ि थम्हि जाइक, खूङ्खार बाघ-भालुसब सम्मोहित भऽ जाइक ..... एहन-एहन किंवदन्तीसब सलहेस-गाथासँ जुड़िकऽ बाहर अबैत रहल अछि आ मिथिला समाजमे व्याप्त अछि। एहि बातसबमे कतेक सत्यता छलैक से तँ नहि कहल जा सकैत अछि, मुदा एतबा निश्चित जे सलहेसक जयन्तीक सन्दर्भमे प्रकृति स्वयं शुभकामना परसैत अछि। सलहेस फुलबारिक मेलाक दिन अर्थात् प्रत्येक वर्ष बैशाख १ गते हारमक गाछमे फुलाएवला फूल ई सन्देश दैत अछि जे सलहेसेक लेल प्रकृति अपन विशिष्टता तथा श्रद्धा प्रकट करैत अछि फुलबारिमे।

राजा सलहेस मिथिलाक एहन विभूति छथि, जिनक नामसँ सम्पूर्णप्रायः मैथिलजन सुपरिचित छथि। आधुनिकतादिसि तीव्रतासँ बढ़िरहल आजुक समाजमे पढ़ल-लिखल लोक भेलहि हिनक नाम सूनि चकुआए लागए, मुदा अपढ़ वा अल्पशिक्षित समुदायमे राजा सलहेसकेँ नहि चिन्हनिहार आ हिनकाप्रति श्रद्धा-भक्ति नहि रखनिहार व्यक्ति विरले केओ होएत। लोकआस्थामे सलहेस सौंसे मिथिलामे तेना ने जीवैत छथि जे हिनका कतिआकऽ मिथिलाक ग्राम्य-जीवनक कल्पने नहि कएल जा सकैत अछि।

वास्तविक नाम जयवर्द्धन रहितहु जनमानसमे ई सलहेस नामे विख्यात छथि। विद्वानसभक मतानुसार हिनक ई नाम ...शैलेश सँ अपभ्रंशित होइत सलहेस भेल अछि। शैलेश अर्थात् पर्वतक राजा।

वास्तविक नाम जयवर्द्धन रहितहुँ जनमानसमे ई सलहेस नामे विख्यात छथि। विद्वानसभक मतानुसार हिनक ई नाम 'शैलेश' सँ अपभ्रंशित होइत सलहेस भेल अछि। शैलेश अर्थात् पर्वतक राजा। जेँ कि ई वन्यप्रान्त वा पर्वतीय क्षेत्रक तेजश्वी व्यक्तित्व, योद्धा तथा राजा छलथि, तएँ हिनका शैलेश कहल गेलनि आ कालान्तरमे उएह शैलेश लोकजिह्वामे पचैत-पचैत सलहेस भऽ गेल। कहल जाइत अछि जे ई जातिक दुसाध छलाह। वस्तुतः जातीय पृष्ठभूमि सेहो हिनक पराक्रमेकेँ पुष्टि करैत अछि। किएक तँ दुसाध शब्द दुःसाध्यक अपभ्रंश अछि। एहन लोक जे दुःसाध्य अर्थात् दुरूहतम काज करैत हुअए, तकरे दुसाध कहल गेलैक। दुसाध शब्दक दोसर आधार 'दोसाँध' केँ सेहो मानल जाइत अछि। नेपाली भाषाक सङ्ग-सङ्ग सलहेसीय परिवेशक क्षेत्रमे सेहो सीमाके साँध कहल जाइत छैक। एहि आधारपर दोसाँध माने दू क्षेत्रक सीमा भेल। ई दू क्षेत्र भेल पहाड़ आ तराई। अर्थात् सलहेस पहाड़ आ मधेश-तराईक दोसाँधमे रहल राज्य तिरहुत (मिथिला) क राजा छलाह। एखनहुँ सलहेससँ सम्बन्धित बहुतो महत्वपूर्ण स्थानसब– सिरहा जिल्लाक मानिक दह, सलहेस फुलबारि, पकड़िया गढ़, कमल दह, उदयपुरक त्रिवेणी आदि स्थानकेँ लगभग-लगभग पहाड़ आ मधेशक दोसाँधे कहनाइ उपयुक्त बुझना जाइत अछि।

मिथिलाक मैदानी भूभाग सदतिसँ कृषि उत्पादन आ पशुधनक दृष्टिएँ समृद्ध रहैत आएल अछि। एकर सीमा तीनदिसि कोशी, गण्डक आ गङ्गा नदीसँ घेराएल होएबाक कारणे सुरक्षाक दृष्टिएँ एहि तीनू भरसँ कोनो समस्या नहि छलैक। मुदा उत्तरी पर्वतीय क्षेत्रसँ तिब्बत आ भूटानक वक्रदृष्टि मिथिलापर निरन्तर गड़ल रहैत छलैक। एहिमे मिथिला क्षेत्रेक एक खूङ्खार दस्यू (डाकू) चूहड़ मलक सहयोग सेहो ओकरासभकेँ भेटल करैत छलैक। एहन समयमे सलहेस किराँतसभक सङ्ग मिलिकऽ संयुक्त फौज निर्माण कएलनि आ चीनक शानवंशी सम्राटक समयमे मिथिलापर भेल आक्रमणकेँ किराँतसभक सङ्ग मिलिकऽ विफल कएलनि। इतिहासकारलोकनि सलहेसक वीरता, सौर्य, पराक्रमक बखानमे यथेष्ट शब्द खर्च कएने छथि। तकर कारण सलहेसक ओज आ जनप्रिय छविए छल। सलहेस सगर मिथिला क्षेत्रमे मूलत: पराक्रम, पौरुष आ प्रेमक लेल जानल-मानल जाइत रहलाह अछि। हवाक रुख मोड़ि देनिहार तथा जङ्गली जानवरसभकेँ पर्यन्त सहजहिँ सम्मोहित कऽ लेनिहार व्यक्तित्वक रूपमे सलहेसक चित्रण गाथासबमे कएल गेल अछि। एखनो मिथिलाञ्चलमे वन-जङ्गल वा कोनो निर्जन स्थानपर मोनमे कोनो तरहक भय-त्रास उत्पन्न भेलापर लोक मोनहि मोन सलहेसकेँ सुमरि लैत अछि। एना केलापर भयमुक्त भऽजएबाक धारणा लोकमे व्याप्त छैक।

जयवर्द्धन सलहेसकेँ सामान्यतया सातम-आठम शताब्दीदिसिक महापुरुषक रूपमे चिन्हल जाइत छनि। विद्वानसभक धारणा छनि जे सलहेसक गाथेसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे हिनक समय गौचर आ कृषि युगक सन्धिकाल छल। हिनका सम्बन्धमे बेसी अध्ययन नहि भऽ पाएल अछि। एकर मूल कारण अछि जे ई मिथिलाक छथि। दू देशमे बँटलाक बाद मिथिलाक समस्त वैशिष्ट्य जाहितरहक दूरवस्थासँ गुजरिरहल अछि, तकर मारिमे सलहेस सेहो पड़ल छथि। सबसँ प्रमुख बात तँ ई जे नेपाल आ भारत दू देशमे बँटएलाक बाद मिथिला कोनो देशक प्राथमिकतामे पड़ऽ वला अङ्ग नहि रहि गेल। मूल पूजा सम्पन्न भऽ गेलाक बाद जे जओ-तिल बाँकी रहि जाइत छैक, आइ शताब्दियोसँ मिथिलाक हिस्सामे सएह छिटल जा रहलैक अछि। नेपालमे लोकतन्त्र आ गणतन्त्रक आगमनक बाद राजनीतिकरूपेँ अवस्था अवश्य किछु बदलल छैक, मुदा एखन देखाएल एहि राजनीतिक प्राप्तिमे साहित्य-कला-संस्कृतिक कतहुँ लसियो देखबामे नहि अबैत छैक। एहिसँ एहितरहक विषय आओर पछुआइएजकाँ गेल अछि। समाजक जे संरचना छैक, सेहो सलहेससन विभूतिकेँ छाँहमे रखबामे बेसीए भूमिका निर्वाह कऽ रहल छैक। कारण सलहेस राजनीतिकरूपेँ कतिआओल गेल मिथिलाक सेहो तथाकथित निम्न जातिक जातीय देव छथि। सलहेस लोकगाथा नायक आ लोकदेवताक रूपमे भलहि सभक प्रिय आ पूज्य होथि, मुदा दलित जाति दुसाध जातिक मानल जएबाक कारणे एहिसम्वन्धी अध्ययन-अनुसन्धानक काज सेहो मोनहि मन सम्बन्धिते जातिक लेल छोड़ि देलजकाँ देखना जाइछ। दलितसभक समुचित पहुँच अध्ययन-अनुसन्धानक क्षेत्रमे नहि भऽ सकबाक कारणे सेहो हिनका विषयमे यथेष्ट मात्रामे ऐतिहासिक अध्ययन नहि भऽ पाएल हएत। तथापि मैथिली लोकगाथासबमे यथेष्ट काज कएनिहार डा. व्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्‌म', मतिनाथ झा, डा. पूर्णानन्द दास, राजेश्वर झा आदि इतिहासकारसभ हिनका सम्बन्धमे अवश्य किछु महत्वपूर्ण अध्ययन कएने छथि। मणिपद्‌म हिनका पाँचम-छठम शताब्दीक कहैत छथि तँ महेन्द्र मलङ्गिया विभिन्न तर्कसबक आधारपर सलहेसकेँ सातम-आठम शताब्दीक प्रमाणित करैत छथि। मुदा समस्त भारतीय आर्यभाषासबमध्यक पहिल गद्यग्रन्थक रूपमे स्थापित मैथिलीमे लिखित 'वर्णरत्नाकर' मे तत्कालीन मिथिलाक समस्त वैशिष्ट्यसबक उल्लेख रहितहुँ सलहेस दऽ कोनो जानकारी नहि भेटैत अछि। जखन कि लोरिक नाचक चर्चा ओहिमे छैक। एहिसँ किछु द्विविधाक स्थिति अवश्य वनि जाइत छैक। तएँ कतिपय विद्वान सलहेसकेँ आइसँ चारि-पाँच शताब्दीपूर्वक मात्र सेहो कहैत छथि।

सलहेस अपना समयक अत्यन्त प्रतापी तथा न्यायप्रेमी शासक छलाह । अपना दरबारमे सलहेस नियमित रूपेँ जनताक गोहारि सुनैत छलाह । अर्थात् जनताक दुख-दर्द सुनबाक लेल ई नियमित जनसभाक आयोजन करैत छलाह । सलहेस जेँ कि न्यायक प्रतिमूर्तिक रूपमे स्थापित भऽ गेल छलाह, तएँ समाज जातीयतामे बँटल तत्कालीन अवस्थामे सेहो हिनकापर सभ जातिक लोक विश्वास करैत छल । फलतः सलहेस सभक प्रिय राजाक रूपमे स्थापित एवं प्रतिष्ठापित छलाह । प्रखर योद्धा सेहो रहल सलहेसक वंशजसभ कालान्तरमे भलहि दलित बना देल गेलाह, तथापि हिनकाप्रति सभक श्रद्धा, सम्मान आ भक्तिभाव यथावत कायम रहल । आ, अद्यावधि हिनका महाराजेक रूपमे मिथिलाक लोक स्वीकार कएने अछि । तएँ सलहेसकेँ मात्र 'राजाजी' नामसँ सम्बोधन करबाक प्रचलन सेहो मिथिलामे व्याप्त छैक । सलहेस फुलबारिकेँ 'राजा फुलबारि' सेहो प्रायः ताही कारणे कहल जाइत छैक ।

मिथिलाक विस्तृत सांस्कृतिक फलक अपनामे अनेकानेक विशिष्टतासबकेँ सहेजिकऽ रखने अछि । एहि सांस्कृतिक विशिष्टतासबअन्तर्गत मिथिलामे प्रचलित लोकगाथासबक प्राचुर्यकेँ सेहो एक मानल जा सकैत अछि । मिथिलामे अनेको लोक-गाथा प्रचलित अछि । ई गाथासब सरस लोकजीवन तथा समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराक साक्षीक रूपमे एखनहुँ मिथिलाक गामघरमे राति-रातिभरि मञ्चित भेल करैत छैक । एहन लोकगाथाक नायकसभमध्य सेहो राजा सलहेसक नाम सबसँ पुरान तथा अग्रगण्य अछि । सलहेसक गाथागीत तथा नाच देखबाक लेल मिथिलाक नरनारीसभ अपन दिनभरिक थकानकेँ सेहो बिसरि जाइत छथि आ नाच देखिते-देखिते राति बिता लैत छथि । एहि तरहेँ इहो कहल जा सकैत अछि जे सलहेस मिथिलाक आमलोकक मन-प्राणमे रचल-बसल लोकनायक छथि । तएँ तथाकथित निम्न जातिक भइयोकऽ ई मिथिलामे लोकदेवताक रूपमा स्थापित छथि आ हरेक वर्ग तथा जातिक लोक ओतबए श्रद्धा, भक्तिपूर्वक हिनका श्रद्धा, पूजा आ सम्मान करैत अछि ।

सलहेस-पूजनोत्सवेक एक विशिष्ट समारोहक रूपमे सिरहा जिल्लाक सलहेस फुलबारी नामक स्थानपर भव्य मेलाक आयोजन होइत अछि । राजा सलहेससँ सम्बद्ध अधिकांश ऐतिहासिक स्थलसब पूर्वी नेपालक सिरहा जिलामे अवस्थित अछि । सलहेस फुलबारि सिरहा जिलाक मुख्य व्यापारिक केन्द्रक रूपमे रहल लहान बजारसँ करिब तीन किलोमिटर पश्चिमदिसि महेन्द्र राजमार्गक कातमे अछि । ई स्थान पड़रिया आ सिसवनी गाविसक सीमापर अवस्थित अछि, तएँ ई दुनू गाम एहि फुलबारिक व्यवस्थापन करैत अछि । प्रत्येक वर्ष विक्रमीय नववर्षक दिन अर्थात् बैशाख १ गते ओहिठाम भव्य मेला लागल करैत अछि । ओ मेला ओना तँ एक्कहि दिनक होइत अछि, मुदा ओहि एक दिनमे सेहो नेपालक विभिन्न भागक सङहि भारतसँ समेत लाखोक सङ्ख्यामे लोक श्रद्धा तथा रोमाञ्चक लेल सिरहा जिल्लास्थित सलहेस फुलबारिमे जमाजूट होइत अछि ।

कुसमा आ सलहेसक ऐतिहासिक परमप्रेमक साक्ष्यक रूपमे रहल ई फुलबारि अनेको तरहक अतिक्रमण सहितहुँ एखनोधरि एकटा छोटसन वन-वाटिकाक रूपमे अस्तित्ववान अछि । गोलाकार रूपमे सम्प्रति किछु बिघा क्षेत्रमे सीमित रहि गेल एहि वन-वाटिकाक भीतर अनेको पानिक सोह आ विविध प्रकृतिक गाछ-वृक्ष-वनस्पतिसब पाओल जाइत अछि । एहीसबमध्य ओहि वाटिकाक मध्य भागदिसि रहल एकटा गाछक बीचमे मूले तनासँ लटकल पुष्पलता ओहि दिन फुलाएल देखल जाइत अछि । ओ देखबामे एहन लगैत छैक जेना केओगोटे कोनो फूलक हार लऽ जा कऽ गाछमे टाङि देने होइक । हारमक गाछमे फुलाएवला ओहि फूलकेँ वनस्पतिविदसभ आर्किड कहैत छथि । ओ फूल देखबामे जतेक आकर्षक लगैत अछि, ओहिसँगे जुड़ल अन्य पक्षसब सेहो ओतबए रोचक छैक ।

ओहि परिसरक आम-लोकक कथनअनुसार ओ फूल सलहेस फुलबारिक मेला लागऽ वला दिन अर्थात् बैशाख १ गते मात्र फुलाइत छैक । ओहिसँ एक दिन पहिने कोँढ़ीक रूपमे देखल जाइत अछि आ प्रातभने मुरझाएल रहैत छैक । आन कोनो दिन ओ फूल नहि देखल जएबाक बात ओहि क्षेत्रक

बासिन्दासभ बतबैत छथि। प्रकृतिक एहि विशिष्टताकेँ ओसभ दैवीलीलाक संज्ञा दैत छथि। ओ फूल दैवीए लीला वा शक्तिक चमत्कार छियैक वा धार्मिक पाखण्ड छियैक आ कि कोनो तरहक वानस्पतिक विशिष्टता छियैक, ताहि सम्वन्धमे आवश्यक अनुसन्धान कएल जाएव वाञ्छनीय अछि। यद्यपि सलहेस-गाथाक प्रभावमे रङ्गल लोकसभक धारणा एहनो पाओल जाइत अछि जे सलहेसक प्रेमिका कुसमा मालिन सलहेसक दर्शन करबाक लेल ओहि दिन फूलक रूपमे प्रकट होइत छथि। एहि मान्यताक आधारपर ओहिठाम जा दर्शन तथा पूजन कएलापर प्रेमी-प्रेमिकाक मनोकामना पूर्ण होएबाक जनविश्वास सेहो बढ़ैत गेल छैक। ओना ओ फूल आन कोनो दिन फुलाइत छैक आ कि नहि, ताहि सम्बन्धमे कोनो आधिकारिक अनुगमन कएल गेल जानकारी सेहो नहि भेटैत अछि। किएक तँ गोटेक साल फूल नहि फुलाएल अवस्था सेहो देखल गेल छैक। मुदा जे-जेना होइक, मिथिलावासीक मन-मस्तिष्कमे सलहेस-कुसमाक अमर-प्रेमक बिम्ब बनिक ई फूल अवश्य फुलाइत आएल अछि।

सलहेस फुलबारिएक करिब पन्द्रह किलोमिटरक चौहद्दीमे सलहेससँ सम्वद्ध अन्य ऐतिहासिक स्थानसब सेहो छैक। लहानसँ करिब पाँच किलोमिटर उत्तरमे पकड़िया गढ़ अवस्थित अछि। तहिना करिब बारह किलोमिटर उत्तर-पश्चिममे मानिक दह अछि। एहि जगहसबमे सेहो क्रमश: बैशाख १ आ २ गते भव्य मेला लगैत अछि। सिरहा जिलाक चुरिया पर्वत शृङ्खलामे एकटा चोटी 'सलहेस डाँड़ा' नामसँ सेहो जानल जाइत अछि। राजा सलहेसक जन्मस्थल महिसौथागढ़ जिला-सदरमुकाम सिरहामे अछि, जत बैशाख २ गते क मेला लगैत अछि। एहितरहेँ देखल जाइत अछि जे सलहेसक भक्त तथा दर्शनार्थीसभ सामान्यतया दू दिनक पैकेज बनाक ओहि क्षेत्रमे पहुँचैत छथि आ सलहेसक भक्ति तथा प्रीतिक सौन्दर्यमे खूब डुबकी मारैत छथि।

सलहेससँ सम्बन्धित स्थानसबमे लागवला मेलामे दूर-दराजसँ आबवलासभकेँ बहुतो तरहक कष्ट तथा असुविधाक सामना कर पड़ैत छनि। पेयजल, प्रचण्ड रौदमे सुस्तएबाक लेल छाँह, विश्रामालय, शान्ति-सुरक्षा आदि विभिन्न तरहक समस्यासभसँ एम्हर आबि दर्शनार्थीसभक सङ्ख्या कमैत जा रहल छैक। बाहरसँ आबवला दर्शनार्थीसभ कम होइतो आसपासक लोक एखनो धरोहि लागल पहुँचिए रहल छथि। जँ सम्वद्ध पक्षसभ व्यवस्थित रूपमे एहि मेलासबकेँ सहयोग आ सञ्चालन करैत जाइक तँ सलहेस-गाथासँ सम्बद्ध ई स्थानसब मिथिलाक पर्यटकीय विकासमे सेहो महत्वपूर्ण योगदान द सकैत अछि। पछिला समयमे नेपाल सरकारद्वारा गठित सलहेस पर्यटन क्षेत्र विकास समिति सेहो एहि दिशामे विशेष सहयोग क सकैत अछि। विभिन्न समयमे सिरहा आ सलहेस फुलबारिमे आयोजन होइत आएल सलहेस महोत्सव सेहो सलहेस-गाथाकेँ राष्ट्रिय-अन्तर्राष्ट्रिय रूपमे व्यापक बनएबामे कारगर सिद्ध होइत आएल अछि। वर्ष २०६९ मे सिरहा जिलाक सम्पूर्ण पार्टीसबक संलग्नता तथा स्थानीय बुद्धिजीवी, सङ्घ-संस्था एवं काठमाण्डूमे रहल सिरहा समाज सेवाक सक्रियतामे आयोजित सलहेस महोत्सवमे राष्ट्रपति डा. रामवरण यादवक सहभागिता आ मिथिला तथा सलहेसक महिमामे हुनकाद्वारा देल गेल भावपूर्ण अभिव्यक्ति एकरा आओर व्यापक बनएबामे निश्चित रूपसँ बेस मदति कएलक अछि।

सलहेस-गाथा आ तकराप्रति मिथिलावासीक श्रद्धा पर्यटन आ मैथिल संस्कृतिक दृष्टिएँ तँ महत्वपूर्ण अछिए, दलित वर्गप्रति सम्मानक दृष्टिएँ एकर स्थान आओर महत्वपूर्ण भ जाइत अछि। सम्भवत: सौंसे नेपाल आ भारतमे कोनहु एहन दलित इतिहास-पुरुष नहि छथि, जे समाजक सभ वर्ग, जाति, समुदायद्वारा समान श्रद्धा आ निष्ठाक सङ्ग एतेक भव्यतापूर्वक पूजल जाइत होथि। नव वर्षक उल्लासकेँ पर्यन्त कतिआक जूड़शीतलक रङ्गमे रङ्गाएल मिथिलावासीद्वारा सलहेसक दर्शन तथा पूजनमे देखाओल जाएवला व्यग्रता आ उत्सुकता मननीय रहैत अछि।

सरकारी स्तरसँ दलित वर्गकेँ सम्मान देबाक काजक रूपमे मात्र किएक ने हो, सलहेसक सम्बन्धमे अधिकाधिक अध्ययन/अनुसन्धान करा हुनक पुण्यस्थलसबमे लागऽवला मेला आदिक व्यवस्थापन तथा विकासमे विशेष ध्यान देल जएबाक चाही। हुलाक सेवा विभाग सलहेसक नामपर डाक टिकट प्रकाशन कऽकऽ सेहो हुनका सम्मान देबाक काज करैत प्रचार-प्रचारमे योगदान दऽ सकैत अछि। राष्ट्रिय दलित आयोगसन दलितसम्वद्ध सङ्घ-संस्थासँ सेहो एहि दिशामे विशेष अपेक्षा कएल जा सकैत अछि। तत्कालीन मिथिलामे आमलोकक बीच अपन पौरुष, पराक्रम आ प्रेमसँ सलहेस जाहितरहेँ लोकदेवताक रूपमे स्थापित भऽ गेलाह, तकरा आत्मसात करैत सलहेसक सम्पूर्णप्राय: ऐतिहासिक स्थलकेँ अपना भूभागमे समटबाक गौरव प्राप्त कएनिहार नेपालकेँ हुनका राष्ट्रिय विभूति घोषित करबाक दिशामे सकारात्मक डेग उठएबाक चाही।

सम्प्रति मिथिलाक आम जनताक बीच मात्र प्रसिद्ध आ पूज्य सलहेसकेँ सम्पूर्ण दलित समुदाय जँ अपन गौरव-पुरुषक रूपमे अङ्गीकार कऽ सकए तँ एहिसँ देशक विभिन्न समुदायक बीच समन्वय बढ़एबामे सहयोग होएबाक सङहि नेपालक मिथिलाञ्चलमे दलित वर्गक कोनो व्यक्तिकेँ कोन हदधरिक सम्मान भेटल छैक से सन्देश आम नेपालीक सङहि सम्पूर्ण विश्वकेँ देबामे सेहो एहि काजसँ महत्वपूर्ण योगदान भऽ सकैत छैक।

ि ि ि



सलहेस फुलबारीमे ठीक बैशाख १ गते फुलाइत हारम फूल

मिथिलाक प्रसिद्ध लोक-गाथा
राजा सलहेस

१ रामनारायण देव

नेपालक मिथिला क्षेत्र मैथिली लोक-कथा आ गाथाक उर्वरभूमि मानल जाइत अछि। मिथिला क्षेत्रमे दर्जनो लोकगाथा प्रचलित अछि। ताहिमे बहुतरास लोकगाथाक आधारभूमि नेपाल तराईक मिथिला क्षेत्र रहल अछि। जेना, (क) राजा सलहेस (ख) दीना-भद्री (ग) लोरिकाईन (घ) नैका-वनिजारा (ङ) राजा धनपाल (च) राय रणपाल (छ) किसनाराम, इत्यादि ।

राजा सलहेसक जन्मक विषयमे विद्वानलोकनिमे विवाद अछि। कतेक विद्वान हुनका पाँचम शताब्दीक मानैत छथि तँ केओ तकरपश्चात मानैत छथि । तहिना हुनकर जन्मस्थानक विषयमे सेहो मत-मतान्तर अछि। केओ हुनकर जन्मस्थान सिरहा-महिसौथा मानैत छथि तँ केओ पतारि-पोखैर मानैत छथि । विद्वानलोकनिक कथन छनि जे महिसौथा राज्यअर्न्तगत पतारि-पोखैर, पकडियागढ, मानिक दह, सलहेस फुलबाड़ी पड़ैत छल । अधिकाँश विद्वानलोकनि हुनकर जन्म महिसौथा मानैत छथि । सम्प्रति महिसौथा गाम एखन सिरहा नगरपालिकामे पड़ैत अछि। महिसौथामे एखनो एकटा ऊँच डीह अछि जतऽ सलहेस, बुधेसर आ मोतीराम तीनू भाइक मूर्ति स्थापित अछि ।

अधिकाश विद्वानलोकनि हुनकर जन्म महिसौथा मानैत छथि । सम्प्रति महिसौथा गाम एखन सिरहा नगरपालिकामे पड़ैत अछि । महिसौथामे एखनो एकटा ऊाच डीह अछि जत सलहेस, बुधेसर आ मोतीराम तीनू भाइक मूर्ति स्थापित अछि ।

राजा सलहेस दूसाध (पासवान) जातिक छलाह। महिसौथामे दूसाधक पैघ वस्ती अछि। स्थानीय वृद्धलोकनिक अनुसार राजा सलहेस बहुत पराक्रमी छलाह। भिनसरे उठि कऽ मानिक दहमे जा कऽ स्नान करैत छलाह। फुलवाड़ीमे फूल तोड़ि कऽ पतारि-पोखैरमे ठाकुर देवताक पूजा करैत छलाह। तकरबाद महिसौथा आबि कऽ कचहरी लगबैत छलाह। कचहरी लगाबऽबाला स्थान एखनो सिरहा बजारसँ पश्चिममे अछि जतऽ एकटा वेलक गाछ अछि जे कहियो ने बढ़ैत अछि।

राजा सलहेस काठमाण्डू जा कऽ सरकारकेँ खुशी कऽकऽ १४ कोसक जद्धा जङ्गल बकसमे पऔने छलाह से कहल जाइछ। एहिसँ बुझाइत अछि महिसौथा एकटा रजौटा रहल हएत जकर केन्द्रीय शासन काठमाण्डूसँ होइत छल। सलहेसक प्रथम विवाह राजा वराटपुरक पुत्री रानी दूलहीनसँ भेल छलनि। वराटपुर गाम जयनगरसँ ४ कोश पश्चिममे पड़ैत अछि। कतेक विद्वानलोकनि वराटपुरकेँ विराटनगरसँ सेहो जोड़ैत छथि। मुदा सएह नहि भऽ क ई पश्चिमक वराटपुर थिक। सलहेस मोरंग जा क राजा हिमपतिक पुत्री फूलवन्तीसँ दोसर विवाह कएलनि। मोरंगक परेवा पोखैर (दह)मे फूलवन्ती स्नान करैत छलखिन तखन सलहेसक नजरि ओकरापर पड़िगेल छल। हुनकाप्रति मोहित भऽ सलहेस विवाह कऽ लेलनि।

सलहेसक बहुतरास प्रेमिकासभ छलनि। सभ प्राय: मालिनी सम्प्रदायक छल। पकड़िया गढ़क राजाक पुत्री चन्द्रावती सेहो सलहेसप्रति मोहित छलीह। ओ सलहेसकेँ अपन पति बनेबाक लेल दुर्गादेवीके आराधना करैत छलीह। एहिबीच चूहड़मल पकड़िया गढ़क दरबारमे गङ्गाक मोकामागढसँ सेन खुनि कऽ पहुँचल। चुहडमल सब सोना-चाँदी चोरा कऽ भागि गेल। चन्द्रावती सलहेसकेँ छद्मरूपमे राखिकऽ मोकामा गढ़ पहुँचि सब चोराओल सोना-चाँदी वापस आनलनि। सँगहि चूहड़मलकेँ भैसमे चढा कऽ पकड़िया गढ़क दरबारमे आनि बन्न कऽ देलक।

राजा सलहेसक प्रेयसी रेसमा, कुसुमा, दोना, बचवा धमनियाँ हिरिया-जिरियासभ विवाह करबाक इच्छा राखने छलीह। सभ मालिनी सम्प्रदायसँ दिक्षीत छलीह। सलहेसक प्रेमिकासभ मालिनीलोकनि गीतद्वारा हुनका आह्वान करैत छलीह, जेना -

भेल-भिनसरवा ठाढ़ि दरवाजा मालिन कर जोरि
मिनती करैए दैव मुनिक नाम
सुनु इन्द्रासन छप्पन्नकोटि देवता जे
इन्द्र जन्म लेलनि
छठि रातिमे सोइरी घरमे ताकि
दिन राखि देल, सलहेससन वर
हुनक कारण आँचर बन्हलौं
पर-पुरूष मुँह नहि देखलौं
जन्म पाय सिन्दूर नहि केलौह
जाहि स्वामीक कारण
काँच, बाँसक कोहवर बन्हलौं
लाल पलङ्गपर सेज ओछैलौह
सिकिया चीरिकेँ वेनियाँ बनौलहुँ।

ई गीत दोना मालिनक थिक। एहिमे प्रेम आ विछोड़ देखाओल गेल अछि। सलहेस मानिक दहमे स्नान करैत छलाह। तत्पश्चात अपन इष्ट देवताक लेल फूल तोड़वाक वास्ते फुलबाड़ी अबैत छलाह। तथापि अपन प्रेमिका लोकनिसँ भागैत रहलाह। एहि प्रसङ्गक ई गीत देखू -

खन-खन रहै छी हम बेल्का पहाड़मे
खन-खन रहै छी सगर बागमे
मानिक दहमे स्नान करैत छी
गढ पोखरियामे मैया सुमरैत छी
भागै छी, तऽ एहि मालिनिया खातिर

सलहेस गाथामे फुलबाड़ीसँ सम्बन्धित एकटा कथा आओर उल्लेखनीय अछि जे एहिप्रकारे अछि। लोकनायक सलहेस प्रात:काल अखाड़ामे जा कऽ कसरति करैत छलाह। एहिक्रममे एकदिन व्यायाम कऽ फूल तोड़बालेल फुलबाड़ी पहुँचि कऽ आराम करऽ लगलाह। ओहि समयमे पकड़िया गढ़क राजकुमारी चन्द्रावति ओहिठाम पहुँच गेलीह। राजकुमारी सलहेसकेँ देखि मोहित भऽ गेलीह आ पत्नीकेँ रूपमे स्वीकार करबाक अनुरोध कएलनि। गाथाक भाषा देखू -

पलक तऽ खोलियौ राजा, नजरिसँ देखियौ पियवा हे
छोट जखन रहियै तऽ, परन हम ठनलियै से दरसन
देलियै हो पियवा, राज पकड़ियामे ने हो।

सलहेस फुलबाड़ी

सलहेस फुलबाड़ी सम्प्रति सिरहा जिलामे लहानबजारसँ करीब ५ कि.मी. पश्चिम, पूर्व-पश्चिम राजमार्गक दक्षिणमे स्थित अछि। ई १० विगहामे फैलल अछि। विभिन्न किसिमक जंगली गाछ-वृक्षसँ ई फुलबाड़ी (बगैंचा) भरल अछि। फुलबाड़ीक बीचमे गहवर अछि। गहवरमे राजा सलहेस हाथिपर सवार छथि। गहवरक सटले 'हारम' नामक एकटा गाछ अछि। आश्चर्यजनक बात ई अछि जे प्रत्येक साल वैशाख १ गते संक्रान्तिक दिन एहि हारम गाछमे मालाकारक फूल फूलाइत अछि ओ फूल गाछक कोनो ठारि-पातिमे नहि भऽ गाछक मध्य भागमे एकहि ठाम ५-६ माला सदृश्य लटकल उज्जर रङ्गक देखल जाइत अछि। फेर सालभरि एहेन फूल कहिओ नहि फूलाइत अछि। ओ फूलक विषयमे किम्बदन्ती ई अछि जे सलहेसक प्रेमिका दोना मालिनी विरह आकूल अवस्थामे माला सदृश्य फूलक रूप लऽ अबैत छथन्हि आ हुनका अपन प्रेमी सलहेसक प्रतीक्षा रहैत छनि। एहि फूलक दर्शन करबाक लेल आ मेला दर्शनक लेल नेपाल आ भारतसँ लाखो संख्यामे लोक आवैत छथि। एहिठाम एकदिन मात्र मेला लागैत अछि। नेपाल आ भारतक साझा लोकदेवताक रूपमे सलहेसक पूजा होइत अछि। एक आश्चर्यक बात ई अछि जे सलहेस फुलबाड़ीक चारूतरफ पृथ्वीसँ जल स्वयं उसरैत अछि। ई जल श्रद्धालुलोकनि अपन शरीरपर छिटिकैं पवित्र करैत छथि। किछु जानकर लोक एकरा 'आर्टिजेन वेल' सेहो कहैत छथि। एहिठाम सनातनसँ पानि उसरैत अछि से बात स्थानीय वृद्धलोकनिकैं कहब छनि। एहि फुलबाड़ीकैं विषयमे कहल जाइत अछि जे एकरा उत्तर-दक्षिण केओ पार नहि कऽ सकैत अछि। स्थानीय लोकोक्तिअनुसार बहुत दिन पहिने फुलबाड़ीक बीच भागमे एकटा शीशाक इनार छल जे एखन लुप्त भऽ गेल अछि। ओकर लुप्त हेबाक कारण अछि जे बहुत वर्ष पहिने एक स्त्री अपन पतिसँ झगड़ा कऽ नैहर जाइत छलीह। फुलबाड़ीमे साँझ भऽ गेलैक। ओ स्त्री ओहिठाम शीशाक इनार देखलनि। रातिभरि ओ ओहि फुलबाड़ीमे रहलीह। प्रातःकाल ओ स्त्री अपन नैहर पहुँचि गेलीह। ओतऽ ग्रामीणलोकनिकैं ई बात स्पष्टरूपैं कहि देलखिन। तखने ई इनार लुप्त भऽ गेल। ई बात सलहेस गहवरक पूजारी एक अन्तरर्वातामे बतौने छलाह। प्रत्येक वर्ष वैशाख १ गते एहिठाम पैघ मेला लागैत अछि। धूम-धामसँ पूजा होइत अछि। पूजाक समयमे पूजा सामग्री तान्त्रिक विधिअनुसार सजाओल जाइत अछि। एकटा टोली सलहेसक गीत गाबैत छैक आ भगतासभ गोसाँई खेलैत अछि। गोसाँई खेलनिहार विघ्न-बाधा हटेबाक लेल अक्षत प्रदान करैत अछि। एहितरहैं सलहेस पूजामे सहभागी भेलासँ परिवारक कल्याण होइत अछि से जनविश्वास अछि।

महिसौथामे एखनो सलहेसक अखाड़ा अछि जतऽ ओ कुश्ती खेलाइत छलाह। ओहिठाम सलहेसक गहवर अछि जतऽ ओ घोड़ापर सवार छथि। सलहेस गाथामे चारिटा प्रेमिकाकैं नाम उल्लेख कएलगेल अछि जेना- दौना, कुसुमा, हिरिया आ जिरिया। कतौ-कतौ रेश्मा मालिनीक नाम सेहो आवैत अछि। ई मालिनीक पिता महेश्वर भण्डारी छलाह। जे तरेगना गढक राजा छलाह। तरेगना गढ लहानसँ करीब ५ कि.मी. उत्तर पहाड़क कछेरमे पड़ैत अछि।

सड़र गाछके पौआ बनेलियै, चानन काठके पाति बनेलियै
सोना सतुरके काठ छोड़लियै तोसक, तकिया, गलैंचा लगेलियै
ढकिया, ढकिया फूल छिटलियै, इतर गुलाब हम सेहो छिटलियै
मेदिनी फूलके गाजा लगेलियै चारो कोनापर नाहर लगेलियै
तैयो ने बेइमनमा दूसधवा दर्शन दै छै यौ
जेकर सरणीयाँ मैया सिर हम धूपाबैछी यौ।

कोनो मालिनके सलहेसप्रति कतेक उन्मुक्त प्रेम-भावना छलनि तकर एक झलक एहि रूपमे देखाओल गेल अछि -

बारह वरिससँ आँचर बान्हलौ वयस बीत गेल
केस तिलकी गेल, तैयो नै निरदैया सुपुरूष बुझाइ रे

प्रणयक अन्तिम याचना एहिरूपेँ गाथामे प्रस्तुत अछि -

दौना मालिन दक्षीनक चीर पहिर लेलैन्ह
नैना काजर केलैन्ह सिके-सिके मसि बसौलैन्ह
हाथमे बाँक पहरि लेलैन्ह पैरमे काड़ा पहिर लेलैन्ह
माँगमे ताराचन्द्र टिकूली साटि लेलैन्ह
चलली स्वामीके उदेस....।

एहितरहे राजा सलहेस मिथिलाञ्चलक एक प्रेरक प्रतीक गाथा मात्र नहि थिक मिथिलाक परिचय आ प्रतिष्ठा सेहो छथि ।

f f f



लोकचित्रमे सलहेस

सलहेस आ साहित्य श्रृजना

१ डा. अरूणकुमार कर्ण

लोक-गाथा लोक-साहित्यक एकटा महत्वपूर्ण विधा अछि। मिथिलाक लोकजीवनमे राजा सलहेसक गाथा गायनक अतिरिक्त नृत्य-नाट्य रूप सेहो प्रचलित अछि। सामान्य जनसमुदायसँ उपर उठि कऽ अपन शौर्य पराक्रम, वलिदान आदि विशिष्ट काजक कारणसँ गाथा-नायकक गरिमा सुशोभित अछि।

डा. सत्या गुप्ताक अनुसार लोकगाथासबमे अवतारवाद, पुनर्जन्म, अन्धविश्वास आदिक सहज अभिव्यक्तिसँ हिनकरसभक कथाभूमि रोचक बनि जाइत अछि। मिथिलाक गाथासबमे प्रेम आ शौर्यक प्रधानता रहैत अछि। आजुक समयमे अनेको गाथा नायकसभ सामान्य मनुष्यक श्रेणीसँ उपर उठि कऽ मनुखदेवा अथवा लोकदेवताक पदवी पौने छथि। राजा सलहेस मिथिलाक एहने गाथासबमेसँ एक अछि। डा. मणिपद्म गाथासभकेँ केन्द्रित कऽ एकटा उपन्यास एवं काव्यक रचना कएने छथि। जाहिसँ अन्य रचनाकारसभकेँ सेहो साहित्य श्रृजनाक लेल प्रेरणा भेटल अछि।

सर्वप्रथम डा. जर्ज ग्रियर्सन सन् १८८१ ई.मे 'गीत राजा सलहेस' के डोम गाथागायकसा प्राप्त क ओहिको प्रकाशित कएने छलथि। बिहार पीजेन्ट लाइफ क प्रकाशसनसा पूर्व ओ सलहेसक गाथाक सूचना मात्र देने छलथि।

मिथिलाक लोकजीवनमे सलहेस अर्थात पहाडक राजाक प्रभुत्व हिमालयक तटवर्ती भू-भागसँ गङ्गा नदिधरि पसरल अछि। सलहेसक पूजा दुसाध, डोम, दनुवार जातिद्वारा कएल जाइत अछि। मुदा सलहेस मुख्यरूपसँ दुसाधक जातीय देवता छथि। सलहेसक जन्म दुसाध जातिमे भेल छल। दुसाधसभ गामक गहबरमे सलहेसक मूर्ति प्रतिष्ठित कएने रहैत अछि। वर्षमे ओसभ एकबेर एहिठाम सामूहिक पूजा सेहो कएल करैत अछि। डा. मणिपद्म सलहेसक उदयक समय पाँचम या छठम शताब्दी मानने छथि। जखन की डा. मोतीलाल यादव पन्ध्रहम शताब्दी मानैत छथि।

सर्वप्रथम डा. जर्ज ग्रियर्सन सन् १८८१ ई.मे "गीत राजा सलहेस" के डोम गाथागायकसँ प्राप्त कऽ ओहिकेँ प्रकाशित कएने छलथि। "बिहार पीजेन्ट लाइफ'क प्रकाशसनसँ पूर्व ओ सलहेसक गाथाक सूचना मात्र देने छलथि। जनरल कनिंघम सलहेसक सम्वन्ध दुसाधक राजा हरवा-बरवासँ जोडने छथि। बुकानन सेहो दुसाधक अन्य देवता राहु बाबाक चर्चा विस्तारसँ कएने छथि। हुनक अनुसार दुसाध जातिक लोकसभ सलहेसकेँ स्तुति आ स्मृति गीत गाबि कऽ गोहराबैत छथि। ग्रियर्सनक बाद डा. पूर्णानन्द दास सलहेसक सम्पूर्ण गाथा फुलचन्द दाससँ प्राप्त कऽ अपन शोध प्रबन्ध (मैथिली लोककाव्य, १९६२ ई.) मे विस्तारसँ विवेचना कएने छथि। डा. दास अपन आ ग्रियर्सनक पाठसबहक तुलना एहिप्रकार कएने छथि -"गाथाक वर्तमान रूप ग्रियर्सनद्वारा संकलन कएल पाठसँ आकारमे बडका अछि। ८० वर्षक अवधिमे गाथा गायकसभ घटनाक अतिरिक्त आकारमे सेहो परिवर्तन कएलनि अछि। ग्रियर्सनक पाठ सुखान्त अछि तऽ वर्तमान पाठ दुखान्त भऽ गेल अछि। पहिल पाठमे गाथा नायकक गुणगान प्रधान अछि जखन कि आधुनिक पाठमे गाथानायक

जातीय देवता बनि जाइत अछि। सम्भवत: सलहेसक देवत्वमण्डित करबालेल हुनकासँ अनेक अलौकिक काजसब सेहो कराओल गेल अछि।"

सलहेसक गाथाक दोसर सन्दर्भ डा. मोतीलाल यादव "लोकगाथा सलहेसका अध्ययन" (१९८१ ई.) नामक शोध प्रबन्धक माध्यमसँ प्रस्तुत कएने छथि। सलहेस गाथा विषयक अध्ययनक साधन-श्रोत, सलहेस गाथासँ सम्बद्ध ऐतिहासिक एवं अन्य स्थल, गाथाक कथावस्तु, गाथाक पात्र गाथाक लोकतात्विक विशिष्टता, गाथामे सामाजिक जीवन आ सलहेस गाथाक काव्य-भाषाकेँ डा. यादव संकलन कऽ तुलनात्मक अध्ययनक लेल अधिक उपयोगी बना देने छथि। डा. जयकान्त मिश्र (इन्ट्रोडक्शन टू दी फोक लिटरेचर अफ मिथिला, १९५० ई.) आ डा. तेजनारायण लाल (मैथिली लोकगीतौँका अध्ययन १९६२ ई.) क अध्ययनक आधार ग्रियर्सनक पाठसब अछि। प्रो. राधाकृष्ण चौधरी (मिथिला इन दी एज अफ विद्यापति, वाराणसी १९७६ ई) सलहेस नायकक सूचना मात्र देने अछि। मुदा पं. राजेश्वर झाक "लोकगाथा विवेचन " (पटना, १९७४ ई.)केँ पुरातात्विक दृष्टिसँ ऐतिहासिक महत्व प्राप्त अछि। एहिप्रकार सलहेसक कथापर आधारित उपन्यास नाटकक एवं महाकाव्यसबहक रचना भेल अछि। सलहेसक उच्चवर्गके स्वीकृतिमे मैथिली रचनाकारसभक अविस्मरणीय योगदान अछि।

सलहेसक लोकगाथाक कथापर केन्द्रित मैथिली उपन्यास राजा सलहेसके रचना डा. बज्रकिशोर वर्मा मणिपद्म १९७३ ई. मे कएने छलथि। मूलगाथामे सलहेसक प्रेमिका दौना मालिन अछि, जखन कि मणिपद्म ओहि स्थानपर कुसमाक नाम आँगा बढौने छथि। गाथामे रेसमाकेँ दौना मालिनक बहिनक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि तऽ उपन्यासमे रेसमाके चुहड़मलक प्रेमिकाक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। सलहेससँ सम्बन्धित कृतिसबहक चर्चा भऽ रहल समयमे ऋषभदेव शर्माक नेपाली उपन्यास "दीनाभद्री र सलहेसक" स्मरण सेहो अबैत अछि।

पं. राघवाचार्य शास्त्री सर्वप्रथम सलहेसपर केन्द्रित मैथिली महाकाव्यक रचना कएलन्हि जे एखनधरि अप्रकाशित अछि, मुदा डा. मणिमद्मक महाकाव्य "अनंग कुसमा" (कलकत्ता, १९९९ ई.) प्रकाशित अछि। एहि महाकाव्यमे सलहेसक अपेक्षाकृत कुसमाक महत्वकेँ अधिक शिद्ध करबाक प्रयास कएल गेल अछि। -"अङ्ग अछैत अनंग रहए तौँ, गे कुसमा कल्याणी।" एहिसँ पूर्व मतिनाथ मिश्रक मैथिली महाकाव्य "जय राजा सलहेस" प्रकाशित भऽ चुकल छल। कवि मिश्र हिन्दीमेँ लिखैत छथि " इस महाकाव्यका चरित्रनायक राजा सलहेस जयबर्द्धन है। इनके चरित की कथावस्तु डा. मणिपद्मद्वारा रचित कथाकाव्य "राजा सलहेस"पर आधारित है।

सलहेसक कथानकपर आधारित ३/४टा नाटकक उल्लेख होइछ। सबसँ पहिने बिरबल दासद्वारा रचित "श्री सुरमा सलहेस चरित नाटक" सलहेसक कथानकपर नाटकक सूचना प्राप्त होइत अछि। नाटकक भूमिकाक अनुसार ई नाटक सरल हिन्दी आ देहाती भाषामे लिखल गेल अछि। दोसर नाटक अछि "श्री सुरमा सलहेस नाटक" एकर लेखक छथि श्री राजगीर प्रसाद तथा श्री लक्ष्मीनारायण प्रसाद श्रीवास्तव। तेसर नाटक "राजा सलहेस" (पटना, १९९० ई.) के रचना श्री रोहिणीरमण कएने छथि। हिन्दीमे प्रकाशित एहि नाटकक पुस्तकमे ओ स्वीकार कएने छथि "स्व. मणिपद्म जी का हम आजीवन आभारी रहेंगे जिनकी पुस्तक की प्रेरणा से लोककथा को नाटक का स्वरूप देने का विचार मन मे आया।" चारिम डा. प्रफुल्लकुमार सिंह मौनक हिन्दी भाषाक रेडियो नाटक "सलहेस" (मेरे रेडियो नाटक, महनार, वैशाली, १९९० ई.) रहल अछि। डा. मौन आरम्भिकिमे लिखने छथि -" आज के सन्दर्भ मे सलहेस जैसे राष्ट्रभक्त, लोरिक जैसे लोक-कल्याण को समर्पित वीर एवं बसावन जैसे वीर और श्रृंगार को संतुलित करनेवाले चरित नायको की प्रस्तुति सान्दर्भिक ही मानी जाएगी।"एहि

साहित्यिक कृतिसबहक अतिरिक्त श्री कुणाल आ श्री श्याम भास्करद्वारा निर्देशित "सलहेस" नाटकक जानकारी सेहो प्राप्त होइछ।

अतः कहल जा सकैछ जे सलहेस विषयक अध्ययन-अनुसन्धानदिसि अग्रसर होबऽबलासभकें डा. ग्रियर्सनक आधारभूत पाठ प्राप्त भेल आ साहित्यिक कृति श्रृजनाक लेल प्रेरणा डा. मणिपद्मक "राजा सलहेससँ भेल। एहिप्रकार तीनू पाठक अतिरिक्त प्रसङ्ग गीतसँ सलहेसक सम्पूर्ण जीवन-गाथा रेखाङ्कित भऽ जाइछ। सलहेसक जन्मसँ पूर्वक वृतान्तसँ आरम्भ कऽ दौना मालिनकसँग प्रेमक चरणधरिक घटनाक्रम तैयार भऽ जाइछ।

डा. ग्रियर्सन, डा. दास आ डा. यादवक पाठसबमे समानता तथा असमानता दुनू पाओल जाइछ। इएह समानतासबहक आधारपर मूल कथावस्तुक निर्धारण कएल जा सकैत अछि।

(१) सलहेसक प्रति मोरंगक दौना मालिनक प्रेम आ विरह।

(२) पकडियाक राजाक राजदरबारमे चौकिदारक नोकरी।

(३) पकडियाक राजमहलमे चुहड़मलद्वारा रानीक हार चोरी।

(४) चोरीक परिणामस्वरूप सलहेसके जेल सजाय।

(५) दौना मालिनक वचनबद्धताकबाद सलहेस जेलमुक्त

(६) सलहेस आ दौनाद्वारा नट-नाटिनके भेष धऽ कऽ मोकामा अभियानमे।

(७) मोकामामे छल-वलसँ आभूषणसहित चुहड़मलक गिरफ्तारी, राजालगमे चुहड़क समर्पण आ सलहेसक अपराध मुक्ति।

एहि समानतासबहक अतिरिक्त निम्न विषमता सेहो पाओल जाइत अछि।

(१) प्रथम दू पाठमे पकडियाक राजाक नाम भीमसेन (केवलागढ) अछि। जखन कि डा. यादवक लेखमे पकडियाक राजाकें कुलेश्वर कहल गेल अछि।

चन्द्रावती कुलेश्वरक बेटी छलीह जे सलहेससँ प्रेम करैत छलीह। मुदा सलहेसद्वारा अस्वीकार कएलाक बाद हुनका राजदरबारक पहरेदारीमे लगाओल जाइछ। एहिप्रकार चन्द्रावती अपन अपमानक बदला लैत अछि। एहिना डा. पूर्णानन्द दासक लेखमे चन्द्रावतीकें केवलागढक राजा भीमसेनक रानी वताओल गेल अछि जखन कि ग्रियर्सनक लेखमे भीमसेनक रानीक नाम हँसावती कहल गेल अछि।

(२) नवसङ्कलित पाठसबमे चन्द्रावतीक अङ्गरक्षक चुहड़मल अछि। सलहेसक नियुक्तिकबाद चुहड़क रोजीरोटी मरलाक कारण राजभवनसँ गहनाक चोरी कऽ चन्द्रावती, कुलेश्वर आ सलहेससँ बदला लैछ। मुदा डा. ग्रियर्सनक अनुसार सामर्थ्यक परीक्षा लेबाक लेल चोरी करैछ।

एहिप्रकार तीनू लेखमे किछु भिन्नता सेहो रहल स्पष्ट होइछ। मुदा डा. ग्रियर्सनक लेख मूल गाथाक अधिक निकट अछि जखन कि परिवर्तित लेखसबमे नवीन बातसब सेहो उल्लेख कएल गेल अछि। सलहेससँ सम्बद्ध घटनास्थल एवं स्मृतिस्थल गढ महिसौथासँ मोकामाधरि आइयो विद्यमान अछि।

सलहेसक गाथामे लोकतत्व प्रचूर मात्रामे उपलब्ध अछि। लोकतत्वअन्तर्गत जादु-टोनाक प्रयोग आ ओकर प्रभाव, लोकविश्वास, लोकाचार, चमत्कारी घटनाक्रम आदि अछि। एहि गाथामे आलोच्य बातसब सेहो अछि जेना कि कट्टर वर्णव्यवस्था, सामन्तवादी प्रभाव, प्रशासनिक अव्यवस्था, नारीक दयनीय स्थिति, धार्मिक अन्धविश्वास आदि।

उच्चवर्गक जातिसभमे वैदिक आ पौराणिक देवी-देवतासभकें पूजा-अर्चना होइत छल तऽ निम्नवर्गसभमे लोकदेवी-देवतासभकें। असावरी देवी, सलहेस, दौना मालिन आ चुहड़मलके समान रूपसँ पूजा कएल जाइछ। दोना मालिनकें शक्तिसम्पन्न देवीक आराधना कुलदेवीक रूपमे कएल जाइछ।

आलोच्य गाथामे काव्य-तत्व सहजहिँ देखल जा सकैत अछि। एहि दृष्टिसँ एहिमे श्रृङ्गार अङ्गी रस पाओल जाइत अछि। अन्य रससबमे वीर आ अद्भूत प्रमुख अछि। तथापि हास्य, रौद्र, भयानक, करूण आ वात्सल्यक सेहो अस्तित्व अछि। मुदा शान्त रसक पूर्णरूपेण अभाव अछि। एहिमे अलङ्कारसबहक सटीक प्रयोग अछि। मुदा छन्दक अभाव अछि। गाथाकेँ छन्दक लहर कहल जाइछ। एकर गायन मृदङ्गकसाथ कएल जाइछ। तएँ तालकेँ नकारल नहि जा सकैत अछि। गाथाक भाषा ग्राम्य अछि जेकर स्वरूप तद्भूत आ देशी शब्दसबसँ गठित भेल अछि। सभ्य समाज जकरा अश्लिल आ गारिगलौज बुझैत अछि गाथामे ओहन सामग्रीक प्रचूरमात्रामे प्रयोग भेल अछि।

डा. प्रफुल्लकुमार सिंह मौनक शब्दमे कही तऽ -"मिथिला वैशाली और मोरंग के दुसाधों मे लोकपूजित राजा सलहेस को उत्तरी सिमान्त (नेपाल-भारत) का सांस्कृतिक प्रहरी कहा गया है।" शीलशक्ति आ सौन्दर्यसँ विभूषित, मोरंगक जनसमुदायकेँ पराक्रमी पुरूष, मैथिलीक गाथा-नायक तथा लोक देवत्वक कारण राजाक उपमासँ प्रख्यात सलहेसकेँ लोक-पूजाक क्षेत्र व्यापक अछि। अपन उत्कर्षक समयमे ओ मिथिलाकेँ किरात आक्रमणसँ बचा कऽ देश प्रेमक भावना व्यक्त कएने छथि। हिनकर शौर्य-सौन्दर्यसँ कुसमा-दौना मालिन आकर्षित आ समर्पित छलीह। मुदा ओ लौकिक प्रेमक स्थानपर देश प्रेमक आदर्श रखने छथि। सङ्कटक अवस्थामे आइयो वन आ पहाडक लोक सलहेसकेँ गोहराबैत छथि।

(साभार:राजासलहेस:साहित्य और संस्कसति।सं. डा. मौन,डा. नीरज।मुजफ्फरपुर।)

मैथिली अनुवाद, विनीत ठाकुर

f f f



सलहेसक अंगरक्षक केवला किरांत

लोक-देवता राजा सलहेस

१ डा. मेघनप्रसाद

सांस्कृतिक जनपदक हँसी-खुशी सुख-समृद्धी, रोग-शोक, दु:ख-दारिद्रय आदिमे हमरासभक लोक देवताक महत्वपूर्ण भूमिका रहल अछि। श्रद्धा या भयसँ देवताक श्रेणीमे प्रतिष्ठित एहि देवी-देवतासभक प्रति लोकक आस्था जतेक मजगुत हएत, हुनक देवता ओतबए दीप्त हेताह आ हुनक महिमा ओतबए व्यापक हएत। मिथिलामे एहन देवी-देवतासभक कोनो कमी नहि अछि।

लोक-गीत, गाथा, कथा, नाच आदिमे हिनकरसभक स्वरूप, शौर्य-पराक्रम, चमत्कार, कृपाशीलता लोककल्याणक भावना आदिसँ आवेष्ठित व्यक्तित्वक कारण हिनकासभकेँ लोकक अपार श्रद्धा प्राप्त अछि। लोकदेवी-देवतासभमे जाधरि लोक-आस्था जीवित अछि ताधरि ओसभ जीवित रहताह। लोक देवी-देवतासभसँ सम्बद्ध गहबर, गीत-सङ्गीत, गाथा-गायन, मूर्ति-चित्र, नाच आदि लोककलाक अस्तित्व लोकक श्रद्धासँ जीवित रहैत अछि। जनकल्याणक लेल जेसभ अपनाकेँ समर्पित कऽ देलन्हि ओसभ लोक-देवताक रूपमे लाखोक श्रद्धा आ भक्तिक केन्द्र तथा लोक-संस्कृतिक प्रतीक बनिगेलाह अछि। समय जिनकर स्मृतिकेँ बचा कऽ रखने अछि, संस्कृति जिनकर माध्यमसँ अपन विकास कएने अछि, जन-जन जिनका भजन-किर्तन आ पूजा-पाठक परम्परा प्रदान कएने अछि, ओ लोकदेवतासभ मिथिलाञ्चलक इतिहासक अपरिहार्य आ लोकसंस्कृतिक महत्वपूर्ण अध्याय बनिगेल अछि।

सलहेसक गाथा मिथिलाक अपन गाथा अछि। मिथिलाक गामसबमे सलहेसक गहवरमे पूजाक सामग्री सबसाग माटिक घोडा चढाओल जाइत अछि। हाथी आ घोडा सलहेसक प्रिय बाहन अछि। हाथी ऐश्वर्य, शक्ति आ गम्भीर्यके प्रतीक अछि त घोडा तेज, स्फूर्ति आ गतिशीलताक प्रतीक अछि।

लोक-गाथा वस्तुत: दीर्घ आख्यानपर आधारित चम्पुकाव्य अछि। मिथिलामे एहन गाथासबहक कोनो कमी नहि अछि। मिथिलामे दू प्रकारक गाथासब लोक प्रचलित अछि। पहिल ओ जे मात्र मिथिलामे प्रचलित अछि दोसर ओ जे मिथिलासँ बाहर भोजपुरा, मगध, अङ्ग, बङ्ग आदि क्षेत्रमे सेहो देखल गेल अछि। सलहेसक गाथा मिथिलाक अपन गाथा अछि। मिथिलाक गामसबमे सलहेसक गहवरमे पूजाक सामग्री सबसँग माटिक घोडा चढाओल जाइत अछि। हाथी आ घोडा सलहेसक प्रिय बाहन अछि। हाथी ऐश्वर्य, शक्ति आ गम्भीर्यके प्रतीक अछि तऽ घोडा तेज, स्फूर्ति आ गतिशीलताक प्रतीक अछि।

किछु अपवादकेँ छोड़ि देल जाए तऽ मिथिलाञ्लक अधिकांश लोकदेवता कथित निचला वर्गसँ नायकत्व ग्रहण कऽ देवत्वक श्रेणीमे प्रतिष्ठित छथि। सलहेस दुसाध जातिक लोकदेवता छथि। हिनक पूजा करऽबला मुख्यत: दुसाध जाति रहैत अछि मुदा सलहेसक गाथा अन्य जातिक लोक सेहो गाएल करैत छथि। सलहेसक गाथा सम्बन्धमे सर्वप्रथम जर्ज ग्रियर्सन "मैथिली क्रेस्टोमैथी" (१८८२ई.)मे सभक ध्यान आकृष्ट कएने छलथि। एहिक आधारपर डा. मणिपद्म "राजा सलहेस" (१९६९/१९७३) नामक उपन्यास आ "अनंग कुसमा" नामक महाकाव्यक रचना कएलनि। महाप्राण सलहेस, लोक-महागाथाक अध्ययन, मैथिली गाथा-गीतक इतिहास आ अनेक लेखमे हुनक सलहेस चिन्तन स्पष्ट

होइत अछि। एहि अतिरिक्त सलहेसविषयक प्रकाशित पुस्तक तथा लेखादिक आधार अछि सलहेसक महागाथाक गायन, पूजापाठ एवं नृत्य-नाट्य परम्परा।

भारतीय इतिहासमे गुप्तकालके अभिजनवादी दृष्टिसँ स्वर्णयुग मानल गेल अछि। जखन कि एहिसँ पहिने मनु आ कौटिल्य जेहन महान विचारक उदय भऽ चुकल छल। ओ सब ब्राह्मणवादी दृष्टिसँ समाजकेँ देखलन्हि आ ओहिकेँ नियमित, नियन्त्रित आ अनुशासित करबाक लेल आचारसंहितासबहक रचना कएलनि। कहबाक तात्पर्य ब्राह्मणवादी दृष्टि ओहि समयमे चरमपर छल। द्विजसभक वर्चस्व आक्रामक अवस्थामे पहुँचिचुकल छल। ओसभ अपन सामान्य जीवन-प्रणाली आ देवी-देवतासभकेँ अलग कऽ लेने छलथि। विष्णु, राम, कृष्ण आदि हुनक देवता छलाह। अन्य जातिक लेल हिनकरसभक पूजा तथा मन्दिर प्रवेशमे निषेध कएल गेल छल। गुप्तोत्तर कालक राजनैतिक अस्थिरताक स्थितिमे वर्णवादी व्यवस्थाक प्रतिक्रियास्वरूप शुद्रसभ सेहो अपन देवी-देवतासभक खोज कएलन्हि। जाहिप्रकार अभिजात्य व्यक्तिसभ राम, कृष्ण आदिक व्यक्ति पूजा वीर पूजाक रूपमे करैत छलथि ठीक ओहिप्रकारे शुद्रसभ सेहो सलहेस, लोरिक, दीनाभद्री, कारू खिरहरि, बसावन, ज्योति बाबा, बेनिराम आदि वीर पुरूषसभक खोजी करबामे सफल रहल। एहिप्रकारे जातीय परिवेशमे एहि लोकदेवतासभक उदय भेल। लोकदेवतासभक एहि लोकमान्यतासँ वर्णवादी व्यवस्थापर किछु धक्का लागल। कालान्तरमे जा कऽ उच्चवर्ग आ लोकवर्गमे सन्धि भेल तत्पश्चात दुनू वर्ग एक दोसरक देवी-देवतासभक अनौपचारिक मान्यता प्रदान करैत समाजकेँ टूटऽसँ रक्षा कएने छल।

सलहेसक गाथाकेँ प्रस्तुत करबाक पहिल श्रेय डा. जर्ज ग्रियर्सनकेँ जाइत अछि। ग्रियर्सनक अनुसार सलहेस केबलागढक राजा भीमसेनक चौकिदार छलथि। हिनके कार्यकालमे भीमसेनक रानी हँसावतीक नौलखा हारक चोरी भेल छल। फलस्वरूप चौकिदार सलहेसकेँ दण्डित कएल गेल। मुदा हुनक प्रेमिका दौना मालिनक प्रयाससँ सलहेस मोकामाक महाचोर चुहड़मलसँ भीषण संघर्ष कऽ नौलखा हारसहित ओकरा राजा भीमसेनसमक्ष प्रस्तुत कएलनि। जाहिकबाद सलहेसकेँ दण्डमुक्त कएल गेल। मुदा डा. मणिमझद्वारा रचित “राजा सलहेस” आ “अनंग कुसमा” तथा पं. राजेश्वर झाद्वारा रचित “लोकगाथा विवेचन”क गाथाभूमि तथा ओहि विषयक रचनासबमे कथाभूमिक सम्बन्धमे भिन्नता देखल जाइत अछि।

सलहेसक गाथा मौखिक रूपसँ प्रचलित अछि। तएँ स्थान आ निरन्तर स्थानान्तरण भेदक कारण एहि विषयमे भिन्नता स्वभाविक अछि। डा. ग्रियर्सनकबाद डा. मणिपद्मके सलहेस विषयक लेखन सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। “राजा सलहेस” आ “अनंग कुसमा”क कथावस्तु डा. ग्रियर्सनक लेखक कथावस्तुसँ किछु विषयमे मात्र भिन्न पाओल गेल अछि। मणिपद्मक अनुसार राजा सलहेक जन्म नेपालक तराईक सिरहा जिलाक लहानसँ दू माइल दूर परिश्चममे महिसरहो (महिसौथा) गाममे पाँचम-छठम शताब्दिमे भेल छल। हिनक पिता भैरव भुपाल सामन्त छला आ मायक नाम मदोदरि छलन्हि। सलहेस तीन भाए एक बहिन छलथि। हिनक भाएसभक नाम बुधेसर आ मोतीलाल छल। हिनकर एक मात्र बहिनक नाम वनसुप्ती छल। तहिना सलहेसक भगिना करिकान्ह सरदार छलथि। सलहेस वाल्यवस्थामे सोलह विघाक फूलबाड़ीमे माता दुर्गाक पूजा नित दिन करैत छलाह। एहिसँ स्पष्ट अछि जे ओ बच्चेसँ धार्मिक प्रवृत्तिक छलथि। जाहिक प्रभाव हुनक देह सौष्ठवपर पड़ल आ दैहिक सौन्दर्यता क्रमशः निखरऽ लागल।

राजा सलहेसक राज्य वीहड वनप्रान्तमे अवस्थित छल। यातायातक अभाव तथा शक्तिसम्पन्न आधिपत्यक अभावमे एक-दूटा गामपर अधिकार जमा कऽ लोकसभ सामन्त बनैत छल जे वर्चस्वक लेल सदिखन लड़ैत छल। एहन अवस्थामे मिथिलाञ्चलमे चारूदिसि चोर, डाकु, तस्कर आदि अपराधकर्मीसभक प्रभुत्व आ हिंसक वन्यजन्तुक आतङ्क पसरल छल। फलस्परूप एहि ठामक

जनजीवन अस्तव्यस्त बनल छल। एहन विकट, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आ सांस्कृतिक परिस्थितिमे राजा सलहेसक उदय भेल छल। सलहेस प्रजारक्षक, धर्मरक्षक, सामाजिक समरसताक उद्भावक आ राष्ट्रिय भावनाक पृष्ठपोषक छलथि। गाथामे सलहेस कहने छथि -

हम तँ सब दिन निर्बलकेर मदतिलए शस्त्र उठेलौँ।
जाति-पातिक भेदभावके सबठाँ जाए मेटेलौँ॥
सबठाँ सुलह करैलौँ,
तेँ सलहेस नाम हम पैलौँ।

समकालीन वातावरणमे सलहेसक बाबू जखन चोरी कऽ जीवनयापनक व्यवस्थाक निर्देशन देलनि तखन जा कऽ सलहेसक विरोधक स्वर फुटऽ लागल -

नइ-नइ एहन काज जीवनमे हम नइ कऽ पएबै।
चोरी सीखि कऽ आ दुसाधक हम नइ नाम हँसेबै॥

राजा सलहेस असामाजिक तत्वसबहक विरोधक अभियान आरम्भ कएलनि। ओ सर्वप्रथम चोरी डकैती आ तस्करीसन अपराधी क्रियाकलापकेँ उन्मूलन करबाक काजकेँ प्राथमिकता प्रदान कएलनि। एहिक प्रतिक्रियामे मामा चुहड़मल सलहेसक घोर शत्रु बनि गेल। “राजा सलहेस” (नाटक)मे चुहड़मल अपनाकेँ एहिप्रकार परिचित करबैत अछि -

अपन चोरी विद्या-बलसँ पुजबइ छी सबठाम।
हम महकमा मग्गहकेँ, चौहरी मल्ल हमर नाम॥
टाल बहडिया हम उपजैलौँ, नगर मोकामा हम बसैलौँ।
घाटबाटपर कब्जा कएलौँ, चोरीक बलसँ सबटा पैलौँ॥

सलहेसक समयमे नेपालक मोरंगक राजा छलथि हिरपति माली। राजाक सातटा बेटी छलन्हि। सातो बहिन सब दिन फूल तोडऽ जाइत छलीह। सलहेसक व्यक्तित्व देखि कऽ ओसभ सलहेसप्रति आकर्षित होबऽ लगलथि। ओसभ माता दुर्गासँ सलहेससँ मिलनक वरदान प्राप्त कऽ लेलथि। कुसमा बरेवा पोखरिपर सलहेसक हाथमे सिन्दूर दैत विवाहक प्रस्ताव कएलनि। मुदा हिनक एहि प्रस्तावकेँ सलहेस अस्वीकार कएलनि।

कुसमा-कुसमा करू एना नइ हमर मनपर चोट।
हम अपन की हाल कहू जे होइये कतेक कचोट॥

तखन कुसमा भाव विह्वल भऽ कहैत छथि

“तखन किए नइ प्रणय सूत्रमे बान्हि लैत छी।
किए वियोगक आगिमे जरबै छी।”

ओम्हर सलहेस आजीवन ब्रह्मचर्यक ब्रत लेने छलाह। तएँ सिन्दुर फेँकि कऽ ओहि ठामसँ ओ पलायन भऽ जाइत छथि। ओहिक बाद सलहेस कञ्चनगढक राजा कुलेश्वरक बेटी चन्द्रावतीक सुरक्षामे राजदरबाक नोकरीमे रहऽ लगलथि। तथापि कुसमा नटिनक भेषमे सलहेसके समय-समयपर सहयोग कएलनि।

उतरहि राजसँ एलै एक नटिनिया रे जान।
जान बैसि रे गेलै नगर मोकामा रे जान॥
छलियै मालिन भेलियै नटिनिया रे जान॥॥

राजा सलहेसक कथाकेँ रोचकता प्रदान करबाक लेल हुनक शौर्य प्रदर्शनक सँगहि प्रेम प्रसङ्गक सेहो चर्चा कएल जाइत अछि। सलहेसक संघर्षमय जीवनकेँ उज्जवलमय बनाबऽमे कुसमा मालिनके बहुत बडका हाथ अछि। सातो बहिनमे सबसँ छोट बहिन कुसमा अत्यन्त

रूपवती, कुशाग्र बुद्धि एवं कोमल अङ्गक धनी छलीह। कुसमा नृत्य-गीतादिमे तथा धर्मबुद्धिमे निपूण भेलाक सँग-सँगे जडीबुटीक दबाइऽक गुण, योग-टोन आदिमे पारङ्गत सिद्ध योगीनीक रूपमे प्रख्यात छलीह। एहि अतिरिक्त हिनकामे समस्त जीवकप्रति करूणाभाव रहैत छल। कुसमा सलहेसकेँ शिवस्वरूप आ अपनाके शिवशक्तिक रूपमे मानैत छलीह। कुसमाक कठोर वचनपर सलहेस कहैत छथि:

कुसमा-कुसमा ! एहन कथा अहाँ किए बजै छी ?
पाथरधरिमे पानि रहै छै, से तऽ अहाँ बुझै छी ॥
अहाँ आब चम्पावन जा कऽ लोकक रोगके हरबै ।
कुसमा, मरियो कऽ हम अहाँसँ कात नै हेबै ॥

मैथिलीक रचनाकारसभ सलहेसक प्रसङ्गमे लिखैत समय मणिपद्मक "राजा सलहेस" के आधार मानने छथि। एकहि जाति-कुलमे अपन गुण-गरिमासँ जाहिठाम राजा सलहेस लोकदेवताक रूपमे विश्वप्रसिद्ध भेलथि। ठीक ओहिठाम चुहड़मल चोरक रूपमे प्रख्यात छलथि। आइकाल्हि जातीय उत्कर्षक कारण मोकामामे चोर चुहड़के पूजा कएल जाइत अछि तऽ मिथिलामे सलहेसक पूजा विधि-विधानपूर्वक कएल जाइत अछि। भाला दुनूक मुख्य शस्त्र अछि। सलहेस मात्र दुसाधमे पूजीत नहि भऽ अपितु मिथिलाक अधिकांश जातिमे लोकपूजित छथि।

केओ पिपर गाछक निचा गहबरमे राजा सलहेसक गजारूढ (हाथीपर सवार) मूर्तिक पूजा करैत छथि तऽ केओ अश्वारोही (घोडापर सवार) मूर्तिक पूजा कएल करैत छथि। केओ शिवभक्ति सलसेहक पूजा विषहराक जनक शिवके जीवित साँपक प्रतीकक रूपमे पूजा कएल करैत छथि तऽ केओ कोहबर घरमे चित्रित नागक पूजा करैत छथि। दुःसाध्य काज करऽमे निपूर्ण मिथिलाक संघर्षशील जाति दुसाध सलहेस आ साँप दुनूक पूजा करैत अछि, जखन कि उच्च वर्गक जातिक मैथिलसभ सेहो सलहेस थानमे माटिक घोडा चढा कऽ कोहबरमे साँपकेँ चित्रित कऽ सलहेसक पूजा करैत छथि। हिनकर विरोध करबाक मानसिकता कोनो मैथिलमे नहि अछि।

सलहेस व्यक्तिरूपमे "राजा" उपनाम पौने छलथि। अपन प्रखर व्यक्तित्व कारण ओ "राजा सलहेस"क नामसँ प्रख्यात भेलथि। दुसाध जाति जखन अपन देवताक अस्तित्वक अलग स्थापित करबाक प्रक्रियामे छल। फलस्वरूप लोकसँ उद्‌भुत नायक परलौकिक बनि गेलथि। हुनक प्रेमिका कुसमाक तन्त्र-मन्त्र आ सिद्धि-साधनाक अलौकिक शक्ति विश्व विख्यात बनाओल गेल। जाहिसँ हुनका देवरूप अर्धांगिनी बनाओल जा सकए। एहिप्रकार सलहेसक कथाक संयोजन अर्थपूर्ण आ मार्मिक दुनू अछि। इएह विशेषताक कारण सलहेस आ कुसमा कालान्तरमे जाति विशेषसँ उपर उठि कऽ सम्पूर्ण मिथिलाञ्चलमे पूजित भऽ गेलथि। एहिप्रकार लोकदेवी-देवतासभ सामाजिक आ सांस्कृतिक एकताक प्रतीक बनिगेल छथि।

गाथामे जेना सलहेसद्वारा सामाजिक एकता बना कऽ रखबाक प्रयास कएल गेल छल। एहन स्थितिमे समाज आइयो अछि। निम्नवर्गक लोक जाहिठाम विषाक्त जातीय उन्मादक वातावरणमे बरहम अर्थात ब्राह्मण देवताक पूजैत अछि तऽ ओहिठाम उच्चवर्गीय मानसिकतासँ ग्रस्त मैथिल समाज निम्नजातीय सलहेस आ नागक पूजाकेँ स्वीकार कऽ सामाजिक एकता बना कऽ रखने अछि।

प्रो. राधाकृष्ण चौधरी "मिथिला इन द एज अफ विद्यापति"मे उल्लेखित मिथिलाक गामसबमे लोकभाषाक प्रवेश, मैथिली साहित्यक इतिहास आदि विषयक प्रसङ्गमे सलहेस, सलहेस नाच, सलहेस पूजा आदिक सन्दर्भ स्पष्ट अछि जाहिसँ ब्रिटिश शासनसँ पूर्व मिथिलामे सामाजिक एकता बनल छल से बात स्पष्ट होइत अछि। प्रो. चौधरीक निम्निलिखित कथन महत्वपूर्ण अछि :- "गुण चरित्र आ

उच्च मानसिकताक निम्नजातीय शुद्ध, घटिया चरित्र आ हीन मानसिकतावला ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा वैश्यसभसँ उत्तम मानल गेल अछि ।

पालयुगमे मिथिला सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आ सांस्कृतिक सङ्कटसँ जुझिरहल छल । सलहेससँ पूर्व आ परवर्ती युगमे शुद्र ई मानऽ लेल विवश छलथि जे ब्राह्मण शुद्रसँ श्रेष्ठ अछि । ब्राह्मण सुसंस्कृत अछि, देवभाषा (संस्कृत) बजैत अछि इएह कारण ब्राह्मणकेँ शुद्रसभ पूजैत छल । मुदा सलहेसक समयमे अवैत-अवैत ब्राह्मणसभकेँ सेहो जीवनयापनक लेल कृषि आ वाणिज्यकेँ स्वीकार करब अपरिहार्य भऽ गेल । देवभाषा (संस्कृति) छोडि कऽ ओसभ आब लोकभाषा अर्थात "देसिल वयना" दिस उन्मुख भेलथि । एम्हर शुद्रसभक आर्थिक आ मानसिक स्तरमे सुधार होइत गेल । चौकिदारी करऽवला जाति आब स्वयं राज्य करबाक अवस्थामे पहुँचगेल अछि ।

अपन पराक्रमसँ गजवाहिनी, अश्ववाहिनी आ पदातिसेनाके सङ्गठित कऽ देशद्रोही तथा आततायी (अत्याचारी) राजापर आक्रमण कऽ प्रजाकेँ ओकरासँ मुक्ति दिआबऽमे समर्थ भऽ गेलथि ओसभ । जातीय चेतनाक उदय भेलाकबाद शुद्रसभक मानसिक शुद्धी होबऽय लागल आ ओसभ आदर सत्कार पाबऽ लगलथि । प्रो. चौधरीक अनुसार सलहेसक समय अवैत-अवैत कएक स्थानपर शुद्र राजा छलथि । इएह कारण ई स्वभाविक छल जे मिथिलाक प्रजा लौकिक परलौकिक देवतामे अन्तर बुझऽ लागल । एहि ठामसँ मिथिलामे लोकदेवतासभक पूजा करबाक परम्परा आरम्भ भेल छल । अपन आवश्यकताअनुसार शुद्रसभ सेहो वीर पूजाक लेल लोकदेवता चुनलथि आ हुनके पुजऽ लगलथि । ओसभ अपन भाषामे हुनकरसभक गीत-गाथा गाबऽ लगलथि ।

सभ केओके बुझले अछि जे वैदिक देवता सूर्य, पृथ्वी, वरूण आदि वस्तुतः प्राकृतिक उपादान अछि । हिनकरसभक उपयोगिकताक चलते हिनकासभक प्रति आदर-भाव सभकेओमे अछि । जाहिक कारण ओसभ देवत्वक श्रेणीमे प्रतिष्ठित भेलथि । मुदा वर्णवादी व्यवस्थाक अनुसार ई वैदिक देवतासभ आर्य देवता बनि कऽ उच्च जातिमे सीमित रहि गेलथि । तथापि लोकसभमे हिनकासभप्रति समानान्तरता पूर्वबत बनल रहल । सलहेस आदिक पुजऽवला सामान्य लोकसभ शिव, दुर्गा, काली आदि देवी-देवतासभकेँ सेहो पूजा करबाक परम्परा बनौलथि । इतिहास साक्षी अछि जे सलहेस शिवभक्त छलथि । सलहेसकेँ अपन आदर्श मानऽवला व्यक्तिसभ हुनक शौर्य-पराक्रम, प्रजावत्सलता, राष्ट्रियताकेँ स्वीकार मात्रे नहि कएलथि कि ओहिकेँ संरक्षण आ सम्बर्द्धन सेहो कएलथि ।

आजुक एक्कइसम शताब्दिमे साँप जेहन खतरनाक आ आक्रामक जीवकेँ वशीभूत करबाक पराक्रम, नागपूजाक परम्परा आदिक आगाँ बढाबऽमे सलहेसक वंशज दुसाधसभक भूमिका महत्वपूर्ण रहल अछि । दुसाधसभक ई काज पर्यावरण रक्षाक दृष्टिसँ महत्वपूर्ण मानल जा सकैत अछि । जे लोककेँ दुस्साहसिक लोक मनोरञ्जन सेहो करबैत अछि ।

मुदा सलहेसक समयमे उच्च वर्गक मानसिकता ओतेक उदार नहि छल । नहि तऽ ओहि समयमे सामाजिक एकताक प्रयास भेल । ब्राह्मणद्वारा शास्त्र आ पुराणसबमे निहीत वर्ण-व्यवस्थाक अनुपालन होइत रहल । मुदा तैयो राजा सलहेससन अन्य जातिक लोकदेवताक पूजाक केओ विरोध नहि कएलनि । कहल तऽ एतऽधरि जाइछ जाहि प्रकार हुनकासभकेँ शुद्रसभक काज आ भाषा-संस्कृतिसँ कोनो परहेज नहि छल ठीक ओहिप्रकार ओसभ लोकदेवतासभक पूजासँ अपनाके अलग नहि कऽ सकलथि । दुसाधसभक लोकधूनपर बनल गीत-सङ्गीत आ चमत्कारी काज देखऽ तथा देसिल वयनाक माधुर्यक रसास्वादन करऽ ओसभ बाध्य भऽ गेलथि । कालान्तरमे जा निष्ट-अनिष्टक डरसँ लोकदेवतासभकेँ पूजऽ लगलथि मुदा तैयो हिनकासभमे अपन पहिल संस्कार प्रभावी रहल । ओसभ राजा सलहेसकेँ पूजा नहि कऽ हुनक घोडाकेँ पूजा कऽ प्रसन्न करऽ लगलथि ।

दुसाध अपने गाममे पिपर गाछक निचा या वरक गाछक निचा सलहेसक गहवर बना क› हुनक पूजा करबाक परम्परा बनौलनि। गामक कुम्हारद्वारा बनाओल माटिक घोडा, या बरहीद्वारा बनल काठक घोडा सलहेसकेँ चढाओल जाइत अछि। आइकाल्हि मिथिलाञ्चलक गामघरमे एहन श्रद्धालुसभक कोनो कमी नहि अछि जे विवाह अथवा माङ्गलिक अवसरपर सलहेसक गहवरमे पूजा करैत छथि, माटिक घोड़ा अर्पित करैत छथि। अत: जातीय विभेदक संक्रमणकालीन स्थितिमे भलहि सलहेस जेहन लोकदेवताक उदय जातीय परिवेशमे भेल हुए मुदा लोक-आस्थाक व्यापकताक कारण आइ ओ सर्वजातीय देवताक रूपमे लोकमान्य आ लोकपूजित छथि। आब एहिकेँ जातीय सीमामे बान्हि क› नहि राखल जा सकैत अछि।

(साभार:राजासलहेस:साहित्य और संस्कसति।सं. डा. मौन,डा. नीरज।मुजफ्फरपुर।)

मैथिली अनुवाद
विनीत ठाकुर

f f f

सलहेस नाचक सुमिरन

'सुमिरन सुमिरन सुमिरन करै छी
छप्पन कोटिदेव के हृदयमे जपै छी ए।

पूरब - पुरबे सुमिरनबा हे माता उगला सुरुज के ए,
पुरबेके राजा लगैअ उगला सुरुज ने ए।
हुनकोके चढइअ माता दूधके ढार ने ए,
हुनको चरणमे हे माता, सिरमा नबबई छी।

पश्चिम- पश्चिममे सुमिरनमा करै छी मीरा सुलतानके,
पश्चिमके राजा लगैअ मीरा सुल्तान ने ए,
हुनको चढौना हे माता मृगा वलिदान ने ए।
हुनको चरणमे माता सिरमा नबबई छी ए।

उत्तर - उत्तरे सुमिरनमा करै छी पाँचो पाण्डव भीम के ए,
उत्तरेके राजा लगैअ पाँचो पाण्डब भीम ने ए।
हुनको चढइअ हे माता पाँचो पकवनमा ने ए।
हुनको चरणमे हे माता सिरमा नबबई छी ए।

दक्षिण- दक्षिणे सुमिरनमा करै छी गङ्गा हनुमानके,
दक्षिणेके राजा लगइअ गङ्गा हनुमान ए,
हुनको चढइअ हे माता बीचे धार गेरुआ ए,
हुनको चरणमे हे माता सिरमा नबबइ छी ए।

डीह चढ़ि सुमिरनमा करै छी बाबा डीहबारके,
हुनको चढइअ हे माता जोडा जनेउ ए।
नगर पैसि सुमिरनमा करै छी तेलिया मसान हे,
हुनको चरणमे सिरमा नबबइ छी
सभाके मान माता दुर्गा अहाँ रखिऔ हे,
तोहरे भरोसे हे माता दुनियाँमे घुमै छी ... ।'

(एही अंकमे संकलित आलेखसं)

लोक-नायक सलहेस

२ रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

दुसाध जातिसभद्वारा कुलदेवताक रुपमे पूजित सलहेस आजुक समयमे समस्त जाति, वर्ग ओ समुदायबीच समान रुपमे पूजित एवं सम्मानित लोकदेवता बनिगेल छथि। सामान्य जननायकसँ राजातक बनल सलहेसक गाथा लोककण्ठ होइत आइ सऔँ वर्षसँ मिथिलाञ्चलमे प्रचलित अछि। एखनो मिथिलाक्षेत्रमे तीन दर्जनसँ अधिक छोट-नमहर लोकगाथासब प्रचलनमे अछि, मुदा सलहेस गाथा एहिसबमे सबसँ पैघ, लोकप्रिय, ओज ओ पराक्रमसँ भरल अछि। एहिसँ ई लोकगाथा गायन, नृत्य ओ नौटंकीसबहक माध्यमद्वारा मिथिलाञ्चलमे जीवित रहल अछि।

लोकगाथाक समय अन्य गाथाजकाँ यकिन नहि कएल जा सकैछ। एहि क्षेत्रमे १८८१ ई.दिसि जार्ज ग्रियर्सन 'मैथिली क्रिस्टोमैथी'मे सर्वप्रथम सलहेस ओ हुनक कथानकसँगे गाथा-गीतक प्रस्तुति कएलनि। ततपश्चात अनेकहुँ विद्वानलोकनि एहिदिसि काज करऽ लगलाह आ नव-नव अवधारणाक जन्म होइत गेलैक। जाहिमे सर्वमान्य डा. ब्रजकिशोर बर्मा 'मणिपद्म', डा. प्रफुल्लकुमार सिंह मौन, डा. जयकान्त मिश्र, डा. योगानन्द झा, प्रो. राधाकृष्ण चौधरी, डा. पुर्णानन्द दास, डा. तेजनारायण लाल, डा. रामदेव झा, डा. मोतीलाल यादव प्रमुख छथि।

> **...सुमिरन अर्थात स्मरण कोनो गाथाक पहिल आवश्यकता देखलगेल अछि। जखन एहन गाथासबहक गायन अथवा प्रदर्शन प्रारम्भ कएल जाइछ, तखन विभिन्न देवीदेवतासभक स्तुति ओ स्मरण अनिवार्य अछि।**

तथापि लोकगाथाक समयक सँम्बन्धमे डा. 'मणिपद्म' तत्कालीन सामाजिक अवस्था, जादु-टोना, विधिव्यवस्था आदि ओ तत्कालीन भौगोलिक अवस्थाकेँ दृष्टिगत करैत एकरा पाँचम-छठम शताब्दिक भेल प्रमाणित केने छथि जकरा तत्काल अस्वीकार करवाक अवस्था नहि अछि।

मुदा जखन डा. मोतीलाल यादव सलहेस लोकगाथाक आधार बनाकऽ अपन शोधकार्यक सुरुआत कएलनि, ओ अनेकहुँ नव-नव जानकारी देबाकसँग एहि लोक-गाथाक समय पन्द्रम-सोलहम शताब्दी किटान कएलनि। एहिकें आधारपर ओ जाहि तर्ककेँ प्रस्तुत कएलनि ओ अछि-तरेगनागढक राजा हिन्दुपति महेश्वर भण्डारीक पुत्री दौनाक अस्तित्व। ई 'हिन्दुपति' उपाधि मकवानपुरक सेनराजालोकनि प्रयोग कएलनि से साक्ष्य अछि। मुकुन्द सेन सर्वप्रथम एकर प्रयोग कएलनि आ हुनक समय १५१८ ई सँ १५५३ ई. मानल गेल अछि। ओहि समयमे मोरङ प्रदेशधरि सेनवंशी राजासभक अधिकार छलनि। सलहेस जखन पकड़ियाक राजा कुलेश्वरद्वारा बन्दी बनाओल गेलाह, तऽ दौना मालिन नटीन बनि 'गोदना'क प्रयोग, ओहि समयक अनाकानेक अरबी, फारसी शब्दसबहक गाथामे प्रयोग मुस्लिम प्रभाव देखवैछ। एहि कारणसँ एकर समय पन्द्रहम-सोलहम शताब्दी मानलगेल अछि। डा. धीरेन्द्र सेहो एहि बातकेँ पुष्टि करैत छथि।

सलहेस गाथा मूलरुपसँ चारि भागमे बाँटल रहैत अछि, जकरा प्रदर्शनकेँ भाषामे किल्ला कहल जाइछ। सलहेस कथानकमे लोक-नाट्य देखाबऽवला गीति नाटककेँ आधारमे एकरा सप्ताहधरि

मञ्चपर प्रदर्शन करैत अछि मुदा गायकसभ सेहो समय लगाक गाथाक वर्णन करैत छथि। मुदा आव ओ अवस्था बहुत कम देखना जाइछ। चारि किल्लामे महिसौथा किल्ला, बाघगढ़ किल्ला, योगिनी किल्ला ओ पकड़िया किल्ला अछि। एखुनका खोज आ गाथा-गीतसबहक सङ्कलनकेँ दश भागमे बाँटिक अध्ययन कएल जाइत अछि। सुमिरन एवं सलहेस द्विरागमन, मोतीराम विआह, बुधेसर विआह, परबा पोखरी यज्ञ, फूलबाड़ी दर्शन ओ सलहेस बन्दी, चूहड़ चोरी प्रकरण, करिकन्हा विआह, कुसमा-हरण ओ मानिक दह सलहेस दर्शन अछि।

'सुमिरन' अर्थात स्मरण कोनो गाथाक पहिल आवश्यकता देखलगेल अछि। जखन एहन गाथासबहक गायन अथवा प्रदर्शन प्रारम्भ कएल जाइछ, तखन विभिन्न देवीदेवतासभक स्तुति ओ स्मरण अनिवार्य अछि। पाछुधरि सेहो आधुनिक लोकशैलीक नाटकसबमे एहन 'सुमिरन'क प्रयोग नव-नवढङ्गसँ भेल पाओल जाइत अछि।

देखि एकटा सुमिरन-

'सुमिरन सुमिरन सुमिरन करै छी
छप्पन कोटिदेव के हृदयमे जपै छी ए।

पूरब - पुरबे सुमिरनबा हे माता उगला सुरुज के ए,
पुरबेके राजा लगैअ उगला सुरुज ने ए।
हुनकोके चढइअ माता दूधके ढार ने ए,
हुनको चरणमे हे माता, सिरमा नबबई छी।

पश्चिम- पश्चिममे सुमिरनमा करै छी मीरा सुलतानके,
पश्चिमके राजा लगैअ मीरा सुल्तान ने ए,
हुनको चढौना हे माता मृगा वलिदान ने ए।
हुनको चरणमे माता सिरमा नबबई छी ए।

उत्तर- उत्तरे सुमिरनमा करै छी पाँचो पाण्डव भीम के ए,
उत्तरेके राजा लगैअ पाँचो पाण्डब भीम ने ए।
हुनको चढइअ हे माता पाँचो पकवनमा ने ए।
हुनको चरणमे हे माता सिरमा नबबई छी ए।

दक्षिण- दक्षिणे सुमिरनमा करै छी गङ्गा हनुमानके,
दक्षिणेके राजा लगइअ गङ्गा हनुमान ए,
हुनको चढइअ हे माता बीचे धार गेरुआ ए,
हुनको चरणमे हे माता सिरमा नबबइ छी ए।

डीह चढ़ि सुमिरनमा करै छी बाबा डीहबारके,
हुनको चढइअ हे माता जोडा जनेउ ए।
नगर पैसि सुमिरनमा करै छी तेलिया मसान हे,
हुनको चरणमे सिरमा नबबइ छी
सभाके मान माता दुर्गा अहाँ रखिऔ हे,
तोहरे भरोसे हे माता दुनियाँमे घुमै छी ... ।'

गायन ओ प्रदर्शन सफलतापूर्वक समापन होइ, प्रदर्शनकालमे कोनो डाइन, जोगिन जादु-टोना नहि करए, कला ओ कलाकार दुनू संरक्षित रहथि ताहिसँ सेहो ई 'सुमिरन' ओ 'बन्धन' कएल जाइछ। 'सुमिरन'मे जतऽ सम्पूर्ण देवी-देवता ओ चारु दिशाक रक्षक देवताक स्मरण करैत प्रार्थना कएल जाइछ ओहिना 'बन्धन'द्वारा सुरक्षित बन्हबाक काज सेहो लोकमन्त्रद्वारा कएल जाइत अछि।

तकराबाद कथा प्रारम्भ होइछ। सलहेस महिसौथाक राजकुमार छलाह। महिसौथा सिरहा जिल्लामे पडैत अछि। हुनक विआह राज विराटपुरक राजा विराटक पुत्री सती मांजिर (सत्यवती)सँग होइत अछि। मुदा तरेगना गढक राजा महेश्वर भण्डारीक पुत्रीमेसँ दौना मालिन सलहेसकें पएबाकलेल प्रतिज्ञा कएने छलीह - नहि भेटत तऽ हम विआह नहि करब। दुर्गाद्वारा दौनालगायत पाँचो बहिनी मालिनीकेँ सलहेसक विआहक खबरपश्चात ओसभ सलहेसकें हाथीपर बैसबाकाल सुगा बनाकऽ, ओ पाछु 'कोहबर घर'मे कनियाँसँग सुतलाबेरमे चाली बना कऽ लऽ गेल हएबाक प्रसङ्ग अछि। सती माञ्जरि सेहो जादु-टोना जनलाक कारणें खुब घमासान होइछ मुदा पाछु मालिनीसभक सँग ओ हारि जाइत छथि आ पतिक आ पिताक इज्जत बचेबाक हेतु किछु समयक लेल मँगैत छथि -द्विरागमनक पश्चात पतिकें पठादेब से कहि। तकराबाद सलहेस ओहि मालिनीसभक डरसँ निरन्तर एतऽ-ओतऽ पडएवाक उल्लेख गाथामे अछि -

'खन-खन रहै छी हम वेलकागढ़मे
खन-खन रहै छी सराबागमे
मानिक दहमे स्नान करैत छी
गढ़ पोखरियामे मैया सुमरैत छी
भागैछी त एहि मलिनिया खातिर।'

भाइ मोतीरामक विआह तीसीपुर बंगालक राजा मुनि सिंह जिमदारक कन्या कुसमावतीक सँग ठीक होइत छनि। मुदा विआहक क्रममे खुव युद्ध होइछ, अन्त्यमे सलहसेक जीत होइछ आ भाइ मोतीराम कनियाँसहित महिसौथा अवैछ।

दोसर भाए बुधेसरके विआह सेहो बिघ्नरहित नहि होइछ। श्यामल गढ़क राजा श्यामल सिंहक कन्या श्यामलवतीक सँग। एतऽ पूर्वेजकाँ विआहक तिथि लऽकऽ जाएवला हजाम आ खवर जनवाक हेतु पठाओल गेल मित्र अन्हेरबाँट सेहो पकडा जाइछ। तखन सलहेस जोगियानगरक अपन मित्र अत्यन्त वलशाली वीर कुमारसभ दीना, भद्री, भांगिन करिकन्हा, भाए मोतीरामसँग शयामल गढ पहुँचैत छथि आ भाएके विआह सम्पन्न कराकऽ घर अवैत छथि।

विआह भेलाक पश्चात सलहेस फेर वेलका गढ जाए चाहैत छथि। अपन कनियाँके केहैत छथि- मोरंगकें मालिनी बहिनसभ हमरा पएबाकलेल प्रण कएने अछि। हम कोना विआह कऽ सकैत छी ? ताहिसँ हम बेलकागढ़ जा कऽ एकान्त बास चाहैत छी। मुदा कनियाँ सत्ती माञ्जरि कहैत छथिन अहाँकेँ पठेवाक हेतु हम वचन हारिगेल छी, हमरा वचन पूरा करऽ पडत। एकरबाद सलहेस कनियाँक वचन पूरा करवाकलेल आ अपन कनियाँक धर्म सेहो निर्वाह करवाक हेतू दुर्गाक स्मरण करैत परवा पोखरी यज्ञ करैत छथि आ धर्मसंकटसँ बचैत छथि। मुदा ओतऽ सेहो हिन्दूपति महेश्वर भण्डारीक सँग युद्ध होइत अछि। हुनक पुत्र करण सिंह मारल जाइत अछि। भण्डारी हारैत छथि आ मोतीराम मारऽ लगैत अछि तऽ फुलवन्ती प्रार्थना करैत छथिन-'हम सेहो अहाँक धर्म भौजी भेलौंह।' राजाके माफी दैत फूलवन्तीके सँग लऽ महिसौथा एलथि सलहेससँग।

सलहेसक गाथामे फूलबाड़ीक प्रसङ्ग अत्यन्त रोचक घटनाक रुपमे आएल अछि। पकड़िया गढक राजा कुलेसरकें बड़का फूलवाड़ी छलैक। एकदिन सलहेस फूलबाड़ीमे विश्राम करैतकाल राजा

कुलेश्वरक पुत्री अपूर्व सुन्दरी चन्द्रा फूल लोढवाक लेल अएलीह। सलहेसप्रति मोहित भऽ प्रेम निवेदन कएल। मुदा सलहेस प्रस्ताव स्वीकार नहि कएलथि। क्रोधित भऽ चन्द्रा अपन पिताकेँ झूठ बात कहिकऽ सलहेसकेँ पकरबएलीह। सलहेस पकडेलापश्चात चन्द्रा हुनका जेलमे नहि रखबाकऽ अपन दरबानमे रखबौलनि आ पहुलका अपन दरबान चूहड़मलकेँ हटा देलीह।

बहुत बर्षसँ ओतऽ पहरेदारी करैत आएल चूहड़मलकेँ अपन अपमान सहन नहि भेलैक आ ओ दुर्गाक सहायतासँ गङ्गा मैयाकेँ प्रशन्न कऽ अपन घर मोकामासँ सोन्हि खनिकऽ चन्द्राक सुतल कोठामे पहुँचैत अछि आ ओतऽसँ हुनक सब गरगहना चोरी कऽ लऽअनैत अछि। दलानमे बैसल सलहेसक उपर आरोप लगैत छनि, ओ फेर बन्दी बनिजाइत छथि। ई खबर मालिनी दौनाके प्राप्त होइछ। ओ कुलेसरक दरबारमे औंठाछाप लगाकऽ सामान फिर्ता कराएब आ चोरकेँ सेहो पकड़बाएब कहि सलहेसकेँ छोडबैत छथि। सलहेसकेँ रुप बदलिकऽ आ अपने नटिन बनि मोकामा पहुँचैत छथि। चूहड़के फूलवाड़ीमे बास बैसैत छथि। चूहड़ नटिनक सुन्दरतापर मोहित भऽ गोदना गोदेबाकलेल हुनका लऽकऽ महल पहुँचैत अछि। ओहिठाम गोदना गोदवाक बहन्नामे सब लुटल सामानसहित चूहड़कें पकड़ि राजा कुलेसरसमक्ष प्रस्तुत करैत छथि आ स-सम्मान सलहेसकें लऽ घर अबैत छथि।

भगिना करिकन्हाक विआह सेहो युद्ध जिति कऽ होइत अछि। सिंहलदीपक राजा सुरजा सिंहक पुत्री सम्मावतीसँग हुनक विआह होइत छनि। कुसमा हरण प्रसङ्ग सेहो रोचक कथानकमे अवैत अछि। जतऽ वीर मोतीराम पराजित होइत छथि मुदा बहिन आ भौजीक कारणें ओहिठामसँ छुटिकऽ कुसमाकसँग महिसौथा लौटैत छथि।

एतेक होइतहुँ मालनीसभ सलहेसकसँग नहि रहि पएने रहैत छथि। ओसभ सदैतकाल सलहेसकेँ प्राप्त करवाक हेतु अनेकानेक नाटक रचैत रहैत छथि। अन्तमे फेर दुर्गाकेँ आग्रह करैत छथि आ दुर्गाक प्रेरणासँ मानिक दहमे पण्डितक भेषमे सलहेस मालिनीसभकेँ दर्शन दैत छथिन आ सम्मान दैत सदाकलेल छुटैत छथि-

सतयुग छियै कलयुग अओतै
गै दहिना बगलमे मोती दुलरा रहतै
बौआ बुधेसर सँगमे रहतै
बामा भागमे पूजा मिलतौ
तोरा पूजा हम बामा भागमे दऽदेबौ गे।

(सलहेस लोकगाथा : सम्पादक, महेन्द्रनारायण राम, फूलो पासवान, पृ. २३)

सलहेस लोक-गाथाक भीतरमे अनकानेक प्रसङ्गसब अछि। ओ उपकथासभ गायकसभ द्वारा विभिन्न कालक्रममे जोड़लगेल भऽ सकैछ। बहुतरास कथाकेँ प्रसङ्गक तारतम्य नहि मिलल अछि। ओहिसँ सेहो मूल कथासँ फूटक स्वरुपमे विद्यमान अछि। मुदा ओहिसँ, मूल कथा ओ सलहेसक सौर्य आ गुण प्रतिस्थापित नहि होइछ।

सलहेसक सम्पूर्ण कथा नेपालक सिरहासँ मोरंगधरिक क्षेत्रमे घटित भेल अछि। ओहि समयमे सम्भवत: आइजँका जिल्ला विभाजनक स्वरुप नहि भऽ छोट-छोट राजरजौटासब छल। गामक जीमदारसभ राजा कहवैत छलाह। तत्कालीन सामाजिक अवस्थाक चित्र गाथासँ स्पष्ट देखिसकैत छी। महिसौथाक राजा सलहेस, सतखोलियाक राजा शैनी, पकड़ियाक राजा कुलेसर, तरेगनाक राजा हिन्दुपति महेश्वर भण्डारी, सिंहलदीपक राजा सुरखा सिंह, श्यामल गढक राजा श्यामल सिंह, उत्तराखण्डक राजा भीमसेन, तीसीपुरक राजा मुनी सिंह आदिक गाथामें प्रष्ट भूमिका देखलासँ सेहो तत्कालीन राजरजौटासबहक अस्तित्वक सङ्केत करैछ। ओहि समयमे ई छोट-छोट राज्यक राजासभ एक-दोसरपर आक्रमण कऽ अपन राज्य विस्तार करवामे सक्रिय रहैत छलाह।

जादु-टोनाक नीक चलन देखबामे अबैछ। छठम-सातम शताब्दिदिसि मालिनीसभ जादु-टोनामे प्रवीण रहथि तेकर अनेकानेक प्रसङ्ग आएल अछि। सम्भवत: ओहिसँ सेहो एकरा ओहि समयक कथा कहलगेल होइक। सलहेसकें कोनो समयमे अपन रुप बदलनाइ, मालिनीसभ सेहो अपनलगायत दोसरके सेहो रुपके बदलनाइ, सलहेसक कनियाँ सती मान्जरिकैं सेहो जादूमे प्रवीण भेनाइ ,तहिना बहिन बनसप्ती तऽ धुरन्धर जादुगरनी छलीह।

किछु प्रसङ्ग अस्वभाविक, अलौकिक सेहो प्रस्तुत भेल अछि। राजा सलहेस मालिनीसभक डरसँ उत्तराखण्डक राजा भीमसेनलग नोकरी नोकरी करऽ गेलाह। अपने शक्तिशाली योद्धा होइतो राजा कुलेसरक सामान्य सिपाहीसभकैं प्रतिरोध तक नहि कऽ बन्दी बनबामे विवश होएनाइ, मालिनीसभक जादूक प्रभावमे पड़ि सुगा बनि जएनाइसन प्रसङ्गसब लोककण्ठकैं कमालक रुपमे स्वीकार करऽ परत। कथानकमे रोचकता प्रदान करबाक हेतु तथा श्रोतासभकें मन्त्रमुग्ध करबाक लेल एहन प्रसङ्गके जोड़नाइ स्वभाविक भऽ सकैछ। एकटा सुगाकलेल सतखोलियाक राजा शैनीसँग युद्ध कऽ हुनका हराकऽ सुगा प्राप्त केनाइ आ ओ मानव रुपमे आबि हीरामनक नामसँ सलहेसक मन्त्री बनब एहने प्रसङ्गसब अछि।

वास्तवमे सलहेस लोक-गाथाक अध्ययन कएलासँ सलहेस मानवीय रुपमे ओ रुसक राष्ट्रिय हिरो 'आइवान दि टेरिवल', वनराज 'टारजन' सन शक्तिशाली योद्धा होइतहुँ हुनक अति मानवीय रुप सेहो प्रतिविम्बित होइछ, जाहिसँ हुनका जीवतेमे पूजा कएनाइक परम्परा रहल गाथासँ पुष्टि होइछ। ओ दलित छलाह मुदा दलितसभक स्वाभिमानकें जगाकऽ अन्यायक विरुद्ध अपनाकैं ठाढ कऽ अनेकानेक पराक्रम देखएवामे सफल भेलाह।

एखनो दुसाधसभ अपार श्रद्धासँ गहबर बना सलहेस, मोतीराम, बुधेसर, लोरिकन्हा आदिक मूर्ति बना कऽ रखैत छथि अथवा माटिक पिण्ड बना कऽ पूजा करैत छथि।

प्रत्येक वर्ष वैशाख १ गते महिसौथा, सलहेस फूलबाड़ी, पतारि पोखरीसहित सलहेसक गहबर रहल ठाममे पूजा-अर्चना होइछ मेला लगाकऽ। सिरहामे अवस्थित सलहेस फूलवाड़ी लहानसँ चार कि.मि. पश्चिम-दक्षिण राजमार्गक किनारमे अछि। ओहिठाम रहल गहबरमे राजा सलहेस भौरानन्द हाथीपर सवार छथि। महतवाहमे मंगला छैक, राजा सलहेसक दायाँ भागमे घोड़ापर भाइ मोतीराम, बाँया भागमे भाइ बुधेसर अङ्गरक्षक केवला किराँत आ फूलक डाली लऽ ठाढ मालिनसभ।

गहवरक लगमे 'हारम' नामक एकटा गाछ अछि। प्रत्येक वर्ष वैशाख १ गते ओहि गाछक बीच भागमे माला बनलजेना फूल फूलाइछ आ ओ आश्चर्यचकित करऽबाला दृष्य होइछ। उज्जर रङ्गक ई मालारुपी फूल देखवाक हेतु नेपाल-भारतसँ लाखों दर्शनार्थी सलहेस फूलवाड़ी पहुँचैत छथि। कहल जाइछ, जिनगीभरि सलहेसके नहि पावि कुमारि भऽ वैसल प्रेमिका दौना मालिनी सालमे एकदिन फूल बनि ओहिठाम फूलाइछ आ प्रेमीक साहचर्य सुख पावि दोसर दिनसँ अपने झर लगैछ। प्रकृतिकैं अद्भुत संयोगक ई घटना प्रत्येक वर्ष निर्धारित तिथिमे घटित होइत अछि।

दलित उत्थानक नेतृत्व कऽ ओकर मान, सम्मान ओ आत्मसम्मान जागा कऽ समाजमे प्रतिष्ठित कएनाइए महानायक सलहेसकलेल देवत्वक प्राप्ति थिक जे आइधरि अक्षुण्ण रहैत आबिरहल अछि।

ि ि ि

सलहेसक कालजयिता

२ चन्देश

लोक-गाथाक महानायक सलहेसक स्थान लोक-साहित्यमे महत्तम ऊँचाइपर अछि। ओ अपन व्यक्तित्व ओ कृतित्वबलेँ दुसाध जातिक कुलदेवताक रूपमे तँ सहजहिँ आन जाति ओ वर्गमे सेहो समादृत ओ लोकपूज्यक रूपमे प्रतिष्ठित छथि। हिनक नामक स्मरणमात्रेसँ श्रद्धास्वरूप लोकक माथ अनायासे झुकिजाइत अछि। हिनक गुण गौरवगाथासँ मण्डित अछि आ जनकल्याणक भाव हिनक विराटबोधकेँ दिग्दर्शित करैत अछि। हिनक अद्भुत कला-कौशल आ संघर्षरत जीवन लोककेँ अवश्य पथ-प्रदर्शित करैत अछि।

राजा सलहेसक कालक सम्वन्धमे विचार-विमर्श करी तँ विभिन्न विद्वानलोकनि विभिन्न कालखण्डमे होएबाक बात उठबैत छथि। जँकि हिनक कालक सम्बन्धमे कोनो ठोस आ सङ्गत प्रमाण नहि अछि तएँ सत्य बुझि लेबऽबला बात अवश्य दिकसन बुझाइत अछि। एहि गाथामे जे कालक्रमे उच्चरित भाषा अछि ताहिमे कतिपय एहन शब्द मिज्झर भऽ आएल अछि जे निःसन्देह कालक्रमक निर्धारणमे बाधा उत्पन्न करैत अछि। बहुतो शब्द एहन अछि जे मैथिली भाषासँ इत्तर स्वभाव नेने अछि। ईहो कहिसकैत छी जे विदेशी शब्दसबहक समावेश भऽ आएल अछि। ओना एहि शब्दसबहक प्रयोग अवश्य भाषामे गत्यात्मकता आ स्वाभाविकता नेने अबैत अछि। यथा हुकुम, मोसाफिर, कमसीन, हाजिर आदि। ई सबटा नवीन परिपाटीक शब्द थिक। जँकि सलहेसकालक सम्बन्धमे अनुमान कएल जाइत अछि तएँ सत्य मानि लेब कने कठिनाहसन बुझाइत अछि। शिल्पगत ओ भाषागत प्रवाहमे सङ्केत ओ ध्वनि जे उभरैत अछि से कालक्रमे शब्दसन्धानमे भेल परिवर्तनक द्योतक थिक। तथापि जँ ओहि गाथा-कालक समय, स्थिति, परिवेश आदिकेँ देखी-परेखी तँ निश्चिते ई गाथा पाँचम-छठम शदीक उपरान्त सातम शताब्दीक थिक।

शिल्पगत ओ भाषागत प्रवाहमे सङ्केत ओ ध्वनि जे उभरैत अछि से कालक्रमे शब्दसन्धानमे भेल परिवर्तनक द्योतक थिक। तथापि जा ओहि गाथा-कालक समय, स्थिति, परिवेश आदिकेँ देखी-परेखी ता निश्चिते ई गाथा पाचम-छठम शदीक उपरान्त सातम शताब्दीक थिक।

एहि गाथाक भाषाक स्वाभाविकता अछि जे लोक-कण्ठमे वास कऽ लेने अछि। एहिमे लोकवाणीक प्रभाव अपन चमत्कार उत्पन्न करैत अछि। भाषा गाथाक विकासमे समतूल भाँज पुरैत अछि। जहिना सहजता, सरलता आ पारदर्शिता अछि तहिना संवेदनात्मक दूरदर्शिता एहि गाथाक सौन्दर्य थिक। कथानक जेना-जेना आगाँ बढ़ैत अछि तेना-तेना उत्सुकता चरमविन्दूपर पहुँचैत अछि। लोकभाषाक प्रयोग अवश्य एहि गाथाक प्राण थिक तँ मिश्रित भाषा जे मिज्झर भऽ कऽ आएल अछि सेहो नव चमक अनैत अछि।

समय आ समाजकेँ सत्यताकसँग उरेहैत ई गाथा कालगत स्थितिकेँ उधेसैत अछि। परिवेशक चित्रणमे अवश्य डेराओन चित्र उपस्थापित भेल अछि। भारत आ नेपालक सन्धि-स्थलपर तद्युगीन लोकजीवन आ संस्कृतिकेँ युगीन परिवशेमे जगजियार करैत अछि। यथार्थक तिक्खपनामे रोमानीपनक गन्ध सुरभित करैत अछि।

ई गाथा गाम-घरमे चौकीतोड़ नाचक रूपमे विदित अछि। जँ आइयो कतहु सलहेसक नाच होअइ तँ लोकक धरोहि लागिजाइत अछि। एतेक दूरधरि जे लोक खेनाइ-पीनाइक सुधि-बुधि बिसरि एहि नाचकेँ देखबाक लेल सीधा-सम्मर बान्हि कऽ जुमि अबैत अछि। एखनो मञ्चक अभावमे चौकीपर नाच होइत अछि। प्राय: जतेक दर्शक साँझसँ पहर दिन उठैतधरि एहि नाचकेँ देखैत अछि ततेक आन कोनो नाच वा नाटककेँ नहि। सभ वर्ग ओ वर्णक लोक टकटकिये नजरि एहि नाचकेँ देखैत-सुनैत अछि। संवादमे गेयता धर्म सन्निहित अछि। ई नाचबिनु ताम-झामकेँ कतहु प्रदर्शित कएल जा सकैत अछि। बिनुमञ्च विशेषकेँ वा कही तँ एको-दू पर्दापर ई नाच वा बिनुपर्दोकेँ देखाओल जाइत अछि। अठारह-बीस लोकक एकटा दल रहैत अछि। ओना लोकक कमीकेँ देखैत दस-बारह लोकधरि मजासँ एकर मञ्चन कऽ सकैत अछि। साज-बाज तँ श्रृङ्गार थिक। ओरनी एकर प्रमुख बाद्य थिक। ओना ढोलक, झालि, हरमुनियाँ आदि साज-बाज थिक। ई एक सप्ताहधरि मञ्चित होइत अछि। ओना चारि दिनमे सेहो देखाओल जा सकैत अछि। अभिनयकर्ता उत्साहमे आबि एहि नाचक लोकप्रियता ओ दर्शकक उत्साहकेँ देखैत दुइयो-अढ़ाइ दिनमे देखा दैत अछि। एखनो ई देखल जाइत अछि जे कतहु सलहेसक नाच होइ, बिनुप्रचारे दर्शकक भरमार लागि जाइत अछि। ई बुझाइत अछि जे एहि नाचकेँ देखबाक लेल लोक कान पथने होअए। मुक्ताकाशक ई नाच बेर-बेर लोक देखियो कऽ नहि अघाइत अछि।

नामसँ स्पष्ट अछि जे 'शैलेश' शब्दक बदलैत रूप सलहेस थिक। शैलेश शब्दक साधारण अर्थ होइत अछि पर्वतक राजा। नामे सिद्ध करैत अछि जे जङ्गल आ पहाड़क दूर्घर्ष योद्धा अपन साहस, धैर्य, निडरता ओ चातुर्यक बल-बुत्तापर जे कला-कौशल प्रस्तुत कएल से हिनका मनुक्खसँ लोकदेवताक रूपमे आसीन कएल। स्वाभाविक थिक जे व्यक्ति अपन सुख-स्वार्थकेँ छोड़िकऽ अनके लेल जीवैत अछि सएह पूजित होइत छथि। तएँ तँ लोकोपकारक प्रबल भावना लऽ सलहेस लोकदेवताक रूपमे सभक हृदयमे आसीन छथि।

गाम-गामे कोनो वर वा पीपरक गाछतर सलहेसक थान अपन अस्तित्व बनौने अछि। दन्तार हाथीपर सवार राजा सलहेस आ अगल-बगल दुनू कातमे घोड़ापर सवार मोतीराम आ चुहड़मल तदुपरान्त मालिनसभ। रीति-रेवाजक अनुरूपेँ संस्कृति ओ परम्पराकेँ अक्षुण्ण रखैत ब्रह्मा, राहु, कमला, राजाजी, मोतीराम, मरैया आदिक पूजा छप्पनो प्रकारसँ होइत अछि। एहि सलहेस पूजामे गोहारिक प्रमुखता ओ प्रधानता अछि। ई गोहारि कएक प्रकारक होइत अछि। यथा-कोखिया गोहारि, वर-बेमारीक गोहारिसँ लऽ कऽ विभिन्न प्रकारक त्राण पएवाक गोहारि होइत अछि। आइयो जखन कोनो निर्जन स्थान वा पाँतर वा नेपालक वन-प्रान्तमे जखन लोक अपन सुरक्षामे असमर्थताबोधक भान करैत अछि तँ सलहेसकेँ गोहरबैत अछि। ई श्रद्धा आ विश्वास भाव ओहि निर्जन प्रान्तमे ओहि भूलल-भटकल पथिककेँ अन्हराएल बाटसँ मुक्ति दिआवैत अछि आ सुरक्षाबोधक भाव जगवैत अछि। सलहेसक स्मरण करिते सुरक्षा-भाव जगैत अछि तएँ मानवीय आस्था ओ विश्वासक रूपमे लोक-देवता सलहेस आइधरि पूजित ओ प्रतिष्ठित छथि आ लोक निष्ठापूर्वक हिनक पूजा-भाव करैत अछि।

एहि सलहेस गाथाक चारि भाग अछि जे किल्लाक रुपमे प्रसिद्ध अछि - महिसौथा किल्ला, बाघगढ़ किल्ला, योगिन किल्ला आ पकड़िया किल्ला। सलहेसक जन्मसँ लऽ कऽ मालिन सम्प्रदायक कुसुमा आ चन्द्राक प्रेम प्रसङ्ग, चूहड़मलक बध आदिमे एहि गाथाकेँ समट-बटोरल गेल अछि। मोतीराम, दौना, चोरेश्वर कुँवर, अरिवण्ड-वरिवण्ड, अन्हार माठ, कुमार बुद्धेश्वर, सत्यवती, वनसप्ती आदिकेँ लऽ कऽ एहि लोकगाथाक तानी-भरनी बुनल गेल अछि। नरभक्षी बाघ आ बचवा धामिन प्रसङ्गसन कतिपय उपकथासब अछि। कहलगेल अछि जे मोरंग राजाक चौदह कोसक फूलबाड़ी सुखा गेलैक। बचबा धामिनक डरेँ खढ़-पात जरैक। मोरंगक बचिया धामिनक ई प्रभाव जे राजाकेँ दिनमे

भेड़ा आ रातिमे मनुक्ख बना दैक। सलहेसक मोरंग जाइते फुलवाड़ी सुखा गेलैक। मोरंगमे राजाजी नौटा रूप धएलनि। अलोपित भऽ जेबाक गुन प्रधान छल। देव-मुनिकेँ मोरंगमे बनिसारसँ छोड़ौलनि तएँ हिनक खास मान्यता भऽ गेलनि। कहलगेल अछि जे सलहेस त्रियागमन नहि कएलनि जखन कि हिनकापर मोहित नारी पात्रसभ सेहो विलक्षण प्रतिभासम्पन्न आ प्रत्युत्पन्नमति छथि। एकसँ बढ़ि कऽ एक। तरेगनाक गढ़ेश्वर राजा महेश्वर भण्डारीक मालिन बेटीसभ अपन चातुर्य, बुद्धि आ साहसक बुत्तापर किरातेश्वर सन प्रतापी आ बलशालीकेँ छक्का छोड़बैत रहलीह। एतेक दूरधरि जे कहियो किरातसभकेँ पहाड़सँ नीचाँ नहि उतरऽ देलनि। एहि गाथामे तरेगना गढ़ेश्वर राजा महेश्वर भण्डारीक चारि गोट बेटीक बात कहल गेल अछि तँ कतहु-कतहु सात गोट बेटीक बात सेहो सुनबामे अबैत अछि।

सलहेसक प्रणयिनी कुसुमा जातिक मालिन नहि थिकीह प्रत्युत कर्मक मालिन थिकीह। किएक तँ ई एकटा फराक सम्प्रदाय थिक। एहि गाथामे एहि मालिनसभक वास योगिन गुफा थिक। जादू-टोनामे माहिर, रूप-राशिक अद्‌भुत सौन्दर्य आ गुण अपरिमित। मानवीय करूणाक अजस्त्र धार हृदयमे नुकौने। ओ अपन प्रेमी सलहेसक लेल जी-जान अरोपने छलीह। मुदा, कुसुमाक प्रेम वासनात्मक नहि छल। जेँकि सलहेस परोपकारेक लेल अपन प्राण सङ्कटमे फँसबैत छलाह वा दुश्मनक कूचक्रक जालमे बझैत छलाह। ओ कएक खेप सलहेसकेँ बचौलनि। एक खेप तँ एके रातिमे चूहड़मल मोकमासँ पकड़िया राजमहलधरि सेन्ह कोड़ि कऽ वस्तु-जात चोरा लेलकि आ सलहेसपर चोरीक आरोप लगाओल गेलनि आ बनिसार दऽ देल गेलाह। एहन विषम परिस्थितिमे कुसुमा आत्मबलसँ सलहेसक सहयोग दऽ नटिनक वेषमे नारीक कामक्रीड़ासँ लोभबैत चूहड़मलसँ सबटा बात उगिलबा की लेलनि जे चोराओल वस्तु-जातक भण्डाफोर सेहो कऽ सलहेसकेँ निरपराध साबित कएलनि। ओना मोकामा नगरसँ सटले गंगा सेतु बान्ह बनएबामे अपस्याँत दुश्मनक बाट सुलभ करबाक क्रममे चूहड़मल मारल जाइत छथि आ ई गाथा समाप्त होइत अछि।

एहिप्रकारेँ जीवनकेँ अर्थ आ संगीत देबामे व्यापक जीवन-दृष्टि एहि गाथामे सन्निहित अछि। चरित्रक विविधताकसँग स्वाभाविकतामे जीवनक व्यपाकता अछि। मानवीय संवेदनाक व्याप्ति एहि गाथाक विभिन्न पात्र-पात्रीक जीवन-संस्कृतिसँ जुड़ैत अछि। ई गाथा कौतुहल आ चमत्कार अवश्य उत्पन्न करैत अछि, मुदा से चमत्कारी नहि अछि। तएँ काल्पनिक वा अविश्वसनीय सेहो नहि कहल जा सकैत अछि। जेँ कि यथार्थक गाढ़ रङ्गक प्रभाव अछि तएँ संयोग आ दैवी घटनाक प्रभाव अछैतो यथार्थक द्वन्द्व सहजहिँ पात्र-पात्रीक चरित्रकेँ सहज भाव-भूमिपर ठाढ़ करैत अछि। अर्थ आ अनुभूतिपरक सौन्दर्य एहि गाथाक वैशिष्ट्य थिक। मानवतावादी मूल्यक समर्थनमे तद्‌युगीन समाजक रूढ़ परम्परापर चोट करैत समस्त पीड़ाकेँ एहि गाथामे आकार दऽ कऽ सामन्ती व्यवस्थाक देबालकेँ ढाहल गेल अछि। कही तँ मध्यकालीन मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक आ भौगोलिक परिवेशक दस्तावेज थिक ई गाथा। किएक तऽ एहिमे जे प्रमाणिकता अछि तकर साक्ष्य रूप एखनो अछि। ज्ञान-विज्ञानक क्षेत्रमे मिथिला कतेक विकसित छल तकर स्पष्ट रूप एहिमे झलकैत अछि। तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र एहि तीनूक समन्वित रूप एहि कालक महत्ताकेँ दर्शबैत अछि।

एहि लोक-गाथामे सरलता, सहजता, स्वाभाविकता आ स्वच्छन्दताक सहज भण्डार अछि। जनमानसक प्रतिविम्बक सुच्चा दर्शन ई गाथा करबैत अछि। एहिमे जीवनक जे यथार्थ नुकाएल अछि से स्रोताक मोनमे पैसिकऽ सलहेस गाथाकेँ कालजयी बनबैत अछि। लोक-आस्था आ लोक-संस्कृतिक प्रति सहज आकर्षण एहि गाथाक वैशिष्ट्य थिक। जीवनक मूलभूत प्रश्नसँ टकराइत जीवन आ समाजगत ढाँचामे विकासगत परिवर्तनक स्वर अछि। गीतात्मकता आ कथात्मकताक समावेशक कारणेँ ई जनकाव्य जनप्रशस्ति अछि। ओना एखनो अपना-अपनी ढङ्गे एहि कथामे उपकथासब नव-

नव प्रसङ्ग लऽ जोड़ल जाए लागल अछि। लोक-कण्ठमे विद्यमान जे मूलरूपमे अछि से आशु कवित्व-शक्तिक द्योतक थिक जाहिकारणेँ सलहेस गाथाक अभिनव सौन्दर्य सब दिन बनले रहत। किएक तँ संजीवनी बटीक रसायनमे छनि कऽ लोककण्ठमे विद्यमान अछि। श्रमशील जनसमूह जे सङ्गठित भऽ समानान्तर सांस्कृतिक विकासक लेल आ मुख्यधारामे सम्मिलित भऽ अगुआक भूमिका निमाहलक से सलहेसकेँ कहल जा सकैत अछि। ओ सामन्ती व्यवस्थाक चुनौतीकेँ स्वीकारलनि आ एकटा नव जनसंस्कृतिकेँ रचबामे अहम भूमिका निमाहलनि। कही जे नव जनक्रान्ति शंख फूकि कऽ नव समाजक निर्माणमे अपन मौलिक योगदान देलनि।

सलहेस गाथा आइ लिखीतरूपमे आएल अछि, मुदा पूर्णरूपमे आएब बाँकिए अछि। एक तँ क्षेत्र विशेषक आधारपर गाथाक किछु परिवर्तित रूप अवश्य सुनाए पड़ैत अछि। आवश्यकता अछि जे पहिने विभिन्न ठामक मौखिक गाथाकेँ सुनि कऽ आ लिखीत रूपमे फराक-फराक वा तदनुकूलेँ एकठाम सङ्गहीत संकलित कऽ भाषा, तथ्य ओ कथ्यकेँ वैज्ञानिक-पद्धतिअनुकूलेँ साहित्यिक साँचामे ढारि कऽ एकटा ठोस आ सुदृढ़ रूप देबाक अछि जाहिसँ समाजाक सभ वर्ग जे आइ अपन बुझैत अछि तकर अङ्ग बनल रहए। ई काज दुरूह अवश्य अछि, श्रम-साध्य सामर्थ्यबोध अर्जित करबाक माङ्ग अवश्य रखैत अछि, मुदा असम्भव नहि अछि। आवश्यकता अछि जे प्रामाणिक रूपमे सलहेस गाथाकेँ छनि कऽ अएबाक, तखने सर्जनात्मकताक स्वादमे नव अनुभूति अपन फूट आनन्द प्रदान करत आ व्याख्यातित भऽ सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिकजन्य भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिवेशक पूर्ण जानकारी प्राप्त हएत।

f f f



सलहेस गहबरः महिसौथा

नाटक

सत्यक जय असत्यक क्षय

२ मीना ठाकुर

पात्र परिचय :

महाराज	:	मुगेंर पकडियाक राजा भिमसेन
मन्त्री	:	मन्त्री
सिपाही चारि गोट	:	राजाक सिपाही
सलहेस	:	राजा सलहेस
दौना मालिन	:	सलहेसक प्रेमिका
पञ्ची	:	दौना मालिनक सखी
चुहड़मल	:	पकड़ियाक खुङखार चोर
जोगना	:	चुहड़मलक मुहलगुआ सङ्गी
ढोलिया	:	ढोलिया
दरबान	:	दरबान

पहिल दृश्य :

(स्थान : राजा भिमसेनक राज्यसभा । महाराज सिंहासनपर बैसल छथि । बगलमे मन्त्री बैसल अछि । राजाक दूनूदिसि दू-दू गोट सिपाही ठाढ अछि । दरबार लागल छनि । नगरक किछु व्यक्ति दरबारमे उपस्थित अछि । चूहड़मल जोगनाकसँग बैसल अछि । दौना मालिन अपन सखीकसँग उपस्थित अछि ।)

महाराज : मन्त्री ! राज्यमे सबकाज ठीकसँ चलिरहल अछि ?

मन्त्री : जी महाराज ।

महाराज : ककरो कोनो शिकायत तऽ नहि ?

नगरवासी-१ : महाराज, रातिखन हमरा घरमे चोरी भेल । चोर सबकिछु लऽ गेल । घरमे किछु नहि रहऽ देलक ।

महाराज : मन्त्री ! हम की सुनिरहल छी । एखनिधरि ओ चोर नहि पकडाएलअछि, जे नगरमे किछु दिनसँ चोरी कऽ रहल अछि ।

मन्त्री : नहि महाराज । ओ चोर एहन चतुर अछि जे एतेक सैनिक ओकरा पकड़ऽ लेल परिचालित अछि मुदा ओ नहि पकड़ाएल अछि ।

महाराज : आश्चर्य ! कोना नहि पकडाएल ?

मन्त्री : आब जल्दिए पकड़ा जेतई ।
(दरबानक प्रवेश)

दरबान : महाराजक जय हो ।

महाराज : कहु की बात ?

दरबान : महाराज एकगोट व्यक्ति आएल अछि । अपनेक दर्शन चाहैत अछि ।

महाराज : पठा दियौं ।
(दरबारमे एकटा सुदर्शन पुरुष (सलहेस) क प्रवेश)

सलहेस : (कल जोडिकऽ) महाराजकँ हमर प्रणाम अछि ।

महाराज : अहाँ के छी ? कतऽसँ आएलहुँ ?
सलहेस : महाराज हमर नाम सलहेस छी। हम मोरंग राज्यक रहनिहार छी।
महाराज : एतऽ अएबाक प्रयोजन ?
सलहेस : सर्वप्रथम अपनेक दर्शनक अभिलाषा छल। दोसर हम नोकरीक खोजिमे एतऽ अएलहुँ अछि।
महाराज : अहाँ कोन-कोन काज कऽ सकैत छी ?
सलहेस : सरकार ! अपने जे काज हमरा देल जेतइ हम सब काज पूर्ण निष्ठाक साथ करऽ लेल तैयार छी।
महाराज : से तऽ अहाँके देखते बुझाइत अछि जे अहाँ कर्मठ छी। मन्त्री जी ! महलमे चौकीदारक स्थान रिक्त अछि ?
मन्त्री : जी महाराज।
महाराज : हिनका चौकीदारमे नियुक्त कऽ दियौन। व्यक्ति इमानदार बुझाइत छथि।
मन्त्री : जे आदेश।
सलहेस : महाराजक जय हो ! हम पूर्ण इमानदारीतापूर्वक अपन कर्तव्य निमाहब।
सभ दरबारी : महाराजक जय हो।
(सभा विसर्जन)

दोसर दृश्य :

(चुहड़मलक आङ्गन, चुहड़मल आ जोगना बात कऽ रहल अछि)
चुहड़मल : रे जोगना ! ई तऽ जुलुमक बात।
जोगना : की बात ?
चुहड़मल : कह तऽ कतऽ कहाँसँ एकटा व्यक्ति आवि कऽ महलक चौकीदार बनिगेल आ हमसभ एतुका छी।
जोगना : अहाँ ठीक कहै छियै। अहाँके चौकिदार बनबितथि तऽ अहाँ महलके सोधिये ने लितियन्हि।
चुहड़मल : की, बजलएँ ?
जोगना : कहाँ किछु। हम कहलहुँ जे राजा साहेब के ई पद अहीकेँ देबाक चाही।
चुहड़मल : एकरा हम बेसी दिन एहिठाम टिकऽ नहि देबौ। एहिठामसँ एकरा भागइएटा पडतै।
जोगना : अहाँ कि करबै ?
चुहड़मल : देखैत ने जाहि हम की करई छियै।

तेसर दृश्य

(राजाक फूलबाड़ी। दौना मालिन आ पञ्ची फूल तोड़ि तोड़ि डालीमे राखैत अछि)
पञ्ची : गै दौना, आईकाल्हि तोँ बड़ गुम-सुम रहै छएँ। किछु भेलौए तोरा ?
दौना मालिन : गैं पञ्ची ! तोरासँ की नुकाएब। जहियाँसँ हम दरबारमे सलहेसके देखलियइए, ओकरेपर ध्यान रहैत अछि।
पञ्ची : की कहली ?
दौना मालिन : ठीके कहैत छिऔ। हम ओकर व्यक्तित्वसँ बड प्रभावित भेलहुँ। सदिखन ओकरेंपर ध्यान रहैत अछि। ने खाइत नीक लगैये ने सुतैत।
पञ्ची :गै तोरा ओकरासँ प्रेम ने तऽ भऽ गेलौए ?

दौना मालिन : तोँ ठीक कहैत छएँ, हमरा ओकरासँ प्रेम भऽ गेल अछि। लोक साँचे कहैत छै जे प्रेम कखन ककरासङ्ग भऽ जाएत केओ बुझि नहि सकैत अछि।

पञ्ची : की ओहो तोरासँ प्रेम करैत छौ ?

दौना मालिन : से तँ हम नहि जनैत छी। मुदा एते जनैत छी जे हम ओकरासँ प्रेम करैत छी आ करैत रहब। ओकरे नामक सेनूर हमरा सींथमे पड़त अन्यथा हम कुमारिए रहब। ओकरे नामपर हम अपन जीवन बिता देबै। दोसर कोनहुँ पुरुष हमर जीवनमे नहि आएत।

पञ्ची : ओ ई बात बुझै छौ ?

दौना मालिन : नहि ! पता नई ओ कोन माइटके बनल अछि। हम ओकरा फूल तोडिकऽ द अबैत छी, पूजाक सब टहल टिकोरा कऽ दैत छियै मुदा ओ हमरादिसि तकबो नहि करैत अछि। पञ्ची ! जनै छिही, ओ जतेक हमर उपेक्षा करैत अछि, हमर आकर्षण ओकरप्रति आर बढले जाइत अछि।

पञ्ची : चल-चल महारानीकें पूजामे देरी हेतन्हि। तोहर प्रेमियो फूलक लेल तोहर बाट तकैत हेतौ।

(दूनू गोटे बिदा होइत अछि।)

चारिम दृश्य

(ढोलिया गर्दैनमे ढोल लटका नगरवासीकेँ सम्बोधन करैत ढोल पिटिरहल अछि।)

ढोलिया : सुनू-सुनू-सुनू ! नगरवासी सुनू ! रातिखन महराजक महलमे चोरी भेल। चोर बहुमुल्य विछाओन आ रानीक गलाक हार चोरा कऽ लऽ गेल। पूछ-ताछहेतु महाराज दरबारमे सभकें बजौने छथि। समयपर उपस्थित हेबाक लेल सबकें आदेश अछि।

पाँचम दृश्य

(महाराजक राजसभा। महाराज सिंहासनपर बैसल छथि। दरवार लागल अछि।)

मन्त्री : (दरबारीकें सम्वोधन करैत) अहाँसभके बुझल अछि, जे रातिखन केओ चोर महलमे चोरी कएलक। महलक बहुमूल्य विछाओन आ रानी हंसाबतीक गलाक हार चोरा कऽ लऽ गेल। के एहन चोर अछि जे एतेक दिन नगरमे चोरी करैत छल, आइ महलमे चोरी कएलक अछि। एहि सम्बन्धमे अहाँसभकें किछु बुझल अछि तऽ बाजू। चोरके पता लगौनिहारकें महाराजदिसिसँ भारी इनाम देल जाएत।

चुहड़मल : सरकार ! बाहरक लोककें कोना हिम्मत हेतै, महलमे पैसबाकक। चौकीदार रहैत अछि, सिपाही सभ रहैत अछि। ई तऽ महल भितरेके कोनो मनुखक काज थिक।

मन्त्री : (आश्चर्य करैत) की बजलएँ ! महले भितरक मनुखक काज थिक। कें भऽ सकैछ।

चुहड़मल : छोट मुँह बड़का बात। माफ कएल जेतै तऽ किछु कहू।

मन्त्री : जल्दी बाज !

चुहड़मल : एतेक दिन महलमे चोरीए नहि भेल, आइ चौकीदारकें राखिते चोरी भेल। हो न हो, ई चौकीदारक काज थिक।

महाराज : असम्भव ! ओ एहन काज नहि कऽ सकैत अछि।

सभासदसभ : महाराज हमरोसभके ओकरेपर शङ्का अछि।

मन्त्री : (आदेश दैत) सिपाही ! चौकीदारके बजा कऽ लाऊ।

(सिपाहीसँग दरवारमे सलहेसक प्रवेश)

सलहेस : (दुनू हाथ जोड़ि महाराजकें प्रणाम करैत) जी सरकार ! कि आज्ञा अछि ?

मन्त्री : सलहेस ! तोरा रहैत चोर कोना महलमे पैसल ?

सलहेस : एहि बातकें हमरो आश्चर्य लगैत अछि।

मन्त्री : सभक शंका तोरेपर छौ। यदि तों चोरी कएने छँए त९ समान द९ दही, अपन अपराध स्वीकार क९ ले।

सलहेस : (विह्वल होइत) नहि महाराज ! हम एहन कुकृत्य नहि क९ सकैत छी।

चुहड़मल : (जोड़ दैत) महाराज चोरी इएह कएलक अछि। चोर कतहु कहलकइए जे हम चोरी कएलहुँ अछि। एकरा जहलमे बन्द करु तखन ई अपन अपराध स्वीकार करत।

सलहेस : नहि-नहि हम चोरी नहि कएलहुँ अछि। हम निर्दोष छी।

मन्त्री : (सिपाहीसँ) हिनका जहलमे बन्दकरु आ सामानक खोजतलास करु।

(दुनू सिपाही सलहेसकेँ पकैड़ क९ ल९ जाइत अछि। सलहेस असहाय अवस्थामे मूड़ी नीचा कएने ओकरासङ्ग जाइत अछि।

छठम दृश्य :

(असावरी देवीक मन्दिर। दौना मालिन फूल, धूप, दीप नैवेद्य चढा असावरी देवीक मूर्तिक आगाँ बैसि पूजा क९ रहल अछि। पञ्ची सेहो ठाढ़ अछि)

दौना मालिन : (कल जोडने) हे माता ! हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे सलहेस निर्दोष अछि। ओकरा फँसाओल गेल छै। माता हम अहाँक भक्त छी, हमरा शक्ति दिअ जे हम असली चोरके पकैड़ क९ एकटा निर्दोष व्यक्तिकेँ बचा सकी आ सत्यक जय असत्यक क्षय क९ सकी।

पञ्ची : एहि कार्यमे हमहुं तोहर साथ छी

सातम दृश्य :

(महाराजक राजसभा। महाराज सिंहासनपर बैसल छथि। सभा लागल अछि।

दौना मालिन : (ठाढ भ९ हाथ जोड़ि) महाराजक जय हो ! हम अपनेसँ किछु निवेदन करए चाहैत छी।

महाराज : दौना ! कह की बात ?

दौना मालिन : महाराज महलमे जे चोरी भेल ओहि सम्बन्धमे किछु कहबाक अछि।

महाराज : की कह९ चाहैत छएँ, कह।

दौना मालिन : महाराज एखनधरि जे नगरमे चोरी होइत छल ओ चोर आ महलमे जे चोरी भेल ओ दुनू एके चोर थिक। जकर अपनेकेँ तलास छल।

महाराज : के छी ओ चोर।

दौना मालिन : ओ चोर एखनहुँ दरबारमे उपस्थित अछि।

महाराज : कहाँ अछि ! के थिक ? जल्दी बाज !

दौना मालिन : (चुहड़मलदिसि आगुरसँ देखबैत) चुहड़मल छी ओ चोर।

चुहड़मल : (आक्रोशित होइत) नहि महराज ! ई मिथ्या आरोप लगबैत अछि हमरापर।

महाराज : तों कोन आधारपर कहि सकैत छएँ जे ई चोरी कएलक।

दौना मालिन : महाराज हमरालग एकर पूर्ण प्रमाण अछि जे महले टाके नहि पूरा नगरमे चोरी इएह करैत अछि।

महाराज : कहाँ छौं प्रमाण ?

दौना मालिन : (पञ्चीकेँ हाथक इसारासँ बजबैत) पञ्ची मोटरी ला।

(पञ्ची मोटरी अनैत अछि। दौना मोटरी खोलि ओहिमे सँ बहुमुल्य विछाओन आ रानीक हार निकालैत।)

दौना मालिन : महाराज ! रानी हंसावतीक गलाक हार इएह छी ने ?

महाराज : हँ हँ इएह छी । ई तोरा कतऽ भेटलौं आ कोना भेटलौ ?

दौना मालिन : महाराज ! एतेक धर्मात्मा पूजा पाठ करऽवाला व्यक्ति सलहेस एहन काज करत से हमरा विश्वास नहि भेल । हमरा लागल जे केओ एकरा फँसारहल छै । हमरा शङ्का चुहड़मलपर छल । ओहि दिनसँ हम एकरापर नजरि राखऽ लगलहुँ । एकदिन ई अपन सङ्गीसँ, कहैत छल जे महारानीक हार बेचऽ नगरसँ बाहर जाए पड़त । हम एकर पीछा कएलहु । ई रानीक हार आ विछाओन मोटरीमे बान्हि सन्दूकमे रखलक । जखन ई सब घरसँ बाहर गेल तऽ हम आ पञ्ची एकर घरमे पैसि सन्दूकमेसँ इ मोटरी निकाललहुँ । ओहि सन्दूकमे नगरभरिक चोरी कएल समानसब मौजुद अछि ।

(चुहड़मल दरबारसँ भागक प्रयास कएलक ।)

मन्त्री : सिपाही ! पकडू एकरा ई भागऽ नहि पावए ।

(दू गोट सिपाही झपैट कऽ चुहड़मलके पकड़ैत अछि)

महाराज : मन्त्री ! एकरा तुरन्त जहल पठाउ ।

कल्हुंका दरबारमे एकरा दण्ड देल जेतै । सलहेसके स-सम्मान दरवारमे उपस्थित करु ।

मन्त्री: (आदेश देत) सिपाही एकरा लऽ जाउ आ सलहेसकेँ उपस्थित करु ।

(सिपाही चुहड़मलकेँ लऽ जाइत अछि आ सलहेसकेँ सभामे अनैत अछि ।)

सलहेस : (कल जोड़ि) महाराज फेर हमरापर कोन आरोप लागल ।

महाराज : सलहेस ! आरोपित तऽ हम भऽ गेलहुँ तोरासनक धर्मात्मा व्यक्तिपर अविश्वास कऽ कऽ, हमर हृदय कहैत छल जे तों चोर भइए नहि सकैत छएँ, मुदा लोकक कहलापर हम किछु बाजि नहि सकलहुँ । हमरा माफ कर ।

सलहेस : (कल जोड़ि) नहि महाराज ! अपने हमरासँ माफी नहि मागल जाए । गल्ती तऽ मनुखेसँ होई छै ने । अपनेक कोन दोष । अपनेकेँ तऽ भ्रमित कएल गेल ।

माहाराज : ई श्रेय दौनाके छै । उएह, हमरा अधर्म काज करऽसँ बचौलक ।

दौना मालिन : महाराज ! हम तऽ उएह कएलहुँ जे सत्य छल । सत्यक आगू आनि एकटा निर्दोष व्यक्तिकेँ बचेलहुँ ।

महाराज : दौना तोँ धन्य छएँ । धन्य छौ तोहर माए-बाप जे तोहरसन् बहादुर बेटीकें जन्म देलक । जेकाज हमर एतेक मन्त्री, सैनिक मिलि क नहि कऽ सकल से तोँ चुटकी बजबैत कऽ देलएँ । आई तोँ हमरा पैघ अपराध करऽसँ बचा लेलएँ । महान नारी छएँ तोँ । हम तोहर नारी शक्तिकेँ प्रणाम करैत छी । जे आई सत्यक बिजय करौलक ।

सभासदसभ : महाराजके जय हो, सलहेसक जय हो, दौना मालिनक जय हो ।

(पटाक्षेप)

f f f

अन्तर्वार्ता

नेपालक मैथिलीभाषी क्षेत्रमे जागरण आएल अछि

२ डा. रामदेव झा

निबन्धकार, कथाकार, नाटककार, साहित्य अकादमी भारतद्वारा पुरस्कृत शोधप्राज्ञ कवि डा. रामदेव झा प्राय: सब विधामे अपन महत्वपूर्ण स्थान ठमियौने छथि । मैथिली जगतमे हिनक नामे पर्याप्त अछि । मिथिला-मैथिलीक प्रति अटूट प्रेम हिनक काजे बजैत अछि । एतऽ प्रस्तुत अछि नेपाल आ नेपालक मैथिलीक सम्बन्धमे हिनकासँगक वार्ता :

प्रश्न : अपनेक समयसँ पूर्व नेपालमे मैथिलीक परिवेश कोना की छल ?

उत्तर : बङ्गालक विद्वानलोकनि नेपालक मैथिली साहित्यपर काज कएलनि । यथा-हरप्रसाद शास्त्री, पी.सी. बागची । एहि दुनू अध्येताक अध्ययनक उपयोग भेल । बादमे डा. जयकान्त मिश्र, डा. लेखनाथ मिश्र नेपालक दरबार लाइब्रेरीक उपयोग कएलनि । हिनकेसभक रचनासँ नेपालदिसि अध्येतालोकनिक ध्यान आकृष्ट भेल ।

प्रश्न : अपने नेपाल कहिया गेलियैक ?

उत्तर : सर्वप्रथम हम १९६७मे नेपाल गेलहुँ । पाँच-सात दिन रहलहुँ । तकरबाद कएक खेप गेल छी । विशेषज्ञक रूपमे कमिशनक क्रममे सेहो अबरजात बनल रहए ।

प्रश्न : नेपालमे शोधपरक अन्वेषणक क्रममे अपनेक कोना की स्थिति रहल ?

उत्तर : हमरा नेपालमे दू-तीन तरहक वस्तु प्राप्त भेल । सर्वप्रथम नेपालक विभिन्न विद्वानलोकनिसँ भेँट-घाट । दोसर, नेपालक प्राचीन इतिहास आ साहित्यक सम्बन्धमे जानकारी भेटल । तेसर, शीलालेख जा-जा कऽ देखी आ एकत्र करी अर्थात शीलोत्कर्ण वस्तुकेँ जमा कएल । एहिक्रममे काठमाण्डू, ललितपुर, भातगाँव आदि क्षेत्रमे जा कऽ सामग्रीसब एकत्रित कएने छी ।

प्रश्न : अपनेक समयमे नेपालक मैथिली साहित्यक गतिविधि कोना की छल ?

उत्तर : कोनो जागरण नहि रहैक । स्थानीयमे पं. सुन्दर झा 'शास्त्री' दीप जरौने रहथि मैथिली साहित्य-क्षेत्रमे । पं. जीवनाथ झा आ डा. धीरेन्द्र भारतसँ नेपाल आबि ओहि दीपक बारल टेमीकेँ उकसौलनि । जटहीक कुँवरकान्त झा काठमाण्डूमे अखिल नेपाल मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना कएलनि । हमर सम्पर्कमे आबि ओ उपन्यास लिखलनि । ओहि समयमे मैथिली साहित्य बहुत बेसी जगजियार नहि भेलैक ।

भारतीय क्षेत्रमे ककरो ई साहस नहि भेलैक अछि जे दू-तीन लाखक पुरस्कार देतैक ? मुदा, नेपालमे दैत छैक । नेपालमे हम द[illegible] क[illegible] अएलहु अछि । एकटा मिनापको ...फूलकुमारी महतो मेमोरियल ट्रष्ट[illegible] सम्मानमे अढाई लाख टाका भेटलैक अछि ।

नेपालक अनुसन्धातालोकनि हमरेसभपर निर्भर करैत छथि । हुनकालगमे बहुत किछु अछि, मुदा ओहि भीर केओ नहि जाइत छथि । नेपालक दरबार लाइब्रेरीमे बहुत रास वस्तु-जात

अछि तकरा नहि केओ छुब' चाहैत छथि । विशेष की कहब जे बोध एतबा छनि जे हमर लिखल 'उमापति'क खण्डन करैत प्रो. पशुपतिनाथ झा लिखलनि जे रामदेव झा बौआइत रहलाह ।

प्रश्न : मल्लकालकेँ मैथिली साहित्यक स्वर्णकाल कहल जाइत अछि, अपनेक धारणा एहि सम्बन्धमे की अछि ?

उत्तर : नाटक आ गीतक क्षेत्रमे मल्लकालकेँ स्वर्णिम काल कहल जाएत । मैथिलीक सामग्री प्रतिलिपि क' क' एहि कालमे सुरक्षित राखल गेलैक । यथा विद्यापतिक पदावली, कीर्तिलता, कीर्तिपताका, धूर्त समागम, गोरक्ष विजय आदि ओहि कालमे सुरक्षित राखल गेल । बहुतरास बण्डल अवर्गीकृत छैक । एकसँग बहुतोरास रचनाकारक वस्तुकेँ फेँटिदेल गेल छैक । तएँ एक लेखकक विभिन्न वस्तु एक ठाम नहि रहिक' आनोआन लेखकक वस्तु-जात फेँटाएल अछि जे अनुसन्धाताकेँ कठिनाइ होइत छैक ।

नेपालमे बहुतरास व्यक्तिगत पुस्तकालय छैक । ओहिमे मैथिलीक सामग्री बहुतरास अछि । नेपालोक आ मिथिलोक । १९६७मे नेपाल गेल रही तँ नेपालक बहुतरास बुद्धिजीवीसँ भेँट कएने रही । शैव साहित्यपर अनुसन्धानक क्रममे हम सामग्री एकत्रित करबाक लेल गेल रही । शैव साहित्यपर ओत' अजस्त्र साहित्य छैक ।

नेपालक प्रसिद्ध सिद्धिचरण श्रेष्ठ जनिक भाषा नेवारी रहनि । ओ हिन्दी-मैथिली नहि बुझैत रहथि । हुनक भतीजी जानकी श्रेष्ठ रहनि । ओ अपन भतीजीकेँ दूभाषियाक काज करबाक हेतु कहलथिन । आ 'प्रतिविम्ब' कविता-सङ्ग्रह देलनि । ओ (श्रेष्ठजी) कहलनि अछि हमरालग बहुतो पोथीक आधार अछि जे विद्यापतिक नेपाल प्रवासमे गीत छनि । हुनक बहुतरास देव-देवी गीत एहि नेपाल उपत्यकाक थिक । एकर खोज होएबाक चाही ।

प्रश्न : आजुक नेपालमे मैथिलीक प्रति कोना की जागरण अछि ?

उत्तर : नेपालक मैथिलीभाषी क्षेत्रमे भाषाक प्रति जागरण आएल अछि । भारतीय क्षेत्रसँ बेसी ओ क्षेत्र जागरूक अछि । भारतीय क्षेत्रमे ककरो ई साहस नहि भेलैक अछि जे दू-तीन लाखक पुरस्कार देतैक ? मुदा, नेपालमे दैत छैक । नेपालमे हम द' क' अएलहुँ अछि । एकटा मिनापकेँ 'फूलकुमारी महतो मेमोरियल ट्रष्ट' सम्मानमे अढाई लाख टाका भेटलैक अछि ।

प्रश्न : नेपालक प्राचीन मैथिली साहित्यक सम्बन्धमे अपनेक अवधारणा ?

उत्तर : नेपालक नाटकमे, गद्यक प्रचूर प्रयोग भेल छैक । ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर' काल आ चन्दा झा कालक बीचक अवधिमे नेपालमे जे गद्यलेखन भेल से भारतोमे नहि भेल अछि । ओना एहि सम्बन्धमे अनुसन्धान आवश्यक छैक । भारतोमे अनुसन्धान होएबाक थिक ।

प्रश्न : नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रसङ्ग ?

उत्तर : हमरा आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रसङ्ग विशेष जानकारी नहि अछि, ओना, बहुत उत्साहवर्द्धक लेखन आधुनिक मैथिली साहित्यमे बुझि पड़ल । आपसी बाद छैक । एक-दोसरक प्रति कटु भाव छैक । किछु बात एहनो होइत छैक जे कहल नहि जाइत छैक ।

मिनापक दूटा अद्‌भुत नृत्यक प्रदर्शन देखलहुँ । एकटा वन्दना आ दोसर आतङ्कवाद । दुनू नीक लागल ।

प्रश्न : नेवारी आ मैथिलीक अन्तर्सम्बन्ध ?

उत्तर : नेवारी भाषा तिब्बत समूहकेर छैक जे एक शब्द नहि बुझबैक । एकर लिपि मिथिलाक्षर, देवनागरी आ पुरना गुप्तलिपि अर्थात् तीनू फेँटिक' छैक । बेसी मैथिली, किछु देवनागरी

आ शेष आनसँ मिलैत-जुलैत छैक। पुरनका नेपालीक नाम छलैक नेपाल भाषा। आब नेवारी लिपिमे सुधार भेलैक अछि।

हम नेवारी लिपि पहिने पढ़ैत छलिऐक। आब मोन पाड़ऽ पड़त।

प्रश्न : अनुसन्धानकर्ता लोकनिकेँ ओहिठामक मैथिलीक प्राचीन ग्रन्थ पढ़बाक हेतु कोन-कोन लिपिक ज्ञान हएब आवश्यक अछि ?

उत्तर : मैथिलीक प्राचीन साहित्यक अनुसन्धाताकेँ मैथिली, नेवारी प्राचीन आ कैथी लिपि (नागर)क ज्ञान चाही।

प्रश्न : वर्तमान समयमे अपनेक नेपालक मैथिली साहित्यक सम्बन्धमे कोनो योजना अछि ?

उत्तर : सम्प्रति नेपालक सम्बन्धमे कोनो योजना नहि अछि।

प्रश्न : अपने राष्ट्रीय अभिलेखालय गेल रही। कोना की सहयोगात्मक भाव रहल ?

उत्तर : हमरा बेर-बेर मोन पड़ैत अछि जे पुस्तकालयमे काज भेल तँ कहैत छल 'भोली आउँछु।' काज भेल, फेर भेल, राष्ट्रीय अभिलेखालय गेल रही कुँवरकान्त सहयोग कएने रहथि।

प्रश्न : अपने नेपालसँ कोन-कोन पाण्डुलिपिक लिप्यान्तर अनने छी ?

उत्तर : हमरालग बहुतरास अछि। जेना प्रभावती हरण। ओना डा. लेखनाथ मिश्रक 'प्रभावती हरण' प्रकाशित छनि, मुदा ओहिमे कतिपय अंश छुटल अछि। दोसर, नाना रङ्गगीत सङ्ग्रह-लिप्यान्तरकर्ता (पं. घनश्याम पोद्दई, २१२५ भाद्र १९,३) तेसर नाना राग गीत सङ्ग्रह -एहिमे जगज्योतिर्मल्लक बेसी गीत अछि। चारिम, कुञ्ज बिहार नाटक जे प्रकाशित अछि।

पाँचम - गीत पञ्चाथिराका जे प्रकाशित अछि।

छठम - नाना राग गीतम एहिमे बहुत कविक गीत अछि।

सातम - गीत दिगम्बर नाटक

आठम - गीत पञ्चक - ई जगतप्रकाश मल्लक थिक आ ३०टा पत्र एहिमे सङ्कलित अछि। हमरालग कीर्तिपताका (संस्कृत) अछि जे कन्ह शर्माक थिक। हम विद्यापतिक बुझि कऽ अनने रही।

प्रश्न : विद्यापति जे बनौलीमे रहथि से कोन बनौली थिक आ ओतऽ विद्यापति कतेक वर्ष अपनेक दृष्टिएँ बास कएलथि ?

उत्तर : राजा पुरादित्यक निवास जाहिठाम भेलनि सएह सप्तरी बनौली थिक। विद्यापति कतेक वर्षधरि रहलाह से तँ निस्तुकी हम नहि कहि सकब हँ, एतेकधरि अवश्य कहब जे विद्यापतिकृत लिखनावलीक पहिलपत्रसँ लऽ कऽ श्रीमद्भागवतक ३०१ लक्ष्मण सम्वतधरि विद्यापति अवश्य ओहिठाम छलाह।

प्रश्न : नेपालक मैथिली साहित्यकारलोकनिक हेतु अपनेक सन्देश ?

उत्तर : हम एतेक कहब जे जगज्योतिर्मल्लक गीत जे नाटकमे आबिगेल अछि तकरा छोड़ि कऽ शेष गीतसबहक सङ्कलन एकत्रित कएने छी। 'गीत पञ्चाशिका' तैयार अछि।

हमर कथन अछि जे मैथिली साहित्यक विकासमे जे साहित्यकार लागल छथि से युग आ समाजकेँ देखैत साहित्यिक विकासमे योगदान देथि।

नेपालक मैथिली विद्वानलोकनिकेँ कर्तव्य भऽ जाइत छनि जे ओ नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे सञ्चित सम्पदाकेँ प्रकाशमे आनथि तखने सार्थकता सिद्ध हएत।

('बजरगिरह'सँ)

प्रस्तुति : चन्द्रेश

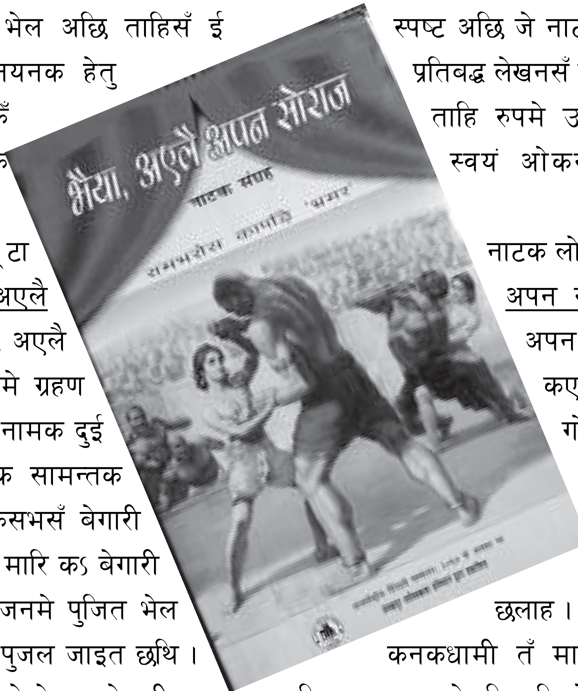
f f f

भैया अएलै अपन सोराज : विहगंम दृष्टि

२ डा. योगानन्द झा

आधुनिक साहित्य व्यक्तिगत ओ सामूहिक जीवनक चुनौतीसबहक प्रत्युत्तरक रुपमे सुस्थापित भेल अछि आ साहित्यिक परिकल्पना स्वपनलोकसँ क्रमश: दूर भेल जा रहल अछि। आजुक साहित्य शैली विशेषमे मानव जीवनक व्याख्या किंवा लोकरञ्जनक साधनाटाक रुपमे सीमित नहि अछि। अपितु ई निरनतर लोकजीवनक हितक हेतु नव नव विकल्प ओ दिशानिर्देशक प्रति प्रतिबद्ध अछि। तएँ आजुक साहित्यकार लोकजीवनक भविष्यक हेतु चिन्तनशील देखि पड़ैत छथि आ लोकजीवनमे प्याप्त मलिनता, असमानता, निष्ठूरता ओ अहङ्कारक उन्मुलनकेँ अपन हथियारक रुपमे प्रयोग करैत देखि पड़ैत छथि।

आधुनिक साहित्यक गतिविधिक ई चेतना अपन बहुआयामी स्वरुपमे श्री रामभरोस कापडि भ्रमर जीक सद्य: प्रकाशित "भैया अएलै अपन सोराज" पोथीमे सङ्कलित दसो एकाङ्की नाटकमे अत्यन्त प्रस्फूटित भेल अछि। एहिसबमे एकाङ्की नाटकक समस्त मर्यादाक पालना करैत लोकमङ्गलक जे चित्र रुपायित भेल अछि ताहिसँ ई स्पष्ट अछि जे नाटककार समाज, राष्ट्र ओ विश्वमानवक उन्नयनक हेतु प्रतिबद्ध लेखनसँ संपृक्त छथि तथा विभिन्न अमङ्गलकारी तत्वकेँ ताहि रुपमे उपस्थिति करवामे सक्षम छथि जाहिसँ दर्शक स्वयं ओकर निदानक मार्ग हेरि सकथि।



एहि संग्रहक दू टा नाटक लोकगाथापर आधारित अछि क्रमश : "भैया, अएलै अपन सोराज" आ लोक-नाट्य जट-जटिन। "भैया, अएलै अपन सोराज" मे दीना-भद्रीक गाथाकेँ आधार रुपमे ग्रहण कएल गेल अछि। गाथाक अनुसार दीना-भद्री नामक दुई गोट मुसहर भाई छलाह जे कनक धामि नामक सामन्तक एहि हेतुएँ विरोध कएने छलाह जे ओ लोकसभसँ बेगारी खटबैत छल। दीना - भद्री कनक धामिकेँ मारि कऽ वेगारी प्रथासँ लोककेँ उबारने छलाह आ जन - जनमे पुजित भेल छलाह। आइयो ओ मुसहर जातिक लोकदेवताक रुपमे पुजल जाइत छथि। कनकधामी तँ मारल गेल मुदा सामन्ती व्यवस्था एखनो कोनो रुपमे जीवन्त अछिए। सामन्तलोकनि नहि केवल दलित वर्गक श्रमक शोषण करैत रहलाह अछि अपितु एहि वर्गक नारीलोकनि यौनशोषणक हेतु सेहो बदनाम रहलाह अछि। क्रमश: युगचेतना बदललैक अछि आ शोषित वर्ग एहि अनीतिपूर्ण व्यवस्थाक प्रति असन्तोष, विरोध ओ विद्रोहक भावनासँ संवलित होईत गेलाह अछि। एकरे परिणाम थिक जे आब वेगारी प्रथा इतिहासक

वस्तु भऽ गेल अछि। तथापि नाटककार एहि प्रसङगक पुनरावृति कऽ वस्तुत : शोषक ओ शोषित वर्गक ऐतिहासिक सघर्षक गाथाकेँ संरक्षित करैत समसामयिक जीवनमे पर्याप्त शोषण चकक अभिव्यजना ओ तकर निदानक मार्ग संकेत कऽ देलनि अछि।

एहि एकाङ्कीमे पुरुष १ आ पुरुष २ कृष मजदुर अछि जे जोरावर सिंह सामन्तक जमीन्दारीमे रहैत अछि। ई सभ बेगार सँ तँ अकछल अछिए, अपन बहु - बेटीक इज्जतक रक्षाक हेतु कोनो त्राताक बाट ताकिरहल अछि। जखन एकरा दुनूकेँ विदीत होईत छैक जे दिना आ भद्री नामक दूटा पहलमान एकरे जातिक छैक आ ओ दुनू जोरावरक अत्याचारसँ लोककेँ त्राण दिएयवाक हेतु तत्पर भेलैक अछि तँ दूनु बेस प्रसन्न होईत अछि। जोरावरक लठैतसभ गाम गमतिमे अत्याचार करैत छैक। तत :पर दीना भद्रीक सँग जोरावरक मल्लयुद्ध होईत छैक आ ओ मारल जाइत अछि। एहन अनाचारीक मृत्युपर जनता - जर्नादन प्रसन्न होइत अछि। वस्तुत : ई एकाङ्की लोकपरम्पराक प्रति नाटककारक व्यामोहटाक निदर्शन थिक। एहिमे युगिन चेतनाक सम्यक उपस्थापन नहि देखि पड़ैत अछि। **जट – जटिन** मिथिलाक प्रसिद्ध लोकनाटक थिक। ई लोकनाट्य महिलालोकनिद्वारा अभिनीत होइत छल। कहल जाइछ जे जखन वर्षा ऋतु समाप्त भेलाक वादो वर्षा नहि होइत छलैक, तँ ग्राम्य नारीलोकनि इन्द्र भगवानकेँ प्रसन्न करबाक हेतु टोना करैत छलीह। एहि टोनाक क्रममे जट – जटिन लोकनाट्य महिलालोकनि दू दलमे विभक्त भऽ खेलाइत छलीह। मान्यता ई रहैत छलनि जे कुटल जाइत बेङ्गक करुणापूर्ण आवाज सुनि इन्द्रदेवता पघलि जाइत छलाह। आ वर्षा होमऽ लगैत छलैक। कुटल बेङ्गक अवशेष कोनो हडाहि माउगिक आङनमे फेकिदेल जाइत छलैक जे अपनासँग कएल गेल एहि व्यवहारक हेतु महिलालोकनिकेँ गारि – पढैत छलीह। ओ जतवेँ खौभ्का – खौभ्का कऽ गारि पढैत छलीह। लोक मान्यताक अनुसार वर्षा ताहि वेगसँ होइत छल।

कृषि कर्मक हेतु वर्षाक महत्ता जगजाहिर अछि आ ताहि हेतु जट– जटिनक लोकनाट्य खेलएवाक परम्परा अति प्राचीन कहल जाइत अछि। एहि नाट्यक दुनू पात्र जट आ जटिनक लोक जीवनक शुद्ध दम्पति अछि। जकर नोक भ्कोँक एहि नाट्यमे युगल गीतक रुपमे प्रस्तुत भेल अछि। नाटककार मिथिलाक एहि लोकसाहित्यकेँ संरक्षित कऽ लेबाक दृष्टि जे एकर सङ्कलन कएलन्हि अछि आ एकर मूल रुपकेँ यथावत रखबाक प्रयास कएलनि अछि। एहि नाट्यमे नट – नटीन प्रायेग प्राचीन नाट्य परम्पराक अनुसरणमे भेल अछि। **महिषासुर मुर्दाबाद** एहि नाट्क संग्रहक एकल नाटक थिक। जाहिमे एकेटा युवक अपन आत्माक सँग गप्प करैत देखल जाइत अछि। नाट्य प्रयोगक दृष्टि जे ई एब्सर्ड प्रकृतिक एकाङ्की अछि। जाहिमे व्यङ्गय, आक्रोश ओ श्रव्यद्वारा युगीन यथार्थक चित्राङकन कएल गेल अछि। समसामयिक जीवनक ई यथार्थ थिक जे आइ समाजमे आनक बहु–बेटीक इज्जति लुटनिहार, दहेजलोभी अभिभावक, गरीबक मखौल उडौनिहार, महाजनी वृत्तिसँ समाजक शोषण कएनिहार, अनाचारी भ्रष्टाचारीलोकनिक चलती छनि आ ओलोकनि कानुनकेँ अपना कब्जामे कऽ निद्वन्द्व विचरण करैत छथि, जखन कि अन्यायक विरोध कएनिहारकेँ इएह कानुन फाँसीक फन्दाधरि पहुँचा दैत छैक। नाटककार शोषण होइत वर्गपर शोषित वर्गक विजयक पक्षघाती छथि आ ई सङ्केत दैत छथि जे कोनो एकटा शोषककेँ हलाल कऽ देने शोषण समाप्त होमऽबाला नहि छैक किएक तँ एकटा शोषक मरैतदेरि दोसर शोषक तैयार भऽ जाइत छैक। अवश्य, जँ शोषितलोकनिसभके सेहो समाप्त कएल जा सकैत छैक।

तहिना **पेटक खातिर** सडक नाटक किंवा नुक्कड नाटक थिक जे विना अधिक नाटकीय उपकरण ओ रङ्गशालाक सुनियोजित व्यवस्थाक कतहु खेलल जा सकैछ। आजुक व्यस्त जीवनमे नाटक आ रङ्गमञ्चके सामान्य दर्शकलग स्वयं पहुँचबाक चाही, ताहि दृष्टिसँ जे एहि कोटिक नाटक अभिनव प्रयोग थिक। एहि नाटकमे प्रजातन्त्रीय व्यवस्थामे भ्रष्टाचारक विभिन्न आयामपर कसगर चोट कएल गेल अछि आ दर्शकलोकनिकेँ समाज ओ राष्ट्रमे व्याप्त विसङ्गतिसँ परिचय करा ओकर निदान सोचबाक हेतु मार्ग प्रशस्त कएल गेल अछि। एहि नाटकमे ई दर्शाओल गेल अछि जे कोना तस्करीक माल तस्कर ओ नेतालोकनिबलेँ एक देशसँ दोसर देश पहुँचि जाइत अछि, कोना प्रशासकलोकनि भ्रष्टाचारक श्रृङखलासँ आबद्ध छथि आ जनसामान्यक शोषणमे लागल छथि, कोना नेता लोकनि टिकट पएबाक लेल कुत्सितसँ कुत्सित कर्म करबाक लेल तत्पर रहैत छथि। कोना जनताक रखवारलोकनि जनताक कल्याणक मददिक अंश अपने खा गेल करैत छथि आ शिक्षाजगतमे माफियालोकनि पाइक बलपर मेधावी छात्र लोकनिक स्थानपर कमजोरो छात्रकेँ मेघा सूचिमे आगाँ बढा देबाक धन्धामे लिप्त रहैत छथि।

नेता जी आबिरहल छथि एकाङ्की सेहो प्रजातन्त्रीय शासनक विभिन्न विसङ्गतिक दिग्दर्शन करबैत अछि। एहि नाटकमे नाटककार जनताक समस्याक मूलकेँ स्पस्ट करबाक उदेश्यसँ कथा सूत्र जोडलनि अछि। नाट्यारम्भमे सूत्रधार ओ नटी कलाकारलोकनिक हड़तालसँ सीदित देखि पड़ैत छथि। ईलोकनि कथानक तकबाक प्रयासमे छथि। तावत् एकटा जुलुसक स्वर सुनि पड़ैछ। जाहिमे महँगीक समस्या अत्यन्त सामान्य बुझना जाइत छनि आ चुँकि लोक ऐकरा तेना कऽ कऽ अङेजि लेने अछि जे ई नाटकक विषय रुपमे ज्वलन्त नहिं बुझना जाइत छनि। तत :पर भ्रष्टाचारक विरुद्ध जुलुस देखि पड़ैत छनि। आ भ्रष्टाचारक समस्याकेँ कथानकमे लऽ नाटक खेलबाक मानसिकता बनबैत छथि। मुदा ईहो आब ज्वलन्त समस्या नहि बुझना जाइत छनि। कारण लोक कोनो प्रकारक सरकारी काजक हेतु घुसक लेन-देनके अङजि कऽ एकटा स्विकृति दऽ चुकल छैक। तत:पर शान्ति-सुरक्षाक हेतु प्रशासनक विरोधमे जुलुस देखि पड़ैत छनि। तखन ओ अपन नाटकक हेतु शान्ति सुरक्षाक समस्याकेँ कथानक रुपमेँ ग्रहण करऽ चाहैत छथि। किएक तँ इहो समस्या जड़िआएल बुझना जाइत छनि। मुदा तखने बेरोजगारलोकनिक एकटा जुलुस देखि ओ बेरोजगारीएकेँ ज्वलन्त समस्या मानि कथानकक सृजन करबाक ब्यौंत करऽ लगैत छथि। मुदा पुन : एकटा सरकारी जुलुसपर नजरि जाइत छनि। जाहिमे विरोधिसबहक विरोधक समस्या, कर्मचारीलोकनिक हडतालक समस्या, शान्ति – सुरक्षाक भङ्गक समस्या आदिक प्रतिरोधात्मक स्वर सुनि पड़ैछ आ एहि समस्यासबकेँ नाटकीय स्वरुप प्रदान करबाक मन बनबैत छथि। एहितरहेँ एहि एकाङ्कीक माध्यमे नाटककार प्रजातन्त्रीय व्यवस्थामे उत्पन्न विभिन्न समस्यासबहक सङोर कऽ ई प्रदर्शित करबाक प्रयास कएलनि अछि जे आइ ततेक समस्या अछि जे सबपर फूट – फूट कऽ नाटक खेलल जा सकैछ। कानो समस्या ककरोसँ कम नहिं अछि मुदा सबसँ बडका समस्या थिक जुलुस जे प्रजातान्त्रिक व्यवस्थाक देन थिक। एहि समस्याक कारणे लोकजीवन अस्त-व्यस्त रहैत अछि। मुदा ई कोनो समाधान प्रस्तुत नहि कऽ पबैत अछि। अवश्य जुलुश कएनिहारकेँ एकटा आत्मसन्तोष होइत छैक। जे ओ अपन अधिकारक प्रयोग कऽ पाबिरहल अछि। आ एहि जुलुशक समस्याक मूलमे छथि राजनेतालोकनि जे मूल समस्यासँ जनताकेँ भ्रमित कऽ अपन स्वार्थ साधनमे लागल छथि। तएँ प्रजातन्त्रमे जाहि एकमात्र

चरित्रक चारुकात सबटा समस्या घुमैत अछि, से थिकाह नेता जीलोकनि । यावतधरि हिनकालोकनिक चरित्रमे सुधार नहि होयत , ताधरि प्रजातन्त्र लोककल्याणकारी नहि भऽ सकैछ आ ने कोनो समस्याक समाधान भऽ सकैछ । एहि तरहेँ एहि नाटकमेँ वास्तविक जीवनक उदघाटन कऽ अभिनव कलाक माध्यमे एकटा विशिष्ट विचारधाराक अभिव्यक्ति भेल अछि जे लोकजगतकेँ प्रेरित – प्रभावित करवाक दृष्टिए सफल अछि ।

हम घुरी अयलहुँ मीत क्षेत्रवादसँ ग्रस्त नेपालक लोकजीवनक अन्त:कथापर आधारित अछि । क्षेत्रक आधारपर नेपालक लोक दू भागमे बँटल अछि । पहाडी आ मधेशी । पहाडीलोकनी पहाडपर रहैत छथि आ मधेशीलोकनि तराइमे । पहाडीलोकनि, मधेशीलोकनि प्रति नीक भाव नहि रखैत छथि । जकर कारणे नेपाली मानस दू भागमे बाटि गेल अछि । स्वभावत : पहाडी ओ मधेशीक राष्ट्रीयता एक रहलाक बादो दुनूक बीच दुरी बढ़ल अछि । जे पारस्परिक सर्घषक रुप लऽ लेलक अछि । एहि संङघर्षक कारणे पहाडीलोकनि मधेशीलोकनिक बीच आ मधेशीलोकनि पहाडीलोकनिक बिच उत्पीडित होइत छथि । उत्पीडनक अतिरेक तखन होइछ जखन मधेशमे बसल कोनो पहाडीके अपन चल – अचल सम्पति अल्प मूल्यमे वेचि प्रव्रजन करवाक स्थिति बनैत छैक । रामेश्वर पहाडी अछि मुदा वहुत दिन सँ मधेशीलोकनिक बिच बसल अछि आ ओकरासभक सँग आत्मियता बनौने अछि । मुदा राजनितिक षडयन्त्रक कारणे ओकरा प्रव्रर्जित होएवाक स्थिति बनैत छैक । मुदा ओकर मधेशी मीतकेँ ई पसिन्न नहिँ छैक । दुनूके बीच अन्तरङ्ग सम्वन्ध छैक । अन्तत : ओ पहाडी अपन जन्मभूमिक परित्याग नहि कऽ पबैत अछि आ पुन : अपन वासस्थलपर घुरि अबैत अछि । छहोछित राष्ट्रीयता बीच मानवीय संवेदनाक उपस्थान एहि नाटककेँ अत्यन्त स्तरीय बना देलक अछि ।

सुलीपर ईजोत प्रतीक नाटक थिक । एहिमे इजोत प्रतिनिधित्व करैत अछि मानवक सुखी, सम्पन्न, सुन्दर ओ आकर्षक जीवन, अन्हार प्रतिनिधित्व करैत अछि ओहि समस्त विसङगतिक जे मानव जीवनकेँ दु:खमय बना देने अछि । सुली थीक ओ स्थान जतऽ विसङगतिसभसँ संघर्षक कऽ सुलीधरि पहुँचबाक आवश्यकता छैक । आई गरीबी, बेरोजगारी, हत्या, भ्रष्टाचार, लूटि, बलातकार, चितकार, दहेज-प्रथा, चोरी, डकैती, अनाचार, आदि विभिन्न समस्या मानव जीवनकेँ दुभर कएने छैक । ई समस्यासब यावत दुर नहि हएत मानव नीकजकाँ जीबि नहि सकैछ । मुदा ई समस्यासब दूर हएत कोना, ताहिहेतु हाथपर हाथ धऽ बैसलासँ काज नहि चलि सकैत छैक । एकरालेल चाही कर्मण्यता आ साहस । ई साहस ने तऽ ओहि सुविधाभोगी समाजलग छैक जे कानमे तुर ठुसि अपनामे मस्त अछि आ ने कान्तिदर्शी ओहन लोकलग जे समाजिक जड़ताँके तोडवाक स्वाङ्ग मात्र रचैत अछि । वस्तुत : जखन मजदूर आ किसान अपन आजीविकाक प्रति बफादार रहैत संघर्षशील हएत तखने समाजिक विद्रुपता सवपर विजय प्राप्त कऽ अन्हारकेँ परारास्त कऽ सकत आ सम्पन्न जीवन जीवि सकत । नाटककार श्रमिक वर्गाक प्रतिष्ठा करैत पुरुष २ सँ कहवैत छथि हर आ पालो सिढीक दुन ठाढ़ हैत । बड़का पैना पौदान । आ पालोमे जे बान्हल अछि ताहि जौरसँ पौदान बान्हल जाइत । एना कऽ चहरि पहुँचि जाएब इजोतधरि । वस्तुत ? इ नाटक समाजिक राजनितिक जगतमे प्याप्त विद्रुप्तसँ संघर्ष करवाक आवह्मन करैत अछि । **आ बौधु बाजु उठल** ग्राम्य जीवनमे चलैत कूटनीतिक पर्दाफास करैत अछि । एकर नायकमे अछि बौधु जे एकटा चाहक दोकान चलबैत अछि । एहि दोकानक कारणे ओ गामक गतिविधिसँ परिचित होइत रहैत अछि । अयोधि चौधरी ग्रामप्रधान अछि ।

जकरा समयमे गाममे सुख – शान्ति व्याप्त छैक। मुदा किछु लोककेँ ओ नहि सोहाइत छैक। एहन स्वार्थी तत्व ग्रामक प्रधानविरुद्ध षडयन्त्र करैत अछि। ओसभ ग्रामप्रधानक एकटा मित्रकेँ ग्रामप्रधान बनबाक हेतु चुनावमे ठाढ़ करबा दैत अछि। परिणामत : दुनु मित्रक टोलमे वैमनस्य भऽ जाइत छैक। मुदा बौधु षडयन्त्रकारीसभक पोल खोली दैत अछि आ गाम पसाही लगबासँ बाचिँ जाइत अछि। एहितरहेँ नाटकमे ग्राम्य जीवननक विद्रुपताविरुद्ध उभरैत जनचेतनाकेँ साकार कयल गेल अछि।

संग्रहक सर्वाधिक पैघ एकाङ्की अछि **सुरज उगवासँ पहिने** । ई सात दृश्यमे विभाजित अछि। ई एकगोट रोमानी अर्थात स्वच्छन्दवादी नाटक थिक। एहिमे प्रेमक स्वच्छन्दतापर बेस बल देलगेल अछि। आ ओकर मार्गमे उपस्थित होबऽबला विघ्न बाधाक सामाना अत्यन्त सहज ढङ्गसँ होइत देखाओल गेल अछि। एहि नाटकमे नायक ओ नायिका विवाहमे विघ्न-बाधा होइतो अत्यन्त हर्ष आ उल्लासक वातावरण प्रदर्शन भेल अछि।

एकर नायक अशोक पढ़ि - लिखि क नोकरी कऽलगैत अछि मुदा एहि हेतुएँ नोकरी छोडि□भ्रुस् दैत अछि जे ओकर मालिक अवैध व्यापारमे लागल रहैत छैक। आ तकरे ताकछेम करवाक लेल ओकरा नियुक्त कएने रहैत छैक। नोकरी छोड़लाक बाद ओ बेरोजगार भऽ गामक सङ्गीसभक कुसङ्गतिमे रहऽ लगैत अछि आ व्यक्तिगतरुपेँ स्वच्छ रहितो अपन नरेशि मित्रसभक कारणे बदनाम होइत चलिजाइत अछि जाहिसँ ओकर माता पिता दुःखी रहऽ लगैत छथिन। बेर–बेर कोशिश कएलाक बादो अशोककेँ नोकरी नहि भेटि पबैत छैक आ ओ अपन पेंशनधारी पितापर आश्रित रहऽ लगैत अछि।

अशोकक पिता अपन सकल अचल सम्पति अशोकक पढाइमे बिलहि देने छलाह। आ किछु कर्जा भऽ गेल छलनि जकर कारणे गोराइत हुनका आ हुनका पत्नीकसँग दूर्व्यवहारपर उत्तरि जाइत अछि। अशोककेँ ई नहि नीक लगैत छैक आ ओ गोराइतसँ भीडि जाए चाहैत अछि। ओ मुलक कतोक गुणा सुदि जोड़ि कऽ ओकरा पैतृक घराडी हडपबापर तुलल छैक। युवा वर्ग एहि महाजनी वृतिक प्रतिरोध करऽ चाहैत अछि मुदा अन्धविश्वासमे जकडल ओकरासभक माता-पिता अत्याचारी महाजनकेँ बेरपर ठाढ़ होएबाक कृपा करवाक कृतज्ञताक कारणसँ नहिँ करऽ दैत छैक। मुदा अशोककेँ अपन माता-पिताक अपमान नहिँ सकल जाइत अछि। ओ गोराइतक डेउढ़ी जा जुमैत अछि। मुदा ओतऽ गोराइतक बेटी ओकरा गोराइतसँ भेट होबऽ दैत छैक। आ अपन गहनासब प्रदान कऽ ओकरा ऋृणमुक्त भऽ जाए कहैत छैक।

गोराइतक बेटी लक्ष्मीसँ अशोक गहना नहि लैत अछि। लक्ष्मी अशोककेँ अपन पिताक महाजनी वृत्तिक विरुद्ध संघर्ष करवाक हेतु सङ्गठित प्रयास करबाक मन्त्रणा दैत छैक आ ओहिमे आवश्यकता पड़लापर अपनो सहयोग देवाक वचन दैत छैक। अन्नत : अशोक लक्ष्मीसँ विवाह कऽ लेबाक निर्णय लैत अछि आ लक्ष्मीयो ताहिहेतु तैयार भऽ जाइत अछि। दुनुक विवाहमे गोराइत विघ्न-बाधा उत्पन्न करऽ चाहैत अछि मुदा कन्याक बालिग रहबाक कारणे आ ओकर स्वीकृतिसँ विवाह होएबाक कारणे आ विवाह रोकि नहि पबैत अछि। आ एहिँतरहे महाजनक अन्यायी वृत्तिक अन्त होइत छक।

एहि नाटकमे महाजनी वृत्तिक जतेक सुन्दर ओ सजीव उपस्थापन भेल अछि, ततेक ओकराविरुद्ध संघर्षक नहि आ ने फलदायी प्रेरक। लक्ष्मी आ अशोकक प्रेममे ततेक असहजता अछि जे वस्तु

विन्यासेपर प्रश्न उठि सकैत अछि। तथापि रङ्गमञ्चीय दृष्टिसँ ई नाटक सिनेमा शैलीक सफ नाटक थिक।

मैथिली नाट्य साहित्यक इतिहास अत्यन्त प्राचीन अछि। संस्कृत नाटकमे मैथिलीक गेय पदावलीक अन्तमुम्तिकेँ जँ मैथिली नाटकक इतिहास मानीतँ आठसओ वर्ष पुरान अछि। नेपाल मैथिली नाटक ओ रङ्गमञ्चक एकटा महत्वपूर्ण केन्द्रक रुपमे सत्रहम अठारहम सताब्दीधरि जानल जाइत रहल। मुदा परवर्ती कालमे ओहिठामसँ मैथिली नाटकक स्रोत जेना सुखा गेल छल। मुदा श्री भ्रमर जीक प्रयाससँ बुझना जाइत अछि जे आधुनिक मैथिली नाटक अपन सकल सम्भारक सँग नेपालमे पल्लवित – पुष्पित भऽ रहल अछि आ युगानुरुप अन्यान्य भाषाक समकक्ष लेखनक प्रतिष्पर्धामे लागल अछि। एहि नाटकसंग्रहसँ ई स्पस्ट प्रतीत होइत अछि – जे भ्रमरजी प्रयोगधर्मी नाटककार छथि, नाट्यशैलीक विविध प्रयोगमे सिद्धहस्त छथि रवाहे ओ पारम्पारिक शैली हो किंवा अत्याधुनिक।

भ्रमर जीक एकाङ्की नाटकसबमे अधिकांश वस्तु विन्यास प्रासङ्गिक अछि। एहिसबमे वर्तमान जीवनक विभिन्न समस्यादिसि लोकक ध्यानाकृष्ट करबाक सामर्थ्य छैक। ईसबटा रङ्गमञ्चीय दृष्टि सफल एकाङ्की अछि। नाटककार रङ्ग प्रभावकेँ उत्कर्षधरि पहुँचएबाक हेतु रङ्गभाषाक प्रयोग कएलनि अछि, जे हुनक निर्देशकीयताकेँ स्फूट करैत अछि। पात्रोचित भाषाक प्रयोग कयलनि अछि जे हुनक निर्देशकियताकेँ स्फूट करैत अछि। पात्रोचित भाषाक व्यवहारसँ एकाङ्कीमे कतहुँ असहजता ओ भारीपन बुझना जाइत छैक। लोकानुरञ्जनक अपेक्षा गम्भीर वैचारिक अभिव्यक्ति प्रदान कऽ भ्रमरजीक एकाङ्कीसब लोकजीवनक समस्त नाकारात्मक पक्षक विद्रु पताकेँ उद्घाटित करबामे सफल सिद्ध अछि तथा नव निर्माणक पक्षघाती अछि। अवश्ये हिनक ई साहित्य समाज आ देशक हेतु कल्याणकारी अछि जाहिमे सस्त लोकप्रियता आ बाजारुपनक अभाव तँ अछिए, प्रचार आ उपदेशकक थोपल वौद्धिकता नहि अपितु कलात्मक लोकोपदेश अछि। समग्रतामे हिनक संग्रह समाज ओ राष्ट्रक प्रति हिनक प्रतिबद्ध लेखनक विशिष्ट नमुना थिक।

लहेरियासराय

f f f